॥ श्रीः ॥

नृपमदनपालविरचितः-

मदनपालनिघण्टुः।

भाषाटीकासहितः।

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापखाना,

कल्याण-मुंबई.

1954

॥ श्रीः ॥

नृपमदनपालविरचितः-

मदनपालनिघण्टुः ।

वैद्यरत्नायुर्वेदोद्धारकवैद्यपञ्चाननपंडितरामप्रसादवैद्योपाध्याय-

राजवैद्यपटियालाविरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनीनाम-

भाषाटीकासहितः ।

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,

कल्याण-बंबई.

संवत् २०१०, शके १८७५.

1954
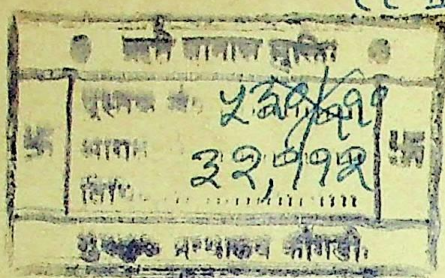
मुद्रक और प्रकाशक-
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
मालिक-"लक्ष्मीवेंकटेश्वर"-स्टीम्-प्रेस, कल्याण-बंबई.

भूमिका ।

आयुर्वेदकी महिमा छिपी नहीं है । आयुर्वेद पढनेसे, आयुर्वेदके गूढाशय समझनेसे, आयुर्वेदमें लिखित वैज्ञानिक प्रक्रियाओंको जाननेसे जो आनन्द प्राप्त होता है, उसे क्या कोई प्रकाशित कर सकता है ? यह जो समस्त संसार तुम्हारे सामने है यह जो चींटीसे लेकर पशु पक्षी मनुष्य पर्यन्त यावत्प्राणी तुम देख रहे हो यह जो जीवित अजीवित वृक्ष मट्टी पत्थर प्रभृति दुनियांके सकल पदार्थ दृष्टिगोचर हो रहे हैं, इन सबका तत्त्व यदि किसीको जानना हो तो आयुर्वेद पढे. आयुर्वेद पढनेसे आयुर्वेदका मर्म जाननेसे मनुष्य एक नई दुनियामें निमग्न होजाता है । संसारी समस्त पदार्थोंके सारासारका उसे ज्ञान प्राप्त होजाता है, आयुर्वेदका पूर्ण ज्ञाता कालभगवान्को भी अपनी दृष्टिसे तुच्छ समझने लगता है ।

जिस आयुर्वेदकी इतनी अधिक महिमा है, जिस आयुर्वेदकी सहायतासे मनुष्य कालको भी तुच्छ समझने लगता है, जिस आयुर्वेदकी शक्तिको जानकर किसी दिन स्वर्गके देवता भी सिहाते ललचाते थे, वह आयुर्वेद अब कहां है ? वह आयुर्वेद अब नहीं रहा कि, उस आयुर्वेदके अब ज्ञाताही नहीं रहे ? इस प्रश्नका उत्तर बहुतही निगूढ है, पर पृथिवी किसी पदार्थके लिये कभी निर्बीज नहीं होती. बडे२शास्त्रज्ञ गुणवानोंका यह कथन निःसन्देह सत्य है अवश्यही आयुर्वेदका वह महत्त्व, आयुर्वेदकी वह महिमा अब नहीं रही । कालक्रमसे आयुर्वेदके अनेक ग्रन्थोंका लोप हुआ, समयानुकूल आयुर्वेदके ज्ञाताओंका ह्रास हुआ,कहांतक कहें धीरे२प्राचीन सभीबातोंका परिवर्त्तन होकर एक नवीन युग बनगया, इस नवीन युगमें संसारने इतना अधिक पलटा खाया कि, ईश्वरकी सृष्टिही एक प्रकार उलट पलट होगई, यह सब इतिहास यदि भूमिकामें लिखा जावे तो भूमिका क्या एक नया महाभारत तैयार होजाय ।

कहनेका मतलब यह है कि, संसारमें अब आयुर्वेद नहीं रहा सो बात नहीं है अथवा दुनियामें अब आयुर्वेदके ज्ञाता नहीं रहे सो बातभी नहीं है, सब हैं किन्तु विच्छिन्नदशामें हैं । आयुर्वेदका कुछ अंश कहीं है और

कुछ अंश कहीं है. आयुर्वेदका किसी अंशका पता लगताहै और किसी अंशका कुछ पताही नहीं चलता. इसीप्रकार आयुर्वेदके ज्ञाताओंका हाल है। कोई आयुर्वेदके किसी अंशका ज्ञाता है और कोई किसी अंशका। जो आयुर्वेदके जिस अंशका ज्ञाता है वह अपनी खास सम्पत्ति समझ अपने निज पुत्रकोभी उसे नहीं बतलाया चाहता। योंही आयुर्वेद सम्बन्धी जो ग्रन्थ जिसके पास हैं वह किसीको दिखलानातक नहीं चाहता, सर्वसाधारणमें प्रकाश करनेकी बात तो दूर रही, इसी प्रकार आयुर्वेद एवं आयुर्वेदविद्याका ह्रास होता जाता है।

समय बडा विलक्षण है। लोग असलको छोडकर नकलको मजबूतीसे पकड रहे हैं। हम इस बातको भलीभांति प्रमाणित कर सकते हैं कि, संसारकी समस्त चिकित्साएँ हमारे आयुर्वेदकी नकल कीहुई हैं। उनकी समस्त विधिव्यवस्था हमारी है, केवल रूपान्तर कियाहुआ है। सो भी पूर्णरूपसे अन्य देशोंमें अभी हमारे आयुर्वेदका प्रकाश नहीं हुआ, आयुर्वेदका पूर्णप्रकाश भारतके अतिरिक्त अन्यत्र कहीं हो भी नहीं सकता, इसके अनेक कारण हैं उन सबमें सबसे बडा कारण तो यह है कि, भारतवर्षमें आयुर्वेदलिखित जितने पदार्थ मिलसकते हैं उतने किसीभी देशमें नहीं मिलसकते. पर जहांतक वैज्ञानिकोंने खींचखांचकर पाया है वहांतक हमारे आयुर्वेदको अपने देशोंमें प्रचारित करनेके लिये कोई कसर नहीं रक्खा, फिर भी असल असलही है, आयुर्वेदमें जो अधिकार एतद्देशवासियोंको प्राप्त हैं, वह अन्य देशवासियोंको अभी अनेक दिनतक नहीं प्राप्त हो सकेगा। किसी २ अंशमें तो हम कह सकते हैं कि, अन्य देशवासियोंको कभी अधिकार नहीं प्राप्त होगा।

खैर, यह तो हुई बहुत दूरकीबात, आजकल हमारे भारतवर्षमें अस्पताल, दवाखाने, औषधालय, मेडिकलहाल, चिकित्सालय, आरोग्यभवन प्रभृति अनेक नामोंसे अगणित अस्पताल औषधालय खुले हैं और नित्य नये खुलरहे हैं। दिनपर दिन इन सबकी खूब वृद्धि होरही है, अस्पताल औषधालयके साथ साथ रोगियोंकी संख्या बढनेमें भी कुछ कमी नहीं है, अमीर, गरीब, हकीम, हाकीम, वैद्य, डाक्टर, कहांतक कहें समस्त देश रोगियोंसे भरा है, ऐसी अवस्थामें आयुर्वेदकी उन्नति होरही है अथवा अवनति ? इसका भलीभांति पता

लगसकता है। इसीसे कहते हैं कि, असली आयुर्वेदका ह्रास होताजाता है और आयुर्वेदकी नकलका दिनपर दिन अधिक प्रसार होता है। जिन दिनों हमारे आयुर्वेदका इस देशमें सचमुच प्रचार था उन दिनों किसी एक प्रान्तमें एक दोसे अधिक आयुर्वेदके ज्ञाताओंकी आवश्यकता नहीं होती थी। तब लोग कहते थे कि, वह आयुर्वेदज्ञ कैसा जिसके प्रदेशमें किसीरोगका अधिक प्रवेश हो सके, हां, यह अवश्य था कि, आजकलकी भांति सार्टीफिकेट पाकरही आयुर्वेदोद्धारक या आयुर्वेदविद्यानिधि-आदि किसी अंट संट उपाधिकी पूंछ लगाकर ही वह लोग आयुर्वेदके ज्ञाता नहीं होजाते थे। तबके विद्यार्थी आयुर्वेदके मर्म्मको गुरुओंसे भलीभांति समझते थे। वर्षोंतक जङ्गलोंमें रहकर जडी,बूटी एवं पत्तियोंको भलीभांति पहचानते थे, सब प्रकारकी औषधियोंको गुरुके सामने स्वयं तैयार करते थे। एक एक पत्तेके गुणको अनेक प्रकारसे अनेक रोगोंमें व्यवहार करनेकी विधि जानते थे। कहांतक कहें, इस आयुर्वेदविद्याको भली प्रकार मथकर उसका सार निकाल लेते थे। इतने अनुभव और परिश्रमसे आयुर्वेद विद्या प्राप्तकर जो लोग चिकित्सा करतेथे उनकी चिकित्सासे, उनकी औषधसे क्या मजाल जो असाध्यसे असाध्य रोगमें भी आराम न होजाय। उनके पहुँचतेही रोगीको पूर्ण विश्वास होजाताथा कि, अब हम मरनेके नहीं।

पर क्या, उस प्राचीन गौरवको जागृति देनेके लिये अब कोई उपाय नहीं रहा? क्या हमारे असली आयुर्वेदका प्रचार इस देशमें फिर नहीं होसकता? इन प्रश्नोंके उत्तरमें फिर वही कहते हैं, किसी चीजका कभी अभाव नहीं होता। यदि हमारे देशवासी सकल आडंबरोंको छोडकर आयुर्वेदके असली तत्त्वको जाननेकी इच्छा करें एवं आयुर्वेदीय विधि व्यवस्थाके अनुकूल चिकित्सा करनेका उद्योग करें तो फिर एकबार आयुर्वेदका चमत्कार भारतवर्षमें पूर्ण प्रकारसे हो सकता है। यदि देशवासी आंख मीचकर देशी विदेशी जानी बेजानी मिश्रित औषधियोंकी बिक्रीसे धन उपार्जनमात्र अपना कर्त्तव्य नहीं समझकर आयुर्वेदके पण्डित बनना चाहें, एवं देशमें विदेशमें आयुर्वेदकी महिमाका प्रचार करना चाहें तो आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको संग्रह करें, आयुर्वेदके ग्रन्थोंका पाठ करें और आयुर्वेदीय ग्रन्थोंमें लिखित जडी, बूटी तथा पत्तियोंके गुण जानने व उनके पहचाननेका

अभ्यास करें। जबतक औषधिका परिज्ञान नहीं होगा, तबतक औषधि तैयार करनेकी प्रक्रिया मालूम नहीं होगी. जबतक निदानपञ्चक द्वारा ठीक २ रोग समझमें नहीं आवेगा, तबतक अमृततुल्य जडी बूटियोंका संग्रह नहीं होगा, जबतक आयुर्वेदके जिस अंशका जो ज्ञाता है, उस अंशका प्रकाश नहीं करेगा, जबतक आयुर्वेदकी जो प्रक्रियाएँ जिसको मालूम हैं, उन्हें सर्वसाधारणको समझानेकी चेष्टा नहीं करेगा, तबतक आयुर्वेदका पुनःप्रचार, आयुर्वेदका पुनर्महत्त्व इस संसारमें नहीं हो सकेगा। इसीसे सर्व देशवासियोंसे निवेदन है कि, जो महानुभाव आयुर्वेदके जिस अंशके अधिकारी हों कृपाकर देशोपकारके लिये आयुर्वेदकी पुनर्महिमा स्थापित करनेके लिये देशमें रोगियोंकी संख्या कम करनेके लिये वह उस अंशको प्रकाश करनेमें हृदयको संकुचित नहीं करें। साथही जिन्हें जो विषय नहीं आता उसके जाननेकी चेष्टा करनेमें वह जराभी नहीं हिचकें।

कहना नहीं होगा, आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये बाहरसे कुछ लाकर मिलानेकी आवश्यकता नहीं है, इस वेदके भीतर स्वयं इतना अधिक विषय कूटकूट कर भरा है कि, यदि उसके जाननेकी चेष्टा की जाय और मनुष्य जन्मजन्मान्तर इसका गूढ विषय जानता रहे तो भी कभी विषयभण्डार खाली नहीं होवे. जिसकी जैसी निर्मल बुद्धि हो वह उतनाही अधिक विषयरत्न इससे निकालकर संसारको लाभ पहुँचा सकता, है जो संसारको लाभ पहुँचा सकता है उसके स्वयं लाभकी बात कहनाही क्या है ? आयुर्वेदके गूढ़ रहस्योंको संस्कृतमें समझनेके लिये अब देशमें एक प्रकार पाण्डित्यका अभाव है। वर्तमान समयमें विद्याकी उन्नति होनेपर भी संस्कृतकी यथोचित उन्नति नहीं होसकी, आगेके लिये अभीतक कोई उचित प्रबन्ध दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। जो हो समयानुकूल संस्कृत जाननेवाले एवं केवल हिन्दी जाननेवालोंके लिये भी बहुत कुछ सुभीता होगया है।

भगवान् भलाकरें 'श्रीवेङ्कटेश्वर' प्रेसके स्वत्वाधिकारी श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीका, आपके उद्योगसे अन्य संस्कृत ग्रन्थोंके साथ २ आयुर्वेद ग्रंथोंका भी बहुत कुछ उद्धार हुआ है, श्रीमान् सेठजीने बडे परिश्रम और खर्चसे कुछ आयुर्वेदके ग्रंथोंको न जाने कहां २ से मँगवाकर हमें दिया है। हमने अपनी मति गतिके अनुसार

संशोधन कर सरल हिन्दीभाषामें इनका अनुवाद कर श्रीयुत सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीकोही समर्पित किया है। श्रीमान् सेठजीने सबके कल्याणार्थ इन ग्रन्थोंको अपने 'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्टीम्-प्रेसमें मुद्रित कर प्रकाशित किया है। आयुर्वेदसम्बन्धी अनेक ग्रन्थोंमें जो सेठजीसे हमें उपलब्ध हुए हैं, उनमें यह 'मदनपालनिघण्टु' भी एक ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ छोटा होनेपर भी बहुत उपकारी है। इस ग्रंथमें प्रायः सभी आवश्यक द्रव्योंके नाम व गुणोंका वर्णन है। जिनका जानना वैद्यमात्रके लिये अत्यावश्यक है। इस ग्रंथका अनुवाद करते समय औषधियोंके नाम ऐसी सरल और प्रचलित भाषामें लिखदिये गये हैं कि, सामान्यसे सामान्य मनुष्य इसको पढकर विना किसीकी सहायतासे औषधिका परिज्ञान करसकता है। संस्कृत नहीं जाननेवाला केवल भाषा पढकर इस ग्रन्थकी सहायतासे अच्छे विद्वानोंकी भांति द्रव्य नाम गुणके विषयमें योग्यता प्राप्त करसकता है। इतना सब विचार रखनेपर भी मानुषी बुद्धिके कारण, छापेके कारण, अथवा अन्य किसी कारणसे यदि इस ग्रंथमें किसी प्रकारकी त्रुटियां रहगयीं हों तो विद्वज्जन क्षमा करेंगे, एवं त्रुटियोंको संशोधित कर अपनी उदारताका परिचय देंगे।

विनीत–

रामप्रसाद–पटियाला.

अवश्य ज्ञातव्य ।

भाषामें लिखेहुए कठिन शब्दोंका स्पष्ट अर्थ !

यद्यपि हमने भाषा लिखते समय अपनी समझमें ऐसेही शब्द लिखे हैं जो सर्व साधारणकी समझमें आसकें, तथापि कुछ शब्द वैद्यकके ग्रन्थोंकी टीकामें ऐसे लिखेजाते हैं जिनका हरएककी समझमें आना कठिन है । जैसे-बृंहण, व्यवायी, वृष्य, भेदी, स्रंसन आदि । सो ऐसा विचार कर कठिन २ शब्दोंका स्पष्ट अर्थ (जो सबकी समझमें आसके) लिखते हैं:-

१ दीपन-जो द्रव्य आमको न पचावे केवल अग्निकोही चैतन्य करे उसे दीपन कहते हैं ।

२ पाचन-जो द्रव्य आमको पचावे किंतु अग्निको न बढावे उसे पाचन कहते हैं ।

३ दीपनपाचन-जो आमको पचावे तथा अग्निको भी चैतन्य करे उसे दीपन-पाचन कहते हैं ।

४ शमन-जो औषधि वातादि दोषोंकी साम्यावस्था बिगाडे नहीं और न शोधन करे, किन्तु बढे हुए दोषोंको साम्यावस्थामें करे उसे शमन कहते हैं ।

५ अनुलोमन-जो औषधि वातादि दोषोंको पाक करके बद्ध हुए मलोंको भेदन करकेनीचेके मार्गों (गुदा, लिंग) द्वारा निकाले उसे अनुलोमन कहते हैं ।

६ स्रंसन-जो द्रव्य पक्व अथवा अपक्व कोष्ठाश्रित मलको नीचे भागमें लाकर गुदा द्वारा निकाले उसे स्रंसन कहते हैं ।

७ भेदन-जो औषधि वातादि दोषों करके अबद्ध (न बँधा) अथवा बँधा हुआ या गांठक समान सूखे हुए मलको भेदन करके गुदाद्वारा नीचे गिरावे उसे भेदन कहते हैं ।

८ रेचन-जो औषधि पक्व अथवा अपक्व मलको अथवा वातपित्तादि दोषोंको द्रव (पतला) करके गुदाद्वारा नीचे गिरावे उसे रेचन कहते हैं ।

९ वामक-जो औषध विना पके पित्त, कफको बलपूर्वक मुखद्वारा निकाले अर्थात् छर्दी करावे उसे वामक कहते हैं ।

१० संशोधन-जो औषध अपने स्थानमें स्थित वातादि दोषोंके संचित मलोंके उर्ध्व भाग (मुखनासिका आदि) अधोभाग (गुदा लिंग) द्वारा निकाले उसे संशोधन कहते हैं ।

११ छेदन-जो औषधि एकमें मिले हुए कफ आदि दोषोंको फाड देवे उसे छेदन कहते हैं ।

१२ लेखन-जो औषधि रस आदि धातुओंके मलको अथवा दोषोंके मलको सुखाकर और उसको उखाडकर निकाल डाले उसको लेखन कहते हैं ।

१३ ग्राही-जो द्रव्य अग्निको चैतन्य करे तथा आमको पाचन करे और उष्णवीर्य होनेसे द्रवरूप (पतले) दोष तथा मलको शोषण करें उसको ग्राही कहते हैं ।

१४ स्तम्भन-जो द्रव्य रूखा, शीतल, कषैला, पचनेमें हलका होनेसे वायुको उत्पन्न करे और वीर्य्य तथा मलके वेगको रोकदेवे उसको स्तम्भन कहते हैं ।

१५ रसायन-जो द्रव्य बुढापेको और रोगोंको नष्ट करके आयुको बढावे उसको रसायन और आयुवर्द्धक कहते हैं ।

१६ बृंहण-जो द्रव्य मांसको पुष्ट करे उसको बृंहण कहते हैं ।

१७ बल्य जो द्रव्य जीवन, शरीर तथा इन्द्रियोंको बल (ताकत) देनेवाला हो उसको बल्य तथा बलवर्द्धक कहते हैं ।

१८ जीवन--जो द्रव्य जीवनको बढावे चिरकाल जीता रक्खे उसको जीवन या जीवनीय कहते हैं ।

१९ वृष्य-जो द्रव्य वीर्य्यको पैदाकरे उसको वृष्य या वीर्य्यप्रद तथा शुक्रद कहते हैं ।

२० धातुवर्द्धक-जो द्रव्य वीर्य अथवा रसादि धातुओंको बढानेवाला हो उसको धातु वर्द्धक कहते हैं ।

२१ धातुचेतन-जो द्रव्य वीर्य अथवा धातुओंको चेतन तथा उत्पन्न करे उसको धातु चेतन कहते हैं ।

२२ वाजीकरण-जो द्रव्य वीर्यको बढावे तथा स्त्रीगमनकी शक्तिको बलवान् करे उसको वाजीकरण कहते हैं ।

२३ व्यवायी-जो द्रव्य पचनेसे पहिलेही सम्पूर्ण शरीरमें व्यापक होजाय और पीछे पाकको प्राप्त हो उसको व्यवायी कहते हैं और कामोत्पादक द्रव्यको भी व्यवायी कहते हैं ।

२४ विकाशी--जो द्रव्य शरीरकी सन्धियोंके बन्धनोंको तथा धातुओंके बलको शिथिल करें वह विकाशी कहा जाता है।

२५ मादक--जो द्रव्य तमोगुणी होनेसे बुद्धिको नष्ट करदे उसको मादक या मदकारक कहते हैं।

२६ सूक्ष्म--जो द्रव्य रोमकूपोंद्वारा शरीरमें प्रवेश करजाय उसको सूक्ष्म कहते हैं।

२७ आग्नेय--अग्निसे प्रगट हुआ अग्नितत्त्ववाला आग्नेय कहा जाता है।

२८ प्राणहारक--जो द्रव्य व्यवायी, विकाशी, सूक्ष्म, छेदन, मादक, आग्नेय इन सब गुणोंसे युक्त होनेसे जीवनके नष्ट करनेवाला हो उसको प्राणहारक अथवा मारक तथा प्राणनाशक कहते हैं।

२९ योगवाही--जो अनेक द्रव्योंके योगसे अथवा पृथक् २ अनुपानोंसे सब रोगोंपर दिया जावे उसको योगवाही कहते हैं।

३० प्रमाथी--जो द्रव्य अपने बलसे मुख, नाशिकादि छिद्रोंसे कफ आदि दोषोंको दूर करनेवाला हो उसको प्रमाथी कहते हैं।

३१ अभिष्यन्दी--जो द्रव्य गाढा और भारी होनेसे रसवाही नसोंको रोककर शरीरको जकड देवे उसको अभिष्यन्दी कहते हैं।

३२ पिच्छिल--जो द्रव्य गाढा हो उसको पिच्छिल कहते हैं।

३३ सान्द्र--जिसमें नसोंके आकारका मिला हुआसा गाढा हो उसको सान्द्र कहते हैं।

३४ क्लेदी--जो द्रव्य गिलगिला या गीलापन करनेवाला हो उसको क्लेदी कहते हैं।

३५ हृद्य--जो द्रव्य हृदयको बलवान् करता हो उसको हृद्य कहते हैं।

३६ विशद--जो द्रव्य स्पष्ट, स्वच्छ, निर्मल हो उसको विशद कहते हैं।

३७ सर--जो द्रव्य चलायमान होकर निकल जाय तथा दोषको निकाल डाले उसको सरसारक, दस्तावर कहते हैं।

३८ वातल--जो द्रव्य वायुको पैदा करे उसको वातल कहते हैं। इसी प्रकार मूत्रको पैदा करनेवालेको मूत्रल और शुक्रके उत्पन्न करनेवालेको शुक्रल समझना चाहिये।

रामप्रसाद.

॥ श्रीः ॥

अथ मदनपालनिघण्टुविषयानुक्रमणिका ।

पानीयादिवर्गः-८.

इति विषयानुक्रमणिका समाप्तः ।

श्रीगणेशाय नमः ॥

मदनपालनिघण्टुः ।

भाषातत्त्वप्रकाशिनी-

भाषाटीकासहितः ।
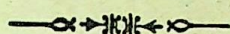
बीजं श्रुतीनां सुधनं मुनीनां
जीवं जडानां महदादिकानाम् ।
आग्नेयमस्त्रं भवपातकानां
किञ्चिन्महः श्यामलमाश्रयामि ॥ १ ॥

टीकाकारका मङ्गलाचरण ।

ओषधीज्ञानदातारं प्रणम्य शिवदं शिवम् ।
टीका मदनपालस्य भाषातत्त्वप्रकाशिनी ॥
मया रामप्रसादेन क्रियते नृहितेच्छया ।
सुलभा अगदा यस्यां देशभेदेन नामभिः ॥

दोहा—वन्दौं प्रथम महेशपद, बुधि बलके दातार ।
जिनकी कृपाकटाक्षसों, ही औषध निर्धार ।
पुनि वंदौं गुरुजन चरण, क्षुद्र हृदय नित धार ।
मदनपाल टीका करौं, रामप्रसाद सुधार ॥
भाषातत्त्वप्रकाशिनी, भेषज नाम विवेक ।
सुलभ हौंहिं ज । पठनसे, औषध भेद अनेक ॥

प्रथम ग्रंथकर्त्ता (राजा मदनपाल) ग्रंथकी निर्विघ्नसमाप्तिके लिय मगलाचरण करते हुए परमात्मा तथा गणेशजी, सूर्यभगवान् और धन्वन्तरिजीकी स्तुति चार श्लोकोंमें करते हैं और आगेको भी सब लोग ऐसी किया करें इसी लिये ग्रंथके आदिमें लिखते हैंः-

वेदोंका बीजरूप, मुनियोंका सुन्दर धन, महत् आदि जडपदार्थोंका जीवनरूप और संसारके पातकोंको नष्ट करनेके लिये आग्नेय अस्त्र ऐसे किसी महाप्रकाशयुक्त श्यामवर्णवाले भगवान्‌का मंगलार्थ आश्रय लेता हूं ॥ १ ॥

लुब्धा कपोलमधुवारि मधुव्रताली ।
कुम्भस्थलीमधुविभूषणलोहिताङ्गी ॥

माणिक्यमौलिरिव राजति यस्य मौलौ
विघ्नं स धूनयतु विघ्नपतिः सदा नः ॥ २ ॥

कपोलोंपरसे गिरते हुए मदके पानीपर लुभाई हुई तथा कुम्भस्थलके मदकी शोभासे लाल हो रहे हैं अंग जिसके ऐसी भ्रमरोंकी पंक्ति उत्तम मणियोंके समान जिसके मुकुटपर शोभायमान हो रही है, सो गणेश जी सब कालमें हमारे विघ्नोंको नष्ट करें ॥ २ ॥

यो ध्वान्तसन्ततिगभीरपयोधिमध्या-
न्निष्कासयत्यशरणं भुवनं निमज्जत् ।
दत्त्वा जगत्रयहितः स्वकरावलम्बं
वाञ्छां स वो दिनकरः सफलीकरोतु ॥ ३ ॥

जो भगवान् अंधकारमय गंभीर समुद्रके मध्यसे शरणरहित और डूबते हुए संसारको अपने हाथ (किरण) का अवलंबन (सहारा) देकर निकालते हैं और जगत्रयके हितकारक हैं सो दिनके कर्ता (सूर्यनारायण) तुम्हारी कामना सफल करें ॥ ३ ॥

मिथ्याशनादिकृतदोषचयेन कोपा-
न्नद्यम्बुवर्द्धित उपद्रवनक्रभीमे ।
रोगाम्बुधौ भवजनस्य निमज्जतो यः
पोतः प्रयच्छतु शुभानि स काशिराजः ॥ ४ ॥

अनुचित रीतिसे किये हुए तथा असात्म्य जो आहार विहार उनसे संचित हुए दोषोंके कोपरूप नदियोंके पानीसे चढा हुआ है वेग जिसका और उपद्रवरूपी मगर मच्छोंसे भयानक ऐसे रोगरूपी समुद्रमें डूबते हुए संसारके मनुष्योंको बचानेवाले जहाजरूप काशिराज (धन्वंतरि) हमको कल्याणके देनेवाले होवें ॥ ४ ॥

केचित्सन्ति निघण्टवोऽतिलघवः केचिन्महान्तः परे
केचिद्दुर्गमनामकाः कतिपये भावाः स्वभावोज्झिताः ।
तस्मान्नातिलघुर्न चातिविपुलः ख्यातादिनामा सतां
प्रीत्यै द्रव्यगुणान्वितोऽयमधुना ग्रन्थो मया बध्यते ॥ ५ ॥

कोई निघंटु अत्यंत छोटे हैं इस कारण उनसे कुछ औषधज्ञान हो नहीं सकता और कोई निघंटु अत्यंत बडे होनेसे साधारण जन देख

नहीं सकते हैं कोई नहीं जानेजासकें ऐसे नामोंवाले हैं और कोई निघंटु स्वभावसे बडे हैं इसलिये न बहुत छोटा और न बहुत बडा और जो समझे जासकें नाम ऐसे नाम, द्रव्य और गुणोंसे युक्त यह निघंटु ग्रंथ मैं सत्पुरुषोंकी प्रीतिके अर्थ रचता हूं ॥५॥

सर्वं कायेन संसाध्यं तस्यायुः स्थितिकारणम् ।
आयुर्वेदोपदेशस्तु कस्य न स्यात्फलावहः ॥ ६ ॥

धर्मादि संपूर्ण पदार्थ शरीरद्वाराही साधित होसकते हैं और उस शरीरकी स्थितिका कारण आयु है । आयुके संबंधके हित और अहितका ज्ञान आयुर्वेदसे हो सकता है । इसलिये आयुर्वेदका उपदेश किसको शुभ फलदायक नहीं होसकता अर्थात् सभीको होसकता है ॥ ६ ॥

तत्रापि पूर्वं ज्ञातव्या द्रव्हनामगुणागुणाः ।
अतस्त एव वक्ष्यन्ते तज्ज्ञाने हि क्रियाक्रमः ॥ ७ ॥

और उस आयुर्वेदमेंभी प्रथम द्रव्यके गुण और दोष जानने योग्य हैं । इस कारण प्रथम उनकोही कहते हैं उनके जाननेमेंही क्रियाक्रम है अर्थात् पहले द्रव्यादि जाननेपरही आयुर्वेदसम्बन्धी क्रियाका आरंभ हो सकता है ॥ ७ ॥

हरीतकीप्रशंसा तद्भेदाश्च ।

हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।
हारयेत्सर्वरोगांश्च तेन प्रोक्ता हरीतकी ॥ ८ ॥

हर (महादेव) के स्थानमें उत्पन्नहुई और स्वभावसे हरेरंगवाली तथा संपूर्ण रोगोंको हर लेती है इस कारण यह हरीतकी कही जाती है ॥ ८ ॥

जीवन्ती पूतना पश्चादमृता विजयाऽभया ।
रोहिणी चेतकी सप्त भेदभिन्ना हरीतकी ॥ ९ ॥

जीवन्ती, पूतना, अमृता, विजया, अभया, रोहिणी, चेतकी इन सात भेदोंसे हरीतकी सात प्रकारकी है ॥ ९ ॥

जीवन्ती जीवनोद्योगात्पावनात्पूतना मता ।
सुधावदमृता ज्ञेया विजया विजयप्रदा ॥ १० ॥

जीवनमें उद्योगके करनेवाली होनेसे जीवंती कहीजाती है दुष्ट मलोंको दूरकर शरीरको पवित्र करनेसे पूतना कहीजाती है, अमृतके समान जीवनदाता होनेसे अमृत जाननी चाहिये, विजया रोगोंको जीतकर विजयको देती है ॥ १० ॥

नृणामभयदा यस्मादभया तत्र प्रकीर्त्तिता ।
रोहिणी तु गुणारोहाच्चेतनाच्चेतकी मता ॥ ११ ॥

मनुष्योंको रोगोंसे अभय कर देती है इसवास्ते अभया कही है, आरोग्य जनक अनेक गुणोंको उपजानेसे रोहिणी है और आलस्य आदि दूरकर शरीरको चेतना रखनेसे चेतकी कही है ॥ ११ ॥

जीवन्ती स्वर्णवर्णाभा पूतनाऽस्थिमती मता ।
अमृता त्रिदला प्रोक्ता विजया तुम्बरूपिणी ॥ १२ ॥

सुवर्णके वर्णके समान कांतिवाली जीवन्ती होती है, छोटी गुठली वालीको पूतना कहते हैं, तीन दलोंवाली अमृता कही है और तूंबेके समान रूपवाली विजया होती है १२ ॥

पञ्चाङ्गी त्वभया ज्ञेयाऽमृता वृत्ता तु रोहिणी ।
त्र्यङ्गी तु चेतकी ज्ञेया कर्म तासामथोच्यते ॥ १३ ॥

पांच रेखावाली अभया होती है और जो गोल हो वह रोहिणी होती है तथा तीन रेखावाली चेतकी होती है । अब उनका जिन २ कामोंमें मुख्यतः बर्ताव करना चाहिये वह कहते हैं ॥ १३ ॥

सर्वरोगेषु जीवन्ती प्रलेपे पूतना हिता ।
शुद्ध्यर्थममृता प्रोक्ता विजया सर्वरोगहृत् ॥ १४ ॥

सम्पूर्ण रोगोंमें जीवन्ती हितकारक है,लेपमें पूतना हित है, विरेचनमें अमृताका प्रयोग हित है और विजया सब रोगोंको हरनेवाली है ॥ १४ ॥

अक्षिरोगेऽभया शस्ता रोहिणी व्रणरोहिणी ।
चेतकी चूर्णयोगे स्यात्सप्तधैव प्रकीर्तिता ॥ १५ ॥

नेत्ररोगमें अभया श्रेष्ठ है, रोहिणी घावको पूरती है और चूर्णके योगमें चेतकी डालना हित है, ऐसे सात प्रकारकी हरीतकी (हरड) कही है ॥ १५ ॥

नवा स्निग्धा घना वृत्ता गुर्वी क्षिप्ता च याऽम्भसि ।
निमज्जेत्सा प्रशस्ता स्याद्रोगघ्न्यतिगुणप्रदा ॥ १६ ॥

नवीन, चिकनी, करडी और गोल तथा भारी हो जो पानीमें गिरानेसे डूब जावे वह हरड उत्तम होती है तथा रोगोंको नष्ट करती और बहुत गुणोंको देनेवाली है ॥ १६ ॥

शोणा च्छिन्ना गुडनिभा किंचिदल्पा कषायिणी।
स्थूलत्वक् सरसा स्वल्पबीजा गुर्वी हरीतकी ॥ १७ ॥

लाल रंगकी, तोडनेमें गुडके समान टूटनेवाली, किंचित् छोटी, कषैले स्वादवाली, मोटी छालवाली, अधिक रसवाली, छोटी गुठलीवाली और भारी ऐसी हरड उत्तम होती है ॥ १७ ॥

चर्विता वर्द्धयत्यग्निं पेषिता मलशोधिनी।
स्विन्ना सङ्ग्राहिणी प्रोक्ता भृष्टा पथ्यान्नदोषनुत् ॥ १८ ॥

हरड चाबकर खानेसे अग्निको बढाती है, पीसकर खाई हुई हरड मलको शोधन करती है, पकाई हुई हरड मलको बांधदेती है और भूनकर खाई हुई हरड अन्नके दोषको नष्ट करती है ॥ १८ ॥

ग्रीष्मे तुल्यगुडां सुसैन्धवयुतां मेघावृते ह्यम्बरे
तुल्यां शर्करया शरद्यमलया शुण्ठ्या तुषारागमे।
पिप्पल्या शिशिरे वसन्तसमये क्षौद्रेण संयोजितां
राजन्प्राप्य हरीतकीमिव रुजो नश्यन्तु ते शत्रवः ॥ १९ ॥

ग्रीष्म ऋतुमें (ज्येष्ठ आषाढमें) समभाग गुडके संग, श्रावण और भाद्रपदमें सेंधेनिमकके संग, आश्विन और कार्तिकमें खांडके संग, मार्गशीर्ष और पौषमें सोंठके संग, माघ और फाल्गुनमें पीपलके संग, चैत्र और वैशाखमें शहदके संग इस प्रकार सेवनसे जैसे हरडको प्राप्त हो रोग नष्ट होते हैं वैसेही हे राजन् ! आपके शत्रु भी नष्ट हो जायँ ॥ १९ ॥

हरीतकीनामगुणाः।

शिवा हरीतकी पथ्या चेतकी विजया जया।
प्रपथ्या(१) प्रथमाऽमोघा कायस्था प्राणदाऽमृता ॥ २० ॥
जीवनीया हेमवती पूतना वृतनाऽभया।
वयस्था नन्दिनी ज्ञेया श्रेयसी रोहिणी तथा ॥ २१ ॥

शिवा, हरीतकी, पथ्या, चेतकी, विजया, जया, प्रपथ्या, प्रमया, अमोघा, कायस्था, प्राणदा, अमृता, जीवनीया, हेमवती, पूतना, वृतना, अभया, वयस्था, नंदिनी, श्रेयसी, रोहिणी ये हरडके नाम हैं ॥ २० ॥ २१ ॥

---

(१) प्रमथ्या इति केचित्।

हरीतकी पञ्चरसाऽलवणा तुवरोत्कटा ।
रूक्षोष्णा दीपनी मेध्या स्वादुपाका रसायनी ॥ २२ ॥

हरडमें मीठा, खट्टा, कडुवा, कषैला तथा चरपरा यह पांच रस हैं । हरडमें नमकीन रस नहीं है और बहुत कषैली है तथा रूखी और गर्म है, अग्निको जगाती है और शुद्धिको करती है, पचनेमें स्वादु है, रसायनी है अर्थात् अवस्थाको स्थापन करती है ॥ २२ ॥

सरा बुद्धिप्रदा वृष्या चक्षुष्या बृंहणी लघुः ।
श्वासकासप्रमेहार्शः कुष्ठशोफोदरान् कृमीन् ॥ २३ ॥

दस्तावर है, बुद्धिको देनेवाली है, आयुको बढाती है, नेत्रोंको हितकारक है, बलको बढानेवाली है, हलकी है और श्वास, खांसी, प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, शोजा, उदररोग, कृमिरोग ॥ २३ ॥

वैस्वर्य्यग्रहणीदोषविबन्धविषमज्वरान् ।
गुल्माध्मानव्रणच्छर्दिहिक्काकण्डूहृदामयान् ॥
कामलां शूलमानाहं प्लीहानं चापकर्षति ॥ २४ ॥

स्वरभेद, (आवाजका बिगड़ना) ग्रहणीरोग, विबंध, विषमज्वर, गुल्म, आध्मान, घाव, छर्दि, हिचकी, खाज, हृद्रोग, कामला, शूल, अफारा, तिल्लीरोग इनको दूर करती है ॥ २४ ॥

मधुराम्लतया वातं कषायस्वादुभावतः ।
पित्तं हन्ति कफं हन्ति कटुकेन हरीतकी ॥ २५ ॥

हरड मीठे रस और खट्टे रससे वात विकारको हरती है, कषैला और स्वादुपनसे पित्तको हरती है, चरपरे रससे कफको हरती है ॥ २५ ॥

आमलकनामगुणाः ।

धात्रीफलाऽमृतफलाऽऽमलकं श्रीफलं शिवम् ।
तद्वद्धात्रीफलं वृष्यं विशेषाद्रक्तपित्तजित् ॥ २६ ॥

धात्रीफल, अमृतफल, आमलक, श्रीफल, शिव ये नाम आमलेके हैं, आमलेका फल आयुको बढाता है और वाजीकरण है विशेष करके रक्तपित्तके विकारोंको जीतता है ॥ २६ ॥

अम्लत्वात्पवनं हन्ति पित्तं माधुर्य्यशैत्यतः ।
कफं रूक्षकषायत्वात्तस्मात्किमधिकं फलम् ॥ २७ ॥

खट्टेरससे वायुको नष्टकरता है, मधुरता और शीतलतासे पित्तको नष्ट करता है, रूखेपनसे तथा कषैलेपनसे कफको नष्ट करता है । ऐसे आमलकीफलसे अधिक और कौन फल हो सकता है अर्थात् कोईभी नहीं ॥ २७ ॥

विभीतकनामगुणाः ।

बिभीतकः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ।
वासन्तोऽक्षो वृद्धजातः संवर्त्तस्तिलपुष्पकः ॥ २८ ॥

बिभीतक, कर्षफल, भूतावास, कलिद्रुम, वासन्त, अक्ष, वृद्धजात, संवर्त, तिलपुष्पक ये नाम बहेडेके हैं ॥ २८ ॥

बिभीतकः स्वादुपाकः कषायः कफपित्तनुत् ।
उष्णवीर्यो हिमस्पर्शो भेदनः कासनाशनः ॥ २९ ॥

बहेडा पाकमें स्वादिष्ट है, कषैला है, कफ और पित्तको नष्टकरता है, उष्णवीर्य है, स्पर्शमें शीतल है, भेदन है और खांसीको नष्ट करता है ॥ २९ ॥

रूक्षो नेत्रहितः केश्यो मज्जातो मदकारकः ॥ ३० ॥

रूखा है, नेत्रोंको हित है, बालोंको बढानेवाला है और इसकी गिरी मदकारका है ॥ ३० ॥

त्रिफलानामगुणाः ।

हरीतक्यास्त्रयो भागाः शिवा द्वादशभागिका ।
षड्भागाः स्युर्बिभीतस्य त्रिफलेयं प्रकीर्तिता ॥ ३१ ॥

हरड ३ भाग, आमला १२ भाग, बहेडा ६ भाग, इन तीनोंको मिलानेसे त्रिफला कही जाती है. यह भागशब्द फलोंकी गणनाका वाचक है तोलकी वाचक नहीं; भावमिश्रतो तीनोंकी समभाग छालकाही प्रयोग मानते हैं ॥ ३१ ॥

पित्तं माधुर्य्यशैत्याभ्यां कफं रूक्षकषायतः ।
त्रिफलैतत्त्रयेण स्याद्वरा श्रेष्ठा फलोत्तमा ॥ ३२ ॥

त्रिफला मीठेपन और शीतलतासे पित्तको नष्ट करती है तथा रूखेपन और कषैलेपनसे कफको हरती है । त्रिफला, वरा, श्रेष्ठा, फलोत्तमा ये त्रिफलाके चार नाम हैं ॥ ३२ ॥

त्रिफला कुष्ठमेहार्शः कफपित्तविनाशिनी ।
चक्षुष्या रोपणी हृद्या वयसः स्थापिनी परा ॥ ३३ ॥

त्रिफला कुष्ठको प्रमेहको बवासीरको कफको पित्तको नष्ट करती है, नेत्रोंको परम हित है, घावको रोपण करनेवाली है, हृदयको हितकारी है और अवस्थाको विशेषकर स्थापित करनेवाली है ॥ ३३ ॥

भूधात्रीनामगुणाः ।

भूधात्री बहुपत्री स्यादमृताऽऽमलकी शिवा ।
भूधात्री वातकृत्तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ।
पिपासाकासपित्तास्रकृमिपाण्डुक्षतापहा ॥ ३४ ॥

भूधात्री, बहुपत्री, अमृता, आमलकी, शिवा ये नाम भूमि आमलाके हैं, भूमि, आमला वायुको करता है, कडुआ कसैला और मीठा तथा शीतल है। तृषा, खांसी रक्तपित्त, कृमि और पाण्डु तथा क्षयरोग इनको नष्टकरता है ॥ ३४ ॥

प्राचीनामलकीनामगुणाः ।

प्राचीनामलकी प्राची नागरं रक्तकं मतम् ।
तत्पक्वं पित्तकफकृद्गुरु गुरु समीरजित् ॥ ३५ ॥

प्राचीन आमलकी, प्राची, नागर, रक्तक ये नाम पानी आंवलाके हैं। इसका पका हुआ फल पित्त और कफको करता है, गर्म है और भारी है और वातको जीतता है ॥ ३५ ॥

अटरूषकनामगुणाः ।

अरूषकेणाववासा वृषा सिंहमुखी भिषक् ।
सिंहपर्णी वृषो वासा सिंहकोत्पाटरूषकः ॥ ३६ ॥

अरूषक, इणाववासा, वृषा, सिंहमुखी, (सिंहानना) भिषक्, सिंहपर्णी, वृष, वासा, सिंहक, उत्पाटरूषक ये नाम वासाके हैं. अडूसाके नामसे सब जगह प्रसिद्ध है. इसको अडूसा बसूटा, बांसा भी कहते हैं । इसके ऊपर सफेद फूल होते हैं उनमेंसे मीठा रस बन्दर और लडके भी चूसा करते हैं शिमलेके तर्फ कालकाके नजदीक बहुत और प्रायः सब देशोंमें होता है और इसको लोक बसूटी कहते हैं ॥ ३६ ॥

वासको वातकृत्सर्य्यः कफपित्तास्रनाशनः ।
श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ॥ ३७ ॥

वांसा वातको करता है, सर है, कफ और रक्तपित्तको नाशता है । यह श्वास, खांसी, ज्वर, छर्दि (उलटी), मेद, कोढ और क्षयको दूर करता है ॥ ३७ ॥

गुडूची (गिलोय) नामगुणाः ।

गुडूची कुण्डली छिन्ना वयस्थाऽमृतवल्लरी ।
छिन्नोद्भवा छिन्नरुहाऽमृता ज्वरविनाशिनी ॥ ३८ ॥
वत्सादनी चन्द्रहासा जीवन्ती चक्रलक्षणा ।
गुडूची कटुका लघ्वी स्वादुपाका रसायनी ॥ ३९ ॥
संग्राहिणी कषायोष्णा बल्या तिक्ताऽग्निदीपनी ।
कामलाकुष्ठवातास्रज्वरपित्तकृमीन् जयेत् ॥ ४० ॥

गुडूची, कुण्डली, छिन्ना, वयस्था, अमृतवल्लरी, छिन्नोद्भवा, छिन्नरुहा, अमृता, ज्वरविनाशिनी, वत्सादनी, चन्द्रहासा, जीवन्ती, चक्रलक्षणा ये नाम गिलोयके हैं. इसकी बेल होती है. गिलोय, गुच, गुडूची इन नामोंसे प्रायः सबजगह मिलसकती है। गिलोय तीक्ष्ण, हलकी, पाकमें स्वादिष्ठ और रसायन है, मलको बांधती है, कषैली है, गर्म है, बलको बढाती है, कडुवी है, अग्निको जगाती है और कामला, कुष्ठ, वातरक्त, ज्वर, पित्त तथा कृमिरोग इनको जीतती है ॥ ३८-४० ॥

घृतेन वातं सगुडा विबन्धं पित्तं सिताढ्या मधुना कफं च ।
वातास्रमुग्रं रुबुतैलमिश्रा शुण्ठ्यामवातं शमयेद्गुडूची ॥ ४१ ॥

गिलोय घृतके संग वातको गुडके संग विबन्धको मिश्रीके संग पित्तको शहदके संग कफको अँडीके तेलके संग भयंकर वातरक्तको और सोंठके संग आमवातको शमन करती है ॥ ४१ ॥

बिल्वनामगुणाः ।

बिल्वः शलाटुः शैलूषो मालूरश्च सदाफलः ।
लक्ष्मीफलो गन्धगर्भः शाण्डिल्यः कण्टकी मतः ॥ ४२ ॥

बिल्व, शलाटु, शैलूष, मालूर, सदाफल, लक्ष्मीफल, गन्धगर्भ, शाण्डिल्य, कंटकी ये नाम बेलफलके हैं बिल, बेल, बिल्व इन नामोंसे सब जगह प्रसिद्ध है ॥ ४२ ॥

बिल्वं ग्राहि कषायोष्णं कटु दीपनपाचनम् ।
हृद्यं बालं लघु स्निग्धं तिक्तं वातकफापहम् ॥ ४३ ॥

कच्ची बेलगिरी मलको बांधती है, कषैली और गर्म है, चर्परी, दीपन और पाचन है, हृदयको हितकारी है । बेलकी गिरी हलकी, चिकनी, कडवी और वात तथा कफको नष्ट करती है ॥ ४३ ॥

वृष्यं गुरु त्रिदोषं स्याद्दुर्जरं पूतिमारुतम्।
विदाहि विष्टम्भकरं मधुरं वह्निमान्द्यकृत् ॥ ४४ ॥

पक्का बिल वीर्यको बढाता है, भारी है और तीन दोषोंको उपजानेवाला है, पाचन देरमें होता है और दुर्गंध वातवाला है विशेषकर दाह और विष्टम्भ करता है। यह मीठा है और अग्निको मन्द करता है ॥ ४४ ॥

ग्रहणीकफवातामशूलघ्नी बिल्वपेषिका ॥ ४५ ॥

कोमल बेलफल ग्रहणी कफ वात, आम और शूलको नाशता है ॥ ४५ ॥

अरणिनामगुणाः।

अग्निमन्थो मथः केतुररणिर्वैजयन्तिका।
अग्निमन्थः श्वयथुहृद्वीर्योष्णः कफवातनुत् ॥ ४६ ॥

अग्निमन्थ, मथ, केतु, अरणि, वैजयन्तिका, (हविर्मथ, कर्णिका, गवेधु, श्रीपर्णी) ये नाम अरनीके हैं। यह अरनी और अग्निमंथ इन दो नामोंसे प्रसिद्ध है। इसके वृक्षमें फूल सफेद होते हैं, फल करौंदेके समान होते हैं। अरनी सूजनको हरती है, वीर्यमें गर्म है और कफवातको नाशती है ॥ ४६ ॥

पाटलानामगुणाः।

पाटला कामदूतिः स्यात्कुम्भिका कालवृन्तिका।
स्वल्पमेधा मघोद्भूती ताम्रपुष्पाम्बुवासिनी ॥ ४७ ॥
अन्या फलेरुहा श्वेता कुम्भिका कृष्णपाटला।
पाटलाऽरुचिशोथार्शःश्वासतृट्छर्दिनाशिनी ॥ ४८ ॥

पाटला, कामदूति, कुम्भिका, कालवृन्तिका, स्वल्पमेधा, मघोद्भूती, ताम्रपुष्पा, अम्बुवासिनी और फलेरुहा, श्वेता, कुम्भिका, कृष्णपाटला ये नाम कृष्णपाटलाके हैं. पाटला अरुचि सूजन, बवासीर, श्वास, तृषा और छर्दि इनको नाश करती है ॥ ४७-४८ ॥

अत्युष्णं तुवरं स्वादु तत्पुष्पं कफरक्तनुत्।
तातिसारदाहघ्नं फलं हिक्कास्रपित्तनुत् ॥ ४९ ॥

यह अत्यन्त गर्म है, कसैली और स्वादिष्ठ है, इसका फूल कफ और रक्तके विकारको नष्ट करता है तथा पित्त, अतिसार, दाह इनको नष्ट करता है और इसका फल हिचकी और रक्तपित्तको नष्ट करता है ॥ ४९ ॥

काश्मरीनामगुणाः।

काश्मरी सर्वतोभद्रा श्रीपर्णी कृष्णवृन्तिका।
काश्मारी कश्मरी हीरा काश्मर्य्या भद्रपर्णिका॥ ५०॥

काश्मरी, सर्वतोभद्रा, श्रीपर्णी, कृष्णवृंतिका, कश्मारी, कश्मरी, हीरा, काश्मर्या, भद्रपर्णिका यह नाम कंभारीके हैं॥ ५०॥

काश्मरी ज्वरशूलघ्नी वीर्य्योष्णा मधुरा गुरुः।
तत्पुष्पं वातलं ग्राहि पित्तासृक्प्रदरापहम्॥ ५१॥

कंभारी ज्वर और शूलको नष्टकरनेवाली है, वीर्यमें गरम है, मीठी और भारी है। कंभारीका फूल वातको उपजाता है, मलको बांधता है रक्तपित्तको और प्रदरको हरनेवाला है॥ ५१॥

फलं रसायनं केश्यं बृंहणं शुक्रलं गुरु।
वातपित्तक्षयतृषारक्तशूलविबन्धनुत॥ ५२॥

कंभारीका फल रसायन है, बालोंको बढाता है, शरीरको पुष्ट करता है, वीर्यको बढाता है, भारी है और वात, पित्त, क्षय, तृषा, रक्तविकार, शूल तथा विबन्ध इनका नाश करता है। इसके वृक्ष पीपलके समान होते हैं, छिलका मोटा होता है, कालकाके नजदीक टकसाल ग्राममें इसको घमारका वृक्ष कहते हैं यह कौशिल्या नदीके किनारेके पहाडोंमें अधिकतासे होता है॥ ५२॥

श्योनाक (टेंटू) नामगुणाः।

श्योनाकः पृथुशिम्बिः स्याच्छुकनासः कुटन्नटः॥ ५३॥
भूतवृक्षश्च कट्वङ्गष्टुण्टुकः शल्लकोऽरलुः।
मयूरजङ्घो भल्लूकः प्रियजीवः कटम्भरः॥ ५४॥

श्योनाक, पृथुशिम्बि, शुकनास, कुटन्नट, भूतवृक्ष, कट्वंग, टुण्टुक, शल्लक, अरलु, मयूरजंघ, भल्लूक, प्रियजीव, कटम्भर ये नाम शोनापाठाके हैं॥५३॥५४॥

श्योनाको दीपनः पाके कटुस्तुवरको हिमः।
ग्राही तिक्तोऽनिलश्लेष्मपित्तकासविनाशनः॥ ५५॥

शोनापाठा दीपन है पाकमें चर्परा है, कषैला और शीतल है मलको बान्धता है, कडुवा है और वात, कफ, पित्त तथा खांसीको नाशता है॥ ५५॥

टुण्टुकस्य फलं बालं रूक्षं वातकफापहम् ।
हृद्यं कषायमधुरं लघु रोचनदीपनम् ॥ ५६ ॥

शोनापाठाका कोमल फल रूखा है, वात कफको नाशता हैं, हृद्य है, कषैला, मीठा और हलका है, रोचन और दीपन है । टकसालमें इसको टाटमडंगा कहते हैं उसमें तलवारके समान बडी फली लगती है ॥ ५६ ॥

महत्पञ्चमूलगुणाः ।

बिल्वादिभिः पञ्चभिरेभिरेतत्स्यात्पञ्चमूलं महदग्निकारि ।
लघूष्णतिक्तं रसतः कषायं मेदःकफश्वाससमीरहारि ॥५७॥

बिल्व, अरनी, पाटला, कभारी और श्योनाक इन पांचोंको मिलानेसे बृहत्पञ्चमूल होता है । यह अग्निको बढाता है । तथा हलका गर्म कडुआ और कषैला है । मेद कफ श्वास और वात इनको हरता है ॥ ५७ ॥

गोक्षुरनामगुणाः ।

त्रिकण्टकः कण्टफलो गोक्षुरः स्वादुकण्टकः ।
गोकण्टको भक्ष्यटकस्त्रिकण्टो व्यालदंष्ट्रकः ॥
श्वदंष्ट्रा स्थूलशृङ्गाटः षडङ्गः क्षुरकस्त्रिकः ॥ ५८ ॥

त्रिकण्टक, कण्टफल, गोक्षुर, स्वादुकण्टक, गोकण्टक, भक्ष्यटक त्रिकण्ट, व्यालदंष्ट्रक, श्वदंष्ट्रा, स्थूलशृङ्गाट, षडङ्ग, क्षुरक, त्रिक ये नाम गोखरूके हैं ॥ ५८ ॥

गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृद्वस्तिशोधनः ॥ ५९ ॥
प्रमेहश्वासकासास्रकृच्छ्रहृद्रोगवातजित् ॥ ६० ॥

गोखरू शीतल और स्वादिष्ठ है, बलको करता है तथा वस्तिको शोधता है. प्रमेह, श्वास, खांसी रक्तपित्त, हृद्रोग और वात इनको जीतताहै । अंबालेके जिलेमें बहुत होते हैं, किसानलोग इनको भाखडा या भौंखडा कहते हैं, इसके प्रसर जमीनपर सूखजानेसे इसके फल जमीनमें गिरजाते हैं फल कांटेदार होते हैं । गरीबोंके नंगे पावोंमें चुभजाते हैं हस्तचिंवाड या गोखरू नामसे सबजगह मिल सकते हैं ॥ ५९ ॥ ६० ॥

शालपर्णीनामगुणाः ।

शालपर्णी ध्रुवा सौम्या त्रिपर्णी पीतनी स्थिरा ।
विदारिगन्धाऽतिगुहा दीर्घमूलांशुमत्यपि ॥ ६१ ॥

शालपर्णी, ध्रुवा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीतनी, स्थिरा, विदारिगन्धा, अतिगुहा, दीर्घमूला, अंशुमती ये नाम शालपर्णीके हैं ॥ ६१ ॥

शालपर्णी गुरुश्छर्दिज्वरश्वासातिसारनुत् ।
शोषदोषत्रयहरा बृहत्युष्णा रसायनी ॥ ६२ ॥

शालपर्णी भारी है और छर्दि, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष और तीनों दोषोंको हरती है, बहुत गर्म और रसायन है ॥ ६२ ॥

पृष्ठपर्णीनामगुणाः ।

पृष्ठपर्णी क्रोष्टुपुच्छा धावनी कलशारुहा ।
शृगालवृत्ताऽहितिला पृथक्पर्णी च पर्णिका ॥ ६३ ॥

पृष्ठपर्णी, क्रोष्टुपुच्छा, धावनी, कलशारुहा, शृगालवृत्ता, अहितिला, पृथक्पर्णी, पर्णिका ये पृष्ठपर्णीके नाम हैं ॥ ६३ ॥

पृष्ठपर्णी लघुर्वृष्या मधुरोष्णा विनाशयेत् ।
रक्तातिसारतृड्दाहदोषत्रयवमिज्वरान् ॥ ६४ ॥

पृष्ठपर्णी हलकी है, आयुको बढाती है, मीठी तथा गर्म है और रक्तातिसार, तृषा, दाह, तीनों दोष छर्दि, ज्वर इनका नाश करती है, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी ये दोनों टकसालके नजदीकके पहाडोंपर अधिकतासे होती हैं इनके छोटे २ क्षुप बारहों महीने रहसकते हैं ऊपर मंजरीसी निकलती है ॥ ६४

बृहत्कण्टकीनामगुणाः ।

बृहती स्थूलभण्टाकी विषदा च मदोत्कटा ।
वृन्ताकी महती सिंही कण्टकी राष्ट्रकाकुली ॥ ६५ ॥

बृहती, स्थूलभंटाकी, विषदा, मदोत्कटा, वृन्ताकी, महती, सिंही, कण्टकी, राष्ट्रकाकुली, ये बृहती, बडी कटेलीके नाम हैं ॥ ६५ ॥

बृहती ग्राहिणी हृद्या पाचनी कफवातजित् ।
उष्णा कुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमान्द्यजित ॥ ६६ ॥

बडी कटेली मलको बांधती है, हृदयको हितकारी और पाचनी है. कफ वातको जीतती है, गर्म है और कुष्ठ, ज्वर, श्वास, शूल, खांसी, मंदाग्नि इनको जीतती है, इसके पेड बैंगनके पेडके समान होते हैं, गोल फल होते हैं, पकनेपर पीले होजाते हैं, प्रायः सबजगह सुलभ है ॥ ६६ ॥

कण्टकारीश्वेतकण्टकारीनामगुणाः ।

कण्टारिका कण्टकिनी कण्टकारी निदग्धिका ।
दुःस्पर्शा धावनी क्षुद्रा स्याद् व्याघ्री दुष्प्रदर्शिनी ॥
सिता क्षुद्रा चन्द्रहासा लक्ष्मणा स्वेददूतिका ॥ ६७ ॥

कण्टारिका, कण्टकिनी, कण्टकारी, निदग्धिका, दुःस्पर्शा, धावनी, क्षुद्रा, व्याघ्री दुष्प्रदर्शिनी, सिता, क्षुद्रा, चन्द्रहासा, लक्ष्मणा, स्वेददूतिका ये कटेलीके और सफेद कटेलीके नाम हैं, कटेली छकमहोली, छवकमहोली इन नामोंसे प्रसिद्ध है॥ ६७

कण्टकारी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः ॥ ६८ ॥

कटेली सारक, कडुवी, चर्परी, दीपनी और हलकी है ॥ ६८ ॥

रूक्षोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान् ॥ ६९ ॥
निहन्ति पीनसं पार्श्वपीडाकृच्छ्रहृदामयान् ।
तद्वत्प्रोक्ता सिता क्षुद्रा विशेषाद्गर्भकारिणी ॥ ७० ॥

यह रूखी, गर्म और पाचनी तथा खांसी, श्वास, ज्वर, कफ, वात, पीनस पसलीके शूल, मूत्रकृच्छ्र और हृद्रोग इनको नाश करती है. सफेद कटेलीकेभी येही गुण हैं परंतु विशेषकरके गर्भको करती है, इसमें सफेद फल आते हैं, इसको घरमें रखना महापुण्य है. नीच जातिकी छाया पडनेसे नष्ट होजाती है, रुद्रयामल-तंत्रमें इसकी बडी प्रशंसा की है ॥ ५९ ॥ ७० ॥

लघुपञ्चमूलगुणाः ।

ह्रस्वाख्यं पञ्चमूलं स्यात्पञ्चभिर्गोक्षुरादिभिः ।
बल्यं पित्तानिलहरं नात्युष्णं स्वादु बृंहणम् ॥ ७१ ॥

गोखरू, शरिवन, पिठवन दोनों कटेली इन पांचोंके मिलानेसे लघुपंचमूल कहाता है । यह बलको करता है, पित्त और वायुको हरता है. अधिक गर्म नहीं है, स्वादु है और वीर्यको बढानेवाला है ॥ ७१ ॥

दशमूलगुणाः ।

एताभ्यां पञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ।
दोषत्रयश्वासकासशिरःपीडापतन्त्रकान् ॥ ७२ ॥
तन्द्रास्वेदज्वरानाहारुचिपार्श्वरुजो जयेत् ॥ ७३ ॥

इन दोनों पञ्चमूलोंको मिलानेसे दशमूल कहाजाता है । यह दशमूल त्रिदोष, श्वास, खांसी, शिरकी पीडा, अपतंत्रक, वात, तन्द्रा, पसीना, ज्वर, अफारा, अरुचि और पसलीका शूल इनको जीतता है । इनका अर्क प्रसूताकी बीमारियोंमें अधिक गुणकारी है ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

ऋद्धिवृद्धिनामगुणाः ।

ऋद्धिः सुखंयुगं लक्ष्मीः सिद्धिः सर्वजनप्रिया ।
ऋषिसृष्टा रथाङ्गं स्यान्माङ्गल्यं श्रावणी वसुः ॥ ७४ ॥
योग्यं युग्या तुष्टिराशिर्वृद्धिरप्येतदाह्वया ।
ऋद्धिर्बलया त्रिदोषघ्नी शुक्रला मधुरा गुरुः ॥ ७५ ॥

ऋद्धि, सुखंयुग, लक्ष्मी, सिद्धि, सर्वजनप्रिया, ऋषिसृष्टा, रथांग, मांगल्य, श्रावणी, वसु, योग्य, युग्या, तुष्टिराशि, यह ऋद्धिके और वृद्धिके नाम हैं । ऋद्धि बलको करती है, त्रिदोषको नाश करती है, वीर्यको बढाती है तथा मीठी और भारी है ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

वृद्धिर्गर्भप्रदा शीता वृष्या कासक्षयास्रनुत ॥ ७६ ॥

वृद्धि गर्भप्रद है,शीतल है,आयुको बढाती है और खांसी, क्षय,रक्तविकार इनको नाश करती है, इन दोनोंके अभावमें वाराही कंद डालना चाहिये ॥ ७६ ॥

काकोलीक्षीरकाकोलीनामगुणाः ।

काकोली मधुरा वीरा कायस्था क्षीरशुक्लिका ।
ध्वांक्षोली वायसोली स्यात्स्वादुमांसी पयस्विनी ॥ ७७ ॥

काकोली, मधुरा, वीरा, कायस्था, क्षीरशुक्लिका, ध्वांक्षोली, वायसोली, स्वादुमांसी, पयस्विनी ये काकोलीके नाम हैं ॥ ७७ ॥

द्वितीया क्षीरकाकोली सुराह्वा क्षीरिणी मता ।
पीवरः सहशस्कन्धः सक्षीरः ससुगन्धकः ।
क्षीरकाकोलिका ख्यातः पित्तदोषज्वरापहः ॥ ७८ ॥

क्षीर काकोली, सुराह्वा, क्षीरिणी, पीवर, सहशस्कन्ध, सक्षीर ससुगन्धक क्षीरकाकोलिका ये क्षीरकाकोलीके नाम हैं । यह पित्तदोष और ज्वरको दूर करनेवाली है ॥ ७८ ॥

काकोलीयुगलं शीतं शुक्रलं मधुरं गुरु ।
जयेत्समीरदाहास्रपित्तशोषतृषाज्वरान् ॥ ७९ ॥

दोनों काकोली शीतल हैं, वीर्यको देती हैं, मीठी और भारी हैं तथा वात, दाह, रक्तपित्त, शोष, तृषा, ज्वर इनका नाश करती हैं, इनके न मिलनेपर असगन्ध डालना चाहिये ॥ ७९ ॥

मेदामहामेदानामगुणाः ।

मेदा ज्ञेया शालपर्णी वृष्या मेदोभवा धरा ।
महामेदा वसुच्छिद्रा त्रिदन्ता दैवतामणिः ॥ ८० ॥

मेदा, शालपर्णी, वृष्या, मेदोभवा, धरा ये मेदाके नाम हैं । महामेदा, वसुच्छिद्रा, त्रिदन्ता, दैवतामणि ये नाम महामेदाके हैं ॥ ८० ॥

मेदायुगं गुरु स्वादु वृष्यं स्तन्यकफापहम् ।
बृंहणं शीतलं रक्तं पित्तक्षयसमीरनुत् ॥ ८१ ॥

दोनों मेदा भारी हैं, स्वादु हैं आयुको बढ़ाती हैं, स्तनोंके रोगोंको दूर करती हैं, कफको नाश करती हैं, वीर्यको बढाती हैं, शीतल हैं और रक्तपित्त, क्षय, वात, इनका नाश करती हैं, इनके अभावमें शतावर लेना चाहिये ॥ ८१ ॥

जीवकर्षभकनामगुणाः ।

जीवको मधुरः शृङ्गी ह्रस्वाङ्गः कूर्चशीर्षकः ।
ऋषभो वीर इन्द्राक्षो विषाणी दुर्द्धरो वृषः ॥ ८२ ॥

जीवक, मधुर, शृङ्गी, ह्रस्वाङ्ग, कूर्चशीर्षक ये जीवकके नाम हैं, ऋषभ, वीर, इन्द्राक्ष, विषाणी, दुर्धर, वृष ये ऋषभकके नाम हैं ॥ ८२ ॥

जीवकर्षभकौ बल्यौ शीतौ शुक्रकफप्रदौ ।
हरतः पित्तदाहास्रकासवातक्षयामयान् ॥ ८३ ॥

ये दोनों बलको करती हैं, शीतल हैं, वीर्यको और कफको बढाती हैं और पित्त, दाह, खांसी, वात, क्षय इन रोगोंका नाश करती हैं, इनके न मिलनेपर विदारीकन्द डालना चाहिये ॥ ८३ ॥

अष्टवर्गनामगुणाः ।

अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैरेतैः शीतोऽतिशुक्रलः ।
बृंहणः पित्तदाहास्रशोषघ्नः स्तन्यगर्भकृत् ॥ ८४ ॥

ऋद्धि आदि आठ औषधियोंको मिलानेसे अष्टवर्ग होता है । यह अष्टवर्ग शीतल और अत्यन्त वीर्यप्रद है, आयुको बढाता है तथा

पित्त, दाह, रक्त शोष इनको नाश करता है, दूधको पैदा करता है और गर्भको करनेवाला है ॥ ८४ ॥

जीवन्तीनामगुणाः ।

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया यशस्करी ।
शाकश्रेष्ठा जीवभद्रा माङ्गल्या जीववर्द्धनी ॥ ८५ ॥

जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, यशस्करी, शाकश्रेष्ठा, जीवभद्रा, मांगल्या, जीववर्द्धनी ये जीवन्तीके नाम हैं ॥ ८५ ॥

जीवन्ती शीतला स्वादुः स्निग्धा दोषत्रयापहा ।
रसायनी बलकरी चक्षुष्या ग्राहिणी लघुः ॥ ८६ ॥

जीवन्ती शीतल है, स्वादु, चिकनी, त्रिदोषका नाश करनेवाली, रसायनी और बल बढानेवाली है । यह नेत्रोंको हित है, मलको बांधती है और हलकी है । जीवन्ती दो तीन प्रकारकी होती है, इसकी छोटी २ बेल होती हैं उनमें पीले रंगके फूल आते हैं, इसको तर्कारी भी कहते हैं ॥ ८६ ॥

मधुयष्टीनामगुणाः ।

मधुयष्टी क्लीतनकं यष्टीमधु मधूलिका ।
यष्टयाह्वं मधुकं यष्टिमधूकं जलजा मधुः ।
मधुयष्टी गुरुः शीता बल्या तृट्छर्दिपित्तजित् ॥ ८७ ॥

मधुयष्टी, क्लीतनक, यष्टीमधु, मधूलिका, यष्टयाह्व, मधूक, यष्टिमधूक, जलजा, मधु ये मुलहटीके नाम हैं । मुलहटी भारी, शीतल, बलको बढानेवाली और तृषा, छर्दि पित्त इनको नाश करती है । मुलहटीके नामसे सर्वत्र सुलभ है ॥ ८७ ॥

माषपर्णीमुद्गपर्णीनामगुणाः ।

माषपर्णी कृष्णवृन्ता काम्बोजी हयपुच्छिका ।
मांसमाषा सिंहमुखी स्वादुमाषा महासहा ॥ ८८ ॥

माषकर्णी, कृष्णवृन्ता, काम्बोजी हयपुच्छिका, मांसमाषा, सिंहमुखी, स्वादुमाषा, महासहा, ये नाम माषपर्णीके हैं ॥ ८८ ॥

मुद्गपर्णी क्षुद्रसहा सूर्यपर्णी कुरङ्गिणी ।
वनजा रिङ्गिणी शिम्बी सिंही मार्जारगन्धिका ॥ ८९ ॥

मुद्गपर्णी, क्षुद्रसहा, सूर्यपर्णी, कुरङ्गिणी, वनजा, रिङ्गिणी, शिम्बी, सिंही, मार्जार- गन्धिका ये नाम मूंगपर्णीके हैं । माषपर्णीको जंगली उडदभी कहते हैं । माषपर्णी

बिलकुल उडद (माष) के क्षुपके समान ही होती है, ऐसेही मुद्गपर्णी भी मुद्ग (मूग) के आकारका क्षुप होता है, यह जंगलमें वर्षातकी मौसममें स्वयं उत्पन्न होती है जो माषपर्णी और मुद्गपर्णी ठंढे पहाडोंपर होती है उसकी जड मूलीके समान सफेद और विदारीकन्दके समान मीठी होती है ॥ ८९ ॥

माषपर्णी हिमा तिक्ता रूक्षा शुक्रबलासकृत् ।
मधुरा ग्राहिणी शोषवातपित्तज्वरास्रनुत् ।
तद्वद्भवेन्मुद्गपर्णी तृड्दोषार्शोहरा लघुः ॥ ९० ॥

माषपर्णी शीतल, कडुवी, रूखी, वीर्यको पैदा करती है और कफकारक है, मीठी है, मलको बांधती है और शोष, वात, पित्त, पित्तज्वर, रक्तविकार इनको दूर करती है । इन्हीं गुणोंवाली मूंगपर्णी है, तृषादोष और बवासीरको हरती है और हलकी है ॥ ९० ॥

जीवनीयगणनामगुणाः ।

जीवन्ती सूपपर्णीयुक् काकोल्यौ जीवकर्षभौ ।
मेदे यष्टीति मधुरो जीवनीयगणो गुरुः ॥ ९१ ॥
शुक्रकृद् बृंहणः शीतः स्तन्यगर्भकफप्रदः ।
रक्तपित्ततृषाशोषज्वरदाहक्षतापहः ॥ ९२ ॥

जीवन्ती, सूपपर्णी, मूंगपर्णी, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, मुलहटी ये जीवनीयगण हैं । जीवनीयगण मीठा है, भारी है, वीर्यको पैदा करता है और पुष्ट करता है, शीतल है, दूधको बढाता है, गर्भदायक है, कफवर्द्धक है और रक्तपित्त, तृषा, शोष, ज्वर, दाह, क्षत इनको नाश करता है ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

एरण्डरक्तैरण्डनामगुणाः ।

एरण्डो दीर्घदण्डः स्यात्तरुणो वर्द्धमानकः ।
चित्रः पञ्चाङ्गुलो व्याघ्रपुच्छो गन्धर्वहस्तकः ॥ ९३ ॥

एरण्ड, दीर्घदण्ड, तरुण, वर्द्धमानक, चित्र, पञ्चांगुल, व्याघ्रपुच्छ, गन्धर्वहस्तक ये नाम अरंडके हैं ॥ ९३ ॥

रक्तैरण्डो हस्तिकर्णो व्याघ्रो व्याघ्रतरो लघुः ।
उत्तानपत्र उरबुर्वातवैरी च चुञ्चुला ॥ ९४ ॥

रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रतर, लघु, उत्तानपत्र, उरबु, वातवैरी और चुञ्चुला यह नाम एरण्डके हैं ॥ ९४ ॥

एरण्डयुग्मं मधुरमुष्णं गुरु विनाशयेत् ।
शूलशोफकटीबस्तिशिरःपीडोदरज्वरान् ॥ ९५ ॥
ब्रध्नश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ।
तत्फलं भेदनं स्वादु क्षारमुष्णं समीरजित् ॥ ९६ ॥

दोनों एरण्ड मीठे हैं, गर्म हैं, भारी हैं और शूल, शोजा, कटिपीडा, उदररोग ज्वर, ब्रध्न (वध) श्वास, कफ, अफारा, खांसी, कुष्ठ, आमवात इनको नाश करता है, सब एरण्डोंके फल भेदन हैं, स्वादु हैं, खारी हैं, गर्म हैं और वातको जीतते हैं । एरण्ड सर्वत्र सुलभ है, इसके बीजोंका तेल निकलता है, वह प्रायः विरेचनार्थ दियाजाता है, इसी तेलको डाक्डर लोग 'कैष्ट्रायल' कहते हैं॥९५॥९६॥

श्वेतशारिवाकृष्णशारिवागुणाः ।

शारिवा शारदाऽऽस्फोता गोपकन्या प्रतानिका ।
गोपाङ्गना गोपवल्ली लताह्वा काष्ठशारिवा ॥ ९७ ॥

शारिवा, शारदा, आस्फोता, गोपकन्या, प्रतानिका, गोपांगना, गोपवल्ली, लताह्वा, काष्ठशारिवा ये नाम (काष्ठशारिवा) श्वेतशारिवाके हैं ॥ ९७ ॥

शारिवाऽऽन्या कृष्णमूली भद्रचन्दनशारीवा ।
भद्रा चन्दनगोपा च चन्दना कृष्णवल्ल्यपि ॥ ९८ ॥

दूसरे प्रकारका शारिवा, कृष्णमूली, भद्रचन्दनशारिवा, भद्रा, चंदनगोपा, चन्दना, कृष्णवल्ली ये नाम कृष्णशारिवाके हैं, " इसीको गोरीसर, साऊ, गौरैया, कालीसर " भी कहते हैं ॥ ९८ ॥

शारिवायुगलं स्वादुली स्निग्धं शुक्रकरं गुरु ।
अग्निमान्द्यारुचिश्वासवामिकासतृषापहम् ।
दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् ॥ ९९ ॥

दोनों शारिवा स्वादु हैं, चिकनी हैं, वीर्यको करती हैं, भारी हैं और मन्दाग्नि, अरुचि, श्वास, छर्दि, खांसी, विष, त्रिदोष, रक्त, पैर, ज्वर, अतिसार इनको नाश करती हैं । दोनों शारिवाओंकी बेलें होती हैं, इनके पत्ते जामुनके पत्रसमान

होते हैं, तोडनेसे दूध निकलता है, बेलमें दो जुडेहुए सींगसे लगते हैं जब वे सूख जाते हैं, उनमेंसे आक या सींबलकी रुईके समान रुईसी उडती है। शिमला प्रांतमें इसकी बेल अधिक होती हैं, इसके पत्रोंकी बालकोंको नस्य (नसवार) भी देते हैं। पहाडीलोग इसको दूधलीकी बेल कहते हैं इसको बैलोंके चारेमें भी लाते हैं ९९ ॥

यवासधन्वयासनामगुणाः ।

यासो मरुद्भवोऽनन्तो दीर्घमूलो यवासकः ।
बालपत्रः समुद्रान्तो दूरमूलोऽतिकण्टकः ॥ १०० ॥
धन्वयासस्ताम्रमूली दुःस्पर्शा स्याद्दुरालभा ।
यासकः कच्छुरा ताम्रमली धन्वयवासकः ॥ १०१ ॥

यास, मरुद्भव, अनन्त, दीर्घमूल, यवासक, बालपत्र, समुद्रान्त, दूरमूल, अतिकण्टक, धन्वयास, ताम्रमूली, दुःस्पर्शा, दुरालभा ये नाम जवासाके हैं. यासक कच्छुरा ताम्रमूली, धन्वयवासक ये नाम धमासाके हैं ॥ १०० ॥ १०१ ॥

यासः स्वादुरसस्तिक्तो हिमः पित्तहरो लघुः ।
हंति रक्तकफभ्रान्तीस्तद्वद्धन्वयवासकः ॥ २ ॥

जवासा स्वादु और रसवाला है, कडुवा है, शीतल है, पित्तको हरता है. हलका है और रक्त, कफ, भ्रम इनको हरता है और धमासामेंभी येही गुण हैं। जवासा धमासा अंबालेके जिलेमें बहुतही होता है। इसके छोटे २ पेड खेतोंमें अपने आप पैदा होते हैं इसकी सब टहनियोंमें कांटे होते हैं। कांटे और टहनी दोनों पत्रोंके समान हरे होते हैं, किसानलोग इसको झांहां झांसा कहते हैं, गर्मीमें खशकी समान इसकीभी टट्टियें बनाई जाती हैं। अंबाले जिलेमें इसको आम लोग जानते हैं ॥ २ ॥

मुण्डीनामगुणाः ।

मुण्डी भिक्षुः परिव्राजी पावनी स्यात्तपोधना ।
श्रावणी श्रीमती मुण्डी तिक्ता श्रावणशीर्षका ॥ ३ ॥

मुण्डी, भिक्षु, परिव्राजी, पावनी, तपोधना, श्रावणी, श्रीमती, मुण्डी, तिक्ता श्रावणशीर्षका ये नाम मुण्डीके हैं ॥ ३ ॥

मुण्डी तिक्ता कटुः पाके वीर्ये च मधुरा लघुः ।
मेध्या गण्डापचीकृच्छ्रकृमियोन्यर्तिपाण्डुजित् ॥ ४ ॥

मुण्डी कडुवी है, पाकमें चर्परी है, वीर्यमें मधुर है, हलकी है, बुद्धिको बढाती है और गलगण्ड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, योनिरोग, पाण्डु इनको जीतती है ॥ ४ ॥

महामुण्डीभूमिकदम्बनामगुणाः ।

महामुण्डी लोभनीया छिन्नग्रन्थिनिका स्मृता ।
भूतवृक्षःकुलहलो लम्बुशालूः कदम्बकः ।
कदम्बपुष्पमुण्डीवद्गुणैर्भूमिकदम्बकः ॥ ५ ॥

महामुंडी, लोभनीया, छिन्नग्रंथिनिका ये नाम महामुंडीके हैं । भूतवृक्ष, कुलहल, लम्बुशालू, कदम्बक ये नाम भूमिकदंबके हैं । गुणोंकरके भूमिकदंब, कदंबका फूल और मुंडी सब समान हैं । मुंडी, गोरखमुंडी, मुंडली, मुंदली इस नामसे सब जगह मिलती है । अंबालेके जिलेमें रानीके रायपुरमें हमने बहुत देखी है ॥ ५ ॥

अपामार्गनामगुणाः ।

अपामार्गस्तु शिखरी किणही खरमञ्जरी ।
अधःशल्यः शैखरिकः प्रत्यक्पुष्पी मयूरका ॥ ६ ॥

अपामार्ग, शिखरी, किणही, खरमंजरी, अधःशल्य, शैखरिक, प्रत्यक्पुष्पी, मयूरका ये नाम ऊंगा (अपामार्ग) के हैं ॥ ६ ॥

अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनः कफवातजित् ।
निहन्ति दद्रुसिध्मार्शःकण्डुशूलोदरारुचीः ॥ ७ ॥

ऊंगा सारक है, तेज है, दीपन है, कफ वातको जीतता है और दाद, सिध्म (छींम), बवासीर, खाज, शूल, उदररोग, अरुचि इनको नाश करता है ॥ ७ ॥

रक्तापामार्गनामगुणाः ।

अन्यो रक्तो वृन्तफलो वशिरः कपिपिप्पली ।
अपामार्गोऽरुणो वातविष्टम्भी कफनाशनः ।
ऊनः पूर्वगुणै रूक्षस्तत्पत्रं रक्तपित्तनुत् ॥ ८ ॥

रक्तापामार्ग, वृंतफल, वशिर, कपिपिप्पली ये नाम लाल ऊंगा (अपामार्ग) के हैं । लाल ऊंगा वात और विष्टंभको करता है और कफको नाशता है । ऊंगाके

गुणोंसे इसमें कम गुण हैं, यह रूखा है, लाल ऊंगाका पत्ता रक्तपित्तको नाश करता है। ऊंगा, वांगा, मांगा, आधाझारा, पुठकंडा पुठखंडा, अपामार्ग, इन नामोंसे सर्वत्र सुलभ है। प्रायः सब देशोंमें होता है, हमने बंबई, पेशावर, काशी, सिमला आदि सर्वस्थानोंमें देखा है और इनही नामोंसे सुना है ॥ ८ ॥

काम्पिल्यनामगुणाः ।

काम्पिल्यो रेचनो रक्तचूर्णको व्रणशोधनः ।
लोहितो रक्तशमनो रेची रञ्जनको मतः ॥ ९ ॥

काम्पिल्य, रेचन, रक्तचूर्णक, व्रणशोधन, लोहित, रक्तशमन, रेची, रञ्जनक ये नाम कमीलाके हैं ॥ ९ ॥

काम्पिल्या कफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान् ।
हन्ति रेची कटूष्णं च तच्छाकं ग्राहि शीतलम् ॥ ११० ॥

कमीला कफ, रक्तपित्त, कृमि, गुल्म, उदररोग, घाव इन्हीको नाशता है, जुलाब लगाता है, चर्परा है, गर्म है, कमीलाका शाक मलको बांधता है और शीतल है। पहले रोज थोडा गुड खिलाकर दूसरे रोज कमीलेको दहीमें मिलाकर पिलानेसे पेटके और मलाशयके कृमि दस्तद्वारा निकल जाते हैं। इसके वृक्ष शिमला प्रांतमें अधिक होते हैं, इसके फलोंपर लाल रंगका चूर्णसा लगा रहता है उसीको कमीला या कबीला कहते हैं। पहाडीलोग इसके वृक्षको कामल कहते हैं, इसके पत्ते गौ भैंसोंकोभी खिलाते हैं ॥ ११० ॥

दन्तीनामगुणाः ।

दन्ती गुणप्रिया नागदन्ती शीघ्रानुकूलकः ।
उपचित्राऽनुकुम्भी स्याद्विशल्योदुम्बरच्छदा ॥ ११ ॥
आखुपर्णी वृषैरण्डा द्रवन्ती सर्वरी मता ।
मूषकाह्वा सुतश्रेणी प्रत्यक्श्रेणी च फञ्जिका ॥ १२ ॥

दन्ती, गुणप्रिया, नागदंती, शीघ्रानुकूलक, उपचित्रा, अनुकुम्भी, विशल्या, उदुम्बरच्छदा, आखुपर्णी, वृषैरंडा, द्रवन्ती, सर्वरी, मूषकाह्वा, सुतश्रेणी, प्रत्यक्श्रेणी और फञ्जिका ये नाम दोनों तरहके जमालगोटेकी जडके हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

दन्तीद्वयं सरं पाकरसयोः कटु दीपनम् ।
तीक्ष्णोष्णं हन्ति पित्तासृक्कफशोफोदरान्क्रमीन् ॥ १३ ॥

दोनों प्रकारकी दंती सारक हैं, पाकमें और रसमें चर्परी हैं, दीपन हैं, गर्म हैं और पित्त, रक्त, कफ, शोजा, उदररोग, कृमि इनको नाश करती हैं । दंती जमालगोटेकी जडको कहते हैं । जमालगोटा प्रसिद्ध है इसके दो भेद हैं एक बडा एक छोटा । छोटा जमालगोटा दक्षिण देशमें अधिक होता है । इसके गूलरके पत्रके पत्र होते हैं । इसके फल जमालगोटेके नामसे सब देशमें मिलते हैं । बडा जमालगोटा एरंडकेसे पत्रोंवाला होता है इसके बीजभी एरंडके बीजकेसे होते हैं । कालकाके समीप टकसालमें इसको बुलबुला कहते हैं इसके फलोंसे लडके खेलते हैं । इसके दूधके हवामें बुलबुले उड़ाते हैं । इसकी जड उत्तम दंती होती है, इसका दूधभी थोहरके दूध समान दस्तावर है ॥१ ३ ॥

जयपालनामगुणाः ।

जयपालो दन्तिबीजं ख्यातं तत्तित्तिरीफलम् ।
जयपालो गुरुः स्निग्धो रेची पित्तकफापहः ॥ १४ ॥

जयपाल, दन्तिबीज, तित्तिरीफल ये नाम जमालगोटेके हैं । जमालगोटा भारी है, चिकना है, जुलाब लगाता है पित्तको और कफको नाश करता है । बडा जमालगोटा तीक्ष्णतामें इससे न्यून है दोनों किस्मके जमालगोटे विना शोधन किये बेयुक्ति देनेसे विषकी समान हानि कारक हैं। युक्तिसे अमृतके समानके गुणकारक हैं ॥ १४ ॥

श्वेतत्रिवृन्नामगुणाः ।

त्रिवृत्कुम्भोऽरुणा त्र्यस्रभण्डी कूटरवाहिनी ।
सर्वानुभूतिस्त्रिवृता त्रिपुटा सरला सिता ॥ १५ ॥

त्रिवृत्, कुम्भ, अरुणा, त्र्यस्रभंडी, कूटरवाहिनी, सर्वानुभूति, त्रिवृता, त्रिपुटा, सरला, सिता ये नाम सफेद निशोतके हैं ॥ १५ ॥

त्रिवृत्तिक्ता सरा रूक्षा स्वादुरुष्णा समीरकृत् ।
कटुः पाके ज्वरश्लेष्मपित्तशोफोदरापहा ॥ १६ ॥

सफेद निशोत कडुवी है, सर है, स्वादु है, रूखी है, गर्म है, वातको जीतती है,

पाकमें चर्परी है और ज्वर, कफ, पित्त, शोजा, उदररोग इनको जीतती है, रेचन करानेमें इसकी जड़का चूर्ण प्रयोग किया जाता है ॥ १६ ॥

कृष्णत्रिवृन्नामगुणाः ।

त्रिवृत्काला कालमेषी कालपर्ण्यर्द्धचन्द्रिका ।
सुखेना स्यान्मालविका मसूर विदलान्विता ॥ १७ ॥

त्रिवृत्काला, कालमेषी, कालपर्णी, अर्धचन्द्रिका, सुखेना, मालविका, मसूरा, विदेला ये काली निशोतके नाम हैं ॥ १७ ॥

त्रिवृत्काला हीनगुणा तस्यास्तीव्रविरेचिनी ।
मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिवान्तिकर्षणकारिणी ॥ १८ ॥

कालीनिशोत सफेद निशोतसे कमगुणोंवाली है परन्तु जुलाब तेज लगाती है और मूर्च्छा, दाह, मद, भ्रम, छर्दि, इनको दूर करती है । दोनों प्रकारके निशोथकी बेलें जंगलमें होती हैं, फल गोल २ होते हैं, पत्ते नोकदार गोलसे होते हैं, तिखी, तुर्वत, निशोथ, निसोत, त्रिवृत, इन नामोंसे सब जगह मिलसकती है ॥ १८ ॥

इन्द्रवारुणीनामगुणाः ।

इन्द्रवारुण्यथेन्द्राह्वं वृषभाक्षी गवादिनी ।
ऐन्द्रवारुः क्षुद्रफला विशालैन्द्री वृषादिनी ॥ १९ ॥

इन्द्रवारुणी, इन्द्राह्व, वृषभाक्षी, गवादिनी, ऐंद्रवारु, क्षुद्रफला, विशाला, ऐंद्री, वृषादिनी ये नाम इंद्रायणके हैं ॥ १९ ॥

अन्येन्द्रवारुणी ।

अन्येन्द्रवारुणी चित्रफला चित्रमहाफला ।
आत्मरक्षा नागदन्ती त्रपुषी गजचिर्भटी ॥ २० ॥
श्वेतपुष्पी मृगाक्षी च तथा पक्षसुरा मता ।
मरुद्भवा कृमिगुहा चित्रदेवी च कीर्तिता ॥ २१ ॥

अन्येन्द्रवारुणी, चित्रफला, चित्रमहाफला, आत्मरक्षा, नागदन्ती, त्रपुषी, गजचिर्भटी, श्वेतपुष्पी, मृगाक्षी, पक्षसुरा, मरुद्भवा, कृमिगुहा, चित्रदेवी ये नाम दूसरी इंद्रायणके हैं ॥ १२०-१२१ ॥

ऐन्द्रवारुद्वयं तिक्तं कटु पाके सरं लघु ।
वीर्योष्णं कामलापित्तकफप्लीहोदरापहम् ॥ २२ ॥

दोनों इंद्रायन कडुवी हैं, पाकमें चर्परी हैं, दस्तावर हैं, हलकी हैं, वीर्यमें गरम हैं और कामला, पित्त, कफ, तिल्लीरोग इन्होंको नाशती हैं इसके फलका गूदा अथवा जड जुल्लाबके लिये दिये जाते हैं, इन्द्रायणकी बेल खीरेकी बेलसे कुछ २ मिली जुली होती है। इसके पीले फूल होते हैं, इसके फलोंमें अजवायनको डालकर लोग सुखाया करते हैं, वह अजवायन उदरविकारोंको दूर करती है। कहीं इसके फलको बसलुंभा, कहीं कडुवा तुंबा, फरफेंदु, गडतुंबा, हिंजल ऐसे २ नामोंसे कहते हैं, यह प्रायः सब जगह मिलसकता है ॥ २२ ॥

आरग्वधनामगुणाः ।

आरग्वधो राजवृक्षः शम्याकः कृतमालकः ।
व्याधिघातः कर्णिकारः प्रग्रहश्चतुरङ्गुलः ॥ २३ ॥
अरोग्यशिम्बी स्वर्णाटः कर्णो दीर्घफलो मतः ।
कुण्डली हिमपुष्पा च कलिख्यातो नृपद्रुमः ॥ २४ ॥
स्वर्णशेफालिका इयावा कुष्ठसूदननाम तत् ।
स्वर्णस्थालपा पित्तला च सुवर्णद्रुम ईरितः ॥ २५ ॥

आरग्वध, राजवृक्ष, शम्याक, कृतमालक, व्याधिघात, कर्णिकार, प्रग्रह, चतुरंगुल, आरोग्यशिंबी, स्वर्णाट, कर्ण, दीर्घफल, कुण्डली, हिमपुष्पा, कलिख्यात, नृपद्रुम, स्वर्णशेफालिका, इयावा, कुष्ठसूदन, स्वर्णस्थालपा, पित्तला, सुवर्णद्रुम ये नाम अमलतासके हैं ॥ २३-२५ ॥

आरग्वधो गुरुः स्वादुः शीतलो मृदुरेचनः ।
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलजित् ॥ २६ ॥

अमलतास भारी है, स्वादु है, शीतल है, मृदुविरेचनकारक है और ज्वर, हृद्रोग, रक्तपित्त, वात, उदावर्त, शूल, इन्होंको जीतनेवाला है ॥ २६ ॥

तत्पुष्पं वातलं ग्राहि तिक्तं पित्तकफापहम् ।
तन्मज्जा मधुरः पाके तिक्तः पित्तसमीरजित् ॥ २७ ॥

अमलतासका फूल वातको करता है, मलको बांधता है, कडुवा है, पित्त और कफको नाशता है, अमलतासकी गिरी पाकमें मीठी है, कडुवी है और वातको जीतती है, अमलतासके वृक्ष कालकाके पहाडपर बहुत होते हैं, उस जगहके लोग इसको गुलकडी कहते हैं। इसके वृक्ष बगीचोंमें प्रायः सब जगह देखे हैं। आरग्वध,

अमलतास इन नामोंसे सर्वत्र सुलभ है। इसके फूलोंका गुलकंद उत्तम दस्तावर होता है ॥ २७ ॥

नीलिनी (कालादाना) नामगुणाः ।

नीलिनी नीलिका ग्राम्या श्रीफला भारवाहिनी ।
रञ्जनी कलिका मेला तूणी रूक्षा विशोधिनी ॥ २८ ॥

नीलिनी, नीलिका, ग्राम्या, श्रीफला, भारवाहिनी, रंजनी, कलिका, मेला, तूणा, रूक्षा, विशोधिनी ये नाम नीलिनीके हैं ॥ २८ ॥

नीलिनी रेचनी तिक्ता केश्या मोहभ्रमापहा ।
उष्णा हन्त्युदरप्लीहवातपित्तकफानिलान् ॥ २९ ॥

नीलिनी जुलाब लगाती है, कडवी है, बालोंको बढाती है, मोह और भ्रमको नाशती है, गर्म है और उदररोग, तिल्ली, वातपित्त, कफ, वात इन्होंको नाशती है । नीलिनीकी बेल होती है, इसके नीले फूल होते हैं, इसके बीज कालादाना या काहलिया'के नामसे प्रसिद्ध हैं ॥ २९ ॥

कटुकीनामगुणाः ।

कटुकी रोहिणी तिक्ता चक्राङ्गी कटुरोहिणी ।
मत्स्यपित्ता पाण्डुरुहा कृष्णभेदा द्विजाङ्गिका ॥
अशोका रोहिणी मत्स्या सुकुला सकुलादिनी ॥ १३० ॥

कटुकी, रोहिणी, तिक्ता, चक्रांगी, कटुरोहिणी, मत्स्यपित्ता, पाण्डुरुहा, कृष्णभेदा, द्विजाङ्गिका, अशोका, रोहिणी, मत्स्या, सुकुला, सकुलादिनी ये नाम कुटकीके हैं ॥ १३० ॥

कटुकी कटु पाके च तिक्ता रूक्षा सरा लघुः ।
हिमा हन्ति वमिश्वासदाहपित्तकफज्वरान् ॥ ३१ ॥

कुटकी पाकमें चरपरी है, कडुवी है, रूखी है, दस्तावर है, हलकी है, शीतल है और कृमि, श्वास, दाह, पित्त, कफ ज्वर इन्होंको नाश करती है । कुटकी ठंढे पहाडोंपर बहुत होती है । कुडकी, कड, गठियाकड इन नामोंसे सर्वत्र सुलभ है ॥ ३१ ॥

अंकोल्लकनामगुणाः ।

अङ्कोल्लकस्ताम्रफलः पीतसारो निरोचकः ।
गुप्तस्नेहो विरेची स्याद्धूषितो दीर्घकीलकः ॥ ३२ ॥

अंकोलक, ताम्रफल, पीतसार, निरोचक, गुप्तस्नेह, विरेची, भूषित, दीर्घकीलक ये नाम अंकोलकके हैं ॥ ३२ ॥

अङ्कोलकः कटुः स्निग्धस्तीक्ष्णोष्णस्तुवरो लघुः।
रेचनः कृमिशूलामशोफश्लेष्मविषापहः ॥ ३३ ॥

अंकोल चर्परा है, चिकना है, गर्म है, कषैला है, तेज है, हलका दस्त लगाता है और कृमि, शूल, आम, शोजा, कफ, विष इन्होंको नाशता है ॥ ३३ ॥

तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेष्मलं बृंहणं गुरु।
बल्यं विरेचनं वातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ ३४ ॥

अंकोलका फल शीतल है, स्वादु है, कफको करता है, पुष्टिको करता है, बलकारी है, जुलाब लगाता है और वात, पित्त, दाह, क्षय, रक्त इन्होंको जीतता है। अंकोलके वृक्ष प्रायः जंगलोंमें होते हैं पत्र लम्बे २ होते हैं, फल कच्चे नीले पककर लाल होजाते हैं। वृक्षपर कांटे भी होते हैं। इसके वृक्षको दिल्ली प्रान्तमें ढेरेका वृक्ष कहते हैं ॥ १४ ॥

सेहुंडनामगुणाः।

सेहुण्डो वज्रतुण्डस्तु गाण्डीरो वज्रकण्टकः।
स्नुही च समदुग्धोऽसिपत्रो वज्री महातरुः ॥ ३५ ॥

सेहुण्ड, वज्रतुण्ड गांडीर, वज्रकंटक, स्नुही, समदुग्ध, असिपत्र, वज्री, महातरु, ये नाम थूहरके हैं ॥ ३५ ॥

सेहुण्डो रेचनस्तीक्ष्णो दिपनः कटुको गुरुः।
शूलामाष्ठीलिकाध्मानगुल्मशोफोदरानिलान्।
हन्ति दूषीविषप्लीहकुष्ठोन्मादाश्मपाण्डुताः ॥ ३६ ॥

थूहर जुलाब लगाता है, तेज है, दीपन है, चर्परा है, भारी है और शूल, आम, अष्ठीलिका, आध्मान, गुल्म, शोजा, उदररोग, वात, दूषीविष, तिल्लीरोग, कुष्ठ, उन्माद, पथरी, पांडुरोग इन्होंको नाश करता है, यह प्रायः सब देशोंमें होता है। थोहर, डण्डाथोहर, सुरो, वज्री, सेहुण्ड इन नामोंसे सबजगह मिलसकता है, शिमला प्रांतमें इसके कोमल, नये भागका रायता बनाकर खाते हैं, वह सब रायतोंमें उत्तम होता है ॥ ३६ ॥

निम्बनामगुणाः ।

निम्बो नियमनो नेताऽरिष्टः स्यात्पारिभद्रकः ।
सुतिक्तःसर्वतोभद्रः पिचुमन्दः प्रभद्रकः ॥
कुष्ठहा देवदत्तश्च रविसन्निभसूर्यकौ ॥ ३७ ॥

निंब, नियमन, नेता, अरिष्ट, पारिभद्रक, सुतिक्त, सर्वतोभद्र, पिचुमन्द, प्रभद्रक, कुष्ठहा, देवदत्त, रविसन्निभ, सूर्यक ये नाम नीमके हैं ॥ ३७ ॥

निम्बः शीतो लघुर्ग्राही कटुपाकोऽग्निवातकृत् ॥ ३८ ॥
व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहृल्लासमेहनुत् ।
निम्बपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत् ॥ ३९ ॥

नीम्ब शीतल है, हलका है, मलको बांधता है, पाकमें चर्परा है, अग्निवर्धक और वातकारक है । घाव, पित्त, कफ, छर्दि, कुष्ठ, उबकाई, प्रमेह इन्होंको दूर करता है। नीम्बका पत्ता नेत्रोंको हितकरता है, कृमि, पित्त, विषको नष्टकरता है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

तत्फलं भेदनं स्निग्धमुष्णं कुष्ठहरं लघु ।
अपक्कं पाचयेन्निम्बः पक्कं च परिशोषयेत् ॥ ४० ॥

नींबका फल भेदन है,चिकना है, गर्म है,कुष्ठको हरता है,हलका है,नींब आमको पकाता है और पके हुएको शोषता है, नीम दिल्ली प्रांतमें सबजगह होते हैं ॥ ४० ॥

महानिंबनामगुणाः ।

महानिम्बो निम्बकरः कामुको विषमुष्टिकः ।
रम्यको गिरिकोऽद्रेकः क्षारः स्यात् केशमुष्टिकः ॥ ४१ ॥

महानिम्ब निम्बकर, कामुक, विषमुष्टिक, रम्यक, गिरिक, अद्रेक, क्षार, केशमुष्टिक ये नाम बकायनके हैं ॥ ४१ ॥

महानिम्बो हिमो रूक्षस्तिक्तो ग्राही कषायकः ।
कफपित्तकृमिच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित् ॥ ४२ ॥

बकायन शीतल है, रूखा है, कडुवा है, मलको बांधता है, कषैला है और कफ, पित्त, कृमि, छर्दि, कुष्ठ, थुकथुकी, रक्त इन्होंको जीतता है । इसके वृक्ष होते हैं बकायन या डेक नामसे प्रसिद्ध है ॥ ४२

किराततिक्तनामगुणाः ।

किराततिक्तः कैरातो भूनिम्बो रामसेनकः ।
किराततक्तोऽन्यो नैपालो नाडीतिक्तो ज्वरान्तकः ।
कण्डुतिक्तोऽर्द्धतिक्तः स्यान्निद्रारिः सन्निपातहा ॥ ४३ ॥

किराततिक्त (तिक्तक, तिक्ता), कैरात (किरात) भूनिम्ब, रामसेनक, किरातक और नैपाल, नाडीतिक्त, ज्वरान्तक, कण्डुतिक्त, अर्द्धतिक्त, निद्रारि, सन्निपातहा ये चिरायताके नाम हैं ॥ ४३ ॥

किरातो वातलो रूक्षः शीतलस्तिक्तको लघुः ।
सन्निपातज्वरश्वासकासपित्तास्रदाहनुत् ॥ ४४ ॥

चिरायता वातको करता है, रूखा है, शीतल है, कडुवा है, हलका है और सन्निपात, ज्वर, श्वास, खांसी, पित्त, रक्तविकार, दाह इन्होंको दूर करता है । चिरायता देशभेदसे हमने तीन प्रकारका देखा है । प्रायः सब जगह मिलसकता है. सिर्मौर, नैपाल, शिमला प्रांत आदि पहाडोंपर अधिक होता है ॥ ४४ ॥

कुठजनामगुणाः ।

कुटजो मल्लिकापुष्पः कलिङ्गो गिरिमल्लिका ।
वत्सकः कुटजः कोटिवृक्षकः शक्रभूरुहः ॥ ४५ ॥

कुटज, मल्लिकापुष्प, कलिङ्ग, गिरिमल्लिका, वत्सक, कुटज कोटिवृक्षक, शक्रभूरुह ये नाम कूडाके हैं ॥ ४५

कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरो लघुः ।
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ।
तत्पुष्पं वातलं शीतं तिक्तपित्तातिसारजित् ॥ ४६ ॥

कूडा चर्परा है, रूखा है, अग्निको जगाता है, कषैला है, हलका है और बवासीर, अतिसार, रक्तपित्त, कफ, तृषा, आम, कुष्ठ, इन्होंको जीतता है । कुटजवृक्ष प्रायः पहडोंपर देखे हैं. टकसालमें इसको कोयड कहते हैं । इसके वृक्षमेंसे दूध निकलता है, इसकी फलियोंमेंसे इन्द्रजौ, निकलते हैं. कूडा कोयड इस नामसे सब जगह मिलसकता है ॥ ४६ ॥

इन्द्रयवनामगुणाः ।

ऐन्द्रयवस्तस्य फलं कालिङ्गः कौटजो मतः ।
शक्राह्वः पुरुहूतश्च प्रोक्तो भद्रयवस्तथा ॥ ४७ ॥

ऐंद्रयव, ऐंद्रफल. कालिंग, कौटज, शक्राह्व, पुरुहूत, भद्रयव ये नाम इन्द्रजवके हैं ॥ ४७ ॥

ऐन्द्रयवस्त्रिदोषघ्नः संग्राही शीतलः कटुः ।
ज्वरातिसाररक्तार्शःकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ ४८ ॥

इन्द्रजव त्रिदोषको नाशता है, मलको बांधता है, शीतल है, चरपरा है और ज्वर, अतिसार, रक्तविकार, बवासीर, कृमि, विसर्प, कुष्ठ इन्होंको नष्ट करता है। इन्द्रजव, कडुवे इन्द्रजव-नामोंसे प्रायः सब जगह मिलते हैं ये कुडावृक्षके बीज हैं ॥ ४८ ॥

मदननामगुणाः ।

मदनश्छर्दनः पिण्डीराठः पिण्डान्तकं फलम् ।
करहाटश्च तगरः शल्यको विषपुष्पकः ॥ ४९ ॥

मदन, छर्दन, पिण्डीराठ, पिंडांतक, फल, करहाट, तगर, शल्यक, विषपुष्पक ये नाम मैनफलके हैं ॥ ४९ ॥

मदनो वमनस्तिक्तो वीर्योष्णो लेखनो लघुः ।
रूक्षः कुष्ठकफानाहशोफगुल्मव्रणापहः ॥ १५० ॥

मैनफल छर्दि लाता है, कडुवा है, वीर्यमें गर्म है, लेखन है, हलका है, रूखा है और कुष्ठ, कफ, अफारा, शोजा, गुल्म, घाव इन्होंको दूर करता है। मैनफलके वृक्ष प्रायः जंगलोंमें होते हैं। इसके वृक्षमें कांटेभी होते हैं, फल छोटे अमरूदसे होते हैं, और गोल होते हैं। प्रायः मैनफल नामसे सर्वत्र सुलभ है, टकसालमें इसको राडा कहते हैं ॥ १५० ॥

कंकुष्ठनामगुणाः ।

कङ्कालकुष्ठं कङ्कुष्ठं रेचनं रङ्गनामकम् ।
शोधनं पुलहं हासं वराङ्गं कुञ्जवालुकम् ॥ ५१ ॥

कंकालकुष्ठ, कंकुष्ठ, रेचन, रङ्गनामक, शोधन, पुलह, हास, वरांग, कुञ्जवालुक (मुर्दाशंख, मुर्दासिंग) ये नाम कंकुष्ठके हैं ॥ ५१ ॥

कङ्कुष्ठं रेचनं तिक्तं कटूष्णं वर्णकारकम् ।
कृमिशोफोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥ ५२ ॥

कंकुष्ठ दस्त लगाता है, कडुवा है, चर्परा है, गर्म है, वर्णको करता है और कृमि, शोजा, उदररोग, आध्मान, गुल्म, अफारा, कफ इन्होंको नाशता है।

ये हिमालयसे उत्पन्न हुआ उपधातु विशेष है, दिल्ली प्रान्तमें मुर्गासिङ्ग नामसे मिलता है ॥ ९२ ॥

चोषनामगुणाः ।

हेमाह्वा कनकक्षीरी हेमपुष्पी हिमावती ।
क्षीरिणी काञ्चनक्षीरी कटुपर्णी चिकर्षणी ।
तिक्तदुग्धा हैमवती पीतदुग्धा हिमाद्रिका ॥ ९३ ॥

हेमाह्वा, कनकक्षीरी, हेमपुष्पी, हिमावती, क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी, कटुपर्णी, चिकर्षणी, तिक्तदुग्धा, हैमवती, पीतदुग्धा, हिमाद्रिका ये नाम चोषके हैं ॥ ९३ ॥

हेमाह्वा रेचनी तिक्ता मन्दाग्न्युत्क्लेदकारिणी ।
कृमिकण्डुकफानाहविषकुष्ठविनाशिनी ॥ ९४ ॥

चोष दस्त लगाती है, कडुवी है, मंदाग्नि और ग्लानिको करती है और कृमि, खाज, कफ, अफारा, विष, कुष्ठ इन्होंको नाश करती है । चोषके क्षुप जिला अंबालामें हमने अधिक देखे हैं, इसको पीले दूधकी कटेली या सत्यानासीभी कहते हैं, इसके फूल पीले रंगके होते हैं, पत्तोंमें टहनीमें सबजगह काँटे होते हैं, इसको तोडनेसे पीले रंगका दूध निकलता है, फल सूखनेपर कांटेयुक्त छोटे गिलासकेसे होते हैं, इनमेंसे काले २ दाने बारूदके समान निकलते हैं, इसकी जडको चोष कहते ह ॥ ९४ ॥

सातलानामगुणाः ।

सातला विरला सारी तत्फला बहुफेनका ।
चर्मसाह्वा चर्मकासा फेना दीप्ता च नालिका ॥ ९५ ॥

सातला, विरला, सारी, सत्फला, बहुफेनका, चर्मसाह्वा, चर्मकासा, फेना, दीप्ता और नालिका ये नाम सातलाके हैं ॥ ९५ ॥

सातला कटुका पाके वातला शीतलो लघुः ।
तिक्ता शोथकफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तजित् ॥ ९६ ॥

सातला पाकमें चर्परी है, वातको करती है, शीतल है, हलकी है, कडुवी है और शोजा, कफ, अफारा, पित्त, उदावर्त, रक्त इन्होंको जीतती है, सातलाको सतवन या सप्तपर्ण भी कहते हैं, इसके वृक्ष छोटे सींबलके समान होते हैं, इसके वृक्षपर एक डंडीमें प्रायः सातपत्ते होते हैं इसमेंसे दूधभी निकलता है वह थोहरके दूधके समान

रेचक है, टकसालसे ऊपर कटाहेके घाटमें नदीके किनारे और कौशिल्याके किनारे हमने इसे देखा है ॥ ५६ ॥

अश्मन्तकनामगुणाः ।

अश्मन्तो मालुकापात्रो युग्मपत्रोऽम्लपत्रकः ।
श्लक्ष्णत्वगश्वयोनिः स्यात्कुशली पापनाशनः ॥ ५७ ॥

अश्मन्त, मालुकापात्र, युग्मपत्र, अम्लपत्रक, श्लेक्ष्णत्वक्, अश्वयोनि, कुशली, पापनाशन ये अश्मंतकके नाम हैं ॥ ५७ ॥

अश्मन्तस्तुवरो ग्राही शीतोष्णः कफवातजित् ।
निहन्ति गण्डमालास्रगलगण्डगलामयान् ।
तत्फलं लेखनं ग्राहि गुरु श्लेष्मानिलापहम् ॥ ५८ ॥

अश्मंतक कषैला है, मलको बांधता है, शीतल है, गर्म है, कफवातको जीतता है और गण्डमाला, रक्त-गलगण्ड, गलरोग इन्होंको नाशता है । अश्मन्तकका फल लेखन है, मलको बांधता है, भारी है, कफवातको जीतता है । अश्मंतकके पत्र खटाईदार होते हैं, सामने २ दोदो होते हैं ॥ ५८ ॥

काञ्चनारनामगुणाः ।

काञ्चनारः काञ्चनकः पाकारी रक्तपुष्पकः ।
कोविदारोऽस्य भेदः स्यात्कुद्दालः कुहली कुली ।
आस्फोतो दालकः स्वल्पकेसरश्चमरी मता ॥ ५९ ॥

काञ्चनार, काञ्चनक, पाकारि, रक्तपुष्पक ये नाम कचनारके हैं, इसीका भेद कोविदार होता है । कुद्दाल, कुहली, कुली, आस्फोत, दालक, स्वल्पकेसर, चमरी ये कोविदारके नाम हैं ॥ ५९ ॥

काञ्चनारो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तनुत् ।
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः ॥ १६० ॥
कोविदारोऽपि तद्वत्स्यात्पुष्पं शीतं तयोर्लघु ।
रूक्षं संग्राहि पित्तास्रप्रदरक्षतकासनुत् ॥ ६१ ॥

कचनार शीतल है, मलको बांधता है, कषैला है, कफपित्तको जीतता है। कृमि, कुष्ठ, कांच निकलना, गंडमाला, घाव इन्होंको नाशता है,

कोविदारमेंभी यही गुण हैं। दोनोंका फूल शीतल है, हलका है रूखा है, मलको बांधता है और पित्तरक्त, प्रदर, क्षत और खांसी इन्होंको दूर करता है। कांचनारके वृक्ष सडकोंपर, बगीचोंमें,, पहाडोंपर प्रायः होते हैं। इसकी कलियोंकी भाजीभी बनती है, कराल या कचनारके नामसे प्रसिद्ध है ॥ ६१ ॥

निर्गुण्डीद्वयनामगुणाः।

निर्गुण्डी श्वेतकुसुमः सिन्दुकः सिन्दुवारकः।
भूतकेश्यपरो नीलसिन्दुकः पुष्पनीलकः॥
शेफालिका शीतभीरुर्वनकोऽनिलमञ्जरी ॥ ६२ ॥

निर्गुण्डी, श्वेतकुसुम, सिन्दुक, सिंदुवार ये नाम संभालूके हैं और भूतकेशी, नीलसिंदुक, पुष्पनीलक, शेफालिका, शीतभीरु, वनक, अनिलमञ्जरी ये नाम दूसरे संभालूके हैं ॥ ६२ ॥

निर्गुण्डी स्मृतिदा तीक्ता कषाया कटुका लघुः ॥ ६३ ॥

संभालू स्मृतिको देता है, कडुआ है, चर्परा है, कषेला है, हलका है ॥ ६३ ॥

केश्या नेत्रहिता हन्ति शूलशोथाममारुतान्।
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मव्रणान् नीलाऽपि तद्विधा ॥ ६४ ॥

यह बालोंको बढाता है, नेत्रोंको हित करता है और शूल, शोजा, आमवात, कृमि, कुष्ठ, अरुचि, कफ, घाव इन्होंको नाशकरता है और नीले संभालूके भी वही गुण हैं। संभालूनामसे प्रसिद्ध है ॥ ६४ ॥

मेषशृङ्गीनामगुणाः।

मेषशृङ्गी मेषवल्ली सप्तदंष्ट्राऽजशृङ्गिका।
अन्या तु दक्षिणावर्त्ता वृश्चिकाली विषाणिका ॥ ६५ ॥

मेषश्रृंगी, मेषवल्ली, सप्तदंष्ट्रा, अथश्रृंगिका और दूसरीके दक्षिणावर्ता वृश्चिकाली, विषाणिका ये नाम हैं ॥ ६५ ॥

मेषश्रृंगी रसे तिक्ता वातला कासनाशिनी।
रूक्षा पाके कटुः पित्तव्रणश्लेष्माक्षिशूलनुत् ॥ ६६ ॥

मेढाशिंगी रसमें कड़वी है, वातको करती है. खांसीको नाशती है, पाकमें रूखी है, चर्परी है और पित्त, घाव, कफ, नेत्रशूल इन्होंको दूर करती है, मेढाशिंगी-नामसे प्रसिद्ध है ॥ ६६ ॥

पुनर्नवाद्वयनामगुणाः ।

पुनर्नवा श्वेतमूला पृथ्वीको दीर्घपत्रकः ।
विशाददीर्घो वर्षाभूः पुनर्भूर्मण्डलच्छदा ॥ ६७ ॥

पुनर्नवा, श्वेतमूला, पृथ्वीक, दीर्घपत्रक, विशाददीर्घ, वर्षाभू, पुनर्भू, मण्डलच्छदा ये नाम सांठीके हैं ॥ ६७ ॥

पुनर्नवा वरा तिक्ता रूक्षोष्णा मधुरा कटुः ।
पुनर्नवाऽरुणा तिक्ता रक्तपुष्पा कठिल्लका ॥ ६८ ॥

सांठी सर है, कडुवी है, रूखी है गर्म है, मीठी और चर्परी है, पुनर्नवा, अरुणा, तिक्ता, रक्तपुष्पा, कठिल्लका ॥ ६८ ॥

क्रूरकः क्षुद्रवर्षाभूर्वर्षाकेतुः शिवाटिका ।
शोफानिलव्रणश्लेष्महरा रुच्या रसायनी ॥ ६९ ॥

क्रूरक, क्षुद्रवर्षाभू, वर्षाकेतु, शिवाटिका ये नाम लाल सांठीके हैं । यह शोजा वात, घाव, कफ इन्होंको हरती है, रुचिको उपजाती है, रसायन है ॥ ६९ ॥

पुनर्नवा वरा तिक्ता कटुपाका हिमा लघुः ।
वातला ग्राहिणी श्लेष्मरक्तपित्तविनाशिनी ॥ १७० ॥

उत्तम सांठी कडवी है, पाकमें चर्परी है, शीतल है, हलकी है, वातको करती है, मलको बांधती है और कफ रक्त पित्त इन्होंको नाश करती है, पुनर्नवा सांठी सठी इस नामसे प्रसिद्ध है, इसका प्रसर जमीनपर छाया रहता है, प्रायः सब जगह मिलती है, टकसालमें बहुत होती है, लोग इसको सठी कहते हैं ॥ १७० ॥

रास्नानामगुणाः ।

रास्ना रम्या युक्तरसा रसना गन्धमाकुली ।
सुगन्धमूलाऽतिरसा श्रेयसी सुवरा सरा ॥ ७१ ॥

रास्ना, रम्या, युक्तरसा, रसना, गन्धमाकुली, सुगन्धमूला, अतिरसा, श्रेयसी, सुवरा, सरा, ये नाम रास्नाके हैं ॥ ७१

रास्नाऽऽमपाचनी तिक्ता गुरूष्णा श्लेष्मवातजित् ।
शोफश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ॥ ७२ ॥

रास्ना अर्थात् रायसन आमको पकाती, कडुवी, भारी, गर्म है और कफ, वातको जीतती है । यह शोजा, श्वास, वातरक्त, वातशूल और उदररोग इन्होंको नाशती है. रास्ना, रायसन इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ७२ ॥

अश्वगन्धानामगुणाः ।

अश्वगन्धा तुरङ्गाह्वा गोकर्णश्चावरोहकः ।
वराहकर्णी वरदा बल्या वाजीकरी वृषा ॥ ७३ ॥

अश्वगन्धा, तुरंगाह्वा, गोकर्ण, अवरोहक, वराहकर्णी, वरदा, बल्या, वाजीकरी, वृषा, ये असगन्धके नाम हैं ॥ ७३ ॥

अश्वगंधाऽनिलश्लेष्मशोफश्वित्रक्षयापहा ।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णाऽतिशुक्रला ॥ ७४ ॥

असगन्ध वात, कफ, शोजा, श्वित्रकुष्ठ और क्षय इन्होंको नाशती है, बल करती है, रसायनी है, कडुवी, कषैली, गर्म और अत्यंत वीर्यको उपजाती है। असगन्ध प्रसिद्ध है, प्रायः सब जगह मिलती है, इसके छोटे २ पेड होते हैं, फल डोडियोंके समान लगते हैं, पकनेपर लालरंगकी लालडीसी उस डोडीमें निकलती हैं ॥ ७४ ॥

प्रसारणीनामगुणाः ।

प्रसारणी राजबला चारुपर्णी प्रतानिका ।
शरणी सारणी भद्रपर्णी सुप्रसरा सरा ॥ ७५ ॥

प्रसारणी, राजबला, चारुपर्णी, प्रतानिका शरणी, सारणी, भद्रपर्णी, सुप्रसरा, सरा ये नाम प्रसारणीके हैं ॥ ७५ ॥

प्रसारणी गुरुर्वृष्या सन्धानबलकृत्सरा ।
वीर्योष्णा वातनुतिका वातरक्तकफापहा ॥ ७६ ॥

प्रसारणी अर्थात खींप विशेष भारी है, आयुको बढाती है, टूटेको जोडती है, बलको करती है, दस्तावर है, वीर्यमें गर्म है, वातको दूर करती है, कडुवी है, वातरक्त और कफको नाशती है, पञ्जाबमें खीय नामसे प्रसिद्ध है ॥ ७६ ॥

शतावरीनामगुणाः ।

शतावरी द्वीपिशत्रुर्द्वीपिका धरकण्टका ।
नारायणी शतपदी शतपाद्बहुपत्रिका ॥ ७७ ॥

शतावरी, द्वीपिशत्रु, द्विपका, धरकण्टका, नारायणी, शतपदी, शतपात्, बहुपत्रिका ये शतावरके नाम हैं ॥ ७७ ॥

शतावरी गुरुः शीता स्वादुः स्निग्धा रसायनी ।
शुक्रस्तन्यकरा बल्या वातपित्तास्रशोफजित् ॥ ७८ ॥

शतावरी भारी है, शीतल है, स्वादु है, चिकनी है, रसायनी अर्थात् बुढापेको दूर करती है, वीर्य और दूधको करती है, बलको उपजाती है और वात, पित्त, रक्त, शोजा इन्होंको जीतती है ॥ ७८ ॥

महाशतावरीनामगुणाः ।

शतावर्यूर्ध्वकण्ठाऽन्या पीवरी धीवरी वरी ।
अभीरुर्बहुपत्रा च महापुरुषदन्तिका ॥ ७९ ॥

शतावरी, ऊर्ध्वकंठा, पीवरी, धीवरी, वरी, अभीरु, बहुपत्रा, महापुरुषदन्तिका ॥ ७९ ॥

सहस्रवीर्या केशी स्यात्तुङ्गिनी सूक्ष्मपत्रिका ।
महाशतावरी मेध्या हृद्या वृष्या रसायनी ॥ १८० ॥

सहस्रवीर्या, केशी, तुंगिनी, सूक्ष्मपत्रिका ये नाम महाशतावरीके हैं । महाशतावरी बुद्धिको देती है, हृदयको हित करती है, वीर्य बढाती है, रसायन अर्थात् आयुको बढाती है ॥ १८० ॥

शीतवीर्या निहन्त्यर्शोग्रहणीनयनामयान् ।
तदङ्कुरस्त्रिदोषघ्नो लघुरर्शःक्षयापहः ॥ ८१ ॥

वीर्यमें शीतल है और बवासीर, ग्रहणी, नेत्ररोग इन्होंको नष्ट करती है । महासतावरीका अंकुर त्रिदोषको नाश करता है, हलका है, बवासीर और क्षयको हरता है, इसके छोटे २ पेड पहाडी जंगलोंमें होते हैं, पत्र बारीक २ हरे रेशमके समान दीखते हैं, इसकी जडें शतावर शतावरीनामसे सब जगह मिल सकती हैं ॥ ८१ ॥

बलानामगुणाः ।

बला वट्यालकः शीतपाकी वाट्योदराह्वया ।
भद्रौदनी समङ्गा स्यात्समांसा खरयष्टिका ॥ ८२ ॥

बला, वट्यालक, शीतपाकी, वाट्योदराह्वया, भद्रौदनी, समंगा, समांसा, खरयष्टिका ये खैरंहटीके नाम हैं ॥ ८२ ॥

सहदेवीनामगुणाः ।

महाबला वीरपुष्पी सहदेवी बृहद्बला ।
वाट्यायनी देवसहा वाट्या स्यात्पीतपुष्पिका ॥ ८३ ॥

महाबला, वीरपुष्पी, सहदेवी, बृहद्बला, वाट्यायनी, देवसहा, वाट्या, पीतपुष्पिका ये सहदेईके नाम हैं ॥ ८३ ॥

पिटारिणीनामगुणाः ।

बलाकाऽतिबला भारवाजी स्याद् वृक्षगन्धिनी ॥ ८४ ॥

बलाका, अतिबला, भारवाजी, वृक्षगन्धिनी, ये नाम बलिकाके हैं ॥ ८४ ॥

गंगेरुकीनामगुणाः ।

गाङ्गेरुकी नागबला विश्वदेवा गवेधुका ॥ ८५ ॥

गंगेरुकी, नागबला, विश्वदेवा, गवेधुका ये नाम गंगेरनके हैं ॥ ८५ ॥

बलाचतुष्टयनामगुणाः ।

बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत् ।
स्निग्धं ग्राहि समीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥ ८६ ॥

खरैंहटी आदि चारों शीतल हैं, मीठी हैं, बल और कांतिको करती हैं, चिकनी हैं, मलको बांधती हैं और वात, अम्लपित्त, रक्त, क्षत इन्होंको नाशती हैं इन चारोंको बलाचतुष्टय कहते हैं ॥ ८६ ॥

आसां बृहद्बला कृच्छ्रं हन्ति वातानुलोमनी ।
गुर्वी नागबला वृष्या विशेषाद्रक्तपित्तजित् ॥
बल्या रसायनी पुंस्त्ववर्धिनी बृंहणी तथा ॥ ८७ ॥

इन्होंमें सहदेई मूत्रकृच्छ्रको नाशती है, वातको अनुलोमित करती हैं, गंगेरन भारी है, वीर्यको उपजाती है, विशेष करके रक्तपित्तको जीतती है, बलको करती है, रसायन है, पुरुषपनेको बढाती है और आयुको बढाती है ॥ ८७ ॥

तस्याः फलं हिमं स्वादु स्तम्भनं गुरु लेखनम् ।
विबन्धाध्मानजननं रक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥ ८८ ॥

गंगेरनका फल शीतल, स्वादु, स्तंभन, भारी और लेखन है, यह विबन्ध और आध्मानको उपजाता है, रक्तपित्तको बढाता है । बला नाम खरैंहटीका है । खरैंहटी, खरेटी, बीजबंद, इन नामोंसे सर्वत्र सुलभ है, इसीका भेद सहदेई गंगेरन कंघी है ।

इन चारोंमें कंघीका पेड ऊंचा होता है और फल आरेदार चक्राकार होता है, फूल चारोंके ही पीले होते हैं, अंबाले आदि स्थानोंमें चारों किस्मकी देखी हैं। सहारनपुरमें, दिल्लीमें प्रायः बहुत होती है टकसालके किलेकी खाईमें भी इसके पेड होते हैं ॥ ८८ ॥

ज्योतिष्मतीनामगुणाः ।

ज्योतिष्मती वह्निरुचिः कंगुणी कटुभी तथा ।
ज्योतिष्मती कटुस्तिक्ता सरा कफसमीरजित् ।
अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ॥ ८९ ॥

ज्योतिष्मती, वह्निरुचि, कंगुणी, कटुभी य नाम मालकांगनीके हैं । मालकांगनी चर्परी, कडुवी और दस्तावर है, कफ और वातको जीतती है, अत्यंत गर्म है, छर्दि उपजाती है, तेज है और अग्नि, बुद्धि, स्मृति इन्होंको देती है, फल पकनेपर केशरके रंगके मोतीसे होते हैं। इसकी बेलें पहाडोंपर होती हैं, मालकांगनी नामसे प्रसिद्ध है ॥ ८९ ॥

तेजवतीनामगुणाः ।

तेजस्विनी तेजवती तेजिन्या लघुवल्कला ।
महौजसी पारिजाता शीता तिक्ताऽतितेजिनी ॥ १९० ॥

तेजस्विनी, तेजवती, तेजिन्या, लघुवल्कला, महौजसी, पारिजाता, शीता, तिक्ता अतितेजिनी ये नाम तेजबलके हैं ॥ १९० ॥

तेजस्विनी कफश्वासकासशूलामवातजित् ।
पाचन्युष्णा कटुस्तिक्ता रुचिवह्निप्रदीपनी ॥ ९१ ॥

तेजबल कफ, श्वास, खांसी, शूल, आमवात इन्होंको जीतती और पकाती है, गर्म है, चर्परी है, कडुवी है, रुचि और अग्निको जगाती है, तजबलके वृक्ष पहाडोंमें होते हैं। इसके वृक्षमें कांटे भी होते हैं। लोग इसकी दाँतन भी करते हैं, इसकी लकडीके सोटे (डंडे) दवाई रगडने या नमक मिर्च पीसनेके लिये नाभापटियालाके लोग शिमलेके पहाडसे लाया करते हैं। इसके गोल मिचके समान फल लगते हैं, फलोंमें और वृक्षकी लकडीमें और त्वचामें सब जगह चरचराहट होता है ॥ ९१ ॥

देवदारुनामगुणाः ।

देवदारु सुराह्वं स्याद्भद्रदारु सुरद्रुमः ।
भद्रकाष्ठं स्नेहवृक्षः कृमिलं शक्रदारु च ॥ ९२ ॥

देवदारु, सुराह्व, भद्रदारु, सुरद्रुम, भद्रकाष्ठ, स्नेहवृक्ष, कृमिल, शक्रदारु ये देवदारुके नाम हैं ॥ ९२ ॥

देवदारु कटु स्निग्धं तिक्तोष्णं लघु नाशयेत् ।
आध्मानज्वरशोथामहिक्काकाण्डुकफानिलान् ॥ ९३ ॥

देवदारु चर्परा, चिकना, कडुवा, गर्म और हलका है तथा आध्मान, ज्वर, शोजा, आम, हिचकी, खाज, कफ, वात इनको नाश करता है । देवदारुके वृक्ष ठंढे पहाडोंपर होते हैं प्रायः शिमलाके पहाडपर भी होते हैं ॥

सरलनामगुणाः ।

सरलो नन्दनो व्रीडा नमेरुर्द्विकवृक्षकः ।
पीतदारुः पीतवृक्षो महादीर्घः कलिद्रुमः ॥ ९४ ॥

सरल, नन्दन, व्रीडा, नमेरु, द्विकवृक्षक, पीतदारु, पीतवृक्ष, महादीर्घ, कलिद्रुम ये नाम सरलके हैं ॥ ९४ ॥

सरलः कटुकः पाकरसयोर्मधुरो लघुः ।
उष्णः स्निग्धः समीराक्षिकण्ठकर्णामयापहः ॥ ९५ ॥

सरल चर्परा है, पाक और रसमें मीठा है, गर्म है, चिकना है और वात, नेत्ररोग, कण्ठरोग, कर्णरोग इनको नाशता है । सरलका वृक्ष ठण्डे पहाडपर होता है ॥ ९५ ॥

पुष्परमूलनामगुणाः ।

पौष्कराह्वं पद्मपत्रं पौष्करं पुष्कराह्वकम् ।
काश्मीरं पुष्करजटा मूलवीरं सुगन्धिकम् ॥ ९६ ॥

पौष्कराह्व, पद्मपत्र, पौष्कर, पौष्कराह्वक, काश्मीर, पुष्करजटा, मूलवीर, सुगंधिक ये पुहकर मूलके नाम हैं ॥ ९६ ॥

पौष्करं कटुकं तिक्तमुष्णवातकफज्वरान् ।
हन्ति शोफारुचिश्वासान् विशेषात्पार्श्वशूलजित् ॥ ९७ ॥

पोहकरमूल चर्परा और कडुवा है, उष्णवात, कफ, ज्वर, शोजा, अरुचि, श्वास, विशेषकर पसलीशूल इन्होंको जीतता है । पोहकरमूल नामसे प्रसिद्ध है ॥९७॥

कुष्ठनामगुणाः ।

कुष्ठं रोगाह्वयं दिव्यं कौबेरं पारिभद्रकम् ।
पारिहार्यं पारिभाव्यमुत्पलं पारिभद्रकम् ॥ ९८ ॥

कुष्ठ, रोगाह्वय, दिव्य, कौबेर, पारिभद्रक, पारिहार्य, पारिभाव्य, उत्पल, पारिभद्रक ये कूठके नाम हैं ॥ ९८ ॥

कुष्ठमुष्णं कटु स्वादु तिक्तं शुक्रपदं लघु ।
हन्ति वातास्रवीसर्पकुष्ठकासमरुत्कफात् ॥ ९९ ॥

कूठ गर्म है, चर्परा है, स्वादु है, कडुवा है, वीर्यको देता है, हलका है और वातरक्त, विसर्प, कुष्ठ, खांसी, वात, कफ इनको नाशता है । कूठ, कूट, इन नामोंसे प्रसिद्ध है । यह कडुवा और मीठा दो प्रकारका होता है ॥ ९९ ॥

कर्कटशृङ्गीनामगुणाः ।

शृङ्गी कुलीरशृंगी स्याद्वक्रा कर्कटशृंगिका ।
कर्कटाक्षा महाघोषा शृंगनाम्नी नताङ्ग्यपि ॥ २०० ॥

शृंगी, कुलीरशृंगी, वक्रा, कर्कटशृंगिका, कर्कटाक्षा, महाघोषा, शृंगनाम्नी, नतांगी ये नाम काकडाशिंगीके हैं ॥ २०० ॥

शृंगी कषायतिक्तोष्णा हन्ति हिक्कावमिज्वरान् ।
वृष्या वमिकफश्वासक्षयकासोर्ध्वमारुतान् ॥ १ ॥

काकडाशिंगी कषैली, कडुवी और गर्म है । हिचकी, छर्दि, ज्वर, कफ, श्वास, क्षय, खांसी, ऊर्ध्ववात इनको नाशती है, वीर्यको बढाती है । काकडासिंगीके वृक्ष टकसालमें बहुत हैं, इसके वृक्षकी टहनियोंमें सींगसे लगते हैं, उनको काकडासिंगी कहते हैं । इसके वृक्षको ककडोंका वृक्ष कहते हैं, काकडासिंगी नामसे सर्वत्र सुलभ है ॥ १ ॥

कट्फलनामगुणाः ।

कट्फलं कुमुदा कुम्भी श्रीपर्णी लोमपादपः ।
सोमवल्को महाकुम्भी भद्रा भद्रवती शिवा ॥ २ ॥

कट्फल, कुमुदा, कुंभी, श्रीपर्णी, लोमपादप, सोमवल्क, महाकुंभी, भद्रा, भद्रवती, शिवा ये नाम कायफलके हैं ॥ २ ॥

कट्फलं तुवरं तिक्तं कटु वातकफज्वरान् ।
हन्ति श्वासप्रमेहार्शः कासकण्ठामयारुचीः ॥ ३ ॥

कायफल कषैला, कडुवा और चर्परा है तथा वात-कफज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर, खांसी, कंठरोग, अरुचि इनको नाशता है । काय

फलके वृक्ष बघाट स्टेटके पहाडोंमें हमने अधिक देखे हैं, ज्येष्ठके महीनेमें इनमें फल पकते हैं, उनको कायफल ही कहते हैं । औषधियोंमें प्रायः इसके वृक्षका छिलका डालते हैं, इसके छिलकेकी नसवारभी होती है ॥ ३ ॥

रोहिषनामगुणाः ।

रोहिषं कत्तृणं भूतिर्भूतिकं सरलं तृणम् ।
श्यामलं युग्मकं पौरं व्यापकं देवगन्धकम् ॥ ४ ॥

रोहिष, कत्तृण, भूति, भूतिक, सरल, तृण, श्यामल, युग्मक, पौर, व्यापक, देवगंधक ये रोहिषतृणके नाम हैं ॥ ४ ॥

रोहिषं कटुकं पाके तिक्तोष्णं तुवरं जयेत् ।
हन्ति मारुतपित्तास्रक्षणाच्छ्वासकफज्वरान् ॥ ५ ॥

रोहिषतृण पाकमें चर्परा है, कडुवा है, गर्म है, कसैला है और वात, पित्त, रक्त, श्वास, कफज्वर इनको नष्ट करता है, रोहेडा घास नामसे प्रसिद्ध है ॥ ५ ॥

भार्ङ्गीनामगुणाः ।

भार्ङ्गी भृगुभवा पद्मा कासघ्नी गन्धपर्वणी ।
खरशाकं शुक्रमाता भञ्जी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ६ ॥

भार्ङ्गी, भृगुभवा, पद्मा, कासघ्नी, गंधपर्वणी, खरशाक, शुक्रमाता, भञ्जी, ब्राह्मणयष्टिका यह भारंगीके नाम हैं ॥ ६ ॥

भार्ङ्गी रूक्षा कटुस्तिक्ता रुच्योष्णा पाचनी जयेत् ।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ॥ ७ ॥

भारंगी रूखी चर्परी और कडुवी है, रुचिको उपजाती है, गर्म है, पकाती है, और शोजा, खांसी, कफ, श्वास, पीनस, ज्वर, वात इनको जीतती है, भाडंगी, भारंगी, भार्ङ्गी, ब्रह्मणेढी इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ७ ॥

पाषाणभेदनामगुणाः ।

पाषाणभेदः पाषाणोऽश्मरीभेदोऽश्मभेदकः ।
शिलाभेदो दृषद्भेदो नागभिन्नोऽङ्गभेदनः ॥ ८ ॥

पाषाणभेद, पाषाण, अश्मरीभेद, अश्मभेदक, शिलाभेद, दृष्द्भेद, नागभिन्न अंगभेदन ये पाषाणभेदके नाम हैं ॥ ८ ॥

पाषाणभेदस्तुवरः शीतलो बस्तिशोधनः ।
सरस्तिक्तः प्रमेहार्शः कृच्छ्राश्मरिरुजो जयेत् ॥ ९ ॥

पाषाणभेद कषैला है, शीतल है, बस्तिको शोधता है, दस्तावर है, कडुवा है और प्रमेह, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, पथरी इनको जीतता है, पाषाणभेद नामसे प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥

मुस्तनामगुणाः ।

मुस्तं वारिधरो मुस्तो मेघाख्यः कुरुविन्दकः ॥ १० ॥
वराहोऽब्दो घनो भद्रमुस्तं राजकसेरुकः ।
पिण्डमुस्तं विषध्वंसी नागरोऽन्यः प्रकीर्तितः ॥ ११ ॥

मुस्त, वारिधर, मुस्ताह्व, मेघाख्य, कुरुविन्दक, वराह, अब्द, घन, भद्रमुस्त, राजकसेरुक, पिंडमुस्त, विषध्वंसी, नागर ये नाम नागरमोथाके हैं ॥ २१० ॥ २११ ॥

मुस्तं कटु हिमं ग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम् ।
कषायं कृमिपित्तासृक्कफतृष्णाज्वरापहम् ॥ १२ ॥

नागरमोथा चर्परा है, शीतल है, मलको बांधता है, कडुवा है, दीपन है, पाचन है, कषैला है, और कृमि, रक्त पित्त, कफ, तषा, ज्वर, इन्होंको नाशता है । नागरमोथा 'डीला' नाम घास विशेषकी जडें हैं, नागरमोथा नामसे प्रसिद्ध है सर्वत्र सुलभ है ॥ १२ ॥

धातकीनामगुणाः ।

धातकी कुञ्जरा सिन्धुपुष्पी प्रमदिनी मदा
पार्वतीया ताम्रपुष्पी सुभिक्षा मेघवासिनी ॥ १३ ॥

धातकी, कुञ्जरा, सिंधुपुष्पी, प्रमदिनी, मदा, पार्वतीया, ताम्रपुष्पी, सुभिक्षा, मेघवासिनी ये धावेके नाम हैं ॥ १३ ॥

धातकी कटुका शीता मन्दोष्णा तुवरा लघुः ।
तृष्णातीसारपित्तास्रविषक्रिमिविसर्पजित् ॥ १४ ॥

धातकी चर्परी है, शीतल है, अल्पगर्म है, कषैली है, हलकी है, तृष, अतिसार, रक्तपित्त, विष, कृमि विसर्प इन्होंको जीतती है । धावीके वृक्ष, पहाडोंपर बहुत होते हैं, इनकी पत्तियोंको गौवें खाती हैं । इसके फूल दवाइयोंमें काम आते हैं, धावडो, धाय, धावा, धावी इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ १४ ॥

अम्बष्ठानामगुणाः ।

माचिका बालिकाऽम्बष्ठा शठी दन्तशठाऽम्बिका ।
अम्बष्ठकी सूचिमुखी कषाया साकण्ठमुखी ॥ १५ ॥

माचिका, बालिका, अम्बष्ठा, शठी, दंतशठा, अम्बिका, अम्बष्ठकी, सूचिमुखी, कषाया, साकंठमुखी, ये नाम मांइयाके हैं ॥ १५ ॥

माचिकोष्णा रसे पाके कषाया शीतला लघुः ।
पक्वातीसारपित्तास्रकफकण्ठामयापहा ॥ १६ ॥

मांई गर्म है रसमें और पाकमें कषैली है, शीतल है, हलकी है और पकाहुआ अतीसार, रक्तपित्त, कफ, कंठरोग इनको नाशती है, यह झांह नामक वृक्षमें लगती है मांई नामसे प्रसिद्ध है ॥ १६ ॥

विदारीकन्दद्वयनामगुणाः ।

विदारिका वृक्षवल्ली वृक्षकन्दा विदालिका ।
शृंगालिका कन्दवल्ली स्वादुकन्दा फलाशका ॥ १७ ॥

विदारिका, वृक्षवल्ली, वृक्षकन्दा, विदालिका, शृंगालिका, कन्दवल्ली, स्वादुकन्दा, फलाशका ये नाम विदारीकंदके हैं, विदारीकंद सिमला प्रान्तमें अधिक होता है, इसकी बेलको सरालीकी बेल कहते हैं, इसकी बेलमें ढाककी समान एक एक डंडीमें तीन तीन पत्र होते हैं इसकी बेल घोडोंको भी खिलाई जाती हैं, एकवर्षके कंदको सराली कहते हैं और पुरानेको पहाडीलोग भलार कहते हैं । इसकी बेलकी गाँठमेंसे जमीनमें जडसी लगकर कंद होजाता है उसीका नाम सराली है, उसी कंदको विदारीकन्द कहते हैं ॥ १७ ॥

अन्या शुक्ला क्षीरशुक्ला क्षीरवल्ली पयस्विनी ।
इक्षुवल्ली महाश्वेता क्षीरकन्देक्षुगंधिका ॥ १८ ॥

शुक्ला, क्षीरशुक्ला, क्षीरवल्ली, पयस्विनी, इक्षुवल्ली, महाश्वेता, क्षीरकन्दा, इक्षुगन्धिका ये नाम क्षीरविदारीकंदके हैं ॥ १८ ॥

विदारी मधुरा स्निग्धा बृंहणी स्तन्यशुक्रदा ।
गुरुः पित्तास्रपवनदाहान् हंति रसायनी ॥ १९ ॥

विदारीकंद, मीठा है, चिकना है, पुष्टि करता है, दूध और वीर्यको देता है, भारी है, रक्तपित्त, वात, दाह इनको नाशता है और रसायन है । क्षीरविदारी दूसरे

प्रकारकी होती है, इसकी जडमेंही कंद होता है उसमेंसे दूध निकलता है । पत्र प्रायः तर्बूजकी बेलके पत्रोंके समान होते हैं, इसमें लालरंगका फूल भी लगता है ॥ १९ ॥

वाराहीकन्दनामगुणाः ।

वाराही माधवी गृष्टिः शीकरी वनमालिका ।
तस्याः कंदः किटिः क्रोडनामा संवरकंदकः ॥ २२० ॥

वाराही, माधवी, गृष्टि, शीकरी, वनमालिका, वाराहीकंद, किटि, क्रोडनाम, संवरकन्दक ये नाम वाराहीकंदके हैं ॥ २२० ॥

वाराही मधुरा कंदे कटुस्तिक्ताऽतिशुक्रला ।
बल्या शुक्रकरा वातकफमेहकृमीञ्जयेत् ॥ २१ ॥

वाराहीकन्द मीठा है, चर्परा, है, कडुवा है, बहुत वीर्यको उपजाता है, बल और पुष्टिको करता है तथा वात, कफ, प्रमेह, कृमि इनको जीतता है । वराहीकंदकी भी बेल होती है, पत्र नागरपानके समान होते हैं । पहाडीलोग इसकी बेलको भेवरकी बेल कहते हैं । नीचेसे कंद निकलता है, कोई कित्येकी जडको भी वाराहीकंन्द कहते हैं परन्तु कित्या कोलकंदका नाम है, वाराहीकन्द भेवरके कन्दकाही नाम है । यह टकसालके समीप कौशिल्यानदीके किनारोंपर बहुत होता है ॥ २१ ॥

पाठानामगुणाः ।

पाठाऽम्बष्ठा बृहत्तिक्ता प्राचीनाऽम्बष्ठका सरा ।
वरा तिक्ता पापचेली श्रेयसी वृद्धकर्णिका ॥ २२ ॥

पाठा, अम्बष्ठा, बृहत्तिक्ता, प्राचीना, अम्बष्ठका, सरा, वरा, तिक्ता, पापचेली, श्रेयसी, वृद्धकर्णिका ये पाठाके नाम हैं ॥ २२ ॥

पाठोष्णा कटुका तीक्ष्णा वातश्लेष्महरा लघुः ।
हंति शूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ।
दाहकण्डूविषश्वासकृमिगुल्मगरव्रणान् ॥ २३ ॥

पाठा, गर्म है, चर्परी है, तेज है, वातकफको हरती है, हलकी है और शूल, ज्वर, छर्दि, कुष्ठ, अतीसार, हृद्रोग, दाह, खाज, विष, श्वास, कृमि गुल्म, कृत्रिमविष, घाव इनको नाश करती है । पाठाकी बेल होती है, टकसालमें इसको बटौवेकी बेल कहते हैं, पाटला, पाढ इन नामोंसे सबजगह मिलती है ॥ २३ ॥

मूर्वानामगुणाः ।

मूर्वा देवी मधुरसा देवश्रेणी मधुस्रवा ।
स्निग्धपर्णी पृथक्पर्णी मोरटी पीलुपर्णिका ॥ २४ ॥

मूर्वा, देवी, मधुरसा, देवश्रेणी, मधुस्रवा, स्निग्धपर्णी, पृथक्पर्णी, मोरटी, पीलु-पर्णिका ये नाम मुरहरीके हैं । मुरहरी सर है, भारी है, मीठी है, तेज है और पित्तरक्त, प्रमेह, त्रिदोष, तृषा, हृद्रोग, खाज, कुष्ठ, ज्वर, पित्त, वात इनको जीतती है, पुष्ट है, कफको करती है, दिलको ताकत देती है, मलको बांधती है और गोलेको नाशती है । मूर्वाकी जगह आजकल लोग मरोडफली डालते हैं ॥ २४ ॥

मञ्जिष्ठानामगुणाः ।

मंजिष्ठा विजया रक्ता रक्ताङ्गी कालमेषिका ।
रक्तयष्टी ताम्रवल्ली समङ्गा वस्त्रभूषणा ॥
मंजुला विकशा भङ्गी छञ्चिका ज्वरनाशिनी ॥ २५ ॥

मञ्जिष्ठा, विजया, रक्ता, रक्तांगी कालमेषिका. रक्तयष्टी, ताम्रवल्ली, समङ्गा, वस्त्रभूषणा, 'मंजुला, विकशा, भंगी, छञ्चिका', ज्वरनाशिनी ये नाम मंजीठके हैं ॥२५॥

मञ्जिष्ठा मधुरा तिक्ता कषाया स्वर्णवर्णकृत् ।
गुरुरुष्णा विषश्लेष्मशोफयोन्यक्षिशूलनुत् ॥ २६ ॥
रक्तातीसारकुष्ठास्रवीसर्पव्रणमेहजित् ।
तच्छाकं दीपनं स्वादु स्निग्धं पित्तानिलापहम् ॥ २७ ॥

मंजीठ मीठी हैं, कडुवी है, कषैली है, सोने समान रंगको करती है । भारी है, गर्म है, विष, कफ, शोजा, योनिशूल, नेत्रशूल, रक्तातिसार, कुष्ठ, रक्त, विसर्प, घाव, प्रमेह इनको जीतती है । मंजीठका शाक दीपन है, स्वादु है, चिकना है, पित्त और वातको जीतता है. मंजीठकी पहाडमें बेलें होती हैं । इसकी जड़ प्रायः प्रयोगमें आती है यह मंजीठनामसे सब जगह मिलती है ॥ २६ ॥ २७ ॥

हरिद्रानामगुणाः ।

हरिद्रा रजनी गौरी रञ्जिनी वरवर्णिनी ।
पिण्डा पीता वर्णवती निशा वर्णा विलासिनी ॥ २८ ॥

हरिद्रा, रजनी, गौरी रंजिनी, वरवर्णिनी, पिंडा, पीता, वर्णवती, निशा, वर्णा, विलासिनी ये नाम हलदीके हैं ॥ २८ ॥

हरिद्रा कटुका तिक्ता रूक्षोष्णा श्लेष्मपित्तनुत् ।
वर्ण्या त्वग्दाहमेहास्रशोफपाण्डुव्रणापहा ॥ २९ ॥

हलदी चर्परी, कडुवी, रूखी और गर्म है, कफ-पित्तको दूर करती है, रंगको निखारती है, त्वचारोग, दाह, प्रमेह, रक्त, शोजा, पांडु, घाव इन्होंको नाशती है। हलदी सब जगह प्रसिद्ध है ॥ २९ ॥

दारुहरिद्रानामगुणाः ।

दार्वी दारुहरिद्राऽन्या पीतदारु च पञ्चधा ।
कटङ्कटेरी पित्तद्रुः स्वर्णवर्णा कटङ्कटी ।
दार्वी तद्वद्विशेषात्तु नेत्रकर्णास्यरोगनुत् ॥ २३० ॥

दार्वी, दारुहरिद्रा, पीतदारु, पञ्चधा, कटंकटेरी, पितद्रु, स्वर्णवर्णा, कटंकटी ये नाम दारुहलदीके हैं। दारुहलदीमें सब गुण हलदीके हैं, परन्तु विशेषकर नेत्ररोग, कर्णरोग, मुखरोग, इनको हरती है। दारुहलदी शिमलेके प्रांतमें बहुत होती है, पहाडीलोग इसको कशमलका झाड कहते हैं, इसके फल काले रंगके होते हैं, इसकी लकडीके काढेको अफीमके समान पकानेसे रसांजन (रसौंत) होती है॥२३०॥

प्रपुन्नाट (पनवाड) नामगुणाः ।

प्रपुन्नाटस्त्वेडगजश्चक्रमर्दः प्रपुन्नटः ।
दद्रुघ्नो मर्दको मेघकुसुमः कुष्ठकृन्तनः ॥ ३१ ॥

प्रपुन्नाट, एडगज, चक्रमर्द, प्रपुन्नट, दद्रुघ्न, मर्दक, मेघकुसुम, कुष्ठकृंतन ये नाम पुवाड, पमार, पनवाडके हैं ॥ ३१ ॥

प्रपुन्नाटो लघुः स्वादू रूक्षः पित्तानिलापहः ।
हृद्यो हिमकफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीञ्जयेत् ॥ ३२ ॥

पनवाड हलका है, स्वादु है, रूखा है, पित्त-वातको नाशता है, हृद्य है, गर्म है, कफ, श्वास, कुष्ठ, दद्रु, क्रिमि इनको जीतता है ॥ ३२ ॥

हन्त्युष्णं तत्फलं कुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् ।
वातरक्तापहं तस्याः शाकं कफकरं लघु ॥ ३३ ॥

पुवाडका फल गर्म है, कुष्ठ, खाज, दाद, वात इनको जीतता है। पुवाडका शाक वातरक्तको हरता है, कफकारक है, हलका है, इसके छोटे २ पेड होते हैं, प्रायः वर्षातमें सब जगह होते हैं। इसके पत्रोंकी भाजीभी करते हैं, इसकी फलियोंमेंसे कुछ तिरछेसे मोठसे बडे बीज निकलते हैं॥ ३३॥

वाकुचीनामगुणाः।

बाकुची चन्द्रिका सोमवल्ली पूतिफला वरा।
सोमराजी कृष्णफला वल्गुजा कालमेषिका।
चन्द्रलेखा तथा सोमः कुष्ठघ्नी सा मता परा॥ ३४॥

बाकुची, चन्द्रिका, सोमवल्ली, पूतिफला, वरा, सोमराजी, कृष्णफला, वल्गुजा, कालमेषिका, चन्द्रलेखा, सोम, कुष्ठघ्नी, ये नाम बावचीके हैं॥ ३४॥

बाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी।
विष्टम्भिनी हिमा रुच्या सरा हृद्याऽस्रपित्तनुत्॥ ३५॥
रूक्षा हन्तिकफश्वासकुष्ठमेहज्वरक्रिमीन्।
तत्फलं पित्तकृच्छ्रेण कुष्ठवातकफापहम्॥ ३६॥

बावची मीठी है, कडुवी है, पाकमें चर्परी है, रसायन है, विष्टंभ करती हैं, शीतल है, रुचिको उपजाती है, दस्तावर है, हृदयको हित है, रक्तपित्तको दूर करती है रूखी है, कफ, श्वास, कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर, कृमि इन्होंको नाश करती है, बावचीका फल पित्तकृच्छ्र, कुष्ठ, वात, कफ इनको नाशता है, बावचीनामसे प्रसिद्ध है॥ ३५॥ ३६॥

भृङ्गराजनामगुणाः।

भृङ्गराजो भेकराजो मार्कवः केशरञ्जकः।
अङ्गारको भृङ्गिराजो भृङ्गाह्वः सूर्यवल्लभः॥ ३७॥

भृंगराज, भेकराज, मार्कव, केशरञ्जक, अंगारक, भृंगिराज, भृंगाह्व, सूर्यवल्लभ ये नाम भांगराके हैं॥ ३७॥

भृङ्गराजः कटुस्तिक्तो रूक्षोष्णः कफवातकृत्।
दन्त्यो रसायनस्त्वच्यः कुष्ठनेत्रशिरोऽर्तिजित्॥ ३८॥

भांगरा चर्परा, कडुवा, रूखा और गर्म है, कफ-वातको करता है, बलको करता है, रसायन है, रुचिको उपजाता है, कुष्ठ, नेत्ररोग, शिरोरोग इनको

जीतता है । भृंगराज, भांगरा प्रसिद्ध नाम है । प्रायः सब जगह होता है, इसके छोटे २ क्षुप सजलभूमिमें जलके किनारे होते हैं ॥ ३८ ॥

पर्पटनामगुणाः ।

पपटः कवचो रेणुः पित्तहा वरकण्टकः
वरतिक्तः पर्पटकः पृथ्विकश्चर्मकण्टकः ॥ ३९ ॥

पर्पट, कवच, रेणु, पित्तहा, वरकण्टक, वरतिक्त, पर्पटक, पृथ्विक, चर्मकण्टक ये पित्तपापडाके नाम हैं ॥ ३९ ॥

पर्पटो हन्ति पित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ।
संग्राही शीतलस्तिक्तो दाहनुद्वातलो लघुः ॥ २४० ॥

पित्तपापडा पित्तरक्त, भ्रम, तृषा, कफज्वर इन्होंको नाश करता हैं, मलको बांधता है, शीतल है, कडुवा है, दाहको दूर करता है, वातको उत्पन्न करता है और हलका है ॥ २४० ॥

रक्तपुष्पोऽतिसारस्य वारको ज्वरनाशनः ।
पर्पटः पित्तहृद्दाहज्वरजिच्छ्लेष्मशोषणः ।
तिक्तशीतौ ज्वरहरौ लघू भूनिम्बपर्पटौ ॥ ४१ ॥

लाल फूलोंवाला पित्तपापडा अतिसारको दूर करता है, ज्वरको नाशता है । पित्तपापडा पित्त, हृद्रोग, दाह, ज्वर इनको जीतता है, कफको शोखता है । चिरायता और पित्तपापडा कडुवा है, शीतल है, ज्वरको हरता है, हलका है, पित्तपापडा कनक (गेहूं) के खेतोंमें बहुत होता है, पसारियोंकी दुकानसे सब जगह मिलता है, इसको श्याहतराभी कहते ॥ ४१ ॥

शणपुष्पीनामगुणाः ।

शणपुष्पी माल्यपुष्पी धावनी शणघण्टिका ।
बृहत्पुष्पी स्वल्पघण्टा घण्टाशब्दा तु पुष्पिका ॥
शणपुष्पी कटुः पित्तश्लेष्मजिच्छर्दिकारिणी ॥ ४२ ॥

शणपुष्पी, माल्यपुष्पी, धावनी, शणघंटिका, बृहत्पुष्पी, [illegible], घंटाशब्दा, पुष्पिका ये नाम शणपुष्पीके हैं । शणपुष्पी रसमें कटु है, पित्तकफको जीतती है और वमनकारक है ४२ ॥

त्रायमाणानामगुणाः ।

त्रायमाणा सुहृत्त्राणा त्रायन्ती गिरिसानुजा ।
बलभद्रा कृतत्राणा वार्षकं त्रायमाणिका ।
त्रायमाणा सरा पित्तज्वरश्लेष्मास्रशूलजित् ॥ ४४ ॥

त्रायमाणा, सुहृत्त्राणा, त्रायंती, गिरिसानुजा, बलभद्रा, कृतत्राणा, वार्षक, त्रायमाणिका ये नाम त्रायमाणाके हैं । त्रायमाणा-सर है, पित्तज्वर, कफ, रक्तशूल इन्होंको जीतती है, आजकल त्रायमाणाकी जगह लोग बनफसां डालते हैं परन्तु घासके समान छोटे छोटे पेड त्रायमाणाके शीतलपहाडोंपर मिलसकते हैं ॥ ४४ ॥

महाजालनिकानामगुणाः ।

महाजालनिका चर्मरङ्गः स्यात्तिलपुष्पिका ।
आवर्त्तकी बिन्दुकिनी विभाण्डी रक्तपुष्पिका ॥ ४५ ॥

महाजालनिका, चर्मरङ्ग, तिलपुष्पिका, आवर्तकी, बिंदुकिनी, विभाण्डी, रक्तपुष्पिका ये नाम जालके हैं ॥ ४५ ॥

महाजालनिका तिक्ता रेचनी कफपित्तजित् ।
हन्ति दाहोदरानाहशोफकुष्ठक्रिमिज्वरान् ॥ ४६ ॥

महाजालनी कडुवी है, जुलाब लगाती है, कफ पित्तको जीतती है, दाह, उदररोग, अफारा, शोजा, कुष्ठ, कृमि, ज्वर इन्होंको नाशती है । कडवी तोरीको महाजालनी कहते हैं ॥ ४६ ॥

अतिविषानामगुणाः ।

अतिविषा शुक्लकन्दा विषा प्रतिविषाऽपरा ।
श्यामकन्दा शिता शृङ्गी भङ्गुरोपविषाणिका ।
विषौष्णा पाचनी तिक्ता श्लेष्मपित्तातिसारजित् ॥ ४७ ॥

अतिविषा, शुक्लकन्दा, विषा, प्रतिविषा, श्यामकन्दा, शिता, शृंगी, भंगुरा, उपविषाणिका ये अतीसके नाम हैं । अतीस गर्म है पाचन है, कडुवी है, कफ, पित्त और अतिसार इन्होंको जीतती है ॥ ४७ ॥

श्यामकन्दा चोपविषा सा विज्ञेया चतुर्विधा ।
रक्ता श्वेता भृशं कृष्णा पीतवर्णा तथैव च ॥ ४८ ॥

श्यामकन्दा और उपविषा-लाल, श्वेत, काली, पीली इन भेदोंसे अतीस चार प्रकारकी है ॥ ४८ ॥

यथापूर्वं च विज्ञेया बल्या श्रेष्ठा गुणोत्तमा ।
सर्वदोषहराऽग्र्यत्वाल्लेपाच्छ्वयथुनाशिनी ।
श्लेष्मजान् विंशतिं रोगान् सद्यो हन्याद्रसायनी ॥ ४९ ॥

इनमें पूर्वपूर्वक्रमसे बलदायक श्रेष्ठ और उत्तमगुणोंवाली जाननी जैसे पीलीसे काली, कालीसे श्वेत, श्वेतसे लाल उत्तम होती है । उत्तमपनेसे सब दोषोंको हरती है, लेपसे शोजाको नाशकरती है, कफक बीस रोगोंको शीघ्र नष्ट करती है, रसायन है, अतीस, अतिविष नामसे प्रसिद्ध है ॥ ४९ ॥

काकमाची (मकोह) नामगुणाः ।

काकमाची ध्वांक्षमाची कामची जघनी फला ।
रसायनवरा सर्वतिक्ता स्यात्काकिनी कटुः ॥ २५० ॥

काकमाची, ध्वांक्षमाची, कामची, जंघनी, फला, रसायनवरा, सर्वतिक्ता, काकिनी, कटु ये मकोहके नाम हैं ॥ २५० ॥

काकमाची त्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा ।
हृद्या रसायनी शोफकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ॥ ५१ ॥

मकोय त्रिदोषको नाशती है, चिकनी है, गर्म है, स्वर और वीर्यको देती है, हृदयमें सुखदेती है, रसायन है, शोजा, कुष्ठ, बवासीर, ज्वर, प्रमेह इनको जीतती है । मकोह प्रायः सर्वत्र सुलभ है, इसके क्षुप होते हैं, उनमें हरे रङ्गके फलोंके गुच्छे लगते हैं, फूल छोटे २ सफेद होते ह, पकनेपर काले या लाल होजाते हैं, छोटे छोटे लडके इनको खाते भी हैं । टकसालमें काली मंबोल कहते हैं ॥ ५१ ॥

काकजङ्घानामगुणाः ।

काकजंघा नदीकान्ता काकतिक्ता सुलोमजा ।
पारावतपदी काका मदाऽन्या छर्दिकारिणी ।
काकजङ्घा हिमा हन्ति रक्तपित्तकफज्वरान् ॥ ५२ ॥

काकजंघा, नदीकान्ता, काकतिक्ता, सुलोमजा, पारावतपदी, काक, मदा, छर्दिकारिणी ये नाम काकजंघाके हैं. काकजंघा शीतल है, रक्तपित्त और कफज्वर इन्होंको नाशती है । काकजंघा प्रयाः सब देशोंमें होती है, इसकी गांठ बालकोंके पसलीके दर्द और अफारा रोगमें देते हैं, जड दन्तशूलको दूर करती है ॥ ५२ ॥

लोध्रद्वयनामगुणाः।

लोध्रस्तिरीटः कानीनस्तिलकः संततोद्भवः।
अन्यो घनत्वक्सरकः श्वेतलोध्रोऽक्षिभेषजम् ॥ ५३ ॥

लोध्र, तिरीट, कानीन, तिलक, सन्ततोद्भव ये लोधके नाम हैं। मोटे छिलकेवाला, सरक, श्वेतलोध्र, अक्षिभेषज ये नाम दूसरे प्रकारके लोधके हैं ॥ ५३ ॥

रोध्रो विरेचकः शीतश्चक्षुष्यः कफपित्तनुत्।
कषायो रक्तशोफासृग्ज्वरातीसारनाशनः।
तत्पुष्पं मधुरं ग्राहि सतिक्तं श्लेष्मपित्तजित् ॥ ५४ ॥

लोध-जुलाब लगाती है, शीतल है, नेत्रोंको हित है, कफपित्तको दूर करती है, कषैली है, रक्त, शोजा, रक्तज्वर, अतीसार इनको नाशती है। लोधका फूल मीठा है, मलको बांधता है, कडुवा है, कफ पित्तको जीतता है। लोधके वृक्ष प्रायः पहाडों, पर होते हैं, इसके छिलकेको उपयोगमें लाते हैं। लोध (लोद) पठानीलोद इन नामोंसे सब जगह मिलता है ॥ ५४ ॥

वृद्धदारुद्वयनामगुणाः।

वृद्धदारुर्महाश्यामा छगली जीर्णवल्कलः।
अन्या कोटरपुष्पी स्यादावेगी छागलान्यपि ॥ ५५ ॥

वृद्धदारु, महाश्यामा, छगली (छगलांत्री,) जीर्णवल्कल ये नाम विधाराके हैं। कोटरपुष्पी, आवेगी, छागलानी ये दूसरे विधाराके नाम हैं ॥ ५५ ॥

वृद्धदारुः कषायोष्णः सरस्तिक्तो रसायनः।
वृष्यो वातामवातास्रशोफमेहकफाञ्जयेत् ॥ ५६ ॥

विधारा कषैला है, गर्म है, सर है, कडुवा है, रसायन है, वीर्यको करता है। वात, आमवात, रक्त, शोजा, प्रमेह, कफ इनको जीतता है। विधारा, या विधायरा अथवा विदारा इन नामोंसे सब जगह मिलता है। शिमलाप्रांतके पहाडी जंगलोंमें हमने इसकी बेल देखी है, पहाडीलोग इसकी बेलको बुडलकी बेल कहते हैं। इसके पत्र नीचेसे सफेद और पीपलके पत्रकेसे आकारके होते हैं परन्तु नम्र होते हैं ॥ ५६ ॥

देवदालीनामगुणाः।

देवदाली वृत्तकोशी देवताडो गरागरी।
जीमूतस्तारका वेणी जालिन्याखुर्विषापहा ॥ ५७ ॥

देवदाली, वृत्तकोशी, देवताण्ड, गरागरी, जीमूत, तारका, वेणी, जालिनी, आखु, विषापहा ये देवदालीके नाम हैं ॥ ५७ ॥

देवदाली रसे तिक्ता कफार्शः शोफपाण्डुताः ।
नाशयेद्वामनी तीक्ष्णा क्षयहिक्काकृमिज्वरान् ।
देवदाली च कटुका प्रमेहकामलापहा ॥ ५८ ॥

देवदाली रसमें कडुवी है, छर्दिको करती है, तेज है. कफ, बवासीर, शोजा, पांडुरोग, क्षय, हिचकी, कृमि, ज्वर इनको नाशती है, देवदाली चर्परा है, प्रमेह और कामलाको नाशती है, देवदाली बंदालकी बेलको कहते हैं । इसके फलको बंदाल या बंदालडोडा कहते हैं ॥ ५८ ॥

हंसपादीनामगुणाः ।

हंसपादी हंसपदी रक्तपादी त्रिपादिका ।
प्रह्लादिनी कीटमारी कीटमाता मधुस्रवा ॥ ५९ ॥

हंसपादी, हंसपदी, रक्तपादी, त्रिपादिका, प्रह्लादिनी, कीटमारी, कीटमाता, मधुस्रवा ये हंसपादीके नाम, हैं । कोई २ लोग हंसराजको हंसपदी कहते हैं ॥ ५९ ॥

हंसपादी गुरुः शीता हंति रक्तविषव्रणान् ।
विसर्पदाहातीसारलूताभूतांश्च रोपणी ॥ २६० ॥

हंसपादी भारी है, शीतल है, रक्त, विष, घाव, विसर्प, दाह, अतीसार, लूता, भूत, इनको नष्ट करती है ॥ २६० ॥

सोमवल्लीनामगुणाः ।

सोमवल्ली यज्ञनेता सोमक्षीरी द्विजप्रिया ।
सोमवल्ली त्रिदोषघ्नी कटुस्तिक्ता रसायनी ॥ ६१ ॥

सोमवल्ली, यज्ञनेता, सोमक्षीरी, द्विजप्रिया ये नाम सोमवल्लीके हैं । सोमवल्ली अर्थात् चांदवेल त्रिदोषको नाशती है, चर्परी है, कडुवी है, रसायन है । सोमवल्लीका वर्णन सुश्रुतसंहिता और यजुर्वेदमें अधिक है यह प्रायः हिमालयके पर्वतोंपर होती है, इसमें शुक्लपक्षमें प्रतिदिन एक एक पत्र निकल आता है कृष्णपक्षमें कम होता जाता है ॥ ६१ ॥

आकाशवल्लीनामगुणाः ।

आकाशवल्ली तु बुधैः कथिताऽमरवल्लरी ।
[illegible]खवल्ली ग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाख्यामयापहा ॥ ६२ ॥

आकाशवल्ली, अमरवल्लरी (निराधारबेल) ये नाम आकाश बेलके हैं । आकाशबेल मलको बांधती है, कडुवी है, वातकफके रोगको नाश करती है । अमरबेल आकाशबेल निराधार अफतिमुन इन नामोंसे सब जगह मिलती है, इसकी बेल वृक्षोंपर होती है । इस बेलकी जड नहीं होती, वृक्षके झाडियोंके ऊपरही छाई हुई होती है ॥ ६२ ॥

नाकुलीनामगुणाः ।

नाकुली समहा सर्पगंधिनी गन्धनाकुली ।
नकुलेष्टा महासर्पनेत्रा रोचकपत्रिका ॥ ६३ ॥

नाकुली, समहा, सर्पगंधिनी, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, महासर्पनेत्रा, रोचकपत्रिका ये नाम नाकुलीके हैं ॥ ६३ ॥

नाकुली तुवरा तिक्ता कटुकोष्णा विनाशयेत् ।
विषलूतावृश्चिकाखुसर्पाणां च कृमिव्रणान ॥ ६४ ॥

नाकुली कषैली, कडुवी, चर्परी और गर्म है । मकडी, बीछू, सर्प, कृमि इनके विषोंको नाशती है । नाकुलीके पेड बद्रीनारायणके रास्तेमें और शिमला पहाडमें बिलकुल सांपके आकारके गद्दलेसे निकलतेरहते हैं । इसके नीचे कंदके आकारका छोटासा कंद निकलता है, टकसालमें इसको गोहका आदा कहते हैं. इसका कंद जागैला होता है ॥ ६४ ॥

वटपत्रीनामगुणाः

वटपत्री मोहिनी स्यादीपनी रेचनी मता ।
वटपत्री योनिगदान्कषायोष्णा विनाशयेत् ।
तत्फलं स्तम्भनं शीतं वातलं कफपित्तजित् ॥ ६५ ॥

वटपत्री, मोहिनी, दीपनी, रेचनी ये वटपत्रीके नाम है । वटपत्री कषैली और गर्म है तथा योनिरोगोंको नाशती है. वटपत्रीका फल स्तंभन है, शीतल है, वातको उपजाता है, कफ-पित्तको जीतता है । वटपत्रीको लोग पाषाण भेदकी जातीही मानते हैं, इसके पत्र वटपत्रके समान होते है ॥ ६५ ॥

लज्जालुनामगुणाः ।

लज्जालुर्मोहिनी स्पृक्का खदिरी गंधकारिणी ।
नमस्कारी शमी पत्रीसमङ्गा रक्तपादिका ॥ ६६ ॥

लज्जालु, मोहिनी, स्पृक्का, खदिरी, गंधकारिणी, नमस्कारी, शमी, पत्री, समंगा, रक्तपादिका ये लज्जालूके नाम हैं ॥ ६६ ॥

लज्जालुः शीतला तिक्ता कषाया श्लेष्मपित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान् विनाशयेत् ॥ ६७ ॥

लज्जावन्ती शीतल है, कडुवी है, कषैली है, कफपित्तको जीतती है और रक्तपित्त, अतीसार, योनिरोग इनको नाशती है। लाजवन्ती प्रायः बगीचोंमें लगाई हुई होती है, मनुष्यकी छाया या हाथ लगनेसे मुरझा जाती है इसको लोग छुईमुई भी कहते है ॥ ६७ ॥

मुसलीनामगुणाः ।

मुसली खलनी तालपत्री कांचनपुष्पिका ।
महावृक्षा वृक्षकन्दः खर्जूरी तालमूलिका ॥ ६८ ॥

मुसली, खलिनी, तालपत्री, कांचनपुष्पिका, महावृक्षा, वृक्षकंद, खर्जूरी, तालमूलिका ये मुसलीके नाम है ॥ ६८ ॥

मुसली मधुरा वृष्या वीर्योष्णा बृंहणी गुरुः ।
तिक्ता रसायनी हंति गुदजानानिलं तथा ॥ ६९ ॥

मुशली, मीठी है, वीर्यको उपजाती है, पराक्रममें गरम है,धातुको पुष्ट करती है, भारी है, कडुवी है, रसायन है और गुदाके रोगोंको तथा वातको नाश करती है। यह सफेद मुसलीके नामसे सब जगह मिलती है ॥ ६९ ॥

कपिकच्छूनामगुणाः ।

कपिकच्छूः स्वयंगुप्ता कण्डूला दुरवग्रहा ।
चण्डाऽऽत्मगुप्ता लांगूली मर्कटी स्यात्प्रहर्षणी ॥ २७० ॥

कपिकच्छू, स्वयंगुप्ता, कण्डूला, दुरवग्रहा, चण्डा, आत्मगुप्ता, लांगूली, मर्कटी, प्रहर्षणी ये कौंचके नाम हैं ॥ २७० ॥

कपिकच्छूः परं वृष्या मधुरा बृंहणी गुरुः ।
तद्बीजं वताशमनं वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ७१ ॥

कौंच बहुत वीर्यको करती है, मीठी है धातुको पुष्ट करती है और भारी है। कौंचका बीज वातको शान्त करता है और उत्तम वाजीकरण अर्थात भोगमें स्त्रीको सुख देता है, वीर्यको पैदा करता है, कौचकी बेल सब देशोंमें होती है, इसके बीज कौंचके बीज कहनेसे सब जगह

मिलते हैं इसकी फलीके ऊपरका रोंगटा शरीरमें लगनेसे तीक्ष्ण खाज पैदा करता है ॥ ७१ ॥

पुत्रजीवनामगुणाः ।

पुत्रजीवो गर्भकरो यष्टीपुत्रोऽर्थसाधनः ।
पुत्रजीवो गुरुर्वृष्यो गर्भदः श्लेष्मवातजित् ॥ ७२ ॥

पुत्रजीव, गर्भकर, यष्टीपुत्र, अर्थसाधन, ये जीयापोताके नाम हैं । जीयापोता भारी है, वीर्यको उपजाती है, गर्भको देती है, कफ वातको जीतती है. जीयापोताके वृक्ष कहीं कहीं सब प्रांतोंमें मिलते हैं । टकसालके समीप कौशल्यानदीके किनारे बहुत हैं ॥ ७२ ॥

वंध्यानामगुणाः ।

वन्ध्या कर्कोटकी देवी कुमारी विषनाशिनी ।
मनोज्ञा नागदमनी वन्ध्या योगीश्वरी मता ॥ ७३ ॥

(वंध्याकर्कोटकी) वंध्या, कर्कोटकी, देवी, कुमारी, विषनाशिनी, मनोज्ञा, नागदमनी, वंध्या, योगीश्वरी ये बांझककोडीके नाम हैं ॥ ७३ ॥

वन्ध्याकर्कोटकी लघ्वी कफनुद्व्रणशोधनी ।
सर्पदंशहरा तीक्ष्णा वीसर्पविषनाशिनी ॥ ७४ ॥

बांझककोडी हलकी है, कफको दूर करती है, घावको शोधती है, सांपके डसे-हुएको आरोग्य करती है, तेज है, विसर्प और विषको नाशती है। बांझककोडीकी बेल करेलेकीसी छोटी होती है, फूल तो आते हैं परंतु फल कुछ नहीं लगता इसीसे वन्ध्या इसका नाम हुआ. इसके नीचे कंद होता है प्रायः सब देशोंमें मिलता है ॥ ७४ ॥

विष्णुक्रांतानामगुणाः ।

विष्णुक्रान्ता नीलपुष्पी जया वश्याऽपराजिता ।
विष्णुक्रान्ता कटुर्मेध्या कृमिव्रणकफाञ्जयेत् ॥ ७५ ॥

विष्णुक्रांता, नीलपुष्पी, जया, वश्या, अपराजिता ये नाम विष्णुक्रांताके हैं । विष्णुक्रांता चर्परी है, बुद्धिको बढाती है, कृमि, घाव, कफ इन्होंको जीतती है ॥ ७५ ॥

शंखपुष्पीनामगुणाः ।

शङ्खपुष्पी शङ्खनाम्नी किरीटी कम्बुमालिनी ।
शंखाहुली स्मृतिहिता मेध्या वर्णविलासिनी ॥ ७६ ॥

शंखपुष्पी, शंखनाम्नी, किरीटी, कंबुमालिनी, शंखाहुली, स्मृतिहिता, मेध्या, वर्णविलासिनी ये शंखपुष्पीके नाम हैं ॥ ७६ ॥

शंखपुष्पी सरा मेध्या मता चेतोविकारिणी ।
रसायनी कषायोष्णा स्मृतिदा मोहनाशिनी ॥ ७७ ॥

शंखपुष्पी सर है, बुद्धिको बढाती है, चित्तको सुख देती है, रसायन, कसैली और गर्म है, स्मृतिको देती है और मोहको नाशती है । शंखपुष्पी, संखावली, संखाहुली इन नामोंसे मिलती है, अंबाले जिलेमें इसके छोटे छोटे प्रसर हमने बहुत देखे हैं ॥ ७७ ॥

दुग्धिकानामगुणाः ।

दुग्धिका मधुपर्णी स्यात्क्षीरिणी स्वादुपुष्पिका ।
दुग्धिकोष्णा गुरू रूक्षा वातला गर्भकारिणी ।
स्वादुर्विष्टम्भिनी वृष्या कफकुष्ठकृमीञ्जयेत् ॥ ७८ ॥

दुग्धिका, मधुपर्णी, क्षीरिणी, स्वादुपुष्पिका ये दूधीके नाम हैं । दूधी-गर्म, भारी और रूखी है, वातको उपजाती है, गर्भको करती है, स्वादु है, विष्टंभ करती है, वीर्यको करती है, कफ, कुष्ठ, कृमि, इनको जीतती है, यह तीन चार किस्मकी होती है, परंतु जिसको छोटी दूधी कहते हैं वह लाल पत्तोंवाली दूधली अधिकतर लीजाती है ॥ ७८ ॥

अर्कपुष्पीनामगुणाः ।

अर्कपुष्पी क्रूरकन्दा जलकामाऽभिरण्डिका ।
अर्कपुष्पी कृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारजित् ॥ ७९ ॥

अर्कपुष्पी, क्रूरकंदा, जलकामा, अभिरंडिका ये नाम अर्कपुष्पीके हैं. अर्कपुष्पी-कृमि, कफ, प्रमेह, पित्त विकार इनको नाशती हैं, अर्कपुष्पीकी बेल वर्षांतमें होती है, पत्र गुरुच पत्रोंके समान होते हैं, फूल गोल होते हैं, तोडनेसे दूध निकलता है ॥ ७९ ॥

भल्लातकनामगुणाः ।

भल्लातको नभोवल्ली वीरवृक्षोऽग्निवक्रकः ।
आरुष्करस्तथा रूक्षस्तपनोऽग्निमुखी धनुः ॥ ८० ॥

भल्लातक, नभोवल्ली, वीरवृक्ष, अग्निवक्रक, आरुष्कर, रूक्ष, तपन, अग्निमुखी, धनुष ये भिलावेके नाम हैं ॥ ८० ॥

भल्लातकः कषायोष्णः शुक्रलो मधुरो लघुः।
वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीगदान्।
हन्ति गुल्मज्वरश्वित्रवह्निमान्द्यकृमिव्रणान् ॥ ८१ ॥

भिलावा—कषैला है, गर्म है, वीर्यको उपजाता है, मीठा है, हलका है, वात, कफ, उदररोग, अफारा, कुष्ठ, बवासीर, ग्रहणीरोग, गुल्म, ज्वर, श्वित्रकुष्ठ, मंदाग्नि, कृमि और व्रण इन्होंको नाशता है। भिलावा प्रसिद्ध विष है, सब जगह पंसारीकी दुकानमें मिलता है, इसके वृक्षके नीचे जानेसे या इसकी हवा लगनेसे शरीरमें सूजन आजाती हैं ॥ ८१ ॥

चरपोटानामगुणाः।

चरपोटा दीर्घपत्री कुन्तली तिक्तका मता।
चरपोटा हिमा रूक्षा भेदिनी श्वासकासजित् ॥ ८२ ॥

चरपोटा, दीर्घपत्री, कुन्तली, तिक्तका ये नाम चिरपोटनके हैं। चिरपोटन शीतल है, रूखी है, भेदन है, श्वास और खांसीको जीतती है, इसके क्षुप होते हैं, फूल कच्चे कडुवे और पकनेपर खट्टे मीठे होते हैं ॥ ८२ ॥

द्रोणपुष्पीनामगुणाः।

द्रोणपुष्पो श्वसनकः पालिन्दी कुंभयोनिका।
छत्राणी छत्रको द्रोणा कौण्डिन्यो वृक्षसारकः ॥ ८३ ॥

द्रोणपुष्पी, श्वसनक, पालिंदी कुंभयोनिका, क्षत्राणी, छत्रक, द्रोणा, कौंडिन्य, वृक्षसारक ये द्रोणपुष्पीके नाम हैं ॥ ८३ ॥

द्रोणपुष्पी गुरू रूक्षा स्वादूष्णा वातपित्तनुत्।
भेदिनी कामलाशोफकफक्रिमिहरा कटुः ॥ ८४ ॥

द्रोणपुष्पी भारी है, रूखी है, स्वादु है, गर्म है, वातपित्तको दूर करती है, भेदन है, कामला, शोजा, कफ, कृमि इनको हरती है, चर्परी है, द्रोणपुष्पी, गूंमा, दडघल इन नामोंसे सब जगह मिलती है, टकसालमें इसको गुम्मा कहते हैं ॥ ८४॥

ब्राह्मीब्राह्ममडूकीनामगुणाः।

ब्राह्मी सरस्वती सोमा सत्याह्वा ब्रह्मचारिणी।
मण्डूकपर्णी माण्डूकी त्वष्टी दिव्या महौषधिः॥
कपोतविटका मुनिका लावण्या सोमवल्लरी ॥ ८५ ॥

ब्राह्मी, सरस्वती, सोमा, सत्याह्वा, ब्रह्मचारिणी ये ब्राह्मीके नाम हैं और मण्डूकपर्णी, माण्डूकी, त्वष्टी, दिव्या, महौषधि, कपोतविटका, मुनिका, लावण्या, सोमवल्लरी ये नाम ब्रह्ममण्डूकीके हैं ॥ ८५ ॥

ब्राह्मी हिमा सरा स्वादुर्लघुर्मेध्या रसायनी ॥ ८६ ॥
स्वर्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित्।
विषशोफज्वरहरा तद्वन्मण्डूकपत्रिणी ॥ ८७ ॥

ब्राह्मी-शीतल है, सर है, स्वादु है, हलकी है, बुद्धिको देती है, रसायन, स्वरको देती है, स्मृतिको देती है, कुष्ठ, पाण्डु, प्रमेह, रक्त, खांसी इन्होंको जीतती है, विष, शोजा, ज्वर, इनको हरती है, ये ही सब गुण मण्डूकीमें हैं। ब्राह्मी नहरोंके किनारे हमने बहुत देशोंमें देखी है परन्तु शिमिलाप्रांतमें बहुत ही देखी है, तर भूमिमें जलके किनारे बहुत होती है, ब्राह्मी नामसे प्रसिद्ध है ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

ब्रह्मसुवर्चलानामगुणाः।

सुवर्चलाऽर्ककान्ता स्यात्सूर्यभक्ता सुखोद्भवा।
सूर्यावर्त्ता रविप्रीता त्वन्या ब्रह्मसुवर्चला ॥ ८८ ॥

सुवर्चला, अर्ककान्ता, सूर्यभक्ता, सुखोद्भवा, सूर्यावर्ता, रविप्रीता, और दूसरी ब्रह्मसुवर्चला ये नाम सौंचली ब्रह्मसौंचलीके हैं ॥ ८८ ॥

सुवर्चला गुरुः शीता मूत्रला कफवातजित्।
अन्योष्णा कुष्ठमेहाश्मकृच्छ्रज्वरहरा लघुः ॥ ८९ ॥

सौंचली-भारी है, शीतल है, मूत्रको उपजाती है, वात कफको जीतती है ब्रह्मसौंचली गर्म हैं, कुष्ठ, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर इनको हरती है और हलकी है, हुलहुल नामसे प्रसिद्ध है, इसके क्षुप होते हैं उनमें ऊपरको खडी २ फलियें लगती हैं ॥ ८९ ॥

मत्स्याक्षीनामगुणाः।

मत्स्याक्षी बालिका मत्स्यगन्धी मत्स्यादनी तथा।
मत्स्याक्षी ग्राहिणी शीता कुष्ठपित्तकफास्रनुत् ॥ २९० ॥

मत्स्याक्षी, वालिका, मत्स्यगन्धी, मत्स्यादनी, ये नाम मत्स्याक्षीके हैं। मत्स्याक्षी मलको बांधती है, शीतल है, कुष्ठ, पित्त, कफ, रक्तविकार इनको जीतती है, मत्स्याक्षीके छोटे २ क्षुप होते हैं, पत्र छोटे होते है इसको मछेली भी कहते हैं ॥ २९० ॥

जलपिप्पलीनामगुणाः ।

तोयपिप्पल्यम्बुवल्ली पलूरः कञ्चटस्तथा ।
जलपिप्पलिका हृद्या चक्षुष्या शुक्रला लघुः ।
संग्राहिणी हिमा रूक्षा रक्तदाहव्रणापहा ॥ ९१ ॥

तोयपिप्पली, अंबुवल्ली, पलर, कंचट ये जलपीपलके नाम हैं । जलपीपल हृदयमें सुख देती है, नेत्रोंमें हित करती है, वीर्यको उपजाती है, हलकी है, मलको बांधती है, शीतल है, रूखी है, रक्त, दाह, घाव इनको नाशती है । जलपीपल प्रायः सजलभूमिमें होती है. जलपीपलनामसे मिल सकती है ॥ ९१ ॥

गोजिह्वानामगुणाः ।

गोजिह्वा गोजिका गोभी दार्विका स्वरपर्णिनी ।
गोजिह्वा वातला शीता ग्राहिणी कफपित्तनुत् ।
हृद्या प्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरा लघुः ॥ ९२ ॥

गोजिह्वा, गोजिका, गोभी, दार्विका, स्वरपर्णिनी ये गोभींके नाम हैं । गोभी वातको करती है, शीतल है, मलको बांधती है, कफ-पित्तको दूर करती है, हृदयमें गुण करती है, प्रमेह, खांसी, रक्त, घाव, ज्वर इनको हरती है और हलकी है । यह जंगलमें होती है कुछ लोग इसको गाजुवाँ कहते हैं ॥ ९२ ॥

नागदमनीनामगुणाः ।

नागाह्वा दमनी नागगन्धा भुजगपर्णिनी ।
स्यान्नागदमनी वर्ण्या लूतासर्पविषापहा ॥ ९३ ॥

नागाह्वा, दमनी, नागगन्धा, भुजगपर्णिनी ये नागदौनके नाम हैं । नागदौनी वर्णको निखारती है, मकडी और सर्पके विषको हरती है । नागदौन नामसे प्रसिद्ध है ॥ ९३ ॥

गुञ्जानामगुणाः।

गुञ्जा शिखण्डिका ताम्रा रक्तिका काकनासिका ।
श्वेताऽन्या चक्रिका चूडा दुर्मुखा काकपीलुका ॥ ९४ ॥

गुञ्जा, शिखंडिका, ताम्रा, रक्तिका, काकनासिका ये नाम लालचिरमिटीके हैं और श्वेता, चक्रिका, चडा, दुर्मुखा, काकपीलुका य नाम सुपेद चिरमिटीके हैं ॥ ९४ ॥

गुञ्जा केश्या बलकरा त्वच्या पित्तकफापहा ।
नेत्रामयहरा वृष्या हन्ति कण्डूग्रहव्रणान् ।
कृमीन्प्रलुप्तकुष्ठानि तच्छ्वेतापि च शस्यते ॥ ९५ ॥

चिरमिटी बालोंको बढाती है, बलको करती है, त्वचामें सुख देती है, पित्तकफको हरती है, नेत्रके रोगोंको हरती है, वीर्यको देती है, खाज, ग्रहदोष, घाव, कृमि, बालोंका उडना, कुष्ठ इन्होंको दूर करती है । श्वेत चिरमिटीमें भी यही गुण हैं। चिरमिटी, रक्तक, घुंघुची, गुञ्जा इन नामोंसे सब जगह मिलती है । इसकी बेल होती है उसमें अमलीकेसे पत्र लगते हैं, फलियोंका गुच्छा सूख जानेपर फली खिल जाती है, उसमेंसे गुञ्जा निकलती हैं, यह सर्राफोंके यहां सोना तोलनेमें भी काम आती है इसको रत्ती कहते हैं ॥ ९५ ॥

वेल्लन्तरनामगुणाः ।

वेल्लन्तरो दीर्घपत्रो वीरद्रुर्बहुवारकः ।
वेल्लन्तरोऽश्मनुद् ग्राही कफकृच्छ्रानिलार्तिजित् ॥ ९६ ॥

वेल्लंतर, दीर्घपत्र, वीरद्रु, बहुवारक ये बेलिके नाम हैं । बेलि पथरीको दूर करती है, मलको बांधती है, कफ, मूत्रकृच्छ्र, वातरोग इनको नाश करती है, वेल्लंतरके वृक्ष नर्मदाके किनारे अधिकतासे होते हैं, इनमें कांटेभी होते हैं, आकार प्रायः खैरके वृक्षकासा होता है, इसको वीरतरु भी कहते हैं ॥ ९६ ॥

वन्दानामगुणाः ।

वन्दाकः स्याद् वृक्षरुहा शेखरी कामवृक्षकः ।
वृक्षादनी कामतरुः कामिन्यापदरोहिणी ।
वन्दाकः कण्ठवातास्रशोफव्रणविषापहः ॥ ९७ ॥

वंदाक, वृक्षरुहा, शेखरी, कामवृक्षक, वृक्षादनी, कामतरु, कामिनी, आपदरोहिणी ये वंदाके नाम हैं । वंदा-कंठरोग, वातरक्त, शोजा, घाव, विष इनको नाशता है यह अन्य वृक्षके टहनेमें पैदा होता है, वंदानामसे प्रसिद्ध है ॥ ९७ ॥

पिण्डारनामगुणाः ।

पिण्डारः करहाटः स्यात्तीक्ष्णकालः कुरङ्गकः ।
पिण्डारो मधुरः शीतः शोथपित्तकफापहः ॥ ९८ ॥

पिंडार, करहाट, तीक्ष्णकाल, कुरंगक ये पिंडारके नाम हैं। पिंडार मीठा और शीतल है। शोजा, पित्त, कफ इनको नाश करता है ॥ ९८ ॥

छिक्किकानामगुणाः।

छिक्किका क्षवकः क्रूरो नासा संवेदना पटुः।
छिक्किका पित्तला कुष्ठक्रिमिवातकफापहा ॥ ९९ ॥

छिक्किका, क्षवक, क्रूर, नासा, संवेदना, पटु ये नकछींकनीके नाम हैं। नकछींकनी पित्तको उपजाती है और कुष्ठ, कृमि, वात, कफ इनको नाशती है इसके बहुत छोटे क्षुप होते हैं नकछींकनीनामसे प्रसिद्ध है ॥ ९९ ॥

रोहितवृक्षनामगुणाः।

रोहितो दाडिमीपुष्पो रोहितः कूटशाल्मलिः।
प्लीहारी रोहिणी रोही रक्तघ्नः पारिजातकः।
रोहितकः सरो गुल्मयकृत्प्लीहोदरापहः ॥ ३०० ॥

रोहित, दाडिमीपुष्प, रोहिताड, कूटशाल्मलि, प्लीहारि, रोहिणी, रोही, रक्तघ्न, पारिजातक ये नाम रोहितके हैं। रोहित सर है, गुल्म, यकृत्, प्लीहोदर इनको हरता है ॥ ३०० ॥

मोचरसनामगुणाः।

मोचकः स्यान्मोचरसः शाल्मलीवेष्टकः स्मृतः।
मोचनिर्यासकः पिच्छा मोचास्रावी च वेष्टकः ॥ १ ॥

मोचक, मोचरस, शाल्मलीवेष्टक, मोचनिर्यासक, पिच्छा मोचास्रावी, वेष्टक ये मोचरसके नाम हैं ॥ १ ॥

मोचकः शीतलो ग्राही गुरुर्वृष्योऽतिसारजित्।
प्रवाहकासपित्तास्रकफदाहनिबर्हणः ॥ २ ॥

मोचरस शीतल है, मलको बांधता है, भारी है, धातुको पुष्ट करता है, अतिसारको जीतता है और प्रवाहिका, खांसी, रक्तपित्त, कफ, दाह इनको दूर करता है। मोचरस सींबलके गोंदका नाम है, कोई मोखावृक्षके गोंदको मोचरस मानते हैं। मोचरसनामसे प्रसिद्ध है ॥ २ ॥

अजगन्धानामगुणाः।

अजगन्धा बस्तगन्धा कवरी पूतवर्वरः।
अजगन्धा लघू रुच्या हृद्या तु कफवातनुत् ॥ ३ ॥

अजगंधा, बस्तगंधा, कवरी, पूतवर्वर ये अजगंधाके नाम हैं । अजगंधा हलकी है, रुचि उपजाती है, हृदयमें हित है और कफवातको जीतती है, अजगंधा जंगली अजमोद नामसे प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥

सहचरनामगुणाः ।

सौरेयकः सहचरः सौरेयः किङ्करातकः ।
दासीसहचरः किण्टी शैर्षको मृदुकण्टकः ॥ ४ ॥

सौरेयक, सहचर, सौरेय, किंकरातक, दासीसहचर, किंटी, शैर्षक, मृदुकण्टक ये पियावासाके नाम हैं ॥ ४ ॥

रक्तपुष्पः कुरुवकः पीतो ज्ञेयः कुरण्टकः ।
नील आर्तगलः प्रोक्तो बाणा गोदनपाक्यपि ॥ ५ ॥

रक्तपुष्प, कुरुवक ये पीत कुरंटके नाम हैं । आर्तगल, बाणा, गोदनपाकी ये नाम नीलकुरंटाके हैं ॥ ५ ॥

सौरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः ।
तिक्तोष्णो मधुरः केश्यः सुस्निग्धः केशरञ्जनः ॥ ६ ॥

पीयाबांसा और सब प्रकारका कुरंटा-कुष्ठ,' वातरक्त, कफ, खाज, विष इनको नाशता है, यह कडुवा है, गर्म है, मीठा है, बालोंको उपजाता हैं, सुंदर चिकना है, बालोंको रंगता है । ये पुष्पके रंगके भेदसे चार प्रकारका होता है । इसके पेडमें काँटे भी होते हैं. पीयाबांसा, कालाबांसा इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ६ ॥

कटभीनामगुणाः ।

श्वेतस्यन्दा श्वेतपुष्पा कटभिर्गिरिकर्णिका ।
सिताऽपराजिता श्वेता विषघ्नी मेहनाशिनी ॥ ७ ॥

श्वेतस्यंदा, श्वेतपुष्पा, कटभी, गिरिकर्णिका, सिता, अपराजिता, श्वेता, विषघ्नी मेहनाशिनी ये कटभीके नाम हैं ॥ ७ ॥

नीलस्यन्दा व्यक्तगन्धा नीलपुष्पा गवादिनी ।
श्वेतस्यन्दाद्वयं शीतं ग्रहघ्नं दृष्टिकुण्ठकृत् ।
कुष्ठशूलत्रिदोषामशोफव्रणविषापहम् ॥ ८ ॥

नीलस्यंदा, व्यक्तगंधा, नीलपुष्पा, गवादिनी ये नाम श्वेतस्यंदाके हैं । ये दोनों कटभी शीतल हैं, ग्रहदोषको नाशती हैं, दृष्टिको कुंठित करती हैं, कुष्ठ, शूल,

त्रिदोष, आम, शोजा, घाव, विष इनको नाशती हैं, कटभीनामसे प्रसिद्ध है॥८॥

इक्षुरनामगुणाः।

इक्षुरः क्षुरमेधाण्डः कोकिलाक्षः क्षुर स्मृतः।
तैलकण्ड स्तिक्षरिक्षुर्बालिकाचेक्षुगन्धिका।
इक्षुरः शीतलो वृष्यो गुरुर्वातकफास्रजित्॥ ९॥

इक्षुर, क्षुरमेधाण्ड, कोकिलाक्ष, क्षुर, तैलकंड, तिक्षरिक्षु, बालिका, इक्षुगंधिका ये तालमखानेके नाम हैं। तालमखाना शीतल है, धातुको उपजाता है, भारी है, वात-कफरक्तको जीतता हैं, तालमखानेके कांटेयुक्त क्षुप प्रायः सजल भूमिमें होते हैं। इसके बीज तालमखानेके नामसे सब जगह प्रसिद्ध हैं॥ ९॥

कार्पासनामगुणाः।

कार्पासः पटशूलश्छादवनी वादरः पिचुः।
कार्पासको लघुः कोष्णो मधुरो वातनाशनः।
तद्बीजं स्तन्यदं वृष्यं स्निग्धं कफकरं गुरु॥ ३१०॥

कार्पास, (नन्दनवन) पटशूल, छादवनी, वादर, पिचु ये नाम कपासके हैं कपास हलका है, कुछ गर्म है, मीठा है, वातको नाशता है। कपासका बीज अर्थात् विनोला दूधको देता है, धातुको पुष्ट करता है, चिकना है, कफको करता है, भारी, है' कपासकी रुई होती है, सो सब जगह प्रसिद्ध है॥ ३१०॥

आरामशीतलानामगुणाः।

आरामशीतला देवी गन्धा कुक्कुरमर्दनः।
आरामशीतला शीता कटु पित्तकफास्रजित्॥ ११॥

आरामशीतला, देवी, गन्धा, कुक्कुरमर्दन ये नाम आरामशीतलाके हैं। आराम-शीतला शीतल और चर्परी है, पित्त, कफ, रक्त इनको जीतती है। इसके पत्रोंमें गन्ध होती है, इसको गन्धपत्री और गन्धपलासी भी कहते हैं॥ ११॥

कुक्कुरद्रुनामगुणाः।

कुक्कुरद्रुस्ताम्रचूडः सूक्ष्मपत्रो मृदुच्छदः।
कुक्कुरद्रुः कटुस्तिक्तो ज्वररक्तकफापहः॥ १२॥

कुक्कुरद्रु, ताम्रचूड, सूक्ष्मपत्र, मृदुच्छद ये नाम कुकरौंदाके हैं, । कुकरौंदा चर्परा और कडुवा है, ज्वर, कफ इनको नाशता है । इसके जंगलोंमें लम्बेलम्बे क्षुप होते हैं, इसको कुकरौंदा कहते ह । पत्र तमाखूकेसे होते हैं ऊपर लाल शिखा होती है ॥ १२ ॥

वामीनामगुणाः ।

वामी शंखधरा वारिब्राह्मी च हिलमोचिका ।
वामी शोफहरा कुष्ठपित्तश्लेष्मानिलापहा ॥ १३ ॥

वामी, शंखधरा, वारिब्राह्मी, हिलमोचिका ये वामीके नाम हैं । वामी शोजाको हरती है, कुष्ठ, पित्त, कफ, वात इनको दूर करती है । इसको हुलहुलशाक भी कहते हैं ये ब्राह्मीकी जातिकाही क्षुप हैं, प्रायः जलके किनारेमें होती है ॥ १३ ॥

शरपुंखानामगुणाः ।

शरपुंखा कालशाकं प्लीहारिः कालका मता
शरपुंखा यकृत्प्लीहदुष्टव्रणविषापहा ।
तिक्ता कषाया कासास्रश्वासज्वरहरा लघुः ॥ १४ ॥

शरपुंखा, कालशाक, प्लीहारि, कालका ये शरपुंखाके नाम हैं । शरपुंखा, यकृत, तिल्लीरोग, दुष्टघाव, विष इनको नाशती है, कषैली और कडुवी है, खांसी,, रक्त, श्वास, ज्वर इनको हरती है तथा हलकी है, सरफोका, सरपुंखा नामसे प्रसिद्ध है ॥ १४ ॥

बलामोटानामगुणाः ।

बलामोटा जया सूक्ष्मपत्रा ज्ञेयाऽपराजिता ।
बलामोटा विषश्लेष्मकृच्छ्रनुद्विजयप्रदा ॥ १५ ॥

बलामोटा, जया, सूक्ष्मपत्रा, अपराजिता ये बलामोटाके नाम है । बलामोटा विष, कफ, कृच्छ्र इनको दूर करती है और विजयको देती है नागदमनकाही भेद बलामोटा होती है, इसके और नागदमनके गुणभी एकसे ही हैं ॥ १५ ॥

सुदर्शनानामगुणाः ।

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राङ्का मधुपर्णिका ।
सुदर्शना स्वादुरुष्णा कफशोफास्रवातजित ॥ १६ ॥

सुदर्शना, सोमवल्ली, चक्रांका, मधुपर्णिका ये नाम सुदर्शनाके हैं । सुदर्शना स्वादु और गर्म है, कफ शोजा, रक्तवात इनको जीतती है कोई सुदर्शनको

सुदर्शना कहते हैं, और गुणभी प्रायः इसमें सुदर्शनके ही हैं ॥ १६ ॥

मयूरशिखानामगुणाः ।

मयूराह्वा शिखा ज्ञेया साहस्री मधुकच्छदा ।
मयूराह्वा शिखा लघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥ १७ ॥

मयूराह्वा, शिखा, साहस्री, मधुकच्छदा ये नाम मोरशिखाके हैं । मोरशिखा हलकी है, पित्त, कफ, अतिसार इनको जीतती है, इनके क्षुप प्रायः पक्के तालावोंके किनारे देखे हैं, पत्त कटीलीसे होते हैं, ऊपर मोरकीसी शिखा होता है इसलिये इसको मोरशिखा कहते हैं ॥ १७ ॥

लक्ष्मणानामगुणाः ।

लक्ष्मणा पुत्रदा रक्ता बिन्दुपत्रा च नागिनी ।
गोक्षीरसदृशं पुष्पं रोमवल्लिसमन्वितम् ॥ १८ ॥

लक्ष्मणा, पुत्रदा, रक्ता, बिंदुपत्रा, नागिनी ये नाम लक्ष्मणाके हैं । गौके दूधके समान सफेद फूल हो रोम और बेलसे युत हो ॥ १८ ॥

रक्तबिंदुश्च पत्रेषु लक्ष्मणाकारमुच्यते ।
लक्ष्मणा गर्भदा शीता सरा वृष्या त्रिदोषनुत् ॥ १९ ॥

लालबून्दके समान पत्रोंपर लाल २ छीटेकेसे होते हैं, यह लक्ष्मणाका आकार कहा है, लक्ष्मणा गर्भ देती है, शीतल है, सर है, धातुको पुष्ट करती है, त्रिदोषको दूर करती है । लक्ष्मणाकी बेल होती है, इसमें बारीक २ रोम होते हैं, फूल सफेद होते हैं, इसमेंसे दूधभी निकलता है । नीचे सफेद कन्द होता है, इसको पुत्रदाभी कहते हैं । इसके अभावमें सफेद फूलकी कटेली लेनाचाहिये. दर्भंगाकी ओर अन्य कन्दको लक्ष्मणा मानते हैं विहारके वैद्य उसीको लेते हैं ॥ १९ ॥

मांसरोहिणीनामगुणाः ।

मांसरोहिण्यतिरुहा वृत्ता चर्मकसा कसा ।
स्यान्मांसरोहिणी वृष्या सरा दोषत्रयापहा ॥ ३२० ॥

मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकसा, कसा ये नाम रोहिणीके हैं । मांसरोहिणी धातुको बढाती है, सर है त्रिदोषको हरती है ॥ ३२० ॥

अस्थिसंहारकनामगुणाः ।

अस्थिसंहारको वज्रवल्लरी क्रोष्टुघण्टिका ।

वज्राङ्गी ग्रंथिमान्वज्रप्रोक्ता स्यादस्थिशृंखला ।
अस्थिसंहारकः शीतो वृष्यो वातहरोऽस्थियुक् ॥ २१ ॥

अस्थिसंहारक, वज्रवल्लरी, क्रोष्टु-घंटिका, वज्रांगी, ग्रंथिमान्, वज्रप्रोक्ता, अस्थिशृंखला ये नाम हडसंहारीके हैं। हडसंहारी शीतल है, धातुको पुष्ट करती है, वातको हरती है और हड्डीको जोडती है। इसकी बेल होती है, थोडी २ दूरपर सैंगलकीसी गांठ होती है ॥ २१ ॥

अर्कनामगुणा।

अर्कः सूर्याह्वयः क्षीरी सदापुष्पो विकीरणः ।
मन्दारो वसुकोऽलर्को राजाह्वो दीर्घपत्रकः ॥ २२ ॥

अर्क, सूर्याह्वय, क्षीरी सदापुष्प, विकीरण, मन्दार, वसुक, अलर्क राजाह्व दीर्घपत्रक ये नाम आकके हैं, यह लाल और श्वेत भेदसे दो प्रकारका होता हैं ॥२२॥

अर्कद्वयं शंखवातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् ।
निहंति प्लीहगुल्मार्शोयकृच्छ्लेष्मोदरक्रिमीन् ॥ २३ ॥

दोनों आक शंखवात, कुष्ठ, खाज, विष, घाव, तिल्लीरोग, गुल्म, बवासीर, यकृत्, कफ, उदररोग, कृमि इनको नाशते हैं। आक, मदार इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ २३ ॥

करवीरनामगुणाः ।

करवीरोऽश्वहा श्वेतपुष्पा स्याच्छतपुष्पकः ।
रक्तपुष्पोऽपरश्चण्डो लगुडः करवीरकः ॥ २४ ॥

करवीर, अश्वहा, श्वेतपुष्पा, शतपुष्पक, ये नाम सफेद कनेरके हैं । रक्तपुष्प चंड, लगुड, करवीरक ये नाम लाल कनेरके हैं ॥ २४ ॥

करवीरद्वयं नेत्रशोफकण्डूव्रणापहम् ।
लघूष्णं कृमिकण्डूघ्नं भक्षितं विषवन्मतम् ॥ २५ ॥

दोनों कनेर नेत्ररोग, शोजा, खाज, घाव इनको नाशते हैं, हलके हैं, गर्म हैं, कृमि और खाजको हरते हैं, खानेमें विषके समान माने हैं, कनेर प्रसिद्ध है ॥ २५ ॥

धत्तूरनामगुणाः ।

धत्तूरः कितवो धूर्तो देवता मदनः शठः ।
उन्मत्तो मातलस्तूरी तरकः कनकाह्वयः ॥ २६ ॥

धतूर, कितव, धूर्त, देवता, मदन, शठ, उन्मत्त, मातल, तूरी, तरक, कनकाह्वय ये नाम धतूराके हैं ॥ २६ ॥

धत्तूरो मदवर्णाग्निवान्तिकुञ्जरकुष्ठनुत् ।
उष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः ॥ २७ ॥

धतूरा-मद, वर्ण, अग्नि, छर्दि, हस्तिकुष्ठ इनको दूर करता है, गर्म है, भारी है. घाव, कफ, खाज, कृमि, विष इनको नाशता है, धतूरा सब जगह प्रसिद्ध है ॥ २७ ॥

कलिकारीनामगुणाः ।

कलिकारी वह्निमुखी लाङ्गली गर्भपातिनी ।
विशल्या हलिनी शीरी प्रभाता शुक्लपुष्पिका ॥ २८ ॥
विद्युदुल्काऽग्निजिह्वा च कथिता पुष्पसी भरा ।
वह्निशिखाऽग्निका ज्ञेया नलरन्ध्री च सा स्मृता ॥ २९ ॥

कालिकारी, वह्निमुखी, लांगली, गर्भपातिनी, विशल्या, हलिनी, शीरी, प्रभाता, शुक्लपुष्पिका, विद्युत्, उल्का, अग्निजिह्वा, पुष्पसी, भरा, वह्निशिखा, अग्निका, नलरंध्री ये कलहारीके नाम हैं ॥ २८-२९ ॥

कलिकारी सरा कुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित् ।
तीक्ष्णोष्णा कृमिनुल्लघ्वी पित्तला गर्भपातिनी ॥ ३३० ॥

कलहारी सर है, कुष्ठ, शोजा, बवासीर, घाव, शूल इनको नाशती है, तेज और गर्म है, कृमिको दूर करती है, हलकी है, पित्तको उपजाती है, गर्भको गिराती है । कालिहारी, लांगलीकंद, अग्निशिखा इन नामोंसे प्रसिद्ध है । हलदीकेसे पत्तोंवाली लंबी पूँछसी जमीनसे निकलती है, नीचेसे हलदीकीसी गांठोंका गुच्छा निकलता है, ऊपर अग्निकी लाटके रंगका फूल निकलता है । टकसालमें इसको नगरौडी कहते हैं ॥ ३३० ॥

कुमारीनामगुणाः ।

कुमारी मण्डला माता गृहकन्याऽतिपिच्छला ।
रसायनी कटिकिनी सवराऽन्या वनोद्भवा ॥ ३१ ॥

कुमारी मंडला, माता, गृहकन्या, अतिपिच्छला, रसायनी, कटिकिनी, सवरा और वनोद्भवा ये कुँवारपठाके नाम हैं ॥ ३१ ॥

कुमारी भेदनी शीता यकृत्प्लीहकफज्वरान् ।
निहन्ति ग्रन्थिविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान् ॥ ३२ ॥

कुँवारपट्टा भेदन और शीतल है, यकृत्, प्लीहरोग, कफ, ज्वर इनको नाशता है और ग्रंथि, विस्फोट, रक्तपित्त, त्वचारोग इनको दूर करता है, घीकुँवार या गुवाँरपाठेके नामसे प्रसिद्ध है ॥ ३२ ॥

भङ्गानामगुणाः ।

भङ्गाऽङ्गजा मातुलानी मोहिनी विजया जया ।
भङ्गा कफहरा तिक्ता ग्राहिणी दीपनी लघुः ।
तीक्ष्णोष्णा पित्तलानाहमदकृद्वाग्निवर्द्धिनी ॥ ३३ ॥

भंगा, अंगजा, मातुलानी, मोहिनी, विजया, जया ये भांगके नाम हैं। भांग कफको हरती है, कडुवी है, मलको बांधती है, अग्निको जगाती है, हलकी है, तेज है, गर्म है, पित्तको उपजाती है, अफारा और मदको करती है, अग्निको बढाती है, भांग सब जगह प्रसिद्ध है ॥ ३३ ॥

काञ्चनीनामगुणाः ।

काञ्चनी शोणफलिनी काकायुः काकवल्लरी ।
काञ्चनी स्तन्यदा मूर्द्धव्यथादोषत्रयापहा ॥ ३४ ॥

कांचनी, शोणफलिनी, काकायु, काकवल्लरी ये कांचनीके नाम हैं । कांचनी दूध बढाती है, शिरकी पीडा, त्रिदोष इन्होंको नाश करती है ॥ ३४ ॥

दूर्वानामगुणाः ।

दूर्वा शस्या शीतकरी गोलोमी शतपर्विका ।
अन्या श्वेता श्वेतदण्डा भार्गवी दुर्मता रुहा ।
दूर्वा हिमा विसर्पास्रतृट्पित्तकफदाहजित् ॥ ३५ ॥

दूर्वा, शस्या, शीतकरी, गोलोमी, शतपर्विका ये दूबके नाम हैं । श्वेता, श्वेतदंडा, भार्गवी, दुर्मता, रुहा, ये श्वेतदूर्वाके नाम हैं । दूब शीतल है, विसर्प, रक्त, तृषा, पित्त, कफ, दाह इनको जीतती है ॥ ३५ ॥

गण्डदूर्वानामगुणाः ।

गण्डदूर्वा मत्स्यगन्धा मत्स्याक्षी शकुलादनी ।
गण्डदूर्वा हिमा लोहद्राविणी ग्राहिणी लघुः ।
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा ॥ ३६ ॥

गंडदूर्वा, मत्स्यगंधा, मत्स्याक्षी, शकुलादनी, ये गंडदूबके नाम हैं । गंडदूब शीतल हैं, लोहाको तावती है, मलको बांधती है, हलकी है, दाह, तृषा, कफ, रक्त, कुष्ठ, पित्तज्वर इनको दूर करती है। गांडर दूब मोटे किस्मकी दूब होती है ॥ ३६ ॥

काशनामगुणाः ।

काशः सुकाण्डः काशेक्षुर्ऋषीकः श्वेतवासरः ।
इक्ष्वारिकेक्षुकाशश्च स चैवेक्षुरसः स्मृतः ।
कासकृच्छ्राश्मदाहास्रपित्तक्षयकरो हिमः ॥ ३७ ॥

काश, सुकांड, काशेक्षु, ऋषीक, श्वेतवासर, इक्ष्वारिका, इक्षुकाश, इक्षुरस ये नाम कासके हैं। कास, मूत्रकृच्छ्र, दाह, रक्तपित्त, क्षय इनको नष्ट करता है और शीतल है, नदियोंमें होता है, कास नामसे प्रसिद्ध है ॥ ३७ ॥

कुशनामगुणाः ।

दर्भो बर्हिः कुशस्तीक्ष्णः सूच्यग्रो यज्ञभूषणः ।
दर्भः कृच्छ्राश्मतृट्पित्तबस्तिरुक्कफरक्तजित् ॥ ३८ ॥

दर्भ, बर्हि, कुश, तीक्ष्ण, सूच्यग्र, यज्ञभूषण ये डाभके नाम हैं। डाभ मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, पित्त, बस्तिरोग इनको दूर करती है और कफ रक्तको जीतती है कुशा प्रसिद्ध है ॥ ३८ ॥

मुञ्जनामगुणाः ।

मुञ्जः क्षुरा स्थूलदर्भो बाणाह्वो ब्रह्ममेखलः ।
मुञ्जोऽनुष्णो विसर्पास्रमूत्रबस्त्यक्षिरोगजित् ॥ ३९ ॥

मुञ्ज, क्षुरा, स्थूल, बाणाह्व, ब्रह्ममेखल ये नाम मूंजके हैं, गर्म नहीं है, विसर्प, रक्त, मूत्ररोग, बस्तिरोग, अक्षिरोग इनको नाशती है, मूंज प्रसिद्ध है ॥ ३९ ॥

नलनामगुणाः ।

नलो रन्ध्री पुष्पमृत्युर्दमनोऽनन्तकः पिटः ।
नलो मूत्रार्तिदाहास्रकफपित्तविसर्पजित् ॥ ३४० ॥

नल, रंध्री, पुष्पमृत्यु, दमन, अनंतक, पिट ये नरसलके नाम हैं। नरसल मूत्ररोग, दाह, रक्त, कफ, पित्त, विसर्प इनको जीतता है, नरसल (नडा) प्रसिद्ध है ॥ ३४० ॥

वंशनामगुणा ।

वंशो वेणुः कीचकः स्यात्कर्मारस्त्वचिसारकः ।
वंशः सरो हिमः पित्तकफदाहास्रशोफजित् ॥ ४१ ॥

वंश, वेणु, कीचक, कर्मार, त्वचिसारक ये बांसके नाम हैं । बांस सर और शीतल है, पित्त, कफ, दाह, रक्त, शोजा, इनको जीतता है । बांस वेणु प्रसिद्ध है ॥ ४१ ॥

तत्करीरो गुरुर्भेदी श्लेष्मलो वातपित्तजित् ।
(तथा च भेदकोऽत्युष्णः कफघ्नो वातपित्तजित् ॥ ४२ ॥)

बांसका अंकुर भारी है, भेदी है, कफको उपजाता है और वातपित्तको जीतता है । (तथा भेदक है, अत्यन्त गर्म है, कफको नाशता है और वातपित्तको जीतता है) ॥ ४२ ॥

पारसीकजवानीनामगुणाः ।

जवानी जवनी तीव्रा तुरुष्का मदकारिणी ।
जवानी जीवनी रूक्षा ग्राहिणी मादिनी गुरुः ॥ ४३ ॥

जवानी, जवनी, तीव्रा, तुरुष्का, मदकारिणी ये पारसीकयवानिका नाम अजवायनके हैं । अजवायन-जीवन है, रूखी है, मलको बांधती है, मद करती है और भारी है, खुरासानीजवायनके नामसे प्रसिद्ध है ॥ ४३ ॥

खसतिल (फीमदाना) नामगुणाः ।

तिलभेदाः खसतिलः शुभ्रपुष्पो लसत्फलः ।
वृष्यो बल्यः खसतिलः श्लेष्मलो वातजिद्गुरुः ॥
वल्कलस्तत्फलोद्भूतो रूक्षो ग्राही विशेषतः ॥ ४४ ॥

तिलभेद (खसखस) खसतिल, शुभ्रपुष्प, लसत्फल ये पोस्तके नाम हैं । पोस्त बल करता है, धातुको बढ़ाता है, कफ करता है, वातको जीतता है और भारी है । पोस्ताका छिलका रूखा है, विशेषकर मलको बांधता है ॥ ४४ ॥

अहिफेन (अफीम) नामगुणाः ।

आफूकं तद्रसोद्भूतमहिफेनं सफेनकम् ।
आफूकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलम् ॥ ४५ ॥

आफूक, तद्रसोद्भूत, अहिफेन, ये अफीमके नाम हैं । अफीम शोषक है, मलको रोकती है, कफको नाशती है, वात पित्तको करती है ॥ ४५ ॥

छिलिहिण्ठनामगुणाः ।

छिलिहिण्ठो महामूलः पातालो गरुडाह्वयः ।
छिलिहिण्ठः परं वृष्यः श्लेष्मलः पवनापहः ॥ ४६ ॥

छिलिहिण्ठ, महामूल, पाताल, गरुडाह्वय ये छिलहिण्ठके नाम हैं। छिलिहिण्ठ उत्तम पुष्टि कर्ता है, कफ और वातको नाशता है। छिरहटा नामसे प्रसिद्ध है ॥४६॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णो
वर्गोऽयं ललितपदाङ्कितोऽभयादिः ॥ ३४७ ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टावभयादिवर्गः प्रथमः ॥ १ ॥

राजाओंमें मस्तकके तिलकसमान (प्रधान) कटारमल्ल (कटारकी लडाईका योधा) उस मदनराजाके रचेहुए इस मदन विनोद नामक ग्रंथमें ललितपदोंसे अंकितहुआ अभयादि वर्ग पूर्ण हुआ ॥ ३४७ ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ पं०-रामप्रसादवैद्यरत्न विरचित भाषातत्त्व प्रकाशिनी-भाषाटीकायामभयादिवर्गः प्रथमः ॥ १ ॥

ॐ तद्रविराजितमन्यमनन्तं श्रीरुचिरं परमक्षरमेकम् ।
श्रीमदनक्षितिनाथ सदा ते विष्णुपदं विपदं विनिहन्तु ॥ १ ॥

मदनराजाके नामसे ग्रन्थ लिखनेवाला पण्डित मदनराजाको संबोधन देकर कहता है-हे मदनराजा ! दूसरे सूर्यवत् प्रकाशित लक्ष्मीकी शोभासे शोभायमान अनंत परम कभी क्षय न होनेवाला विष्णुपद तुम्हारी विपत्तियोंको नष्ट करे ॥ १ ॥

शुंठीनामगुणाः ।

शुण्ठी विश्वौषधं विश्वं कटुभद्रं कटूत्कटम् ।
महौषधं शृङ्गवेरं नागरं विश्वभेषजम् ॥ २ ॥

शुंठी, विश्वौषध, विश्व, कटुभद्र, कटूत्कट, महौषध, शृंगवेर, नागर, विश्वभेषज, ये शुंठीके नाम हैं ॥ २ ॥

शुण्ठी रुच्याऽऽमवातघ्नी पाचनी कटुका लघुः ।
स्निग्धोष्णा कटुका पाके कफवातविबन्धनुत् ॥ ३ ॥

सोंठ रुचिको उपजाती है, आमवातको नाशती है, पाचन है, चर्परी है, हलकी है, चिकनी है, गर्म, है, पाकमें चर्परी है। यह कफ, वात, विबन्ध इनको दूर करती है ॥ ३ ॥

वृष्या स्वर्या वमिश्वासकासशूलहृदामयान्।
हन्ति श्लीपदशोफार्शआनाहोदरमारुतान् ॥ ४ ॥

सोंठ-पुष्ट करती है, स्वरको बढ़ाती है, छर्दि, श्वास, खांसी, शूल, हृद्रोग, श्लीपद, शोजा, बवासीर, अफारा, उदररोग, वातरोग इनको नाशकरती है ॥ ४ ॥

आर्द्रकनामगुणाः।

आर्द्रकं शृङ्गवेरं तन्महौषधमुदाहृतम्।
आर्द्रकं नागरगुणं भेदनं दीपनं गुरु ॥ ५ ॥

आर्द्रक, शृंगवेर, महौषध ये अदरकके नाम हैं। अदरकमें सोंठके सब गुण हैं। भेदन है, दीपन हैं, और भारी है, अदरक प्रसिद्ध है इसीको छीलकर सुखादेनेसे सोंठ होजाती है ॥ ५ ॥

कटूष्णं दीपनं वृष्यं रुच्यमार्द्रकनागरम्।
श्वासकासवमीहिक्कावातश्लेष्मविबन्धनुत् ॥ ६ ॥

अदरक-चर्परा है, अग्निको जगाता है, धातुको पुष्ट करता है, रुचिको उपजाता है और श्वास, खांसी, छर्दि, हिचकी, वात, कफ, विबन्ध इनको दूर करता है ॥ ६ ॥

पाचनं रोचनं वृष्यं कटूष्णं वह्निदीपनम्।
वातप्रकोपशमनं पाचनं शोथहृत्परम् ॥ ७ ॥

पकाया अदरक-रोचन है, वीर्यको देता है, चर्परा है, गर्म है, अग्निको दीपन करता है, वातके कोपको शान्त करता है, पाचन है, और शोजाको हरता है ॥ ७ ॥

भोजनादौ सदा पथ्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम्।
अम्यक्तरसवीर्यत्वात्तत्परं तु कफापहम् ॥ ८ ॥

भोजनके आदिमें सदा पथ्य है, जीभको और कंठको शोधन करता है, अव्यक्तरस वीर्यवाला होनेसे कफको नष्ट करता है ॥ ८ ॥

काञ्जिकार्द्रं सलवणं दीपनं पाचनं परम्।
वातप्रकोपशमनं हर्षणं लवणार्द्रकम् ॥ ९ ॥

कांजी और नमक सहित अदरक अग्निको जगाता है, पाचन है, नमकसहित अदरक वातके कोपको शांत करता है, जिह्वाको हर्षित करता है ॥ ९ ॥

मरीचनामगुणाः ।

मरिचं वल्लिजं तीक्ष्णं मलिनं श्यामभूषणम् ।
मरिचं कटुकं तीक्ष्णं दीपनं कफवातनुत् ।
उष्णं पित्तकरं रूक्षं श्वासशूलकृमीञ्जयेत् ॥ १० ॥

मरिच, वल्लिज, तीक्ष्ण, मलिन, श्यामभूषण ये मिरचके नाम हैं। मिरच चर्परी है, तेज है, दीपन है, कफ-वातको दूर करती है, गर्म है, पित्तको करती है, रूखी है और श्वास, शूल, कृमि इनको जीतती है ॥ १० ॥

तदार्द्रं मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु ।
किञ्चित्तीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम् ॥ ११ ॥

गीली मिरच पाकमें मीठी है, अत्यन्त गर्म नहीं है, चर्परी है, भारी है, कुछ तेज गुणवाली है, कफको निकासती है, पित्तको नहीं करती है। गोल मिरच काली मिरच इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ११ ॥

पिप्पलीनामगुणाः ।

पिप्पली चपला कृष्णा मागधी मगधा कणा ।
विश्वोपकुल्या वैदेही शौण्डी स्यात्तीक्ष्णतण्डुला ॥ १२ ॥

पिप्पली, चपला, कृष्णा, मागधी, मगधा, कणा, विश्वा, उपकुल्या, वैदेही, शौंडी, तीक्ष्णतण्डुला ये पीपलके नाम हैं ॥ १२ ॥

पिप्पली दीपनी वृष्या स्वादुः पाके रसायनी ।
अत्युष्णा कटुका स्निग्धा कफवातहरा लघुः ॥ १३ ॥

पीपल अग्निको जगाती है, वीर्यको बढाती है, पाकमें स्वादु है, बुढापेको दूर करती है, अत्यन्त गर्म है, चर्परी है, चिकनी है, कफवातको हरती है और हलकी है ॥ १३ ॥

पित्तला रेचनी हंति श्वासकासोदरज्वरान् ।
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शः प्लीहशूलाममारुतान् ।
आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा शीतला मधुरा गुरुः ॥ १४ ॥

पिप्पली पित्तको उपजाती है, दस्त लगाती है, श्वास, खांसी, उदररोग, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, बवासीर, तिल्लीरोग, शूल, आमवात इनको दूर करती है, गीली पीपल कफको देती , चिकनी है, मीठी है, भारी है, पीपल मधुपीपल नामसे प्रसिद्ध है ॥ १४ ॥

त्र्यूषणचतुरूषणनामगुणाः ।

विश्वोपकुल्यामरिचैस्त्र्यूषणं कटुकं कटु ।
व्योषं कटुत्रयं तत्स्यात्सग्रन्थि चतुरूषणम् ॥ १५ ॥

सोंठ, पीपल, मिरच इन, तीनोंको मिलानेसे त्रिकुटा होता है. त्र्यूषण, कटुक, कटु, व्योष, कटुत्रय ये नाम त्र्यूषणके हैं और पीपलामूल मिलानेसे चतुरूषण होता है ॥ १५ ॥

त्र्यूषणं दीपनं हंति श्वासकासत्वगामयान् ।
गुल्ममेहकफस्थौल्यमेहश्लीपदपीनसान् ॥ १६ ॥

त्र्यूषण अग्निको जगाता है, खांसी, श्वास, त्वचारोग, गुल्म, प्रमेह, कफ, बुढापा श्लीपद, पीनस इनको दूर करता है ॥ १६ ॥

कणामूलं कटु ग्रंथिः पिप्पलीमूलमूषणम् ।
षड्ग्रंथो ग्रंथिकं मूलं मागधं चटिकाशिरः ॥ १७ ॥

कणामूल, कटु, ग्रन्थि, पीपलीमूल, ऊषण, षड्ग्रन्थ, ग्रन्थिक, मूल, मागध, चटिकाशिर ये नाम पीपलामूलके हैं ॥ १७ ॥

दीपनं पिप्पलीमूलं कटूष्णं पाचनं लघु ।
रूक्षं पित्तकरं भेदि कफवातोदरापहम् ॥ १८ ॥

पीपलामूल अग्निको जगाता है, गर्म है, चर्परा है, पाचक है, हलका है, रूखा है पित्तको करता है, भेदी है और कफ, वात, उदररोग इनको नाशता है, पीपलामूल नामसे प्रसिद्ध है ॥ १८ ॥

चव्यनामगुणाः ।

चव्यं चवणमुच्छिष्टं चविका कोलवल्लिका
पिप्पलीमूलवत्तस्याद्विशेषाद्गुदजापहम् ।
चव्यपुष्पं गरश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥ १९ ॥

चव्य, चवण, उच्छिष्ट, चविका, कोलवल्लिका ये नाम चव्यके हैं । इसमें पीपलामूलके समान गुण हैं । विशेष करके गुदाके रोगको नाशता है,

चव्यफूल कृत्रिमविष, श्वास, खांसी, क्षय इनको नाशता है । चव्य प्रसिद्ध है॥१९॥

गजपिप्पलीनामगुणाः ।

तत्फलं श्रेयसी हस्तिमागधा गजपिप्पली ।
गजकृष्णा कटुर्वातश्लेष्मनुद्वह्निवर्द्धिनी ।
उष्णा निहन्त्यतीसारं श्वासकण्ठामयक्रिमीन् ॥ २० ॥

जायफल श्रेयसी, हस्तिमागधा, गजपिप्पली, गजकृष्णा ये नाम गजपीपलके हैं । गजपीपल चर्परी है, वात कफको नाशती है, अग्निको जगाती है, गर्म है और अतीसार, श्वास, कण्ठरोग, कृमि इनको नाशती है ॥ २० ॥

चित्रकनामगुणाः ।

चित्रको हुतभुग् व्यालो दारुणो दहनोऽरुणः ।
अग्निमाली हविःपाची वह्निनामा विशेषतः ॥ २१ ॥

चित्रक, हुतभुक्, व्याल, दारुण, दहन, अरुण, अग्निमाली, हविःपाची और विशेष करके जितने अग्निके नाम हैं सब चित्रकके जानने ॥ २१ ॥

चित्रकः कटुकः पाके वह्निकृत्पाचनो लघुः ।
रूक्षोष्णो ग्रहणीकुष्ठशोफार्शःकृमिकासजित् ।
श्लेष्मानिलहरो ग्राही तच्छाकं श्लेष्मवातनुत् ॥ २२ ॥

चीता पाकमें चर्परा है, अग्निको करता है, रोचन है, हलका है, रूखा है, गर्म है और ग्रहणी, कुष्ठ, शोजा, बवासीर, कृमि, खांसी इनको नाशता है, कफ वातको हरता है और मलको बांधता है । चीतेका शाक कफ वातको दूर करता है, चीता सब जगह प्रसिद्ध है ॥ २२ ॥

पञ्चकोलषडूषणनामगुणाः ।

पिप्पलीमगधामूलचव्यनागरचित्रकैः ।
पञ्चकोलं कफानाहगुल्मशूलारुचीर्जयेत् ।
मरिचेभयुतं तत्तु षडूषणमुदाहृतम् ॥ २३ ॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठ, चीता इन पांचोंको मिलानेसे पञ्चकोल होता है । पंचकोल कफ, अफारा, गुल्म, शूल, अरुचि इन्होंको जीतता है । मिरच, सोंठ, चव्य, चीता, पीपलामूल, पीपल इन छहोंको मिलानेसे षडूषण कहाता है ॥ २३ ॥

शतपुष्पानामगुणाः ।

शतपुष्पा शतघ्योषा शताह्वा कारवी मिशिः ।
अवाक्पुष्पी त्वचिच्छित्रा शेतिका मागधी परा ॥ २४ ॥

शतपुष्पा, शतघ्योषा, शताह्वा, कारवी, मिशि, अवाक्पुष्पी, त्वचिच्छत्रा ये सौंफके नाम हैं, शेतिका मागधी ये नाम दूसरे प्रकारकी सौंफके हैं ॥ २४ ॥

शतपुष्पा लघुस्तीक्ष्णा पित्तकृद्दीपनी कटुः ।
उष्णा ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगजित् ।
शेतिका तद्गुणा प्रोक्ता विशेषाद्योनिशूलहृत् ॥ २५ ॥

सौंफ हलकी है, तेज है, पित्तको करती है, अग्निको जगाती है, चर्परी है, गर्म है, ज्वर, वात, कफ, घाव, शूल, नेत्ररोग इनको जीतती है, शेतिकामें भी येही गुण हैं, विशेषकर योनिशूलको हरती है ॥ २५ ॥

मिश्रेया (सोया) नामगुणाः ।

मिश्रेया मिशिशालीनौ शाली शीतशिवा मता ।
मिश्रेया दीपनी हृद्या बद्धविट्कृमिशुक्रनुत् ।
रूक्षोष्णा तत्फलं कासवमिश्लेष्मानिलाञ्जयेत् ॥ २६ ॥

मिश्रेया, मिशि शालीन, शाली, शीतशिवा ये सोयाके नाम हैं । सोया अग्निको जगाता है, हृद्य है, विबंध, कृमि, वीर्यरोग इनको दूर करता है, यह रूखा और गर्म है, सोयाका फल खांसी छर्दि, कफ, वात इनको जीतता है सोया नामसे प्रसिद्ध है ॥ २६ ॥

मेथिकानामगुणाः ।

मेथिका बस्तिका शेलुरोहित्यौ वनमेथिका ।
रोहित्योऽल्पगुणस्तस्माद्वाजिनां स तु पूजितः ॥

मेथिका, बस्तिका, शेलु, रोहिती, वनमेथिका ये नाम मेथी और रानीमेथीके हैं। मेथी अग्निको जगाती है, दिलको ताकत देती है, विष्ठाके कृमिको दूर करती है यह शूल, वीर्यरोग, गोला, वायशूल इनको नाशती है और कफको दूर करती है, रानीमेथीम इससे कम गुण हैं परंतु घोडोंको गुण देती है ॥ २७ ॥

अजमोदानामगुणाः ।

अजमोदाऽत्युग्रगन्धा मोदा हस्तिमयूरकः ।
खराह्वा कारवी वल्ली बस्तमोदा च मर्कटः ॥ २८ ॥

अजमोदा, अत्युग्रगंधा, मोदा, हस्तिमयूरक, खराह्वा, कारवी, वल्ली, बस्तमोदा, मर्कट ये अजमोदाके नाम हैं ॥ २८ ॥

अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत् ।
उष्णा विदाहिनी हृद्या वृष्या बद्धमला लघुः ।
नेत्रामयक्रिमिच्छर्दिसिध्मवस्तिरुजो जयेत् ॥ २९ ॥

अजमोदा चर्परा है, तीक्ष्ण है, अग्निको जगाता है, कफवातको दूर करता है, गर्म है, दाह करता है, हृद्य है, पुष्टि करता है, मलको बांधता है, हलका है और नेत्ररोग, कृमि, छर्दि, सींप, बस्तिरोग इनको जीतता है, पहाडी अजवायनको अजमोद कहते हैं ॥ २९ ॥

श्वेतजीरकश्यामजीरकस्थूलाजाजीनामगुणाः ।

जीरकं दीर्घकं शुक्लमजाजी कणजीरकम् ।
जीरकं जरणं कृष्णं वर्षाकालसुगन्धिकम् ॥ ३० ॥

जीरक, दीर्घक, शुक्ल, अजाजी, कणजीरक ये सफेद जीराके नाम हैं। जीरक जरण, कृष्ण, वर्षाकाल सुगंधिक, ये काले जीरेके नाम हैं ॥ ३० ॥

कलिका बाष्पिका कुञ्चिः कारवी चोपकुञ्चिका ।
पृथ्वीका सुषवी पृथ्वी स्थूलाजाज्युपकालिका ॥ ३१ ॥

कलिका, बाष्पिका, कुंचि, कारवी, उपकुंचिका, पृथ्वीका, सुषवी, पृथ्वी, स्थूलाजाजी, उपकालिका ये कलौंजीके नाम हैं ॥ ३१ ॥

जीरकत्रितयं रूक्षं कटूष्णं दीपनं लघु ।
संग्राहि पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।
चक्षुष्यं पवनाध्मानगुल्मच्छर्दिबलासजित् ॥ ३२ ॥

तीनों जीरे रूखे हैं, चर्परे हैं, गर्म हैं, अग्निको जगाते हैं, मलको बांधते हैं, पित्तको करते हैं, बुद्धिको बढाते हैं, गर्भाशयको शोधते हैं, नेत्रोंमें सुख देते हैं और वात, आध्मान, गुल्म, छर्दि, कफ इनको जीतते हैं ॥ ३२ ॥

यवानीनामगुणाः ।

यवानी दीप्यको दीप्यो दीपनीया यवानिका ।
यवसाह्वोग्रगन्धा स्याद्यवाह्वा भूकदम्बकः ॥ ३३ ॥

यवानी, दीप्यक, दीप्य, दीपनीया, यवानिका, यवसाह्वा, उग्रगंधा, यवाह्वा, भूकदम्बक ये अजवायनके नाम हैं ॥ ३३ ॥

जवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः।
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मशूलक्रिमीञ्जयेत् ॥ ३४ ॥

अजवायन पाचक है, रुचिको उपजाती है, तेज है, गर्म है, चर्परी है हलकी है और वात, कफ, उदररोग, अफारा, गुल्म, शूल, कृमि इनको नाश करती है, अजवायन देशी प्रसिद्ध है ॥ ३४ ॥

चौहारनामगुणाः।

यवानीया यवानी स्याच्चौहारो जन्तुनाशनः।
चौहारस्तद्गुणः प्रोक्तो विशेषात्कृमिनाशनः ॥ ३५ ॥

यवानीया, यवानी, चौहार, जन्तुनाशन, ये चौहारके नाम हैं। चौहार अजवायनमें अजवायनके गुण हैं। विशेष करके कृमिरोगोंको नष्ट करती है इसको खाकाजमोद भी कहते हैं ॥ ३५ ॥

अजगन्धानामगुणाः।

अजगन्धा पूतिकीटा वर्वरी पूतिवर्वरः।
कारवी खरपुष्पा च तुङ्गी पूतिमयूरकः ॥ ३६ ॥

अजगन्धा, पूतिकीटा, वर्वरी, पूतिवर्वर, कारवी, खरपुष्पा, तुंगी, पूतिमयूरक ये अजगन्धाके नाम हैं ॥ ३६ ॥

अजगन्धा कटुस्तीक्ष्णा रूक्षा हृद्याऽग्निवर्द्धिनी।
दृष्टिमान्द्यप्रदा लघ्वी शुक्रवातकफापहा ॥ ३७ ॥

अजगन्धा चर्परी है, तेज है, रूखी है, हृद्य है, अग्निको बढाती है, दृष्टिको मन्द करती है, हलकी है और वीर्य, वात, कफ इनको नाश करती है, अजगन्धा वन अजवायनका भेद है ॥ ३७ ॥

बचानामगुणाः।

वचोग्रगन्धा गोलोमी षड्ग्रन्था जटिला मता।
जटिला शतपर्वाऽन्या लोमशा हेमवत्यपि ॥ ३८ ॥

वचा, उग्रगन्धा, गोलोमी, षड्ग्रन्था, जटिला, ये वचके नाम हैं, जटिला, शतपर्वा, लोमशा, हेमवती ये नाम दूसरी वचके हैं ॥ ३८ ॥

वचोष्णा कटुका तिक्ता वामनी स्वरवह्निकृत्।
अपस्मारकफोन्मादभूतशूलानिलाञ्जयेत् ॥ ३९ ॥

वच गर्म है, चर्परी है, कडवी है, छर्दि लाती है, स्वर और अग्निको करती है। ये मृगीरोग, कफ, उन्माद, भूतदोष, शूल, वात इनको जीतती है ॥ ३९ ॥

हपुषानामगुणाः ।

हपुषा वपुषा विश्वा विगंधा विश्वगंधिका ।
हपुषा दीपनी तिक्ता कटूष्णा तुवरा गुरुः ॥ ४० ॥

हपुषा वपुषा, विश्वा, विगन्धा, विश्वगन्धिका ये हाऊबेरके नाम हैं । हाऊबेर-अग्निको जगाता है, कडुवा है, चर्परा है, गर्म है, कसैला और भारी है ॥ ४० ॥

पित्तोदरसमीरार्शोग्रहणीशोफगुल्मजित् ॥ ४१ ॥

पित्त, उदररोग, वात, बवासीर, ग्रहणी, शोजा, गुल्म इन्होंको नाशता है ॥ ४१ ॥

विडंगनामगुणाः ।

विडङ्गं जन्तुहननं कृमिघ्नं क्षुद्रतण्डुला ।
भूतघ्नी तण्डुला घोषा कराला मृगगामिनी ॥ ४२ ॥

विडंग, जंतुहनन, कृमिघ्न, क्षुद्रतण्डुला, भूतघ्नी, तण्डुला, घोषा, कराला, मृगगामिनी ये वायविडंगके नाम हैं ॥ ४२ ॥

विडङ्गं कटु तिक्तोष्णं रूक्षं वह्निकरं लघु ।
गुल्माध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ॥ ४३ ॥

वायविडंग चर्परी है, कडुवी है, गर्म है, रूखी है, अग्निको करती है, हलकी है, गुल्म, आध्मान, उदरोग, कफ, कृमि, वात, विबन्ध इनको दूर करती है ॥ ४३ ॥

धान्या (धनियां) नामगुणाः ।

धान्याकं धान्यकं धान्यं धानेयं च वितुन्नकम् ।
कुस्तुम्बुरु तदार्द्रं तु धानीधानेयकालुकाः ॥ ४४ ॥

धान्याक, धान्यक, धानेय, वितुन्नक, कुस्तुंबुरु ये नाम धनियांके हैं । धानी, धानेय, कालुका ये नाम गीले धनियांके हैं ॥ ४४ ॥

धान्यकं तुवरं स्निग्धमवृष्यं मूत्रलं लघु ।
हृद्यं रूक्षं बद्धविट्कं स्वादु पाके त्रिदोषनुत् ॥ ४५ ॥

धनियाँ कषैला है, चिकना है, वीर्यको नहीं बढाता है, मूत्रको उपजाता है, हलका है, हृदयको हितकारक है, रूखा है, विष्ठाको बांधता है, पाकमें स्वादु और त्रिदोषको दूर करता है ॥ ४५ ॥

पाचनं श्वासकासास्रतृष्णामार्शःकृमीञ्जयेत् ।
आर्द्रीका तद्गुणा स्वादुर्विशेषात्पित्तनाशिनी ॥ ४६ ॥

धनियाँ–पाचन है और श्वास, खांसी, रक्त, तृषा, आम, बवासीर, कृमि इनको जीतता है. गीले धनियामेंभी यही गुण हैं परन्तु विशेष करके पित्तको नाशता है, ॥ ४६ ॥

हिंगुपत्रीनामगुणाः ।

हिंगुपत्री पृथुस्तन्वी पृथ्वीका चारुपत्रिका ।
बाष्पिका कारवी तन्वी बिल्विका दीर्घिका तथा ॥४७॥

हिंगुपत्री, पृथुस्तन्वी, पृथ्वीका, चारुपत्रिका, बाष्पिका, कारवी, तन्वी, बिल्विका, दीर्घिका ये हिंगुपत्रीके नाम हैं ॥ ४७ ॥

हिंगुपत्री परा वेणुपत्री हिंगुशिवाटिका ।
जन्तुका रामठी नाडी पिण्डा हिंगुफला मता ॥ ४८ ॥

हिंगुपत्री, वेणुपत्री, हिंगुशिवाटिका, जंतुका, रामठी, नाडी, पिंडा, हिंगुफला ये दूसरी हिंगुपत्रीके नाम हैं ॥ ४८ ॥

हिंगुपत्रीद्वयं हृद्यं तीक्ष्णोष्णं पाचनं कटु ।
हृद्बस्तिरुग्विबन्धार्शः श्लेष्मगुल्मानिलापहम् ॥ ४९ ॥

दोनों हिंगुपत्री हृदयको हितकरता हैं, तेज हैं, गर्म हैं, पाचन हैं, चर्परी है और हृद्रोग, बस्तिरोग, विबन्ध, बवासीर, कफ, गुल्म, वात इनको नाशती हैं ॥ ४९ ॥

हिंगुनामगुणाः ।

हिंगु बाह्लीकमत्युग्रं रामठं भूतनाशनम् ।
अगूढगंधा जरणं जन्तुघ्नं सूपभूषणम् ॥ ५० ॥

हिंगु, बाह्लीक, अत्युग्र, रामठ, भूत नाशन, अगूढगंधा, जरण, जंतुघ्न, सूपभूषण ये हींगके नाम हैं ॥ ५० ॥

हिंगूष्णं पाचनं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं कफवातनुत् ।
शूलगुल्मोदरानाहकृमिजित्पित्तवर्द्धनम् ॥ ५१ ॥

हींग गर्म है पाचन है, रुचिको उपजाती है, तेज है, कफवातको दूर करती है, शूल, गुल्म, उदररोग, अफारा, कृमि इनको जीतती है, पित्तको बढाती है ॥५१॥

वंशलोचननामगुणाः ।

वंशजा वैणवी क्षीरी त्वक्क्षीरी वंशरोचना ।
तुगाक्षीरी तुगा वंशी वंशक्षीरी शुभा सिता ॥ ५२ ॥

वंशजा, वैणवी, क्षीरी, त्वक्क्षीरी, वंशरोचना, तुगाक्षीरी, तुगा, वंशी, वंशक्षीरी, शुभा, सिता ये वंशलोचनके नाम हैं ॥ ५२ ॥

वंशजा बृंहणी वृष्या शीतला मधुरा जयेत् ।
तृष्णाक्षयज्वरश्वासकासपित्तास्रकामलाः ॥ ५३ ॥

वंशलोचन पुष्टि करता है, वीर्यको बढाता है, शीतल है, मीठा है, तृषा, क्षय, ज्वर, श्वास, खांसी, रक्तपित्त, कामला इनको जीतता है ॥ ५३ ॥

सैन्धवनामगुणाः ।

सैन्धवं सिन्धुजं शुद्धं माणिमन्थं पटूत्तमम् ।
सैन्धवं मधुरं हृद्यं दीपनं शीतलं लघु ।
चक्षुष्यं पाचनं स्निग्धं वृष्यं दोषत्रयापहम् ॥ ५४ ॥

सधव, सिंधुज, शुद्ध, माणिमन्थ, पटूत्तम ये सेंधानमकके नाम हैं । सेंधानमक-मीठा हैं, हृद्य है, अग्निको उपजाता है, शीतल है, हलका है, नेत्रोंमें गुण करता है, पाचन है, चिकना है, धातुको पुष्ट करता है और त्रिदोषको नाशकरता है॥५४॥

सौवर्चल (संचर) नामगुणाः ।

सौवर्चलं सुगन्धाख्यं रुच्यकं हृद्यगन्धकम् ।
सौवर्चलं वह्निकरं कटूष्णं विशदं लघु ।
उद्गारशुद्धिदं सूक्ष्मं विबन्धानाहशूलजित् ॥ ५५ ॥

सौवर्चल, सुगंधाख्य, रुच्यक, हृद्यगन्धक ये काले नमकके नाम हैं । कालानमक अग्निको करता है, चर्परा है, गर्म है, हृद्य है, हलका है, डकारोंको शुद्ध करता है, महीन है और विबंध, अफारा, शूल इनको जीतता है ॥ ५५ ॥

बिडनामगुणाः ।

बिडं कृत्रिमकं पाक्यं धूर्त्तं द्राविडमासुरम् ।

बिडं लघूष्णं विष्टम्भि शूलहृद्रोगवारुचीः ।
हन्त्यानाहकफौ शूलमधोवातानुलोमनम् ॥ ९६ ॥

बिड, कृत्रिमक, पाक्य, धूर्त, द्राविड, आसुर ये मनियारी नमकके नाम हैं। मनियारी नमक हलका है, गर्म है, विष्टंभ करता है, शूल, हृद्रोग, भारीपन अरुचि, अफारा, कफ इनको नाशता है और अधोवातको अनुलोमित करता है ॥ ९६ ॥

सामुद्रकलवणनामगुणाः ।

सामुद्रं वारिसम्भूतमक्षीवं चासुरं तथा ।
सामुद्रं दीपनं स्वादु नात्युष्णं भेदनं कटु ।
श्लेष्मलं वातनुत्तिक्तमरूक्षं नातिपित्तलम् ॥ ९७ ॥

सामुद्र, वारिसंभूत, अक्षीव, आसुर ये नाम सामुद्रकनमकके हैं। सामुद्रकनमक अग्निको जगाता है, स्वादु है, अत्यन्त गर्म नहीं हैं, भेदन है, चर्परा है, कफको दूर करता है, वातको दूर करता है, कडवा है, रूखा नहीं है और अत्यन्त पित्तको नहीं करता है ॥ ९७ ॥

औद्भिदनामगुणाः ।

औद्भिदं भूमिजं भौमं पार्थिवं पृथिवीभवम् ।
औद्भिदं रक्तलं सूक्ष्मं लघु वातानुलोमनम् ॥ ९८ ॥

औद्भिद, भूमिज, भौम, पार्थिव, पृथिवीभव ये नाम रेहनमकके हैं। रेहनमक रक्त उपजाता है, महीन, है, हलका है, वातको अनुलोमित करता है ॥ ९८ ॥

गण्डनामगुणाः ।

गण्डाख्यं रोमलवणं रोम शाकम्भरीभवम् ।
गण्डाख्यं लघु वातघ्नमत्युष्णं भेदि मूत्रलम् ॥ ९९ ॥

गंडाख्य, रोमलवण, रोम, शाकंभरीभव यह रोमकनमकके नाम हैं। रोमकनमक हलका है, वातको नाशता है, अत्यन्त गर्म है, भेदन है और मूत्रको उपजाता है ॥ ९९ ॥

क्षारनामगुणाः ।

क्षारं पांसुभवं त्वौषमौषरं पांसवं वसु ।
क्षारं गुरु कटु स्निग्धं श्लेष्मलं वातनाशनम् ॥ ६० ॥

क्षार, पांसुभव, औष, औषर, पांसव, वसु ये खारी नमकके नाम हैं । खारी नमक-भारी है, चर्परा है, चिकना है, कफको करता है और वातको नाशता है, ॥ ६० ॥

काचलवणनामगुणाः ।

काचं त्रिकूटं पाक्याह्वं लवणं काचसम्भवम् ।
काचं दीपनमत्युष्णं रक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥ ६१ ॥

काच, त्रिकूट, पाक्याह्व, लवण, काचसंभव ये काचनमकके नाम हैं । काचनमक अग्निको जगाता है, अत्यन्त गर्म है, और रक्तपित्तको बढाता है ॥ ६१ ॥

यवक्षारस्वर्जिकाक्षारयोर्नामगुणाः ।

यवक्षारः शूकपाक्यो यावशूको यवाग्रजः ।
स्वर्जिका स्वर्जिकापाक्यः सुखपाक्यः सुवर्चिका ॥ ६२ ॥

यवक्षार, शूकपाक्य, यावशूक, यवाग्रज ये जवाखारके नाम हैं, । स्वर्जिका स्वर्जिकापाक्य, सुखपाक्य, सुवर्चिका ये सज्जीके नाम हैं ॥ ६२ ॥

यवक्षारोऽग्निकृद्वातश्लेष्मश्वासगलामयान् ।
आमार्शोग्रहणीगुल्मयकृत्प्लीहरुजो जयेत् ॥ ६३ ॥

जवाखार, अग्निको करता है, वात, कफ, श्वास, गलरोग, बवासीर, ग्रहणी, गुल्म, यकृत्, तिल्लीरोग इनको जीतता ॥ ६३ ॥

स्वर्जिकाऽल्पगुणा तस्माद्विशेषाद्गुल्मशूलनुत् ॥ ६४ ॥

सज्जीमें यवाखारसे अल्प गुण हैं, विशेषकर गुल्म और शूलको दूर करती है, सज्जी प्रसिद्ध है ॥ ६४ ॥

टंकणनामगुणाः ।

टंकणो मालतीजातो द्रावी लोहविशुद्धिदः ।
टंकणोऽग्निकरो रूक्षः कफघ्नो वातपित्तजित् ॥ ६५ ॥

टंकण, मालतीजात, द्रावी, लोहविशुद्धिद ये सुहागेके नाम हैं । सुहागा-अग्निको करता है, रूखा है, कफको नाशता है और वात पित्तको जीतता है ॥ ६५ ॥

सुधाक्षार (थोहरखार) नामगुणाः ।

सुधाह्वयं सुधा सौधभूषणं कटुशर्करा ।
सुधाक्षारोऽग्निसंकाशः पाकी क्लेदी विदारणः ॥ ६६ ॥

सुधाह्वय सुधा, सौधभूषण, कटुशर्करा ये थोहरखारके नाम हैं । थोहरखार-अग्निके समान है, पकाता है, क्लेदी है और फाडनेवाला है ॥ ६६ ॥

सर्वक्षारनामगुणाः ।

पलाशतिलनामश्वदंष्ट्रकाकदलीभवाः ।
अपामार्गार्कसेहुण्डमोक्षकादिसमुद्भवाः ॥ ६७ ॥

सब खार टेशू, तिलकनाम, गोखरू, केला, ऊंगा, आक, थोहरविशेष, मोखा आदिसे उपजते हैं, ॥ ६७ ॥

क्षारा वह्निसमाः सर्वे पाचना भेदिदारुणाः ।
लघवः क्लेदिनस्तीक्ष्णाः शुक्रला दृष्टिनाशनाः ॥ ६८ ॥

खार अग्निके समान हैं, पाचन हैं, भेदन हैं, फाडनेवाले हैं, हलके हैं, क्लेद करते हैं, तेज हैं, वीर्य देते हैं, दृष्टिको नाशते हैं ॥ ६८ ॥

रक्तपित्तकरा घ्नन्ति विबंधानाहपीनसान् ।
यकृत्प्लीहबलासामगुल्मार्शोग्रहणीकृमीन् ॥ ६९ ॥

खार-रक्तपित्तको करते हैं, विबन्ध, अफारा, पीनस, यकृत, तिल्लीरोग, कफ, आम, गुल्म, बवासीर, संग्रहणी, कृमि इनको नाशते हैं ॥ ६९ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णः
शुण्ठ्यादिः खलु भिषजां हिताय वर्गः ॥ ७० ॥

इति मदनपालनिघण्टौ शुंठ्यादिवर्गो द्वितीयः ॥ २ ॥

राजाओंमें अत्यंत प्रधान जो कटारमल्ल हुआ उसी मदनराजाके रचे हुए मदनविनोद नामक इस ग्रंथमें वैद्योंके हितके अर्थ शुंठ्यादि वर्ग पूर्ण हुआ ॥ ७० ॥

इति श्रीमदनपालनिघंटौ टकसालनिवासिवैद्यरत्न पं०-रामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनीटीकायां शुंठ्यादिर्नाम द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

आरोप्य पाणौ नवबल्लवीभिर्बालं विनोदात्परिचुम्बितास्यम् ।
ओष्ठं पिबन्तं प्रतिबद्धदन्तमाश्चर्ययुक्तं हरिमाश्रयामि ॥ १ ॥

हाथ पर आरोपितकर नवीन गोपिकाओंने आनंदसे चुंबन किया है

मुख जिसका और ओष्ठको पीताहुआ प्रतिबद्ध हुए दंतोंवाला आश्चर्यसे युक्त बालरूप हरिके मैं आश्रित होता हूं ॥ १ ॥

कर्पूरनामगुणाः ।

कर्पूरः स्फटिकश्चन्द्रः सिताभ्रो हिमवालुकः ।
हिमोपलःशीतरजो भूतिकस्तु हिमाह्वयः ।
हिमाभ्रो घनसारश्च चन्द्राह्वश्चापि गीयते ॥ २ ॥

कर्पूर, स्फटिक, चन्द्र, सिताभ्र, हिमवालुक, हिमोपल, शीतरज, भूतिक, हिमाह्वय, हिमाभ्र, घनसार, चन्द्राह्व ये कपूरके नाम हैं ॥ २ ॥

कर्पूरः शीतलो वृष्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः ।
कफदाहास्यवैरस्यमेदःशोथविषापहः ॥ ३ ॥

कपूर-शीतल है, धातुको पुष्ट करता है, नेत्रोंमें हित करता है, लेखन है, हलका है और कफ, दाह, मुखका विरसपना, मेदोरोग, शोजा, विष इनको दूर करता है। मुश्ककपूर नामसे प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥

कस्तूरिकाद्वयनामगुणाः ।

कस्तूरिका मृगमदो वेदमुख्या मृगाण्डजः ।
मृगनाभिरथान्या स्याल्लताकस्तूरिका मता ॥ ४ ॥

कस्तूरिका, मृगमद, वेदमुख्या, मृगांडज, मृगनाभि ये नाम कस्तूरीके हैं, दूसरी लताकस्तूरी होती है ॥ ४ ॥

कस्तूरी शुक्रला गुर्वी कटुका कफशीतजित् ।
उष्णा हन्ति विषच्छर्दिशोफदौर्गन्ध्यमारुतान् ॥ ५ ॥

कस्तूरी वीर्यको देती है, भारी है, चर्परी है, कफ और शीतको जीतती है, गर्म है, विष, छर्दि, शोजा, दुर्गंध, वातरोग इनको नाशती है। कस्तूरी बर्फमें रहनेवाले मृगोंकी नाभीमेंसे निकलती है ॥ ५ ॥

लताकस्तूरिका तद्वन्नेत्र्या शीता लघुस्तथा ॥ ६ ॥

लताकस्तूरीमें भी येही गुण हैं परन्तु नेत्रोंमें हित करती है, शीतल है और हलकी है । लताकस्तूरीकी बेल होती है, कोई लोग इसको मुश्कदानाभी कहते हैं ॥ ६ ॥

मार्जारीनामगुणाः ।

मार्जारी पूतिका पूतिकचा स्याद्गन्धचेलिका ।
मार्जारी वान्तिमाधत्ते चक्षुष्या कफवातजित् ॥ ७ ॥

मार्जारी, पूतिका, पूतिकचा, गंधचेलिका ये मार्जारी कस्तूरीके नाम हैं, मार्जारी कस्तूरी-छर्दिको उपजाती है, नेत्रोंमें हित है और कफवातको जीतती है इसको मुश्कबिलाइभी कहते हैं ॥ ७ ॥.

चन्दननामगुणाः ।

चन्दनं तिलपर्णं स्यान्महार्हं श्वेतचन्दनम् ।
भद्रश्रियं मलयजं गोशीर्षं गन्धसारकम् ॥ ८ ॥

चन्दन, तिलपर्ण, महार्ह, श्वेतचन्दन, भद्रश्रिय, मलयज, गोशीर्ष, गन्धसारक ये चन्दनके नाम हैं ॥ ८ ॥

चन्दनं शीतलं रूक्षं तिक्तमाह्लादनं लघु ।
हृद्यं वर्ण्यं विषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहजित् ॥ ९ ॥

चन्दन, शीतल है, रूखा है, कडुवा है, आनंद करता है, हलका है, हृदयमें गुण करता है, वर्णको निखारता है और विष, कफ, तृषा, पित्त, रक्त, दाह इनको जीतता है ॥ ९ ॥

रक्तचन्दननामगुणाः ।

रक्तचन्दनमुद्दिष्टं लोहितं क्षुद्रचन्दनम् ।
ताम्रसारं रक्तसारं ज्योतिःसोमं च रञ्जनम् ॥ १० ॥

रक्तचन्दन, उद्दिष्ट, लोहित, क्षुद्रचन्दन, ताम्रसार, रक्तसार, ज्योतिःसोम, रंजन ये लालचन्दनके नाम हैं ॥ १० ॥

रक्तं शीतं गुरु स्वादु च्छर्दितृष्णास्रपित्तनुत् ।
तिक्तं नेत्रहितं वृष्यं ज्वरघ्नं च विषापहम् ॥ ११ ॥

लालचन्दन, शीतल है, भारी है, स्वादु है और छर्दि, तृषा, रक्तपित्त इनको दूर करता है । यह कडुवा है, नेत्रोंमें हित करता है, धातुको पुष्ट करता है, ज्वरको नाशता है और विषको दूर करता है ॥ ११ ॥

कृष्णचन्दननामगुणाः ।

कालीयकं पीतसारं पीतं नारायणप्रियम् ।
कालीयकं रक्तगुणं विशेषात्पवनापहम् ॥ १२ ॥

कलीयक, पीतसार, पीत, नारायणप्रिय ये मलयागिरि चन्दनके नाम हैं । मलयागिरि चन्दनमें लालचन्दनके सब गुण हैं, विशेषकर वातको नाशता है ॥ १२ ॥

कृष्णागुरु (अगर) नामगुणाः ।

कृष्णागुरु स्यादगुरु राजार्हं विश्वरूपकम् ।
जोङ्गकं शीतमलिनं कृमिजघ्नमनक्तकम् ।
कृष्णागुरूष्णं कर्णाक्षिरोगनुत्पित्तलं लघु ॥ १३ ॥

कृष्णागुरु, अगुरु, राजार्ह, विश्वरूपक, जोङ्गक, शीतमलिन, कृमिजघ्न, अनक्तक ये कृष्ण अगरके नाम हैं । कृष्णागुरु गर्म है, कानरोग, नेत्ररोग इनको दूर करता है, पित्तको उपजाता है और हलका है ॥ १३ ॥

कुंकुम (केशर) नामगुणाः ।

कुङ्कुमं चारु बाह्लीकं वर्ण्यमग्निशिखं वरम् ।
काश्मीरं पीतमभ्राह्वं सङ्कोचं पिशुनांशुकम् ॥ १४ ॥

कुंकुम, चारु, बाह्लीक, वर्ण्य अग्निशिख, वर, काश्मीर पीत, अभ्राह्व, संकोच, पिशुन, अंशुक ये केशरके नाम हैं ॥ १४ ॥

कुङ्कुमं कटुकं सिध्मशिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
उष्णं हास्यकरं बल्यं व्यङ्गदोषत्रयापहम् ॥ १५ ॥

केशर-चर्परी है, यह सींप, शिरका शूल, घाव, कृमि इनको जीतती है, गर्म है, हांसीको करती है, बलको उपजाती है, व्यंग और त्रिदोषको नाशती है ॥ १५ ॥

सिह्लकनामगुणाः ।

सिह्लकः कपिजो धूम्रस्तुरुष्कः पिण्डितः कपिः
सिह्लकः कुष्ठकण्डूघ्नः स्निग्धोष्णः शुक्रकान्तिकृत् ॥ १६ ॥

सिह्लक, कपिज, धूम्र, तुरुष्क, पिण्डित, कपि ये शिलारसके नाम हैं. सिह्लक अर्थात शिलारस (लोबान) कुष्ठ और दादको नाशता है, चिकना है, गर्म है, वीर्य और कांतिको करता है, कोई २ लोबानको सिह्लक कहते हैं ॥ १६ ॥

एलवालुकनामगुणाः ।

एलवालुकमेल्वालु वालुकं हरिवालुकम् ।
एल्वालु शीतलं हन्ति कण्डूकुष्ठकफक्रिमीन् ।
तृट्छर्दिकफपित्तास्रहृन्मूत्रगदजिल्लघु ॥ १७ ॥

एलवालुक, एल्वालु, वालुक, हरिवालुक ये एलवालुके नाम हैं । एल्वालु-शीतल है,

खाज, कुष्ठ, कफ, कृमि इनको नाशता है, तृषा, छर्दि कफ, पित्तरक्त, मूत्ररोग इनको जीतता है और हलका है ॥ १७ ॥

जातीफलनामगुणाः ।

जातीफलं जातिसृतं शल्कं मालतीसुतम् ।
जातीफलं लघु स्वर्यं हृद्यं दीपनपाचनम् ॥ १८ ॥

जातीफल जातिसृत, शल्क, मालतीसुत ये जायफलके नाम हैं। जायफल हलका है, स्वरमें हित है, हृदयको हित है, अग्निको जगाता है और पाचन है ॥१८॥

उष्णं कफानिलच्छर्दिकृमिपीनसकासजित् ॥ १९ ॥

यह गर्म है, कफ, वात, छर्दि, कृमि, पीनस, खांसी इनको जीतता है ॥ १९ ॥

जातीपत्रीनामगुणाः ।

जातीपत्री जातिपर्णा मालतीपत्रिका तथा ।
जातीपत्री लघूष्णा स्यात्कफक्रिमिविषापहा ॥ २० ॥

जातीपत्री, जातिपर्णा, मालतीपत्रिका ये जावित्रीके, नाम हैं । जावित्री–हलकी और गर्म है, यह कफ, कृमि, विष इनको नाशती है ॥ २० ॥

लवङ्गनामगुणाः ।

लवङ्गं शिखरं दिव्यं लवं चन्दनपुष्पकम् ।
श्रीपुष्पं देवकुसुमं भृङ्गारं वारिसम्भवम् ॥ २१ ॥

लवंग, शिखर, दिव्य, लव, चन्दनपुष्पक, श्रीपुष्प, देवकुसुम, भृङ्गार, वारिसंभव ये लौंगके नाम हैं ॥ २१ ॥

लवङ्गं लघु चक्षुष्यं हृद्यं दीपनपाचनम् ।
शूलानाहकफश्वासकासच्छर्दिक्षयापहम् ॥ २२ ॥

लौंग हलका है, नेत्रोंको हित है, हृद्य है, अग्निको जगाता है, पाचन है, यह शूल, अफारा, कफ, श्वास, खांसी, छर्दि, क्षय इनको नाश करता है ॥ २२ ॥

कंकोलनामगुणाः ।

कङ्कोलं कटुकं कोलं मारीचं माधवोषितम् ।
कङ्कोलमुष्णं हृद्रोगकफवाताग्निमान्द्यजित् ॥ २३ ॥

कंकोल कटुक, कोल, मारीच, माधवोषित ये कंकोलके नाम हैं । कंकोल गर्म है और हृद्रोग, कफ, वात, मन्दाग्नि इनको जीतता है ॥ २३ ॥

एला (छोटी इलायची) नामगुणाः ।

एला त्रुटिश्चन्द्रवाला वहुला निष्कुटिस्त्विषा ।
कपोतवर्णा सूक्ष्मैला कुनटी द्राविडी मता ।
एला सूक्ष्मा कफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥ २४ ॥

एला, त्रुटि, चन्द्रवाला, बहुला, निष्कुटि, त्विषा, कपोतवर्णा, सूक्ष्मैला, कुनटी, द्राविडी, ये छोटी इलायचीके नाम हैं । छोटी इलायची कफ, श्वास, खांसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र इनको दूर करती है ॥ २४ ॥

स्थूलैला (बडी इलायची) नामगुणाः ।

स्थूलैला त्रिपुटा कन्या भद्रैला त्रिदिवोद्भवा ।
स्थूलैला रोचनी तीक्ष्णा लघूष्णा कफपित्तजित् ॥ २५ ॥
हृल्लासविषबस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत् ॥ २६ ॥

स्थूलैला, त्रिपुटा, कन्या, भद्रा, एला, त्रिदिवोद्भवा ये बडी इलायचीके नाम हैं, बडी इलायची-रुचिको उपजाती है, तेज है, हलकी और गर्म है, कफपित्तको जीतती है और जीमचलाना, विष, बस्तिरोग, मुखरोग, शिरोरोग, छर्दि, खांसी इनको दूर करती है ॥ २५-२६ ॥

त्वच (दालचीनी) नामगुणाः ।

त्वचं वराङ्गं सकलं त्वक्कोचं तनुकं वरम् ।
लाटपर्ण्यं घनं भृङ्गं गुरुत्वक् स्वर्णभूमिकम् ॥ २७ ॥

त्वच, वरांग, सकल, त्वक्कोच, तनुक, वर, लाटपर्ण्य, घन, भृंग, गुरुत्वक्, स्वर्णभूमिक ये दालचीनीके नाम हैं ॥ २७ ॥

त्वचं लघूष्णं कटुकं विषदं[1] स्वादु पित्तलम् ।
हृद्बस्तिरोगवातार्शः पीनसक्रिमिशुक्रनुत् ॥ २८ ॥

दालचीनी हलकी है, गर्म है, चर्परी है, विषको नाशती है, स्वादु है, पित्तको उपजाती है और हृद्रोग, बस्तिरोग, वात, बवासीर, पीनस, क्रिमि, वीर्यरोग इनको नाशती है । तज भी दालचीनीको ही कहते हैं ॥ २८ ॥

तेजपत्रनामगुणाः ।

पत्रं दलाह्वं ताम्रूमं तमालं रोम रोमशम् ।
पत्रमुष्णं लघु श्लेष्मह्रल्लासार्शोऽनिलापहम् ॥ २९ ॥

१-विषं द्यति खण्डयतीति विषदम् । दो अवखंडने धातुः ।

पत्र, दलाढ्य, तामूम, तमाल, रोम, रोमश ये तेजपातके नाम हैं। तेजपात–गर्म और हलका है, कफ, सूखी रद्द, बवासीर, वात इनको नाश करता है ॥ २९ ॥

नागकेशरनामगुणाः।

नागकेशरकं नागं चाम्पेयं केशरं गजम्।
नागकेशरकं रूक्षमुष्णं लघ्वामपाचनम्।
दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥ ३० ॥

नागकेशरक, नाग, चांपेय, केशर, गज ये नागकेशरके नाम हैं, नागकेशर-रूखी और गर्म है, हलकी है, आमको पकाती है और दुर्गंध, कुष्ठ, विसर्प, कफ, पित्त, विष इनको नाश करती है ॥ ३० ॥

त्रिजातचतुर्जातनामगुणाः।

एलादित्रिभिरुद्दिष्टं त्रिजातं त्रिसुगंधकम्।
चतुर्जातं सनागं तद्द्वयं वातकफापहम् ॥ ३१ ॥

इलायची, दालचीनी, तेजपात इन तीनोंको मिलानेसे त्रिजात होता है। इसीका नाम त्रिसुगंध है, इलायची, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर इन चारोंका नाम चतुजात है। त्रिजात और चर्तुजात वात कफको नाश करते हैं ॥ ॥ ३१ ॥

तालीसपत्रनामगुणाः।

तालीसपत्रं तालीसं धात्रीपत्रं सकोदनम्।
अपरं ग्रंथिकापत्रं पत्राढ्यं तुलसीछदम् ॥ ३२ ॥

तालीसपत्र, तालीस, धात्रीपत्र, सकोदन, अपर, ग्रंथिकापत्र, पत्राढ्य, तुलसीछद ये तालीसपत्रके नाम हैं ॥ ३२ ॥

तालीसं लघु तीक्ष्णोष्णं श्वासकासकफानिलान्।
निहंति रुच्यं गुल्मामवह्निमान्द्यक्षयामयान् ॥ ३३ ॥

तालीसपत्र--हलका है, तेज और गर्म है, श्वास, खांसी, कफ, वात, आम, गुल्म, मन्दाग्नि, क्षय इनको नाशता है और रुचिको उपजाता है ॥ ३३ ॥

सरलनामगुणाः।

सरलो मदनश्चण्डो नमेरुः पीतवृक्षकः।
सरलः कण्ठकर्णाक्षिगदघ्नोष्णो लघुः कटुः ॥ ३४ ॥

सरल, मदन, चण्ड, नमेरु, पीतवृक्षक ये सरलके नाम हैं, । सरल कंठरोगकानरोग, नेत्ररोग इनको नाशता है; यह हलका और चर्परा है ॥ ३४ ॥

श्रीवासनामगुणाः ।

श्रीवासो वेष्टको दासी श्रीनिवासः कलिद्रुमः ।
श्रीवासः कफमूर्द्धाक्षिरोगवातहरः सरः ॥ ३५ ॥

श्रीवास, वेष्टक, दासी, श्रीनिवास, कलिद्रुम ये श्रीवासके नाम हैं । श्रीवास-कफ, शिरोरोग, नेत्ररोग, वात इनको हरता है और दस्तावर है, श्रीवास धूपके लिये ज्वालाजीके पहाडोंसे आता है ॥ ३५ ॥

वालकनामगुणाः ।

वालकं वारि ह्रीवेरं पिङ्गमाचमनं कचम् ।
उदीच्यं वज्रमन्थाह्वं वरिष्ठं गन्धमूलकम् ॥ ३६ ॥

वालक, वारि, ह्रीवेर, पिंग, आचमन, कच, उदीच्य, वज्र, मन्थाह्व, वरिष्ठ, गन्धमूलक ये सुगन्धवालाके नाम हैं ॥ ३६ ॥

वालकं शीतलं रूक्षं लघु दीपनपाचनम् ।
रक्तपित्तज्वरश्लेष्मदाहतृष्णाव्रणापहम् ॥ ३७ ॥

सुगन्धवाला-शीतल है, रूखा है, हलका है अग्निको जगाती है, पाचन है, रक्तपित्त, ज्वर, कफ, दाह, तृषा, घाव इनको नाश करती है ॥ ३७ ॥

मांसी (बालछड) नामगुणाः ।

मांसी जटा भूतकेशी क्रव्यादानलदं शिखा ।
कृष्णाऽन्या पूतनाकेशी गन्धमांसी पिशाचिका ।
मांसी हिमा त्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठजित् ॥ ३८ ॥

मांसी, जटा, भूतकेशी, क्रव्याद, अनलद, शिखा ये जटामांसीके नाम हैं और कृष्णा, पूतनाकेशी, गन्धमांसी, पिशाचिका ये बाल छडके नाम हैं । बालछड शीतल है, त्रिदोष, रक्तपित्त, दाह, विसर्प, कुष्ठ इनको जीतती है ॥ ३८ ॥

उशीरनामगुणाः ।

उशीरमभयं सेव्यं वीरं वीरणमूलिका ।
उशीरं पाचनं शीतं स्तम्भनं कफपित्तजित् ।
तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् ॥ ३९ ॥

उशीर, अभय, सेव्य, वीर वीरणमूलिका ये खसके नाम हैं। खस पाचन है, शीतल है, स्तंभन है, कफपित्तको जीतता है। ये तृषा, रक्त, विष, विसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ्र, घाव इनको नाशकरता है। खसपन्ही (जो नदियोंमें होती है) कांसकी जडोंको कहते हैं। गर्मीमें इसकी टट्टियें बनाई जाती हैं इनपर पानी छिडकानेसे सुगंधित शीतल हवा आती है ॥ ३९ ॥

रेणुकानामगुणाः ।

रेणुका कपिला कौन्ती पाण्डुपत्री हरेणुका ।
रेणुका पित्तला मेध्या वह्निकृद्गर्भपातिनी ॥ ४० ॥

रेणुका, कपिला, कौंती, पांडुपत्री, हरेणुका ये रेणुकाके नाम हैं। रेणुका पित्तको करती है, बुद्धिको बढाती है, अग्निको करती और गर्भको गिराती हैं, इसकी जगह आजकल सँभालूके बीज डालते हैं ॥ ४० ॥

प्रियंगुनामगुणाः ।

प्रियङ्गुः फलिनी श्यामा कान्ताह्वा नन्दनी लता ।
पियङ्गुः शीतला वान्तिदाहपित्तज्वरास्रजित् ।
सुखकान्तिप्रजननी गात्रदौर्गन्ध्यनाशिनी ॥ ४१ ॥

प्रियंगु, फलिनी, श्यामा, कांताह्वा, नन्दनी, लता ये नाम प्रियंगुके हैं। प्रियंगु शीतल है, छर्दि, दाह, पित्तज्वर, रक्त, इनको जीतती है, सुख और कांतिको उपजाती है, और शरीरकी दुर्गंधिको नाशती है। लोग इसकी जगह मेहँदीके बीज डालते हैं। प्रियंगु गोंदिनीके बीजोंको भी कहते हैं। एक लता प्रियंगु अलग होती है परन्तु इस जगह गोंदिनीके फल लेना चाहिये। प्रियंगुधान्य कंगुनीको कहते हैं परन्तु वह ये प्रियंगु नहीं ॥ ४१ ॥

पारिपेलनामगुणाः ।

पारिपेलं प्लवं वन्यं शुकाह्वं परिपेलकम् ।
पारिपेलं हिमं कण्डूकुष्ठास्रकफपित्तजित् ॥ ४२ ॥

पारिपेल, प्लव, वन्य, शुकाह्व, (परिपेलक, कैवर्तीमुस्तक) ये पारिपेलके नाम हैं। पारिपेल शीतल है, खाज, कुष्ठ, रक्त, कफ, पित्त इनको जीतती है। केवटीमोथानामसे प्रसिद्ध है। इसकी भी नागरमोथेकी समान जड होती है, इनमें सुगंधि भी होती है ॥ ४२ ॥

शैलेयनामगुणाः ।

शैलेयं स्थविरं वृद्धं शिलापुष्पं शिलोद्भवम् ।
शैलेयं शीतलं हृद्यं कफपित्तहरं लघु ॥ ४३ ॥

शैलेय, स्थविर, वृद्ध, शिलापुष्प, शिलोद्भव ये छरीलाके नाम हैं । छरीला-शीतल है, हृद्य है, कफ पित्तको हरता है और हलका है, भूरिछरीला पत्थरका फूल इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ४३ ॥

लामज्जकनामगुणाः ।

लामज्जकं जलाधारं दीर्घमूलं जलाशयम् ।
इष्टकापथकं शीघ्रममृणालं सुनालकम् ।
लामज्जकं हिमं कृच्छ्रदाहदोषत्रयास्रजित ॥ ४४ ॥

लामज्जक, जलाधार, दीर्घमूल, जलाशय, इष्टकापथक, शीघ्र, अमृणाल, सुनालक ये खसभेदके नाम हैं । लामज्जक-शीतल है, मूत्रकृच्छ्र, दाह, त्रिदोष, रक्त इनको जीतता है । लामज्जक कांस विशेषकी जड है, यह भी खसका भेद है, खस जरा छोटी होती है यह बडी होती है ॥ ४४ ॥

कुन्दुरुनामगुणाः ।

कुन्दुरुर्मेचकः कुन्दः खपुरो भीषणो बली ।
कुन्दुरुः स्वेदपवनश्लेष्मब्रध्नज्वरापहः ॥ ४५ ॥

कुंदुरु, मेचक, कुंद, खपुर, भीषण, बली ये कुंदुरु गूंदके नाम हैं । कुंदुरु-पसीना, वात, कफ, ब्रध्नरोग, ज्वर इनको नाशता है, नलकुन्दरुनामसे प्रसिद्ध है, ये शल्लकी-वृक्षका गोंद होता है ॥ ४५ ॥

गुग्गुलुनामगुणाः ।

गुग्गुलुः कालनिर्यासो महिषाक्षः पलङ्कषः ।
जटायुःकौशिको धूर्त्तो देवधूपः शिवः पुरः ॥ ४६ ॥

गुग्गुलु, कालनिर्यास, महिषाक्ष, पलंकष, जटायु, कौशिक, धूर्त, देवधूप, शिव, पुर ये गूग्गुलके नाम हैं ॥ ४६ ॥

गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तो वीर्योष्णो मधुरः सरः ।
भग्नसन्धानकृद्वृष्यः सूक्ष्मः स्वर्यो रसायनः ॥ ४७ ॥

गुग्गुलु रस आदिको साफ करके फैलानेवाला है, चर्परा है, वीर्यमें गर्म है, मीठा है, दस्तावर है, टूटेको जोडनेवाला है, धातुको पुष्ट करता है, सूक्ष्म है, स्वरमें हित है और रसायन है ॥ ४७ ॥

दीपनः पिच्छलो बल्यः कफवातव्रणापचीः ।
मेदोमेहास्रवातास्रक्लेदकुष्ठाममारुतान् ॥ ४८ ॥

गुग्गुल-अग्निको जगाता है, पिच्छल है बलदायक है और कफ, वात, घाव, अपची, मेदरोग, प्रमेह, रक्तवात, रक्तस्वेद, कुष्ठ आमवात ॥ ४८ ॥

पिटिकाग्रन्थिशोफार्शोग्रन्थिगण्डक्रिमीञ्जयेत् ।
स नवो बृंहणो वृष्यः पुराणस्त्वतिलेखनः ॥ ४९ ॥

पिटिका, ग्रंथि, शोजा, बवासीर, गलगंड, कृमि इनको जीतता है । नया गूगुल वीर्यको बढाता है, धातुको पुष्ट करता है, पुराणा गूगुल अत्यंत लेखन है, गूगुल प्रसिद्ध है ॥ ४९ ॥

रालानामगुणाः ।

राला सर्जरसो यक्षधूपः सर्जोऽग्निवल्लभः ।
क्षणकः सालनिर्यासो लाक्षा स्याल्ललनो वरः ॥ ५० ॥

राला, सर्जरस, यक्षधूप, सर्ज, अग्निवल्लभ, क्षणक, सालनिर्यास, लाक्षा, ललन, वर ये रालके नाम हैं ॥ ५० ॥

राला हिमा गुरुस्तिक्ता कषाया ग्राहिणी जयेत् ।
ग्रहास्रस्वेदवीसर्पविषव्रणविपादिकाः ॥ ५१ ॥

राल, शीतल है, भारी है, कडुवी है, कषैली है, मलको बांधती है, और ग्रहदोष, रक्त, पसीना, विसर्प, विष, घाव, विपादिका इनको जीतती है, राल सर्जवृक्षसे निकलती है, राल नामसे प्रसिद्ध है ॥ ५१ ॥

स्थौणेयकनामगुणाः ।

स्थौणेयकं बर्हिश्चूडं शुकवर्णं शुकच्छदम् ।
स्थौणेयं शीतलं वृष्यं मेध्यं दोषत्रयास्रजित् ॥ ५२ ॥

स्थौणेयक, बर्हिश्चूड, शुकवर्ण, शुकच्छद ये थुनेराके नाम हैं । थुनेरा–शीतल है धातुको पुष्ट करता है, बुद्धिको बढाता है, त्रिदोष और रक्तको जीतता है, यह सुगंधितद्रव्य है, ग्रंथिपर्ण (गठिवन) का भेद है ॥ ५२ ॥

चौरकनामगुणाः ।

चौरकः कितवश्चन्द्रो दुष्पुत्रः शङ्कितो रिपुः ।
चौरः स्वादुर्लघुः शीतः कुष्ठवातकफास्रजित् ॥ ५३ ॥

चौरक, कितव, चन्द्र, दुष्पुत्र, शंकित, रिपु ये चौरकके नाम हैं । चौरके स्वादु है, हलका है, शीतल है और कुष्ठ, वात, कफ, रक्त इन्होंको

जीतता है यह भी गठिवन जातिविशेष है, इसमें भी सुगंधि होती है, चौराभटेउर इन नामोंसे पर्वतोंमें मिलता है ॥ ९३ ॥

मुरानामगुणाः ।

मुरा गन्धवती दैत्या गन्धाढ्या सुरभिः कुटिः ।
मुरा शीता लघुः कुष्ठग्रहपित्तानिलास्रजित् ॥ ९४ ॥

मुरा, गन्धवती, दैत्या, गंधाढ्या, सुरभि, कुटि ये नाम मुराके हैं. मुरा-शीतल है, हलकी है और कुष्ठ, ग्रहदोष, पित्त, वातरक्त इनको जीतती है ॥ ९४ ॥

कर्चूरनामगुणाः ।

कर्चूरो द्राविडो गन्धमूलको दुर्लभः शटी ।
कर्चूरो दीपनो रुच्यः कुष्ठार्शोव्रणकासजित् ।
उष्णो लघुर्जयेच्छ्वासगुल्मवातकफक्रिमीन् ॥ ९५ ॥

कचूर, द्राविड, गन्धमूलक, दुर्लभ, शटी ये कचूरके नाम हैं । कर्चूर अग्निको जगाता है, रुचिको उपजाता है और कुष्ठ, बवासीर, घाव, खांसी इन्होंको जीतता है । यह गर्म है, हलका है और गुल्म, श्वास, वात, कफ, कृमि इनको जीतता है, कचूर हलदीके खेतोंमेंसे सफेद गांठसी निकलती है ॥ ९५ ॥

शटी (दूसरी जातका कचूर) नामगुणाः ।

शटी पलाशी षड्ग्रन्था सुव्रता गन्धमूलिनी ।
शटीशी ता[illegible] रामास्रकासजिद् ग्राहिणी लघुः ॥ ९६ ॥

शटी, पलाशी, षड्ग्रन्था, सुव्रता, गन्धमूलिनी ये नाम शटीके हैं । शटी-शीतल है और ज्वर, आम, रक्त, खांसी इनको जीतती है । यह मलको बांधती है, हलकी है, शटी कचूरका ही भेद है ॥ ९६ ॥

स्पृक्कानामगुणाः ।

स्पृक्का स्पृग् ब्राह्मणी देवी निर्माल्या कुटिका वधूः
स्पृक्का स्वादुर्हिमा वृष्या कुष्ठालक्ष्मीत्रिदोषनुत् ॥ ९७ ॥

स्पृक्का, स्पृक्, ब्राह्मणी, देवी, निर्माल्या, कुटिका, वधू ये नाम स्पृक्काके हैं, स्पृक्का स्वादु है, शीतल है, वीर्यको बढाती है और कुष्ठ, फीकापन, त्रिदोष इनको जीतती है असवर्ग नामसे प्रसिद्ध है ॥ ९७ ॥

ग्रन्थिपर्णनामगुणाः ।

ग्रन्थिपर्णो नीलपुष्पः शुकपुष्पं शुकच्छदम् ।
ग्रन्थिपर्णो लघुस्तिक्तो रुच्योष्णः कफवातजित् ॥९८॥

ग्रन्थिपर्ण, नीलपुष्प, शुकपुष्प, शुकच्छद यह गठौनाके नाम हैं । गठिवन-हलका है, कडुवा है, रुचिको उपजाता है, गर्म है और कफवातको जीतता है । गठिवन गठौना इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ९८ ॥

नलिकानामगुणाः ।

नलिका नर्त्तकी शून्या निर्मला धमनी नटी ।
नली पित्तास्रजिच्छीता चक्षुष्या कुष्ठकृच्छ्रजित् ॥ ९९ ॥

नलिका, नर्तकी शून्या, निर्मला, धमनी. नटी ये नाम नलिकाके हैं । नलिका-पित्तरक्तको जीतती है, शीतल है, नेत्रोंमें हित है, कुष्ठ और मूत्रकृच्छ्रको जीतती है, नलिका (नालि) जलके किनारे बहुत होता है ॥ ९९ ॥

पद्मनामगुणाः ।

पद्मकं मलयश्चारुः पीतरक्तश्च सुप्रभः ।
पद्मकं दाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तहृत् ।
गर्भसंस्थापनं शीतं तृष्णावीसर्पदाहजित् ॥ ६० ॥

पद्मक, मलय, चारु, पीतरक्त, सुप्रभ ये पद्मकके नाम हैं । पद्मक-दाह, विस्फोट, कुष्ठ, कफ, रक्तपित्त इनको हरता है, गर्भको स्थित करता है, शीतल है तृषा, विसर्प, दाह इनको जीतता है, यह पद्माख, ब्रह्मकाष्ठ इन नामोंसे प्रसिद्ध है । इसके वृक्ष हमने शिमलाप्रांतमें अधिक देखे हैं, पहाडीलोग इसको पाज्जा कहते हैं ॥६०॥

प्रपुण्डरीकनामगुणाः ।

प्रपुण्डरीकः पौण्ड्राह्वः शतपुष्पं सुपुष्पकम् ।
पुण्ड्राह्वं शुक्लं शीतं चक्षुष्यं श्लेष्मपित्तजित् ॥ ६१ ॥

प्रपुंडरीक, पौंड्राह्व, शतपुष्प, सुपुष्पक ये प्रपुंडरीकके नाम हैं । पुंडरीक वीर्यको उपजाता है, शीतल है, नेत्रोंमें हित करता है और कफपित्तको जीतता है, यह सुगंधित वृक्ष होता है, इसका रस भी नेत्रोंमें डालते हैं, कोई इसको पंज्याराही कहते हैं ॥ ६१ ॥

तगरनामगुणाः ।

तगरं बर्हिणं जिह्मं वक्राह्वं नहुषं नतम् ।
अपरं पिण्डतगरं चीनं कटु महोरगम् ॥ ६२ ॥

तगर, बर्हिण, जिह्म, वक्राह्व, नहुष, नत ये तगरके नाम हैं। पिंडतगर, चीन, कटु, महोरग ये दूसरे तगरके नाम हैं ॥ ६२ ॥

तगरं मधुरं स्निग्धं तिक्तोष्णं लघु भूतजित् ।
विषापस्मारमूर्द्धाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ॥ ६३ ॥

तगर, मीठा है, चिकना है, कडुवा है, गर्म है, हलका है, भूतबाधाको जीतता है और विष, मृगीरोग, शिरोरोग, नेत्ररोग, त्रिदोष इनको नाशकरता है, तगर प्रसिद्ध है ॥ ६३ ॥

गोरोचनानामगुणाः ।

गोरोचना रुचिर्गौरी रोचना पिङ्गला मता ।
मङ्गल्या गोतमी मेध्या वन्ध्या गोपित्तसम्भवा ॥ ६४ ॥

गोरोचना, रुचि, गौरी, रोचना, पिंगला, मंगल्या, गोतमी, मेध्या, वंध्या, गोपित्तसंभवा ये गोरोचनाके नाम हैं ॥ ६४ ॥

रोचना शीतला वश्या गर्भस्रावग्रहास्रजित् ॥ ६५ ॥

गोरोचन-शीतल है, वश करता है, गर्भस्राव, ग्रहदोष, रक्त इनको जीतता है॥६५॥

नखद्वयनामगुणाः ।

नखाह्वो नखरः शुक्तिहनुर्नागहनुः खरः ।
शुक्तिशङ्खो व्याघ्रनखमन्यद्व्याघ्रतलं पदम् ॥ ६६ ॥

नखाह्व, नखर, शुक्ति हनु, नागहनु, खर, शुक्तिशंख, व्याघ्रनख ये नखके नाम हैं। व्याघ्रतल, पद-ये दूसरे नखके नाम हैं ॥ ६६ ॥

नखद्वयं ग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठजित् ।
लघूष्णं शुक्रलं बल्यं हृद्यं स्वादु विषापहम् ॥ ६७ ॥

दोनों नख-ग्रहदोष, कफ, वातरक्त, ज्वर, कुष्ठ इनको जीतते हैं, हलके हैं, गर्म हैं, वीर्यको उत्पन्न करते हैं, बलदायक हैं, दिलको ताकद देते हैं, स्वादु हैं और विशको नाश करते हैं, नख नामसे प्रसिद्ध हैं ॥ ६७ ॥

पतङ्गनामगुणाः ।

पतङ्गं पटरागं स्याद्रक्तकाष्ठं कुचन्दनम् ।

सुरङ्गकं जगत्याह्वं पत्तूरं पटरञ्जकम् ।
पतङ्ग मधुरं शीतं पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ॥ ६८ ॥

पतंग, पटराग, रक्तकाष्ठ, कुचंदन, सुरंगक, जगत्याह्व, पत्तूर, पटरंजक ये नाम पतंगके हैं । पतंग-मीठा है, शीतल है और पित्त, कफ, घाव, रक्त इनको जीतता है, पतंग लालचंदनकी समान लकडी होती है ॥ ६८ ॥

लाक्षानामगुणाः ।

लाक्षा निर्मत्सरो रक्ता द्रुमव्याधिः पलङ्कषा ।
कृमिजा जतु दीप्ताह्वा जावको लवको मतः ॥ ६९ ॥

लाक्षा, निर्मत्सर, रक्ता, द्रुमव्याधि, पलंकषा, कृमिजा, जतु, दीप्ताह्वा जावक और लवक ये लाखके नाम हैं ॥ ६९ ॥

लाक्षा वर्ण्या हिमा बल्या स्निग्धा श्लेष्मास्रपित्तजित् ।
व्रणोरःक्षतवीसर्पकृमिकुष्ठग्रहापहा ।
अलक्तको गुणैस्तद्वद्विशेषाद्व्यङ्गनाशनः ॥ ७० ॥

लाख वर्णको निखारती है, शीतल है, बलको करती है, चिकनी है तथा कफ, रक्त, पित्त इनको जीतती है । यह घाव, छातीका फूटना, विसर्प, कृमि, कुष्ठ, ग्रहदोष इनको नाश करती है । अलक्तकमें भी येही गुण हैं, विशेषकरके व्यंगको नाशकरती है ॥ ७० ॥

पर्पटीनामगुणाः ।

पर्पटी रजनी कृष्णा जातका जननी जनी ।
पर्पटी वर्णदा शीता कफपित्तास्रकुष्ठजित् ॥ ७१ ॥

पर्पटी रजनी, कृष्णा, जातका, जननी, जनी ये पापडीके नाम हैं । पापडी-वर्णको देती है, शीतल है और कफ, पित्त, रक्त, कुष्ठ इनको जीतती है, इसके वृक्ष मालवदेशमें प्रसिद्ध हैं ॥ ७१ ॥

पद्मिनीकैरविणीनामगुणाः ।

पद्मिनी बिसिनी ज्ञेया नलिनी सूर्यवल्लभा ।
कुमुद्वती कैरविणी कुमुदिन्युडुपप्रिया ॥ ७२ ॥

पद्मिनी, बिसिनी, नलिनी, सूर्यवल्लभा ये पद्मिनीके नाम हैं । कुमुद्वती, कैरविणी, कुमुदिनी, उडुपप्रिया ये कुमोदिनीके नाम हैं ॥ ७२ ॥

पद्मिनी शीतला गुर्वी । श्लेष्मविषास्रजित् ।
रूक्षा विष्टम्भिनी स्वादुस्तद्वत्कुमुदिनी मता ॥ ७३ ॥

पद्मिनी-शीतल है, भारी है और पित्त, कफ, विष, रक्त इनको जीतती है, रूखी है, विष्टंभको करती है और स्वादु है, येही गुण कुमोदिनीमें है । भंचूल नामसे प्रसिद्ध है ॥ ७३ ॥

पद्मचारिणीनामगुणाः ।

पद्मचारिण्यतिचरा पद्माह्वा चारटी मता ।
पद्मा हिमा लघुः श्लेष्मकृच्छ्रजित् स्तनदाहकृत् ॥ ७४ ॥

पद्मचारिणी, अतिचरा, पद्माह्वा, चारटी ये पद्मचारिणीके नाम हैं । पद्मचारिणी शीतल है, हलकी है, कफ और मूत्रकृच्छ्रको जीतती है, स्तनोंमें दाह करती है ॥ ७४ ॥

श्वेतकमलनामानि ।

कमलं श्वेतमम्भोजं सारसं शरसीरुहम् ।
सहस्रपत्रं श्रीगेहं शतपत्रं कुशेशयम् ।
पङ्केरुहं तामरसं राजीवं पुष्कराह्वयम् ॥ ७५ ॥
अब्जमम्भोरुहं पद्मं पुण्डरीकं च पङ्कजम् ।
नलं सरोज नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ७६ ॥

कमल, अंभोज, सारस, सरसीरुह, सहस्रपत्र, श्रीगेह, शतपत्र, कुशेशय, पंकेरुह, तामरस, राजीव, पुष्कराह्वय, अब्ज, अंभोरुह, पद्म, पुंडरीक, पंकज, नल, सरोज, नलिन, अरविन्द, महोत्पल, ये सुपेद कमलके नाम हैं ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

रक्तोत्पलनामानि ।

रक्तोत्पलं कोकनदं हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ७७ ॥

रक्तोत्पल, कोकनद, हल्लक, रक्तसंध्यक ये लाल कमलके नाम हैं ॥ ७७ ॥

नीलोत्पलनामानि ।

नीलोत्पलं कुवलयं भद्रमिन्दीवरं मतम् ।
एतदेव सितं किञ्चित्कुमुदं कैरवं कुमुद ॥ ७८ ॥

नीलोत्पल, कुवलय, भद्र, इन्दीवर ये नीलकमलके नाम हैं । यही किंचित् सफेद हो तो कुमुद, कैरव इन नामोंवाला कुमुद कहाता है ॥ ७८ ॥

कमलादिगुणाः ।

कमलं शीतलं वर्ण्यं मधुरं कफपित्तजित् ।
तृषादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ।
तस्मादल्पगुणं किञ्चिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥ ७९ ॥

कमल-शीतल है, वर्णको निखारता है, मीठा है, कफ पित्तको जीतता है और तृषा, दाह, रक्तविकार, विस्फोटक, विष, विसर्प इनको नाश करता है और लाल-कमल आदिकोंमें इससे किंचित् कम गुण हैं ॥ ७९ ॥

कल्हारनामगुणाः ।

कह्लारं ह्रस्वपाथोजं सौम्यं सौगंधिकं महत् ।
कह्लारं ग्राहि विष्टम्भि कोमलं गुरु शीतलम् ॥ ८० ॥

कह्लार, ह्रस्वपाथोज, सौम्य, सौगंधिक, महत् ये कह्लारके नाम हैं । कह्लार मलको बांधता है, विष्टंभको करता है, कोमल है, भारी है और शीतल है ॥ ८० ॥

किञ्जल्कनामगुणाः ।

किञ्जल्कः केशरं गौरमापीतं काञ्चनाह्वयम् ।
किञ्जल्कःशीतलो ग्राही रक्तार्शःकफपित्तजित् ॥ ८१ ॥

किंजल्क, केशर, गौर, आपीत, कांचनाह्वय ये कमलकेशरके नाम हैं । कमल-केशर-शीतल है, मलको बांधती है, रक्तविकार, बवासीर, कफ, पित्त इनको जीतती है ॥ ८१ ॥

पद्मबीजनामगुणाः ।

पद्मबीजं तु कालेयं पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।
पद्मबीजं हिमं स्वादु गर्भसंस्थापनं गुरु ।
कफवातहरं बल्यं ग्राहि पित्तास्रदाहजित् ॥ ८२ ॥

पद्मबीज, कालेय, पद्माक्ष, पद्मकर्कटी ये कमलबीजके नाम हैं । कमलबीज (कमलगट्टे) शीतल हैं, स्वादु हैं, गर्भको स्थिर करते हैं, भारी हैं कफ-वातको हरते हैं बलदायक हैं, मलको बांधते हैं और पित्त, रक्त, दाह इनको जीतते हैं ॥ ८२ ॥

मृणाल (भिस) नामगुणाः ।

मृणालं बिसमम्भोजं नालयं च नलिनीरुहम् ।
पद्मादिमूलं शालूकं शालीनं करहाटकम् ॥ ८३ ॥

मृणाल, बिस, अंभोज, नल, नलिनीरुह, पद्मादिमूल, शालूक, शालीन कर-हाटक ये जलमें रहनेवाली कमलकी भिसके नाम हैं ॥ ८३ ॥

मृणालं शीतलं वृष्यं पित्तदाहास्रजिद्गुरु ।
संग्राहि मधुरं रूक्षं शालूकमपि तद्गुणम् ॥ ८४ ॥

कमलकी भिस–शीतल है, वीर्यको बढाती है और पित्त, दाह, रक्त इनको जीतती है, भारी है, मलको बांधती है, और रूखी है, शालूकमेंभी येही गुण हैं । शालूक कमलकी जडके नीचेके हिस्सेको कहते हैं और मृणाल डंडीकी ओरका हिस्सा होता है । इसको भिस कहते हैं इसका शाक भी बनाया जाता है ॥ ८४ ॥

जाती (चमेली) नामगुणाः ।

जाती प्रियंवदा राज्ञी मालती सुमना मता ।
पीना सत्यपरा पीतपुष्पा काञ्चनपुष्पिका ।
जाती लघूष्णा मूर्द्धाक्षिदन्तार्तिव्रणरक्तजित ॥ ८५ ॥

जाती, प्रियंवदा, राज्ञी, मालती, सुमना, पीता, सत्यपरा, पीतपुष्पा, कांचन-पुष्पिका ये चमेलीके नाम हैं, चमेली हलकी है, गर्म है और मस्तकरोग, नेत्ररोग, दन्तरोग, घाव, रक्तविकार इनको जीतनेवाली है ॥ ८५ ॥

मल्लिका (मालती) नामगुणाः ।

मल्लिका मोदिनी मुक्तबन्धना मदयन्तिका ।
मल्लिकोष्णा लघुर्वृष्या वातपित्तास्रोगजित ॥ ८६ ॥

मल्लिका, मोदिनी, मुक्तबन्धना, मदयन्तिका ये मालतीके नाम हैं । मालती गर्म है, वीर्यमें हित है और वात, पित्त, रक्त इनको जीतती है ॥ ८६ ॥

यूथिका (जूही) ।

यूथिका हरिणी बाला पुष्पगन्धा शिखण्डिनी ।
स्वर्णयूथाऽपरा पीता गणिका स्वर्णपुष्पिका ।
यूथी हिमाऽस्रमूर्द्धाक्षिरोगजित्कफवातकृत् ॥ ८७ ॥

यूथिका, हरिणी, बाला, पुष्पगंधा, शिखंडिनी, स्वर्णयूथा ये नाम जूहीके हैं । पीता गणिका स्वर्ण पुष्पिका ये पीले फूलकी जूहीके नाम हैं । जूही-शीतल है, रक्त विकार, शिरोरोग, नेत्र रोग इनको जीतती है और कफवा-तको उत्पन्न करती है ॥ ८७ ॥

कुब्जका (सेवती) नामगुणाः ।

कुब्जका भद्रतरुणी बृहत्पुष्पा महासहा ।
शतपत्री तरुण्युक्ता कर्णिका चारुकेशरा ।
रक्ताऽपरा रक्तपुष्पा लाक्षापुष्पाऽतिमञ्जुला ॥ ८८ ॥

कुब्जका (कूजो), भद्रतरुणी, बृहत्पुष्पा, महासहा, शतपत्री, (गुलाब) तरुणी, कर्णिका, चारु केशरा ये नाम कूजो (गुलाब) और सेवतीके हैं, रक्ता, रक्तपुष्पा, लाक्षापुष्पा, अतिमंजुला ये नाम लाल फूलकी सेवतीके हैं ॥ ८८ ॥

शतपत्री हिमा हृद्या ग्राहिणी शुक्रला लघुः ।
दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्या कुब्जकोऽपि च तद्गुणः ॥ ८९ ॥

सेवती और गुलाब शीतल हैं, दिलको ताकत देते हैं, मलको बांधते हैं, वीर्यको देते हैं, हलके हैं, त्रिदोष, रक्त इनको जीतते हैं तथा वर्णको निखारते हैं । कुब्जा (कूजो) मेंभी येही गुण हैं, ॥ ८९ ॥

केतकीसुवर्णकेतकीनामगुणाः ।

केतकी सूचिकापुष्पो जम्बूकः क्रकचच्छदः ।
सुवर्णकेतकी चान्या लघुपुष्पा सुगन्धिनी ।
केतकी कटुका स्वादुर्लघुस्तिक्ता कफापहा ॥ ९० ॥

केतकी (केवडा) सूचिकापुष्प, जंबूक, क्रकचच्छद ये केतकीके नाम हैं, और सुवर्ण केतकी, लघुपुष्पा, सुगंधिनी ये सुवर्ण केतकीके नाम हैं, केतकी-चर्परी है, स्वादु है, हलकी है, कडुवी है, कफको नाशती है ॥ ९० ॥

वासन्तीनामगुणाः ।

वासन्ती सारणी कुन्दा प्रहसन्ती वसन्तजा ।
वासन्ती शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयास्रनुत् ॥ ९१ ॥

वासन्ती, सारणी, कुन्दा, प्रहसन्ती, वसंतजा ये वासंतीके नाम हैं, बासंती-शीतल है, कडुवी है, हलकी है, और त्रिदोषको दूर करती है ॥ ९१ ॥

नैपालीनामगुणाः ।

नैपाली ग्रैष्मिका लूता लापिनी वनमल्लिका ।
वार्षिकी त्रिपुटा त्वन्या श्रीमती षट्पदप्रिया ॥ ९२ ॥

नैपाली, ग्रैष्मिका, लूता, लापिनी, वनमल्लिका ये नैपालीके नाम हैं और वार्षिकी, त्रिपुटा, श्रीमती, षट्पदप्रिया ये वार्षिकी बेलाके नाम हैं ॥ ९२ ॥

नैपाली शीतला तिक्ता लघ्वी दोषत्रयापहा ।
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नी तद्गुणा वार्षिकी मता ॥ ९३ ॥

नैपाली-शीतल है, कडुवी है, हलकी है, त्रिदोषको हरती है और कानरोग, नेत्ररोग, मुखरोग इनको नाशती है । नैपाली नीले फूलकी छोटी जातिकी प्रसर होती है, इसके फूल ग्रीष्मऋतुमें खिलते हैं। इसपर भ्रमर अधिक बैठते हैं, बेलामें भी येही गुण है । बेला मोतिया प्रसिद्ध है ॥ ९३ ॥

माधवीनामगुणाः ।

माधवी मण्डपः कामी पुष्पेन्द्रोऽभीष्टगन्धकः ।
माधवी मधुरा शीता लघुर्दोषत्रयापहा ॥ ९४ ॥

माधवी, मण्डप, कामी, पुष्पेन्द्र, अभीष्टगन्धक ये माधवीके नाम हैं माधवी-मीठी है, शीतल है, हलकी है और त्रिदोषको हरती है। माधवीकी बेल होती है, इसके पत्र चम्पाकेसे होते हैं और फूलोंके गुच्छे लगते हैं, फूल तिलके फूलोंके समान होते हैं ॥ ९४ ॥

चम्पक (चम्पा) नामगुणाः ।

चम्पकः काचरो रम्यश्चाम्पेयः सुरभिश्चलः ।
चम्पकः शीतलः कृच्छ्रकफपित्तास्रवातजित् ॥ ९५ ॥

चंपक, काचर, रम्य, चांपेय, सुरभि, चल ये चम्पाके नाम हैं। चंपा-शीतल है, कृच्छ्र, कफ, पित्त, रक्तवात इनको जीतता है। चंपकका वृक्ष आमके वृक्ष समान होता है, पत्र भी आमकेसे होते हैं, फूल पीले होते हैं, इसको चम्पा भी कहते हैं ॥ ९५ ॥

पुन्नागनामगुणाः ।

पुन्नागः पाटलीपुष्पः केशरी षट्पदालयः ।
पुन्नागो मधुरः शीतो रक्तपित्तकफापहः ॥ ९६ ॥

पुन्नाग, पाटलीपुष्प, केशरी, षट्पदालय ये पुन्नागके नाम हैं। पुन्नाग-मीठा है, शीतल है, रक्तपित्त और कफको दूर करता है। पुन्नागकी कलीको नागकेसर कहते हैं ॥ ९६ ॥

बकुल (मौलसिरी) नामगुणाः ।

बकुलः केशरो मध्यगन्धः सिंहो विशारदः ।
बकुलः शीतलः श्लेष्मपित्तदन्तमदापहः ।
तत्फलं वातलं ग्राहि कफपित्तहरं हिमम् ॥ ९७ ॥

बकुल, केशर, मध्यगन्ध, सिंह, विशारद ये मौलसिरीके नाम हैं । मौलसिरी-शीतल हैं, कफ, पित्त, दन्तरोग, मद इनको नाश करती है, मौलसिरीका फल वातको करता है, मलको बांधता है, कफपित्तको हरता है और शीतल है ॥ ९७ ॥

वुष (वृद्ध) मौलसिरीनामगुणाः ।

वुषो वुकः स्थूलपुष्पो वसुकश्शिवशोधकः ।
वुषः शीतो विश्लेष्मपित्तकृच्छ्राश्मदाहहृत् ॥ ९८ ॥

वुष, वुक, स्थूलपुष्प, वसुक, शिवशोधक ये बडी मौलसिरीके नाम हैं । बडी मौलसिरी-शीतल है, विष कफ, पित, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह इनको हरती है, जिसमें फल आते हैं वह मौलसिरी है जिसमें फल नहीं आते वह वृद्ध मौलसिरी होती है ॥ ९८ ॥

कुन्दनामगुणाः ।

कुन्दः शुक्लः सदापुष्पो भृङ्गबन्धुर्मनोरमः ।
कुन्दः शीतो लघु श्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तजित् ॥ ९९ ॥

कुन्द, शुक्ल, सदापुष्प, भृंगबंधु, मनोरम ये कुंदके नाम हैं । कुंद शीतल और हलका है, कफ, शिरका रोग, विष, पित्त इनको जीतता है । कुन्दके छोटे २ वृक्ष होते हैं, फल सफेद होते है, कोई लोग इसे चांदनी कहते हैं ॥ ९९ ॥

मुचुकुन्दनामगुणाः ।

मुचुकुन्दः क्षेत्रवृद्धश्चिबुकः प्रतिविप्लुपः ।
मुचुकुन्दः शिरःपीडापित्तास्रमुखनाशनः ॥ १०० ॥

मुचुकुन्द, क्षेत्रवृद्ध, चिबुक, प्रतिविप्लुप, ये मुचुकुन्दके नाम हैं । मुचुकुन्द-शिरकी पीडा, रक्तपित्त, मुखरोग इनको नाशता है, इसका वृक्ष होता है, पत्र अखरोटके समान होते हैं, फूल बडा और सुगंधित होता है, फल लम्बे गोल काष्ठसे होते हैं, औषधीमें इसके फूल डालते हैं ॥ १०० ॥

भूमण्डली (रायबेल) नामगुणाः ।

भूमण्डली विचच्छिन्नो द्विपदाऽष्टपदी तथा ।
शीतो लघुर्विचच्छिन्नः कफपित्तविषापहः ॥ १ ॥

भूमंडली, विचच्छिन्न, द्विपदा, अष्टपदी ये रायबेलके नाम है, रायबेल-शीतल और हलका है, कफ, पित्त तथा विषको हरता है ॥ १ ॥

तिलकनामगुणाः ।

तिलकः क्षुरकः श्रीमान् विचित्रो मुखमण्डनः ।
तिलकः कफनुत्कुष्ठहरोऽत्युष्णो रसायनः ॥ २ ॥

तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, विचित्र, मुखमंडन ये तिलकके नाम हैं. तिलक-कफको दूर करता है, कुष्ठको हरता है, गर्म है और रसायन है । तिलक वृक्षके फूल तिलके फूलसे होते हैं, फल पीपलके समान लगते हैं ॥ २ ॥

गणेरुक (गेंदा) नामगुणाः ।

गणेरुकः कर्णिकारःकर्णश्च गणकारिका ।
गणेरुः शोधनः शोफश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठनुत् ॥ ३ ॥

गणेरुक, कर्णिकार, कर्ण, गणकारिका ये गेंदाके नाम हैं, गेंदा-शोधन है और सोजा, कफ, रक्त, घाव, कुष्ठ इनको दूर करता है ॥ ३ ॥

बन्धूक (दुपहरिया) नामगुणाः ।

बन्धुजीवः शरत्पुष्पो बन्धुर्बन्धूकरक्तकौ ।
बन्धूकः कफकृद् ग्राही वातपित्तहरो लघुः ॥ ४ ॥

बंधुजीव, शरत्पुष्प, बंधु, बंधूक, रक्तक ये दुपहरियाके नाम हैं । दुपहरिया-कफको करता है, मलको बांधता है, वात पित्तको हरता है, और हलका है, दुपहरिया सफेद, सिंदूरी, लाल तीन चार जातका होता है और दुपहरमें खिलता है, इसीलिये इसको दुपहरिया कहते हैं ॥ ४ ॥

जपापुष्पनामगुणाः ।

जपापुष्पं जपारक्तं त्रिसन्ध्या त्वरुणाऽसिता ।
जपा संग्राहिणी केश्या त्रिसन्ध्या कफपित्तजित् ॥ ५ ॥

जपापुष्प, जपारक्त, त्रिसंध्या, अरुणा, असिता ये नाम जपाके हैं । जपा-मलको बांधती और बालोंको बढाती है । त्रिसंध्या--कफ, पित्त इनको जीतती है, इसमें लाल रंगके सुगंधित पुष्प लगते है । वृक्ष छोटा होता है; दिल्लीप्रांतमें इसको गुडहल ओडहुल कहते हैं; इसीको जवापुष्प भी कहते हैं ॥ ५ ॥

सिन्दूरीनामगुणाः ।

सिन्दूरी रक्तबीजा स्याद्रक्तपुष्पा सुकोमला ।
सिन्दूरी कफपित्तास्रतृष्णावान्तिहरा हिमा ॥ ६ ॥

सिंदूरी, रक्तबीजा, रक्तपुष्पा, सुकोमला ये सिंदूरीके नाम हैं । सिंदूरी- कफ, पित्त, रक्त, तृषा, छर्दि इनको हरती है, और शीतल हैं, सिंदूरियाके

क्षुप बगीचोंमें होते हैं। फूल लाल सिंदूरके रंगके होते हैं, जलमें डालनेसे जलभी लाल होजाता है ॥ ६ ॥

तुलसीनामगुणाः।

तुलसी सुरसा गौरी भूतघ्नी बहुमञ्जरी।
तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाहपित्तकृत्।
दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥ ७ ॥

तुलसी, सुरसा, गौरी, भूतघ्नी, बहुमंजरी ये तुलसीके नाम हैं। तुलसी चर्परी है, कडुवी है, दिलको ताकत देती है, गर्म है, दाह पित्तको हरती (करती) है, अग्निको जगाती है और कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्त, पसलीशूल, कफ, वात इनको नष्ट करती है ॥ ७ ॥

मरुनामगुणाः।

मरुर्मरुवकस्तीक्ष्णः खरपुष्पः फणिज्जकः।
मरुरग्निप्रदो हृद्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः।
वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठक्रिमीञ्जयेत्।
रुधिरादिभवं शोथं नाशयेच्च प्रलेपनात् ॥ ८ ॥

मरु, मरुवक, तीक्ष्ण, खरपुष्प, फणिज्जक ये मरुवाके नाम हैं, मरुआ-बहुत अग्नि देता है, दिलको ताकत देता है, तेज है, गर्म है, पित्तको उत्पन्न करता है, हलका है और बीछू आदिका विष, कफ, वात, कुष्ठ, कृमि इनको जीतता है, रुधिरादिसे होनेवाली सूजनको लेप करनेसे नाश करता है ॥ ८ ॥

मदननामगुणाः।

मदनो मदना दान्तो दमो मुनिसुतो मुनिः।
गन्धोत्कटो मदनको विनीता कुलपुत्रकः।
मदनोऽक्षिप्रकुष्ठास्रमेदःकण्डूत्रिदोषजित् ॥ ९ ॥

मदन, मदना, दांत, दम, मुनिसुत, मुनि, गंधोत्कट, मदनक, विनीता, कुलपुत्रक ये मदनके नाम हैं। मदन--नेत्ररोग, कुष्ठ, रक्त, मेद, खाज, त्रिदोष इनको जीतता है। मदनाभी मरुवेकाही भेद है, इसको दौनाभी कहते हैं ॥ ९ ॥

। दाहपित्तजित् इत्येव पाठो गरीयान्।

वर्वरीत्रयनामगुणाः ।

वर्वरी वर्जकः कुण्ठो वैकुंठः स्यात्कुठेरकः ।
कपित्थार्जक इत्यन्यो वटपत्रः कटिञ्जरः ।
कृष्णार्जकः कालमासः करालः कृष्णमल्लिकः ॥ ११० ॥

वर्वरी, वर्जक, कुंठ, वैकुंठ, कुठेरक, कपित्थार्जक, वटपत्र, कटिंजर, कृष्णार्जक, कालमास, कराल, कृष्णमल्लिका ये वनतुलसी और कालामरुवाके नाम हैं ॥११०॥

वर्वरीत्रितयं रूक्षं शीतं कटु विदाहि च ।
पित्तलं कफवातास्रदद्रुक्रिमिविषापहम् ॥ १११ ॥

तीनों प्रकारकी वनतुलसी-रूखी है, शीतल है, चर्परी है, दाहको करती हैं, पित्तको करती है और कफ, वात, रक्त, दाह, कृमि, विष इनको नाशती है॥१११॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रंथेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णः कर्पूरप्रभृतिसुगंधिद्रव्यवर्गः॥ ११२॥

इति मदनपालनिघंटौ सुगंधिद्रव्यवर्गस्तृतीयः ॥ ३ ॥

राजाओंमें जो मुख्य और मानाहुआ तथा कटार युद्धका मल्ल है उसी मदनराजाके रचेहुए इस मदनविनोदनामक ग्रंथमें कर्पूर आदि सुगंधिद्रव्यवर्ग पूर्ण हुआ ॥ ११२ ॥

इति श्रीमदनपालनिण्घटौ वैद्यरत्न पं०-रामप्रसाद विरचित भाषातत्त्व प्रकाशिनी-भाषाटीकायां कर्पूरादिसुगंधिद्रव्यवर्गस्तृतीयः ॥ ३ ॥

यद्वाञ्छया विश्वकृतोऽपि देवा ब्रह्मादयो यान्ति मुहुर्भवन्ति ।
अचिन्त्यकृत्यं पुरुषं पुराणं गोपत्वमाप्तं तमुपाश्रयामि ॥ १ ॥

जिसकी इच्छासे जगत्के रचनेवाले ब्रह्मा आदि देवता वारंवार उत्पन्न और नष्ट होते हैं उस अचिंत्यकृत्यवाले पुराण पुरुष और गोपजातिको प्राप्तहुए परमेश्वरको आश्रित होता हूं ॥ १ ॥

सुवर्णनामगुणाः ।

सुवर्णं काञ्चनं हेम हाटकं तप्तकांचनम् ।
चामीकरं शातकुम्भं तपनीयं च रुक्मकम् ।
जाम्बूनदं हिरण्यं च स्वरलं जातरूपकम् ॥ २ ॥

सुवर्ण, कांचन, हेम, हाटक, तप्तकांचन, चामीकर, शातकुम्भ, तपनीय, रुक्मक, जांबूनद, हिरण्य, स्वरल, जातरूपक ये सुवर्णके नाम हैं ॥ २ ॥

सुवर्णं शीतलं वृष्यं बल्यं गुरु रसायनम् ॥ ३ ॥
कान्तिप्रदं विषोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ।
कषायं तिक्तमधुरं सुवर्णं गुरु लेखनम् ॥ ४ ॥

सोना–शीतल है, वीर्यवर्द्धक है, बलके देनेवाला है, भारी है, आयुको बढाता है, कांतिकारक है और विष, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर, शोष इनको जीतनेवाला, कषैला, कडुवा, मीठा और अत्यन्त लेखन है ॥ ३ ॥ ४ ॥

रूप्य (चांदी) नामगुणाः ।

रूप्यकं रजतं रूप्यं तारं श्वेतं वसूत्तमम् ।
रूप्यं शीतं सरं वातपित्तहारि रसायनम् ॥ ५ ॥

रूप्यक, रजत, रूप्य, तार, श्वेत, वसूत्तम ये चांदीके नाम हैं। चांदी-शीतल है, दस्तावर है, वातपित्तको हरती है, रसायन है ॥ ५ ॥

लेखनं च कषायाम्लं विपाके चापरं सरम् ।
वयसः स्थापनं स्निग्धं धातूनां हितमुच्यते ॥ ६ ॥

चांदी-लेखन है, कषैली है, पाकमें खट्टी है। दूसरी चांदी सर हैं, अवस्थाको स्थापन करती है, चिकनी है और धातुओंके लिये हितकारक है ॥ ६ ॥

ताम्रनामगुणाः ।

ताम्रं म्लेच्छमुखं शुल्बं नैपालं रविनामकम् ।
उदुम्बरं सूर्यप्रियं रक्तजं रक्तधातुकम् ॥ ७ ॥

ताम्र, म्लेच्छमुख, शुल्ब, नैपाल, रविनामक, उदुम्बर, सूर्यप्रिय, रक्तज, रक्तधातुक ये तांबेके नाम हैं ॥ ७ ॥

ताम्रं सरं लघु स्वादु शीतं पित्तकफापहम् ।
रोपणं पाण्डुकुष्ठार्शः श्वयथुश्वासकासजित् ॥ ८ ॥

तांबा--दस्तावर है, हलका है स्वादु है, शीतल है, पित्तकफको नाश करता है, घावपर अंकुर लाता है और पांडु, कुष्ठ, बवासीर, शोजा, श्वास, खांसी इनको जीतता है ॥ ८ ॥

कांस्यनामगुणाः।

कांस्यं लोहं निजं घोषं पंचलोहं प्रकाशकम्।
कांस्यं गुरूष्णं चक्षुष्यं कफपित्तहरं सरम् ॥ ९ ॥

कांस्य, लोहा, निज, घोष, पंचलोह, प्रकाशक ये कांसीके नाम हैं। कांसी भारी है, गर्म है, नेत्रोंको हित करता है, कफपित्तको हरता है और दस्तावर है ॥ ९ ॥

पीतलोहनामगुणाः।

पीतलोहं सिंहलकं कपिलं सौकुमारकम्।
वर्तलोहं त्रिलोहं च राजरीतिर्महेश्वरी।
पीतलोहं हिमं रूक्षं कटूष्णं कफपित्तनुत् ॥ १० ॥

पीतलोह, सिंहलक, कपिल, सौकुमारक, वर्तलोह, त्रिलोह, राजरीति, महेश्वरी ये पीतलके नाम हैं। पीतल-शीतल, रूखी, चर्परी, गर्म और कफ-पित्तको दूर करनेवाली है ॥ १० ॥

रंगनामगुणाः।

रङ्गकं तीरकं वङ्गं त्रपु स्यात्करटी घनम्।
रङ्गं लघु सरं रूक्षमुष्णं मेहकफक्रिमीन्।
निहंति पांडुं सश्वासं दृश्यमीषत्तु पित्तलम् ॥ ११ ॥

रङ्गक, तीरक, वंग, त्रपु, करटी, घन ये रांगके नाम हैं। रांग-हलका है, सर है, रूखा है, गर्म है, प्रमेह, कफ, कृमि, पांडु, श्वास इनको दूर करता है और किंचित् पित्तको उत्पन्न करता है। कलीरांगा नामसे प्रसिद्ध है ॥ ११ ॥

जसदनामगुणाः।

जसदं रङ्गसदृशं दितिहेतुश्च तन्मतम्।
जसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत् ॥
चक्षुष्यं परमं मेहान् पाण्डुं श्वासं च नाशयेत् ॥ १२ ॥

जसद, रङ्गसदृश,, दितिहेतु ये जसदके नाम हैं। जसद-कषैला है, कडुवा है, शीतल है, कफपित्तको हरता है, नेत्रको परम हितकारक है और प्रमेह, पांडु, श्वास इनको नाश करता है ॥ १२ ॥

सीस (सिका) नामगुणाः।

सीसं धातुमलं नागमुरगं परिपिष्टकम्।

जवनेष्टं च भुजगं विसृष्टं कृष्णकं विदुः ।
सीसं रङ्गगुणं ज्ञेयं विशेषान्मेहनाशनम् ॥ १३ ॥

सीस, धातुमल, नाग, उरग, परिपिष्टक, जवनेष्ट, भुजग, विसृष्ट, कृष्णक ये सीसेके नाम हैं, सीसेमें रांगके सब गुण हैं। विशेष करके प्रमेहको नाश करता है ॥ १३ ॥

लोहमंडूरयोर्नामगुणाः ।

लोहं शस्त्रमयःकुष्ठं व्यङ्गं पारावतं घनम् ।
कृष्णायस्तन्मलं किट्टं मण्डूरो लोहजं रजः ॥ १४ ॥

लोह, शस्त्र, अयः कुष्ठ, व्यंग, पारावत, घन यह लोहेके नाम हैं। कृष्णायस, तन्मल, किट्ट, मण्डूर, लोहज, रज ये लोहेके मलके नाम हैं १४ ॥

लोहं सरं गुरु स्वादु कषायं कफपित्तनुत् ।
शीतं नेत्रहितं रूक्षं बल्यं वातलमुत्तमम् ॥ १५ ॥

लोहा दस्तावर है, भारी है, स्वादु है, कषैला है, कफपित्तको नष्ट करता है, शीतल है, आंखोंमें हित है, रूखा है, बलको देता है, वातको उत्पन्न करता है और उत्तम है ॥ १५ ॥

शोफकुष्ठप्रमेहार्शोगरपाण्डुक्रिमीञ्जयेत् ।
तत्किट्टं तद्गुणं ज्ञेयं विशेषात्पाण्डुनाशनम् ॥ १६ ॥

यह शोजा, कुष्ठ, प्रमेह, बवासीर, कृत्रिमविष, पाण्डु, कृमि इनको जीतता है। लोहेके (तै) मैलमें भी लोहेके सम गुण हैं। विशेष करके पाण्डुरोगको नष्ट करता है ॥ १६ ॥

पारदनामगुणाः ।

पारदश्चपलो हेमनिधिः सूतो रसोत्तमः ।
त्रिनेत्रो रोषणः स्वामी हरबीजं रसः प्रभुः ॥ १७ ॥
रसेन्द्रश्चेति विख्यातो रसलोहो महारसः ।
पारदः कृमिकुष्ठघ्नश्चक्षुष्योष्णो रसायनः ॥ १८ ॥

पारद, चपल, हेमनिधि, सूत, रसोत्तम, त्रिनेत्र, रोषण, स्वामी, हरबीज, रस, प्रभु, रसेन्द्र, रसलोह, महारस ये पारेके नाम हैं। पाराकृमि और कुष्ठको नष्ट करता है, नेत्रोंको हितकारक है, गर्म है, और रसायन है ॥ १७ ॥ १८ ॥

अभ्रकनामगुणाः ।

अभ्रकं स्वच्छमाकाशं पटलं वरपीतकम् ।
अभ्रं गुरु हिमं बल्यं कुष्ठमेहत्रिदोषनुत् ॥ १९ ॥

अभ्रक, स्वच्छ, आकाश, पटल, वरपीतक ये अभ्रकके नाम हैं, अभ्रक भारी है, शीतल है, बलकारक है, कुष्ठ, प्रमेह, त्रिदोष इनको नष्ट करता है ॥ १९ ॥

गगनं कृमिकुष्ठमेहहृद् विशदं शुक्रकरं च दीपनम् ।
कथितं मुनिभिश्च पूर्वजैर्बलकृच्छुक्रकरं च सेवितम् ॥२०॥

सेवन किया हुआ अभ्रक कृमि, कुष्ठ और प्रमेहको हरता है, रसको स्पष्ट करता है, वीर्यको बढाता है, अग्निको जगाता है, बलको करता है, और वीर्यको उपजाता है, ऐसे पुराने मुनियोंने कहा है ॥ २० ॥

गन्धकनामगुणाः ।

गन्धकः सौगन्धको लेखी गन्धाश्मा गन्धपीतकः ।
लेलीतको बलिवसा वेगन्धो गन्धको बलिः ॥ २१ ॥

गन्ध, सौगन्धक, लेखी, गन्धश्मा, गंधपीतक, लेलीतक, बलिवसा, वेगन्ध, गंधक बलि ये गंधकके नाम हैं ॥ २१ ॥

गन्धकः कटुकः पाके वीर्योष्णः पित्तलः सरः ।
हन्ति कुष्ठक्षयप्लीहकफवातरसामयान् ॥ २२ ॥

गंधक-पाकमें चर्परा है, वीर्यमें गर्म है, पित्तको करता है, दस्तावर है, और कुष्ठ, क्षय, तिल्लीरोग, कफ, वात, पारेसे उपजे रोग इनको नाश करता है ॥ २२ ॥

सुवर्णमाक्षिकनामगुणाः ।

माक्षिकं धातुमाक्षीकं ताप्यं तापीजमुच्यते ।
माक्षिकं तुवरं वृष्यं स्वर्यं लघु रसायनम् ॥ २३ ॥

माक्षिक, धातुमाक्षीक, ताप्य, तापीज ये सोनामक्खीके नाम हैं । सोनामाखी कषैली है । वीर्यवर्द्धक है, स्वर करती है, हलकी है, और रसायन है ॥ २३ ॥

चक्षुष्यं कुष्ठशोफार्शोमेहबस्त्यर्तिपाण्डुताः ।
व्यवायि कटुकं हन्ति कुष्ठोदरविषक्षयान् ॥ २४ ॥

सोनामाखी—नेत्रोंको हितकारक है, और कुष्ठ, शोजा, प्रमेह, बस्ति रोग, पांडु, उदरोग, विष, क्षय इनको नाश करती है और भोगमें आनन्द देती है, तथा चर्परी है ॥ २४ ॥

मनःशिलानामगुणाः ।

मनःशिला शिला गोला नैपाली कुनटी कुला ।
दिव्यौषधिर्नागमाता मनोगुप्ता मनोऽम्बिका ॥ २५ ॥

मनःशिला, शिला, गोला, नैपाली, कुनटी, कुला, दिव्यौषधि, नागमाता, मनोगुप्ता, मनोऽम्बिका ये मनःशिलके नाम हैं ॥ २५ ॥

मनःशिला कृच्छ्रहरा सरोष्णा लेखनी कटुः ।
तिक्ता स्निग्धा विषश्वासकासभूतकफास्रजित् ॥ २६ ॥

मनशिल मूत्रकृच्छ्रको हरती है, सर है, गर्म है, लेखनी है, चर्परी है, कड़ुवी है, चिकनी है, और विष, श्वास, खांसी, भूतदोष, कफ, रक्तविकार इनको जीतती है २६

हरितालनामगुणाः ।

हरितालमलं तालं गोदन्तं नटभूषणम् ।
हरितालं कटु स्निग्धं कषायोष्णं विषं जयेत् ।
कण्डूकुष्ठास्यरोगांश्च कफपित्तकचग्रहान् ॥ २७ ॥

हरिताल, अल, गोदन्त, नटभूषण ये नाम हरतालके हैं, । हरताल चर्परी है, चिकनी है. कषैली है, गर्म है, और विष, खाज, कुष्ठ, मुखरोग, कफ, पित्त, बालग्रहदोष इनको जीतता है ॥ २७ ॥

गैरिकनामगुणाः ।

गैरिकं रक्तपाषाणं गिरिमृच्च गवेधुकम् ।
स्वर्णवर्णं परं स्वर्णमण्डलं स्वर्णगैरिकम् ॥ २८ ॥

गैरिक, रक्तपाषाण, गिरिमृत्, गवेधुक ये गेरूके नाम हैं । स्वर्णवर्ण, स्वर्णमण्डल, स्वर्णगैरिक ये सोना गेरूके नाम हैं ॥ २८ ॥

गैरिकं दाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ।
चक्षुष्यमन्यत्तद्वच्च विशेषाद्वान्तिनाशनम् ॥ २९ ॥

गेरू—दाह, पित्त, रक्त, कफ, हिचकी विष इनको नाश करता है, नेत्रोंको हित है, सोनागेरूमें भी यही गुण हैं, परन्तु विशेषकर छर्दिको नाश करता है ॥ २९ ॥

तुत्थ (निलाथोथा) नामगुणाः ।

तुत्थं कर्पूरिकातुत्थममृतासङ्गमुच्यते ।
मयूरग्रीवकं चान्यच्छिखिकण्ठं च तुत्थकम् ॥ ३० ॥

तुत्थ, कर्पूरिकातुत्थ, अमृतासंग, मयूरग्रीवक ये नीलाथोथाके नाम हैं। दूसरा शिखिकण्ठ नामसे होता है ॥ ३० ॥

तुत्थकं लेखनं भेदि कण्डूकुष्ठविषापहम् ।
कफक्रिमिहरं तद्वदन्यच्चक्षुष्यमुत्तमम् ॥ ३१ ॥

नीलाथोथा लेखन और भेदन है, खाज, कुष्ठ, विष, रक्त, कृमि इनको नाश करता है। दूसरा नीलाथोथा नेत्रोंको हितकारक और उत्तम है ॥ ३१ ॥

कासीसनामगुणाः ।

कासीसं धातुकासीसं खेचरं तप्तलोमशम् ।
अपरं पुष्पकासीसं तुवरं वस्त्ररागधृक् ॥ ३२ ॥

कासीस, धातुकासीस, खेचर, तप्तलोमश ये हीराकसीसके नाम हैं। पुष्पकासीस, तुवर, वस्त्ररागधृक् ये नाम दूसरेके हैं ॥ ३२ ॥

कासीसद्वयमम्लोष्णं तिक्तं केश्यं दृशे हितम् ।
हन्ति कण्डूविषश्वित्रमूत्रकृच्छ्रकफानिलान् ॥ ३३ ॥

दोनों हीराकसीस-खट्टे हैं, गर्म हैं, कडुवे हैं, बालोंको बढाते हैं, नेत्रोंमें हित हैं और खाज, विष, श्वित्रकुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात, इनको नाशते हैं ॥ ३३ ॥

हिंगुल (सिंगरफ) नामगुणाः ।

हिंगुलं दरदं म्लेच्छं सैकतं चूर्णपारदम् ।
हिंगुलं पित्तकफनुच्चक्षुष्यं विषकुष्ठहृत् ॥ ३४ ॥

हिंगुल, दरद, म्लेच्छ, सैकत, चूर्ण, पारद ये सिंगरफके नाम हैं। सिंगरफ--पित्त कफको दूर करता है, नेत्रोंको हितकारक है, विष और कुष्ठको हरता है ॥ ३४ ॥

सिन्दूरनामगुणाः ।

सिन्दूरं नागजं रक्तं श्रीमच्छृङ्गारभूषणम् ।
वसन्तमण्डनं नागरक्तं रक्तरजस्तथा ॥ ३५ ॥

सिन्दूर, नागज, रक्त, श्रीमत्, शृंगारभूषण, वसंतमंडन, नागरक्त, रक्तरज, ये सिंदूरके नाम हैं ॥ ३५ ॥

सिन्दूरमुष्णं वीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम्।
भग्नसन्धानजननं व्रणशोधनरोपणम् ॥ ३६ ॥

सिंदूर गर्म है, विसर्प, कुष्ठ, खाज, विष इनको नाशकरता है, टूटे हुएको जोडता है, घावको शोधनकरता है और भरलाता है ॥ ३६ ॥

सौवीरनामगुणाः।

सौवीरमञ्जनं कृष्णं कालनीलं सुवीरजम्।
स्रोतोऽञ्जनं तु स्रोतोजं नदीजं यामुनं वरम् ॥ ३७ ॥

सौवीर, अञ्जन, कृष्ण, कालनील, सुवीरज, स्रोतोऽञ्जन, स्रोतोज, नदीज, यामुन, वर ये सुरमाके नाम हैं ॥ ३७ ॥

सौवीरं ग्राहि मधुरं चक्षुष्यं कफवातजित्।
सिध्मक्षयास्रनुच्छीतं स्रोतोऽञ्जनमपीदृशम् ॥ ३८ ॥

सुरमा—मलको बांधता है, मीठा है, आंखोंमें हित है, कफ-वातको जीतता है, सीप और क्षय रोगको नाशकरता है तथा शीतल है। स्रोतोंजनमेंभी यही गुण हैं ॥ ३८ ॥

रसाञ्जननामगुणाः।

रसाञ्जनं रसोद्भूतं तार्क्ष्यं शैलं च तार्क्ष्यजम्।
रसाग्र्यं कृत्रिमं तार्क्ष्यं दार्व्यं दार्वीरसोद्भवम् ॥ ३९ ॥

रसांजन, रसोद्भूत, तार्क्ष्य, शैल, तार्क्ष्यज, रसाग्र्य, कृत्रिम, तार्क्ष्य, दार्व्य, दार्वीरसोद्भव ये रसौंतके नाम हैं ॥ ३९ ॥

रसाञ्जनं कटु श्लेष्ममुखनेत्रविकारजित्।
उष्णं रसायनं तिक्तं छेदनं व्रणदोषजित् ॥ ४० ॥

रसौंत-चर्परा है; कफ, मुखरोग और नेत्ररोगको जीतता है, गर्म है, बुढापेको दूर करता है, कडुवा है, छेदन है और घाव दोषको जीतता है ॥ ४० ॥

पुष्पाञ्जननामगुणाः।

पुष्पाञ्जनं पुष्पकेतु रीतिजं कुसुमाञ्जनम्।
पुष्पाञ्जनं क्षारमुष्णं काचामपटलापहम् ॥ ४१ ॥

पुष्पाञ्जन, पुष्पकेतु, रीतिज, कुसुमांजन ये पुष्पांजनके नाम हैं. पुष्पांजन-खारा है, गर्म है, काच, अम, पटल इनको नाश करता है ॥ ४१ ॥

शिलाजतुनामगुणाः।

शिलाजतूष्णजं शैलनिर्यासो गिरिशाह्वयम्।
शिलाह्वं गिरिजं शैलं शैलेयं गिरिजत्वपि ॥ ४२ ॥

शिलाजतु, उष्णज, शैलनिर्यास, गिरिशाह्वय, शिलाह्व, गिरिज, शैल, शैलेय, गिरिजतु ये शिलाजीतके नाम हैं ॥ ४२ ॥

शिलाजतूष्णं कटुकं योगवाहि रसायनम्।
छर्दिप्रमेहवातार्शःकुष्ठास्योदरपाण्डुताः।
हन्ति श्वासक्षयोन्मादरक्तशोफकफाक्रिमीन् ॥ ४३ ॥

शिलाजीत गर्म है, चर्परा है, योगवाहि अर्थात् जैसे योगमें मिलता है वैसाही गुण देता है, रसायन है, छर्दि, प्रमेह, वात, बवांसीर, कुष्ठ, मुखरोग, उदररोग, श्वास, क्षय, उन्माद, रक्त, शोजा, कफ, कृमि इनको नाश करता है ॥ ४३ ॥

बोलनामगुणाः।

बोलं गन्धरसं वीरं निर्लोहं बर्बरं चलम्।
सुगन्धि नालिका पिण्डं रसगन्धं च तद्द्विधा ॥ ४४ ॥

बोल, गंधरस, वीर, निर्लोह, बर्बर, चल, सुगंधि, नालिका, पिण्ड, रसगंध ये बोलके नाम हैं. यह दो प्रकारका होता है ॥ ४४ ॥

बोलं रक्तहरं शीतं मेध्यं दीपनपाचनम्।
ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नं गर्भाशयविशोधनम् ॥ ४५ ॥

बोल-रक्तविकारको हरता है, शीतल है, बुद्धिको बढाता है, अग्निको जगाता है, पाचन है, ज्वर, मृगीरोग, कुष्ठ इनको नाश करता है और गर्भाशयको शोधन करता है ॥ ४५ ॥

स्फटिकाख्यानामगुणाः।

स्फटिकाख्या मृता बाष्पी कक्षी सौराष्ट्रसम्भवा।
आडकी तुवरा त्वन्या मृत्तिका सुरमृत्तिका ॥ ४६ ॥

स्फटिकाख्या, मृता, बाष्पी, कक्षी, सौराष्ट्रसंभवा ये नाम फिटकडीके हैं। दूसरीके आढकी, तुवरा, मृत्तिका, सुरमृत्तिका ये नाम हैं ॥ ४६ ॥

स्फटिकाख्या कषायोष्णा कफपित्तविषव्रणान्।
निहन्ति श्वित्रवीसर्पांस्तुवरी तद्गुणा मता ॥ ४७ ॥

फिटकडी कषैली और गर्म है। यह कफ, पित्त, विष, घाव, श्वित्रकुष्ठ, विसर्प इनको नाश करती है, तुवरीमें भी येही गुण हैं, तुवरी फिटकडीका ही भेद है ॥४७॥

समुद्रफेननामगुणाः ।

समुद्रफेनो डिण्डीरः फेनो वारिकफो द्विजः ।
समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखनः शमनः सरः ॥ ४८ ॥

समुद्रफेन, डिंडीर, फेन, वारिकफ, द्विज ये समुद्रझागके नाम हैं । समुद्रझाग नेत्रोंको हित है, लेखन है, शमन और सर है ॥ ४८ ॥

प्रवालनामगुणाः ।

प्रवालं विद्रुमं सिन्धुर्लताग्रं रक्तवर्णकम् ।
पुष्टिदं कान्तिदं बल्यं वर्द्धनं बलशुक्रयोः ॥ ४९ ॥

प्रवाल (मूंगा) विद्रुम, सिंधु, लताग्र, रक्तवर्णक ये मूंगाके नाम है । मूंगा- पुष्टि, कांति, बल इनको देता है तथा बल और वीर्यको बढाता है ॥ ४९ ॥

मौक्तिकनामगुणाः ।

मौक्तिकं तौतिला मुक्ताफलं मुक्ता च शुक्तिजम् ।
मौक्तिकं मधुरं शीतं रोगघ्नं विषनाशनम् ॥ ५० ॥

मौक्तिक, तौतिला, मुक्ताफल, मुक्ता, शुक्तिज ये मोतीके नाम हैं. यह मीठा है, शीतल है, रोगोंको और विषको नाश करता है ॥ ५० ॥

माणिक्यनामानि ।

माणिक्यं पद्मरागं स्याद्वसु रत्नं सुरत्नकम् ॥ ५१ ॥

माणिक्य, पद्मराग, वसु, रत्न, सुरत्नक ये माणिकके नाम हैं । अधिक वजन होनेसे इसको लाल कहते हैं ॥ ५१ ॥

सूर्यकांतमणिनामानि ।

सूर्यकान्तः सूर्यमणिः सूर्याक्षो दहनोपलः ॥ ५२ ॥

सूर्यकांत, सूर्यमणि, सूर्याक्ष, दहनोपल ये सूर्यकांतमणिके नाम हैं ॥ ५२ ॥

चन्द्रकांतमणिनामानि ।

चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः स्फटिकः स्फटिकोपलः ॥ ५३ ॥

चंद्रकांत, चंद्रमणि, स्फटिक, स्फटिकोपल ये नाम चन्द्रकांतमणिके हैं ॥ ५३ ॥

गोमेदनामानि ।

गोमेदं सुन्दरं पीतं रत्नं तृणचरं तथा ॥ ५४ ॥

गोमेद, सुन्दर, पीत, रत्न, तृणचर, ये गोमेदमणिके नाम हैं ॥ ५४ ॥

हीरकनामानि ।

हीरकं भिदुरं वज्रं सूचीवक्रं वरार्धकम् ॥ ५५ ॥

हीरक, भिदुर, वज्र, सूचीवक्र, वरार्धक ये हीराके नाम हैं ॥ ५५ ॥

नीलवैडूर्ययोर्नामानि ।

नीलरक्तं नीलमणिर्वैडूर्यं बालवायजम् ॥ ५६ ॥

नीलरक्त नीलमणि (नील इंद्रनील) ये नीलमके नाम हैं । और वैडूर्य, (केतुरत्न राष्ट्रक), बालवायज ये लसणियेके नाम हैं ॥ ५६ ॥

मरकतमणिनामानि ।

गारुत्मतं मारकतं हयद्गर्भं हरिन्मणिः ॥ ५७ ॥

गारुत्मत, मारकत, हयद्गर्भ, हरिन्मणि ये मरकतमणिके नाम हैं । इसको पन्ना भी कहते हैं ॥ ५७ ॥

मुक्तास्फोटनामानि ।

मुक्तास्फोटोऽब्धिमडूकी शुक्तिर्मौक्तिकमन्दिरम् ॥ ५८ ॥

मुक्तस्फोट,, अब्धिमंडूकी, शुक्ति, मौक्तिकमंदिर ये मोतीपके नाम हैं ॥ ५८ ॥

मुक्तिकान्तिनामानि ।

कटुकान्तिर्मुक्तिकान्तिर्दीपनी वह्निनाशिनी ॥ ५९ ॥

कटुकांति, मुक्तिकांति, दीपनी, वह्निनाशिनी ये नाम मोतीकांति (सीपविशेष) के हैं ॥ ५९ ॥

प्रवालादिगुणाः ।

प्रवालमुक्तिमाणिक्यसूर्यशीतकरोपलाः ।
गोमेदवज्रवैडूर्यनीलगारुत्मतादयः ॥ ६० ॥
चक्षुष्या लेशनाः शीताः कषाया मधुराः सराः ।
माङ्गल्या धारणाद्दाहदुष्टग्रहविषापहाः ॥ ६१ ॥

मूंगा, मोती, लाल, सूर्यकान्तमणि, चन्द्रमणि, पन्ना, हीरा, लसनियां, मरकतमणि आदि रत्न नेत्रोंको हितकारक हैं, लेखन हैं, शीतल हैं, कषैले हैं, मीठे हैं, फैलनेवाले है, धारण करनेसे मङ्गलको देते है, तथा दाह दुष्टग्रह विष इनको नाश करते हैं ॥ ६० ॥ ६१

शङ्खनामगुणाः ।

शङ्खः कम्बुर्जलधरो वारिजो दीर्घनिःस्वनः ।
शङ्खो हि कटुकः पाके कषायो मधुरो लघुः ॥ ६२ ॥

शंख, कम्बु, जलधर, वारिज, दीर्घनिःस्वन ये शंखके नाम हैं । शंख—पाकमें चर्परा है, कषैला है, मीठा है, और हलका है ॥ ६२ ॥

चक्षुष्यो लेखनः पक्तिशूलपित्तविनाशनः ।
शङ्खो नेत्रहितः शीतो लघुः पित्तकफास्रजित् ॥ ६३ ॥

शंख--नेत्रोंको हितकारक है, लेखन है, परिणामशूल और पित्तको नाश करता है, शीतल है, हलका है तथा पित्त, कफ, रक्तविकारको जीतता है ॥ ६३ ॥

लघुशंखकपर्दनामगुणाः ।

शङ्खो लघुः शङ्खनकः शम्बुका वारिशुक्तयः ।
कपर्दाः क्षुल्लका ज्ञेयाश्चराचरमराटकाः ।
लघुशङ्खादयः शीता नेत्ररुक्स्फोटनाशनाः ॥ ६४ ॥

शंख, लघु, शंखनक, शंबुक, वारिशुक्ति ये छोटे शंखके नाम हैं । कपर्द, क्षुल्लक चराचर, वराटक ये कौडीके नाम हैं । छोटा शंख आदि शीतल हैं, नेत्ररोग और फोडेको नाश करते हैं ॥ ६४ ॥

खटीगौडग्रावनामगुणाः ।

खटी कपोलः खटिनी श्वेता नाडीतरङ्गकः ।
तद्भेदो गौडपाषाणः क्षीरपाक उदाहृतः ।
खटी दाहास्रनुच्छीता गौडग्रावापि तद्गुणः ॥ ६५ ॥

खटी, कपोल, खटिनी, श्वेता नाडीतरंगक ये खडियाके नाम हैं । इसीके भेद, गौडपाषाण और क्षीरपाक कहे जाते हैं । खडिया--दाह, रक्तविकार इनको दूर करती हैं और शीतल हैं गौडग्रावमें भी ये ही गुण हैं ॥ ६५ ॥

पङ्कवालुकानामगुणाः ।

पङ्कः कर्दमको ज्ञेयो वालुका सिकता तथा ।
पङ्को दाहास्रपित्तार्त्तिशोथघ्नः शीतलः सरः ।
वालुका लेखनी शीता व्रणोरः क्षतनाशिनी ॥ ६६ ॥

पंक, कर्दमक ये नाम कीचडके और वालुका, सिकता ये नाम वालूके हैं। कीचड–दाह, रक्तपित्त, शोजा इनको नाशता है और सर है। वालुका लेखन है, शीतल है, घाव और छातीके फटनेको नाशती है ॥ ६६ ॥

चुम्बकपाषाणनामगुणाः ।

चुम्बकः कान्तपाषाणोऽयस्कान्तो लोहकर्षकः ।
चुम्बको लेखनः शीतो मेदोविषगरापहः ॥ ६७ ॥

चुंबक, कांतपाषाण, अयस्कांत, लोहकर्षक ये चुंबक पत्थरके नाम हैं । चुंबक–लेखन और शीतल है, तथा मेद, विष, कृत्रिमविष इनको नाश करता है ॥ ६७ ॥

काचनामगुणाः ।

काचः कृत्रिमरत्नं स्याद्विगुणः काचभाजनम् ।
काचो विदारणो व्रण्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः ॥ ६८ ॥

काच, कृत्रिमरत्न, विगुण, काचभाजन ये काचके नाम हैं । काचफाडता हैं, घाव करता है और घावको पूरण अर्थात् भरदेनेवाला भी है, नेत्रोंमें हित है, लेखन है, हलका है ॥ ६८ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्ण-
श्चित्रोऽयं ललितपदैः सुवर्णवर्गः ॥ ६९ ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ सुवर्णादिवर्गश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

राजाओंमें अत्यन्त प्रधान जो कटारमल्ल उसी मदनपाल राजाके रचेहुए इस मदनविनोद नामक ग्रन्थमें ललितपदोंसे चित्रित यह सुवर्णादिवर्ग पूरा हुआ ॥ ६९ ॥

इति श्रीमदनपालनिघंटौ वैद्यरत्न पं०–रामप्रसादवैद्योपाध्यायविर-
चितभाषातत्त्वप्रकाशिनीटीकायां सुवर्णादिवर्गश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

करेण संगृह्य कुचौ महिष्याः पयः पिबन्तं पुरुषं पुराणम् ।
विचित्रलीलं परिशुद्धशीलं तमालनीलं शिशुमाश्रयामि ॥ १ ॥

श्रीयशोदाजीके स्तनोंको हाथसे ग्रहणकर दूधको पीताहुआ पुराणपुरुष विचित्र-लीलासंयुक्त सर्वतः शुद्धस्वभाव कृष्णरूप बालकके आश्रित होता हूं ॥ १ ॥

वटनामगुणाः।

वटो रक्तपदा क्षीरी बहुपादो वनस्पतिः।
यक्षावासः पदारोही न्यग्रोधः स्कन्धजो ध्रुवः।
वटः शीतो गुरुर्ग्राही कफपित्तव्रणापहः॥ २॥

बट (बरौटा) रक्तपदा, क्षीरी, बहुपाद, वनस्पति, यक्षावास पदारोही, न्यग्रोध, स्कंधज, ध्रुव, ये बडके नाम हैं, बड-शीतल है, भारी है, मलको बांधता है और कफ, पित्त, घाव इनको नाश करता है॥ २॥

पिप्पलनामगुणाः।

पिप्पलः श्यामलोऽश्वत्थः क्षीरवृक्षो गजाशनः।
हरिवासश्चलद्दलो मंगल्यो बोधिपादपः।
पिप्पलो दुर्जयः शीतः पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित्॥ ३॥

पिप्पल, श्यामल, अश्वत्थ, क्षीरवृक्ष, गजाशन, हरिवास, चलद्दल, मंगल्य, बोधिपादप ये पीपलके नाम हैं। पीपल दुःखको जीतता है, शीतल है और पित्त, कफ, घाव, रक्त इनको जीतता है॥ ३॥

पारिशाश्वत्थकनामगुणाः।

पारिशोऽन्यः फलेशः स्यात्कपिनूतः कपीतनः।
पारिशाश्वत्थको वृष्यः स्निग्धः श्लेष्मकृमिप्रदः॥ ४॥

पारिश, फलेश, कपिनूत, कपीतन ये पारसपीपलके नाम हैं। पारसपीपल-वीर्यवर्द्धक है, चिकना है, कफ और कृमियोंको पैदा करता है॥ ४॥

उदुम्बरनामगुणाः।

उदुम्बरः क्षीरवृक्षो जन्तुवृक्षः सदाफलः।
हेमदुग्धः कृमिफलो यज्ञाङ्गः शीतवल्कलः।
उदुम्बरो हिमो व्रण्यः कफपित्तास्रजिद् गुरुः॥ ५॥

उदुंबर, क्षीरवृक्ष, जंतुवृक्ष, सदाफल, हेमदुग्ध, कृमिफल, यज्ञांग, शीतवल्कल ये गूलरके नाम हैं। गूलर-शीतल है, घावको हित है और कफ, पित, रक्तको जीतता है तथा भारी है॥ ५॥

काकोदुम्बरिकानामगुणाः।

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलायुश्चित्रभेषजम्।
काकोदुम्बरिका तद्वद्विशेषाच्छित्रनाशिनी॥ ६॥

काकोदुंबरिका, फल्गु, मलायु, चित्रभेषज ये कैवरीके नाम हैं, । कटुंबरमें बूलरके सब गुण हैं । विशेषकर कटेहुएको अच्छा करती है ॥ ६ ॥

प्लक्षनामगुणाः ।

प्लक्षः प्लवश्चारुवृक्षः सुपार्श्वो गर्भभाण्डकः ।
वटी कमण्डलुर्यूपः पिप्परिश्चारुदर्शनः ।
प्लक्षः शीतो व्रणश्लेष्मपित्तशोथविसर्पजित् ॥ ७ ॥

प्लक्ष, प्लव, चारुवृक्ष, सुपार्श्व, गर्भभांडक, वटी, कमंडलु, यूप, पिप्परि, चारुदर्शन ये पिलखनके नाम हैं । पिलखन शीतल है और घाव, कफ, पित्त, शोजा, विसर्प इनको जीतता है ॥ ७ ॥

पंचक्षीरवृक्षनामगुणाः ।

न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थः पारिशः प्लक्षपादपः ।
पञ्चैते क्षीरिणः प्रोक्तास्तेषां त्वक् पञ्चवल्कलम् ॥ ८ ॥

बड, गूलर, पीपल, पारसपीपल पिलखन ये पांच क्षीरीवृक्ष कहेगये हैं । इनके छाल पंचवल्कल कहे जाते हैं ॥ ८ ॥

त्वक्पञ्चकं हिमं ग्राहि व्रणशोथविसर्पजित् ।
केचित्तु पारिशस्थाने शिरीषं वेतसं परे । ९ ॥

पंचवल्कल–शीतल है, ग्राही है, व्रण, शोथ, विसर्प इनको जीतता है । कितनेक वैद्य पंचवल्कलमें पारसपीपलके स्थानमें शिरस मिलाते हैं और कितनेकके वेतस लेते हैं ॥ ९ ॥

क्षीरवृक्षा हिमा व्रण्या योनिदोषव्रणापहाः ।
शोफपित्तकफास्रघ्नाः स्तन्या भग्नास्थियोगदाः ॥ १० ॥

क्षीरवृक्ष–शीतल हैं, घावमें हित हैं, योनिदोष, घाव, शोजा, पित्त, कफ, रक्तविकार इनको नाश करते हैं, स्तनोंमें दूध बढाते हैं, टूटी हड्डीको जोडते हैं ॥ १० ॥

तेषां पत्रं हिमं ग्राहि कफवातास्रनुल्लघु ।
फलं विष्टम्भि संग्राहि रक्तपित्तकफापहम् ॥ ११ ॥

क्षीरवृक्षोंके पत्ते शीतल हैं, मलको बांधते हैं और कफ, पित्त, रक्त इनको दूर करते हैं, तथा हलके हैं । क्षीरवृक्षोंका फल विष्टंभ करता है, मलको बांधता है, रक्तपित्त और कफको दूर करता है ॥ ११ ॥

नन्दीवृक्षनामगुणाः।

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदः प्ररोही गजपादपः।
नन्दीवृक्षोऽश्वत्थगुणो लघूष्णो गरनुत्पुनः॥ १२॥

नन्दीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप ये नन्दीवृक्षके नाम हैं। नन्दीवृक्षमें पीपलके सब गुण हैं और हलका, गम और विषको दूर करनेवाला है॥ १२॥

कदम्बनामगुणाः।

कदम्बो गन्धवत्पुष्पः प्रावृषेण्थो मनोन्नतिः।
अन्यो धूलिकदम्बः स्यान्नीपो राजकदम्बकः।
कदम्बः शीतलः श्लेष्मपित्तरक्तगदापहः॥ १३॥

कदम्ब, गन्धवत्पुष्प, प्रावृषेण्य, मनोन्नति ये कदंबके नाम हैं। धूलिकदम्ब, नीप, राजकदंबक ये नाम दूसरे कदंबके हैं। कदम्ब-शीतल है और कफ, पित्त, रक्त इन रोगोंको नाश करता है॥ १३॥

ककुभार्जुननामगुणाः।

ककुभोऽर्जुननामा स्यान्नदो मञ्जुः शठद्रुमः।
ककुभः शीतलो भग्नक्षतक्षयविषास्रजित्॥ १४॥

ककुभ, अर्जुननामा, नद, मंजु, शठद्रुम ये कोहके नाम हैं। कोह-शीतल है और भग्न, क्षत, क्षय, विष रक्त इनको जीतता है॥ १४॥

शिरीषनामगुणाः।

शिरीषः प्लवगो विप्रः शुकवृक्षः कपीतनः।
मृदुपुष्पः श्यामवर्णोः भण्डीरः शङ्खिनीफलः।
शिरीषः शीतलो वर्ण्यो विषवीसर्पशोथजित्॥ १५॥

शिरीष (सिरस) प्लवग, विप्र, शुकवृक्ष, कपीतन, मृदुपुष्प, श्यामवर्ण, भंडीर, शंखिनीफल ये शिरसके नाम हैं। शिरस-शीतल है, वर्णको निखारता है तथा विष, विसर्प, शोजा इनको जीतता है॥ १५॥

आर्तगलनामगुणाः।

आर्गटः स्यादार्त्तगलो बहुकण्टः प्रघर्षणः।
आर्गटःस्तुवरः शीतो व्रणशोधनरोपणः॥ १६॥

आर्गट, आर्त्तगल, बहुकंट, प्रघर्षण ये आर्तगलके नाम हैं। आर्तगल-कषैला है, शीतल है, घावको शोधता है और अंकुर लाता है।

कोई इसको नीले फूलकी कटसरैया कहते हैं, कोई कांटे युक्त वृक्ष होता है ऐसा कहते हैं ॥ १६ ॥

वेतसनामानि ।

वेतसो वञ्जुलो नम्रो वानीरो दीर्घपत्रकः ।
नादेयो मध्यपुष्पोऽन्यस्तोयकामो निकुञ्जकः ॥ १७ ॥

वेतस, वंजुल, नम्र, वानीर, दीर्घपत्रक, नादेय, मध्यपुष्प, तोय-काम, (वेतस, वेत, मजनु) निकुंजक ये वेतस व्यूसके नाम हैं ॥ १७ ॥

जलवेतसनामानि ।

जलौकासम्भृतोऽम्भोजो निचुलो जलवेतसः ॥ १८ ॥

जलौकासंभृत, अंभोज, निचुल, जलवेतस ये जलवेतके नाम हैं ॥ १८ ॥

इज्जलनामानि ।

इज्जलो हिज्जलो गुच्छफलः स्यात्कच्छपोलिका ॥ १९ ॥

इज्जल, हिज्जल, गुच्छ फल, कच्छपोलिका ये इज्जलके नाम हैं । इसको हिज्जल, समुद्रफल, समुद्रशोष भी कहते हैं ॥ १९ ॥

वेतसादिगुणाः ।

वेतसः शीतलो दाहशोफार्शोयोनिरुग्व्रणान् ।
हन्ति वीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान् ॥ २० ॥

वेतस-शीतल है और दाह, शोजा, बवासीर योनिरोग, घाव, विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, पथरी कफ, वात इनको नाश करता है ॥ २० ॥

जलजो वेतसः शीतः संग्राही वातकोपनः ।
इज्जलस्तद्गुणः प्रोक्तो विशेषाद्विषनाशनः ॥ २१ ॥

जलवेतस-शीतल है मलको बांधता है, वातको कुपित करता है । हिज्जलमें भी येही गुण हैं, विशेषकर विषको नाश करता है ॥ २१ ॥

श्लेष्मान्तक (लिसोडा)नामगुणाः ।

श्लेष्मातकः कर्बुदारः पिच्छली भूतपादपः ।
शेलुः शैलुश्च शैलूकः शैलिको द्विजकुत्सिकः ॥ २२ ॥

श्लेष्मातक, कर्बुदार, पिच्छली, भूतपादप, शेलु, शैलु, शैलूक, शैलिक,[1] (लहेसवा) द्विजकुत्सिक (नसूडा, नसूडी) ये लिसोडेके नाम हैं ॥ २२ ॥

श्लेष्मातको विषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठजित् ।
केश्योष्णस्तत्फलं वृष्यं वातपित्तक्षयास्रजित् ॥ २३ ॥

१-श्लेष्मान्तकः इति पाठान्तरम् ।

लिसोडा विष, फोडा, घाव, विसर्प, कुष्ठ इनको जीतता है, बालोंको हितकारक है और गर्म है। ल्हेसवाका फल (लिसोडा) वीर्यको पुष्ट करता है तथा वात, पित्त, क्षय, रक्त इनको जीतता है ॥ २३ ॥

पीलुनामगुणाः ।

पीलुःशतसहस्रांशी तीक्ष्णस्तु करभप्रियः ।
सहस्राङ्गी गुडफलस्तत्फलं पीलु पीलुजम् ॥ २४ ॥

पीलु, शतसहस्रांशी, तीक्ष्ण, करभप्रिय, सहस्राङ्गी, गुडफल ये पीलूके नाम हैं। पीलु, पीलुज ये पीलूके फलके नाम हैं ॥ २४ ॥

पीलूष्णं दीपनं भेदि रक्तपित्तकरं लघु ।
गुल्मार्शः प्लीहवाताश्मकफहारि रसायनम् ॥ २५ ॥

पीलु गर्म है, अग्निको जगाता है, भेदी है, रक्तपित्तको करता है, हलका है और गुल्म बवासीर तिल्लीरोग, वात, पथरी, कफ इनको हरता है तथा रसायन है ॥२५॥

शाकनामगुणाः ।

शाकः खरच्छदो भूमिसहो दीर्घच्छदो मतः ।
शाकः श्लेष्मानिलास्रघ्नो गर्भसन्धानदो हिमः ॥ २६ ॥

शाक, खरच्छद भूमिसह, दीर्घच्छद ये शागौनके नाम हैं। शागौन–कफ, वात, रक्त इनको नाशता है, गर्भको स्थापित करता है और शीतल है ॥ २६ ॥

शालनामगुणाः ।

शालः सर्जरसः सर्जः श्रीकृष्णारिश्च पत्रकः ।
शालो ग्राही व्रणश्लेष्मदग्धरुग्विषनुद्धिमः ॥ २७ ॥

शाल, सर्जरस, सर्ज, श्रीकृष्णारि, पत्रक ये शालके नाम हैं, शाल–मलको बांधता है, घाव, कफ, जलाहुआ, विष इनको नष्ट करता है और शीतल है ॥२७॥

तमालनामगुणाः ।

तमाल उक्तस्तापिच्छः कालस्कन्धो मितद्रुमः ।
तमालस्तद्गुणः शोथदाहविस्फोटहृत्पुनः ॥ २८ ॥

तमाल, तापिच्छ, कालस्कन्ध, मितद्रुम ये तमाल वृक्षके नाम हैं। तमालमें शालके सब गुण हैं और शोजा, दाह, विस्फोट इनको हरता है ॥ २८ ॥

खदिरनामगुणाः ।

खदिरो रक्तसारः स्याद्गायत्री बालपत्रकः ।
खदिरः श्वेतसारोऽन्यः कार्मुकः कुब्जकण्टकः ॥ २९ ॥

खदिर, रक्तसार, गायत्री, बालपत्रक ये खैरके नाम हैं । खदिर, श्वेतसार, कार्मुक, कुब्जकण्टक ये नाम दूसरे खदिरके हैं ॥ २९ ॥

खदिरः शीतलो दन्त्यः कृमिमेहज्वरव्रणान् ।
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफाञ्जयेत् ॥ ३० ॥

खैर-शीतल है और दांतोंमें हित करता है, कृमि, प्रमेह, ज्वर, घाव, श्वित्र, शोजा, आम, पित्तरक्त, पाण्डु, कुष्ठ, कफ इनको जीतता है ॥ ३० ॥

निर्यासस्तस्य मधुरो बल्यः शुक्रविवर्द्धनः ।
सारस्तु विशदो बल्यो मुखरोगकफास्रजित् ॥ ३१ ॥

खदिरका गांद-मधुर है, बल देनेवाला है, शुक्रको बढानेवाला है और खैरसार (कत्था) विशद है, बलकरनेवाला है, मुखरोग, कफ, रक्तविकारको जीतता है ॥ ३१ ॥

अरिमेदनामगुणाः ।

अरिमेदो विट्खदिरो गोधास्कन्धोऽरिमेदकः ।
अरिमेदः कषायोष्णो मुखदन्तगदास्रनुत् ।
तथा कण्डूविषश्लेष्मक्रिमिकुष्ठव्रणाञ्जयेत् ॥ ३२ ॥

अरिमेद, विट्खदिर, गोधास्कंन्ध, अरिमेदक ये गंधखदिरके नाम हैं , गंधवाला खैर कषैला है, गर्म है, मुखरोग, दंतरोग, रक्त, इनको दूर करता है और खाज, विष, कफ, कृमि, कुष्ठ, घाव इनको जीतता है ॥ ३२ ॥

बबूलनामगुणाः ।

बबूलः किङ्करालः स्यात्पीतकः पीतपुष्पकः ।
बबूलः कफनुद् ग्राही कुष्ठक्रिमिविषापहः ।
रक्तपित्तं कषायेण निहन्ति दिनसप्तकैः ॥ ३३ ॥

बबूल, किंकराल (कीकरा) पीतक, पीतपुष्पक ये बबूलके नाम हैं । बबूल-कफको दूर करता है, मलको बांधता है और कुष्ठ, कृमि विष, इनको दूर करता है । इसके क्राथको ७ दिन पीवे तो रक्तपित्त दूर होता है ॥ ३३ ॥

बीजक (विजयसार) नामगुणाः ।

बीजकोऽशनकः सौरी प्रियः काम्योऽलकप्रियः ॥ ३४ ॥

बीजक, अशनक, सौरी, प्रिय, काम्य, अलकप्रिय ये नाम विजयसारके हैं ॥ ३४ ॥

बीजकः कुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहज्वरक्रिमीन् ।
हन्ति श्लेष्मास्रपित्तानि त्वच्यः केश्यो रसायनः ॥ ३५ ॥

विजयसार–कुष्ठ, विसर्प, श्वित्र, प्रमेह, ज्वर, कृमि, कफ, रक्तविकार, रक्तपित्त इनको नष्ट करता है, त्वचाको अच्छा करता है, बालोंको बढाता है और रसायन है ॥ ३५ ॥

तिनसनामगुणाः ।

तिनसः स्पन्दनो नेमी सर्वसारोऽश्मगन्धकः ।
तिनसः श्लेष्मपित्तास्रमेदः कुष्ठप्रमेहनुत् ॥ ३६ ॥

तिनस, स्यंदन, नेमी, सर्वसार, अश्मगन्धक ये तिनसके नाम हैं । तिनस--कफ, पित्त, रक्त, मेद, कुष्ठ, प्रमेह इनको दूर करता है ॥ ३६ ॥

भूर्जपत्रनामगुणाः ।

भूर्जो भुजो बहुपुटो मृदुत्वग्लेख्यपत्रकः ।
भूर्जो भूतग्रहश्लेष्मकर्णरुग्रक्तपित्तजित् ॥ ३७ ॥

भूर्ज, भुज, बहुपुट, मृदुत्वक्, लेख्यपत्रक ये भोजपत्रके नाम हैं । भोजपत्र–भूतदोष, ग्रहदोष, कफ, कर्णरोग, रक्तपित्त इनको जीतता है ॥ ३७ ॥

पलाशनामगुणाः ।

पलाशः किंशुकः किर्मी याज्ञिको ब्रह्मपादपः ।
क्षीरश्रेष्ठो रक्तपुष्पस्त्रिवृतः समिदुत्तमः ॥ ३८ ॥

पलाश, किंशुक, किर्मी, याज्ञिक, ब्रह्मपादप, क्षीरश्रेष्ठ, रक्तपुष्प (केसू), त्रिवृत, समित्, उत्तम ये ढाकके नाम हैं ॥ ३८ ॥

पलाशो दीपनो वृष्यः सरोष्णो व्रणगुल्मजित् ।
भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शः क्रिमीन् हरेत् ॥ ३९ ॥

ढाक-अग्निको दीपन करता है, धातुको पुष्ट करता है, सर है, गर्म है, घाव और गुल्मको जीतता है, टूटे हुएको जोडता है तथा ग्रहणी. बवासीर कृमि इनको नाश करता है ॥ ३९ ॥

तत्पुष्पं कफपित्तास्रकृच्छ्रजिद् ग्राहि शीतलम् ।
फलं लघूष्णं मेहार्शःकृमिदुष्टकफापहम् ॥ ४० ॥

ढाकका फूल–कफ, पित्तरक्त, मूत्रकृच्छ्र इनको जीतता है और ग्राही है तथा शीतल है । इसकी फली हलकी और गर्म है, प्रमेह, बवासीर, कृमि, दुष्टकफ इनको हरती है ॥ ४० ॥

धवनामगुणाः

धवो नन्दितरुर्गौरःशकटाक्षो धुरन्धरः ।
धवः शीतप्रमेहास्रपाण्डुपित्तकफापहः ॥ ४१ ॥

धव, नंदितरु, गौर, शकटाक्ष, धुरंधर ये नाम धवके हैं । धव–शीत, प्रमेह, रक्त, पांडु, पित्त, कफ इनको हरता है ॥ ४१ ॥

धन्वननामगुणाः ।

धन्वनो गोत्रविटपी धर्मणो गोत्रपुष्पकः ।
धन्वनः कफपित्तास्रकासजित्तुवरो लघुः ॥ ४२ ॥

धन्वन, गोत्रविटपी, धर्मण, गोत्रपुष्पक ये नाम धामण (ढामण) के हैं । धामण–कफ, पित्तरक्त, खांसी इनको जीतता है कषैला और हलका है ॥ ४२ ॥

सर्जनामगुणाः ।

सर्जोऽजकर्णः स्वेदघ्नो लतावृक्षःकुदेहकः ।
सर्जो वर्ण्यःकफस्वेदमलंपित्तक्रिमीञ्जयेत् ॥ ४३ ॥

सर्ज, अजकर्ण, स्वेदघ्न, लतावृक्ष, कुदेहक, शाल ये नाम सर्जवृक्षके हैं । सर्ज–वर्ण करता है और कफ, पसीना, मल, पित्त, कृमि इनको जीतता है, राल इस वृक्षसे ही होती है ॥ ४३ ॥

शाखोटनामगुणाः ।

शाखोटः स्यात्पीतफलश्छागी क्षीरविनाशनः ।
शाखोटो वातरक्तास्रकफवातातिसारजित् ॥ ४४ ॥

शाखोट, पीतफल, छागी, क्षीरविनाशन ये नाम शाखोटके हैं । शाखोट–वातरक्त, रक्त, कफ, वात, अतिसार इनको जीतता है । इसके वृक्ष अत्यंत गठीले झाडसे होते हैं, फूल सफेद, लकडीमें कुछ कांटे होते हैं, इसको सिहोडा भी कहते हैं ॥४४॥

वरुणनामगुणाः ।

वरुणो वरणः श्वेतः शाकवृक्षः कुमारकः ।
वरुणः पित्तलो भेदी श्लेष्मकृच्छ्रास्रमारुतान् ।
निहन्ति गुल्मवातास्रकृमिशोथांश्च दीपनः ॥ ४९ ॥

वरुण, वरण, श्वेत, शाकवृक्ष, कुमारक ये बरनाके नाम हैं । बरना-पित्तको करता है और भेदी है । कफ, मूत्रकृच्छ्र, रक्त, वात, गुल्म, वातरक्त, कृमि, शोजा इनको नाशता है और अग्निको जगाता है, इसके वृक्षको बरना कहते हैं ॥ ४९ ॥

जिङ्गिणीनामगुणाः

जिङ्गिणी झिङ्गिणी जिङ्गी मुनिर्यासा च मोटकी ।
जिङ्गिणी व्रणहृद्रोगवातातीसारजित्कटुः ।
उष्णस्तस्यास्तु निर्यासो नस्याद्बाहुव्यथापहः ॥ ४६ ॥

जिंगिणी, झिंगिणी, जिंगी, मुनि, यासा, मोटकी ये जीगणीके नाम हैं । जींगणी-घाव हृद्रोग, वात, अतिसार इनको जीतती है, कडुवी है । जींगणीका सत गर्म है, नस्य लेनेसे बाहुकी पीडाको हरती है ॥ ४६ ॥

शल्लकीनामगुणाः ।

शल्लकी वल्लकी मोची गजभक्षा महारुहा ।
गन्धर्वीरा कुन्दुरुकी सुस्रावा वनकर्णिका ।
शल्लकी व्रणपित्तास्रश्लेष्मपित्तातिसारजित् ॥ ४७ ॥

शल्लकी, वल्लकी, मोची, गजभक्षा, महारुहा, गन्धवीरा, कुन्दुरुकी, सुस्रावा, वनकर्णिका ये नाम शल्लकी (छल्ल) के हैं । छल्ल-घाव, पित्तरक्त, कफ, पित्त अतिसार इनको जीतता है ॥ ४७ ॥

इंगुदनामगुणाः ।

इङ्गुदो भल्लकी वृक्षकण्टकस्तापसद्रुमः ।
इङ्गुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रिमीन् ।
हंत्युष्णः श्वित्रशूलघ्नस्तत्फलं कफवातजित् ॥ ४८ ॥

इंगुद, भल्लकी, वृक्षकंटक, तापसद्रुम ये नाम हिंगोटके हैं । हिंगोट-कुष्ठ, भूत आदि ग्रहदोष घाव, विष, कृमि इनको हरता है, गर्म है, श्वित्रकुष्ठ और शूलको नाशता है, हिंगोटका फल कफ और वातको नाशता है ॥ ४८ ॥

कटम्भरनामगुणाः ।

कटम्भरश्चारुशृङ्गी कटभी तृणशैण्डकः ।
कटम्भरः प्रमेहास्रनाडीव्रणविषक्रिमीन् ॥ ४९ ॥
हन्त्युष्णः कफकुष्ठघ्नस्तत्फलं कफशुक्रनुत् ।
निर्यासोऽस्य गुरुर्वृष्यो बलकृद्वातनाशनः ॥ ५० ॥

कटंभर, चारुशृंगी, कटभी, तृणशैण्डक ये नाम कटभीके हैं । कटभी–प्रमेह, रक्त, नाडीव्रण, विष, कृमि इनको नाश करता है और कफ तथा कुष्ठको हरता है । कटहाका फल कफ और वीर्यको दूर करता है, इसका सत भारी है, धातुको पुष्ट करता है, बलदायक है और वातको नाश करता है ॥ ४९ ॥ ५० ॥

मुष्कनामगुणाः ।

मुष्को मोक्षकको घुण्टी शिखरी क्षुद्रपाटला ।
मोक्षकः कफवातघ्नो ग्राही गुल्मविषक्रिमीन् ॥ ५१ ॥
हन्त्युष्णो बस्तिरुक्कण्डूस्तत्पुष्पं कफपित्तजित् ।
निर्यासोस्य परं वृष्यः शोषपित्तानिलापहः ॥ ५२ ॥

मुष्क, मोक्षकक, घुंटी, शिखरी, क्षुद्रपाटला ये नाम मोषाके हैं । मोषावृक्ष--कफ वातको नाशता है, मलको बांधता है और गुल्म, विष, कृमि इनको नष्ट करता है तथा गर्म है, मोषाका फूल बस्तिरोग, खाज, कफ, पित्त इनको जीतता है । मोषाका सत अत्यंत वीर्यवर्द्धक है और शोष, पित्त, वात इनको नाश करता है ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

पारिभद्रनामगुणाः ।

पारिभद्रो निम्बवृक्षो रक्तपुष्पः प्रभद्रकः ।
कण्टकी पारिजातः स्यान्मन्दारः कटिकिंशुकः ।
पारिभद्रः कृमिश्लेष्ममेदः श्लेष्मानिलापहः ॥ ५३ ॥

पारिभद्र, निम्बवृक्ष, रक्तपुष्प, प्रभद्रक, कंटकी, पारिजात, (पहाडीनीम) मन्दार, कटिकिंशुक ये फरहदके नाम हैं । पहाडीनींब कृमि, कफ, मेद, कफवात इनको नाश करता है । टकसालमें उसको पंडयारा कहते हैं ॥ ५३ ॥

शाल्मलीनामगुणाः।

शाल्मली तूलिनी मोचा कुक्कुटी रक्तपुष्पिका।
कण्टकाढ्या स्थूलफला पिच्छला चिरजीविनी ॥ ५४ ॥

शाल्मली, तूलिनी, मोचा, कुक्कुटी, रक्तपुष्पिका, कंटकाढ्या, स्थूलफला पिच्छला, चिरजीविनी ये नाम शीम्बलके हैं ॥ ५४ ॥

शाल्मली शीतला वृष्या बृंहणी रक्तपित्तजित्।
निर्यासोऽस्य परं वृष्यः शोफपित्तानिलास्रजित्।
रसायनवरा स्निग्धा तत्पुष्पं ग्राहि पित्तजित् ॥ ५५ ॥

शींबल (शंभल) शीतल है, धातुको पुष्ट करता है, वीर्यको बढाता है और रक्तपित्तको जीतता है। शींबलका गूंद (मोचरस) धातुको बहुत पुष्ट करता है। शोजा, पित्त, वातरक्त इनको जीतता है, रसायन है और चिकना है। शींबलका फूल मलको बांधता है और पित्तको जीतता है ॥ ५५ ॥

तुणिनामगुणाः।

तुणिः कुठेर आपीतस्तनुको नन्दिपादपः।
तुणिर्ग्राही हिमो वृष्यो व्रणकुष्टास्रपित्तहा ॥ ५६ ॥

तुणि, कुठेर, आपीत, तनुक, नंदिपादप ये नाम तुनि (तुन्ही) के हैं। तुण मलको बांधती है, शीतल है, धातुको पुष्ट करती है और घाव, कुष्ठ, रक्तपित्त इनको नाश करती है ॥ ५६ ॥

सप्तपर्णनामगुणाः।

सप्तपर्णो गुच्छपुष्पश्छत्री शाल्मलिपत्रकः।
सप्तपर्णो व्रणश्लेष्मवातकुष्टहरः सरः ॥ ५७ ॥

सप्तपर्ण, गुच्छपुष्प, छत्री, शाल्मलिपत्रक ये सातलाके नाम हैं। सातला-घाव, कफ, वात, कुष्ठ इनको हरता है और सर है। सातलाके शींबलकी समान आकारके मध्यम वृक्ष होते हैं ॥ ५७ ॥

हारिद्रकनामगुणाः।

हारिद्रकः पीतवर्णः श्रीमान् गैरद्रुमो वरः।
हारिद्रकः कफहरो व्रणशोधनरोपणः ॥ ५८ ॥

हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान्, गैरद्रुम, वर ये हरिद्रुके नाम हैं, हरिद्रु

कफको हरता है, तथा घावको शोधित और रोपित करता है, दारिद्रकके वृक्ष पहाडोंपर होते हैं ॥ ५८ ॥

करंजनामगुणाः ।

करञ्जो नक्तमालः स्यान्नक्ताह्वो घृतवर्णकः ।
पूतिकोऽन्यःपूतिवर्णः प्रकीर्णश्चिरबिल्वकः ॥ ५९ ॥

करंज, नक्तमाल, नक्ताह्व, घृतवर्णक, पूतिक, पूतिवर्ण, प्रकीर्ण, चिरबिल्वक ये करंजवृक्षके नाम हैं ॥ ५९ ॥

करञ्जः कटुकस्तीक्ष्णो वीर्योष्णो योनिदोषजित् ।
कुष्ठोदावर्त्तगुल्मार्शोव्रणक्रिमिकफापहः ॥ ६० ॥

करंज चर्परा है, तेज है, वीर्यमें गर्म है, योनिदोषको जीतता है और कुष्ठ, उदावर्त, गुल्म, बवासीर, घाव, कृमि, कफ इनको नष्ट करता है ॥ ६० ॥

तत्फलं कफवातघ्नं मेहार्शः क्रिमिकुष्ठजित् ।
तत्पत्रं कफवातार्शःकृमिशोथहरं परम् ॥ ६१ ॥

करंजका फल-कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, कृमि, कुष्ठ इनको जीतता है। करंजका पत्ता-कफ, वात, बवासीर, कृमि, शोजा इनको दूर करनेमें परमोत्तम है ॥ ६१ ॥

लताकरंजीनामगुणाः ।

करञ्जी काकतिक्ता च वयस्याऽङ्गारवल्लरी ।
करञ्जिकोष्णवातार्शःक्रिमिकुष्ठप्रमेहनुत् ॥ ६२ ॥

करंजी, काकतिक्ता, वयस्या, अंगारवल्लरी ये लताकरंजके नाम हैं। लताकरंज--उष्णता, वात, बवासीर, कृमि, कुष्ठ, प्रमेह इनको दूर करता है ॥ ६२ ॥

तिरिगिच्छिनामगुणाः ।

तिरिगिच्छिर्गजकण्टःकरञ्जी क्षीरिणी द्विपः ।
तिरिगिच्छिर्बलासार्शःक्रिमिकुष्ठप्रमेहहृत् ॥ ६३ ॥

तिरिगिच्छि, गजकण्ट, करंजी, क्षीरिणी, द्विप ये तिरिगिच्छीके नाम हैं । तिरिगिच्छी -कफ, बवासीर, कृमि, कुष्ठ, प्रमेह इनको हरती है; यह भी करंजकी ही जाति है ॥ ६३ ॥

शमीनामगुणाः ।

शमी तुङ्गा शंकुफला पवित्रा केशहृत्फला ।
लक्ष्मीः शिवान्याधिमती भूशमी शङ्कराह्वया ॥ ६४ ॥

शमी, तुंगा, शकुंफला, पवित्रा, केशहृत्फला, लक्ष्मी, शिवानी, आधिमती, भूशमी, शंकराह्वया ये नाम जांडीके हैं ॥ ६४ ॥

शमी शीता लघुः श्वासकुष्ठार्शःकफहृत्सरा ।
तत्फलं पित्तलं रूक्षं मेध्यं केशविनाशनम् ॥ ६५ ॥

जांडी शीतल और हलकी है, श्वास, कुष्ठ, बवासीर, कफ इनको हरती है, और सर है। जांडीका फल पित्तको उपजाता है, रूखा है, बुद्धिको बढाता है और बालोंको नष्ट करता है ॥ ६५ ॥

टिण्ठिणीनामगुणाः ।

शमीषिका टिण्ठिणिका दुर्बलाऽम्बुशिरीषिका ।
टिण्ठिणी कफकुष्ठार्शःसन्निपातविषापहा ॥ ६६ ॥

शमीषिका (झिंझिणी) टिण्ठिणिका, दुर्बला, अंबुशिरीषिका ये कींगणके नाम हैं। कींगण--कफ, कुष्ठ, बवासीर, सन्निपात, विष इनको नाश करती है ॥ ६६ ॥

अरिष्टकनामगुणाः ।

अरिष्टको गर्भपाती कुम्भवीर्यश्च फेनिलः ।
कृष्णबीजो रक्तबीजःपीतफेनोऽर्थसाधनः ।
अरिष्टकस्त्रिदोषघ्न उष्णो गर्भग्रहापहः ॥ ६७ ॥

अरिष्टक, गर्भपाती, कुंभवीर्य, फेनिल, कृष्णबीज, रक्तबीज, पीतफेन, अर्थसाधन ये रीठेके नाम हैं। रीठा--त्रिदोषको नाशता है, गर्म है, गर्भ और ग्रहदोषको दूर करता है ॥ ६७ ॥

शिंशपानामगुणाः ।

शिंशपा कपिला कृष्ण सारमण्डलपत्रिका ।
अन्या कुशिंशपा भस्मपिङ्गला स्याद्वसादनी ॥ ६८ ॥

शिंशपा, कपिला, कृष्णा, सारमण्डलपत्रिका, कुशिंशपा, भस्मपिंगला, वसादनी ये शीसमके नाम हैं ॥ ६८ ॥

शिंशपोष्णा हरेन्मेदान् कुष्ठश्वित्रवमिक्रिमीन् ।
बस्तिरुग्व्रणदाहास्रगर्भगूढनिपातिनी ॥ ६९ ॥

शिंशपा गर्म है और प्रमेह, कुष्ठ, श्वित्रकुष्ठ, छर्दि, कृमि, बस्तिरोग, घाव, दाह, रक्तविकार इनको नाशती है और गर्भको गिराती है ॥ ६९ ॥

अगस्त्यनामगुणाः ।

अगस्त्यो वङ्गसेनाह्वो मधुशिग्रुर्मुनिद्रुमः ।
अगस्त्यः पित्तकफजिन्निदाघशमनो हिमः ।
तत्पुष्पं पीनसश्लेष्मपित्तनक्तान्ध्यनाशनम् ॥ ७० ॥

अगस्त्य, वंगसेनाह्व, मधुशिग्रु, मुनिद्रुम ये अगस्तके नाम हैं । अगस्तवृक्ष-पित्त, कफ, गर्म इनको जीतता है और शीतल है । अगस्तका फूल-पीनस, कफ, पित्त, रतौंधी इनको नाश करता है । इसके वृक्ष बगीचोंमें अधिक होते हैं, जब अगस्तिका उदय होता है यह उसी समय खिलता है ॥ ७० ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्ण
श्चित्रोऽयं ललितपदैर्वटादिवर्गः ॥ ७१ ॥

इति मदनपालनिघण्टौ वटादिवर्गः पञ्चमः ॥ ५ ॥

राजाओंमें अत्यंत मुख्य माना हुआ जो कटारमल्ल मदन राजा इसके रचेहुए इस मदनविनोद नामक ग्रन्थमें ललितपदोंसे वटादिवर्ग पूर्ण हुआ ॥ ७१ ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ आयुर्वेदोद्धारकवैद्यरत्नपं०-रामप्रसादविरचित-
भाषातत्त्वप्रकाशिनीभाषाटीकायां वटादिवर्गः पञ्चमः ॥ ५ ॥

भ्रमोच्छलद्दर्द्दरिकाग्रपृष्ठं मन्दस्मितं वेणुनिनादरक्तम् ।
गोपालिकानां करतालिकाभिर्नृत्यन्महस्तत्परमं स्मरामि ॥ १ ॥

इधर उधर भ्रमण करनेसे उछलता है अग्रभाग और पृष्ठभाग जिसका मन्द मुसकान सहित बांसुरीके बजानेसे आरही है लालिमा मुखपर जिसके और गोपियों के हाथकी तालिकाओंसे नाचते हुए उस परमात्माको स्मरण करता हूँ ॥ १ ॥

द्राक्षानामगुणाः ।

द्राक्षा मधुफला स्वाद्वी हारहूरा फलोत्तमा ।
मृद्वीका मधुयोनिश्च रसाला गोस्तनी गुडा ॥ २ ॥

द्राक्षा, मधुफला, स्वाद्वी, हारहूरा, फलोत्तमा, मृद्वीका, मधुयोनि, रसाला, गोदस्तनी, गुडा ये मुनक्काके नाम हैं ॥ २ ॥

द्राक्षा पक्का सरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरुः ।
हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवान्तिवातास्रकामलाः ॥ ३ ॥

पकीहुई दाख सर (सारक) है, शीतल है, आँखोंको हितकारी है, धातुको पुष्ट करती है, भारी है और तृषा, ज्वर, छर्दि, वातरक्त, कामला इनको नाश करती है ॥ ३ ॥

कृच्छ्रास्रपित्तसम्मोहदाहशोषमदात्ययान् ।
आमा साऽल्पगुणा गुर्वी सैवाम्ला रक्तपित्तकृत् ॥ ४ ॥

और मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष, मदात्यय इनको नाश करती है। कच्ची दाख-अल्पगुण करती है और भारी है तथा खट्टी दाख रक्तपित्तको करती है ॥ ४ ॥

निर्वीर्याऽन्या लघुद्राक्षा गोस्तनीसदृशा गुणैः ।
द्राक्षा पर्वतजा लघ्वी साम्ला श्लेष्माम्लपित्तनुत् ॥ ५ ॥

छोटी दाख वीर्यसे रहित होती है, गौके थनके समान दाख गुणोंमें मुनक्काके समान होती है, पहाडमें उपजी दाख हलकी है और खट्टी होती है तथा कफ और अम्लपित्तको जीतती है ॥ ५ ॥

पक्वापक्वशुष्काम्लाम्रनामगुणाः ।

आम्रश्चूतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ।
माकन्दः पिकबन्धुः स्याद्रसालः कामवल्लभः ॥ ६ ॥

आम्र चूत, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, माकन्द, पिकबन्धु, रसाल, कामवल्लभ ये पके आमके नाम हैं ॥ ६ ॥

आम्रो ग्राही प्रमेहास्रकफपित्तव्रणाञ्जयेत् ।
तत्फलं बालमत्यम्लं रूक्षं दोषत्रयास्रजित् ॥ ७ ॥

आम्र मलको बांधता है और प्रमेह, रक्त, कफ, पित्त घाव इनको जीतता है। आमका कच्चा फल अत्यन्त खट्टा और रूखा है तथा त्रिदोष और रक्तको जीतता है ॥ ७ ॥

पक्वं तु मधुरं वृष्यं स्निग्धं हृद्यं बलप्रदम् ।
गुरु वातहरं रुच्यं वर्ण्यं शीतमपित्तलम् ।
रसस्तस्य सरः स्निग्धो रोचनो बलवर्णकृत् ॥ ८ ॥

पकाहुआ आम मीठा है, वीर्यको बढाता है, चिकना है, दिलको ताकत देता है, बल देता है, भारी है, वातको हरता है, रुचिको उपजाता है, रूपको निखारता है, शीतल है और पित्तको नहीं करता है। उसका रस सर है, चिकना है रुचिको उपजाता है, बल और वर्णको करता है ॥ ८॥

सहकारं च वातघ्नं पित्तश्लेष्मविनाशनम् ।
कषायं मधुरं वृष्यं गुरु स्निग्धं विशेषतः ॥ ९॥

आम-वातको नाशता है, पित्त- कफको हरता है, कषैला है, मीठा है, वीर्यवर्द्धक है, भारी है और विशेषतासे स्निग्ध है ॥ ९ ॥

पक्वाम्रं जनयेदायुर्मांसशुक्रबलप्रदम् ।
शुष्काम्रं तु कषायाम्लं भेदनं कफवातजित् ॥ १० ॥

पकाहुआ आम-आयुका बढाता है, मांस, वीर्य, बल इनकी वृद्धि करता है, सूखा आम कषैला है, खट्टा है, कफ और वातको जीतता है ॥ १० ॥

जम्बूनामगुणाः ।

महाजम्बू राजजम्बूर्महास्कन्धा बृहत्फला ।
क्षुद्रजम्बूर्वीरपत्रा मेघाभा कामवल्लभा ॥ ११ ॥
नादेयी स्यात्क्षुद्रफला तत्फलं जम्बु जाम्बवम् ।
जम्बूः संग्राहिणी रूक्षा कफपित्तव्रणास्रजित् ॥ १२ ॥

महाजम्बू, राजजम्बू, महास्कन्धा, बृहत्फला, क्षुद्रजम्बू, वीरपत्रा, मेघाभा, कामवल्लभा, नादेयी, क्षुद्रफला, ये जामुनके नाम हैं। जामुनका फल जम्बु, जांबव, जामुन इन नामोंसे प्रसिद्ध है। जामुन मलको बांधती है, रूखी है और कफ, पित्त, घाव, रक्त, इनको जीतती है ॥ ११ ॥ १२ ॥

राजजम्बूफलं स्वादु विष्टम्भि गुरु रोचनम् ।
क्षुद्रजम्बूफलं तद्वद्विशेषाद्दाहनाशनम् ॥ १३ ॥

राजजामुनका फल स्वादु है, विष्टंभ करता है, भारी है और रुचिको उपजाता है। छोटी जामुनका फलभी ऐसा ही है, विशेषकर दाहको नाश करनेवाला है॥ १३॥

नारिकेलनामगुणाः ।

नारिकेलो दृढफलो महावृक्षो महाफलः ।
तृणराजस्तृणफलस्तृणाह्वो दृढबीजकः ॥ १४ ॥

नारिकेल, दृढफल, महावृक्ष, महाफल, तृणराज, तृणफल, तृणाह्व, दृढबीजक ये नारियलके नाम हैं ॥ १४ ॥

नारिकेलफलं शीतं दुर्जरं बस्तिशोधनम् ।
विष्टम्भि बृंहणं वृष्यं वातपित्तास्रदाहजित् ॥१५॥

नारियलका फल शीतल है, देरमें जरता है, बस्तिको शोधता है, विष्टंभी है, धातुको पुष्ट करता है, वीर्यको बढाता है और वात, पित्त, रक्त, दाह इनको जीतता है ॥ १५ ॥

तस्याम्भः शीतलं हृद्यं दीपनं शुक्रलंलघु ।
तत्पादपशिरोमज्जा शुक्रला वातपित्तजित् ॥१६ ॥

नारियलका रस शीतल है, दिलको ताकत देता है, अग्निको जगाता है, वीर्यको यबढाता है और हलका है । नारियलवृक्षके शिरकी मज्जा वीर्यको पैदा करती और वात पित्तको जीतती है ॥ १६ ॥

खर्जूरिकानामगुणाः ।

श्रेणी खर्जूरिकावृक्षः श्रीफला द्वीपलम्भवा ।
पिण्डखर्जूरिका खर्जूर्दुष्प्रधर्षा सुकण्टका ॥ १७ ॥
अन्या स्कन्धफला स्वाद्वी दुरारोहा मृदुच्छदा ।
भूमिखर्जूरिका काककर्कटी कासुकर्कटी ॥ १८ ॥

श्रेणी, खर्जूरिकावृक्ष, श्रीफला, द्वीपसंभवा, पिंडखर्जूरिका, खर्जू, दुष्प्रधर्षा, सुकंटका, स्कंधफला, स्वाद्वी, दुरारोहा, मृदुच्छदा, भूमिखर्जूरिका, काककर्कटी, कासुकर्कटी ये छुहारा और खर्जूरके नाम हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥

खर्जूरिकाफलं शीतं स्वादु स्निग्धं क्षतास्रजित् ।
बल्यं हन्ति मरुत्पित्तमदमूर्च्छामदात्ययान् ॥ १९ ॥

खजूरका फल शीतल है, स्वादु है, चिकना है, घाव और रक्तविकारको जीतता है, बलमें हित है और वात, पित्त, मद, मूर्च्छा, मदात्यय इनको नाश करता है ॥ १९ ॥

तस्मादल्पगुणं ज्ञेयमन्यत्खर्जूरिकाफलम् ।
तन्मज्जा मूर्द्धजुः शीतो वृष्यः पित्तास्रदाहजित् ॥ २० ॥

छुहारामें इससे अल्प गुण हैं, छुहाराकी गिरी मस्तकरोगको जीतती है, शीतल है, धातुको पुष्ट करती है, पित्त, रक्तविकार और दाहको जीतनेवाली है ॥ २० ॥

शिलेमानीखर्जूरनामगुणाः ।

शिलेमानी लोकपरा मृदुला तिवरीफला ।
शिलेमानी श्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छास्रपित्तनुत् ॥ २१ ॥

शिलेमानी, लोकपरा, मृदुला, तिवरीफला ये खजूर सुलेमानीके नाम हैं । सुलेमानीखजूर परिश्रम, भ्रम, दाह, मूर्च्छा रक्तपित्त इनको दूर करती है ॥ २१ ॥

कदलीनामगुणाः ।

कदली ग्रन्थिनी मोचा रम्भा वीराऽऽयतच्छदा ।
वारणा वारणबुसाऽम्बुसारांशुमती फला ॥ २२ ॥

कदली, ग्रंथिनी, मोचा, रंभा, वीरा, आयतच्छदा, वारणा, वारणबुसा, अम्बुसारा, अंशुमती, फला ये केलाके नाम हैं ॥ २२ ॥

कदली योनिदोषाश्मरक्तपित्तहरा हिमा ।
तत्कन्दः शीतलो बल्यः केश्यः पित्तकफास्रजित् ॥ २३ ॥

केला-योनिदोष, पथरी, रक्तपित्त इनको हरती है और शीतल है । केलेका कंद-शीतल है, बलको करता है, बालोंको बढाता है तथा पित्त, कफ, रक्तविकार इनको जीतनेवाला है ॥ २३ ॥

तत्फलं मधुरं शीतं विष्टम्भि कफकृद्गुरु ।
स्निग्धं पित्तास्रतृड्दाहक्षतक्षयसमीरजित् ॥ २४ ॥

केलेका फल मीठा और शीतल है; विष्टंभ करता और कफ करता है, भारी और चिकना है, पित्तरक्त, तृषा, दाह, क्षत, क्षय, वात इनको जीतता है ॥ २४ ॥

दाडिमीनामगुणाः ।

दाडिमी रक्तकुसुमा दन्तबीजा शुकप्रिया ।
दाडिमं दीपनं हृद्यं रोचनं नातिपित्तलम् ॥ २५ ॥

दाडिमी, रक्तकुसुमा, दंतबीजा, शुकप्रिया ये अनारके नाम हैं। अनार-अग्निको जगाता है, दिलको ताकत देता है, रुचिको उपजाता है और अत्यंत पित्तको नहीं करता है ॥ २५ ॥

कषायानुरसं ग्राहि द्विविधा ह्यम्लवेतवत् ।
तयोः स्वादु त्रिदोषघ्नमम्लं वातबलास्रजित् ।
शुष्काम्लदाडिमीसारः फुट्टितं कफवातहृत् ॥ २६ ॥

अनार, खट्टा, मीठा, कषायानुरस, (पीछेसे किंचित्कषाय प्रतीत होनेवाला है) मलको बांधता है और अम्लवेतसकी तरह दो प्रकारका है। उन दोनोंमें स्वादिष्ट अनार त्रिदोषको नाशता है, खट्टा अनार वात, बल, रक्त इनको जीतता है। सूखे हुए खट्टे अनारमेंभी ये ही गुण हैं, अनारका रस कफ और वातको हरता है ॥ २६ ॥

कतकनामगुणाः ।

कतकस्य फलं नेत्र्यं जलनिर्मलकारकम् ।
वातश्लेष्महरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ २७ ॥

कतकफल अर्थात् निर्मलीका फल आंखोंमें हित है, पानीको निर्मल करता है, वात और कफको हरता है, शीतल है, मीठा है, कषैला और भारी है ॥ २७ ॥

बदरीनामगुणाः ।

बदरी कर्कटी मोघा कोररण्टी युग्मकण्टका ।
अन्या स्निग्धच्छदा क्रोशफला सौवीरिकाऽपरा ॥ २८ ॥

बदरी, कर्कटी, मोघा, कोरंटी, युग्मकंटका, दूसरे प्रकारकी बेरी स्निग्धच्छदा, क्रोशफला, और तीसरे प्रकारकी सौवीरिका कही जाती है ॥ २८ ॥

हस्तिकोलिः परा त्वन्या लघ्वी कर्कन्धुकीधुके ।
बदरी शीतला तिक्ता रूक्षा पित्तकफापहा
बदरं त्वपरं लोके फेनिलं कुवलं कुहम् ॥ २९ ॥

कर्कन्धु ह्रस्वबदरं वरटं कन्धु कन्धुकम् ।
पक्वं ताम्रं च मधुरं मतं सौवीरकं महत् ॥ ३० ॥

तथा चौथी-हस्तिकोलि; छोटी बडबेरी कर्कन्धु, कीधुका इन नामोंवाली है। बडबेरी-शीतल है, कडुँवी है, रूखी है, पित्त और कफको नाश करती है। लोकमें छोटा बेर फेनिल, कुवल, कुह, कर्कन्धु, ह्रस्वबदर, वरट, कन्धु नामसे प्रसिद्ध है। कंधुक और पकेहुए गूदेवाला बेर मीठा माना है, और सौवीरक बडा बेर होता है॥ २९॥ ३०॥

बदरं लघु संग्राहि रुच्यमुष्णं समीरजित्।
कफपित्तकरं तद्वत्कोलं गुरु सरं स्मृतम् ॥ ३१॥

बेर हलका है, मलको बांधता है, रुचिको उपजाता है, गर्म है, वातको जीतता है, कफ-पित्तको करता है। कोल नामक बेर भारी तथा दस्तावर है॥ ३१॥

सौवीरं बदरं शीतं भेदनं गुरु शुक्रलम्।
बृंहणं पित्तदाहास्रक्षततृष्णानिलापहम्।
शुष्कं भेद्यग्निकृत्सर्वं लघु तृष्णाक्लमास्रजित्॥ ३२॥

प्योंदीबेर शीतल है, भेदन है, भारी है, वीर्यको उपजाता है, धातुको पुष्ट करता है और पित्त, दाह, रक्त, क्षत, तृषा, वात इनको हरता है। सूखा बेर भेदन करता है, अग्निवर्द्धक है, हलका है और तृषा, ग्लानि रक्त इनको जीतता है॥ ३२॥

कर्कन्धु मधुरं स्निग्धं गुरु पित्तानिलापहम्।
मरुत्पित्तहरा मज्जा वृष्या वीर्यबलप्रदा॥ ३३॥

छोटी बेरीका बेर मीठा है, चिकना है, भारी है, पित्त और वातको नाश करता है, बेरकी गिरी-वातपित्तको हरती है, धातुको पुष्ट करती है, वीर्य और बलको देनेवाली है॥ ३३॥

क्षीरीनामगुणाः।

क्षीरी क्षत्रियराजाह्वा राजादनफलाशिनौ।
राजन्यः स्तम्भनोऽन्योऽश्वचिबुको मुचिलिण्टकः॥ ३४॥

क्षीरी, क्षत्रिया, राजाह्वा, राजादन, फलाशी, राजन्य, स्तंभन, अश्वचिबुक, मुचिलिंटक ये खिरनीके नाम हैं॥ ३४॥

क्षीरवृक्षफलं शीतं स्निग्धं गुरु बलप्रदम्।
तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित्॥ ३५॥

खिरनीका फल-शीतल, चिकना, भारी, बलदायक और तृषा, मूर्च्छा, मद, भ्रम, क्षय, त्रिदोष, रक्त इनको जीतनेवाला है ॥ ३५ ॥

चारनामगुणाः ।

चारो धनुः पटः शालः प्रियालो मुनिवल्लभः ।
चारः पित्तकफास्रघ्नस्तत्फलं मधुरं गुरु ॥ ३६ ॥

चार, धनुःपट, शाल, प्रियाल, मुनिवल्लभ ये चिरोंजीके नाम हैं । चिरोंजी पित्त, कफ, रक्त इनको नाश करती है । चिरोंजीका फल मीठा और भारी है ॥ ३६ ॥

स्निग्धं सरं मरुत्पित्तदाहतृष्णाक्षतापहम् ।
तन्मज्जा मधुरा वृष्या शुक्रला पित्तवातजित् ॥ ३७ ॥

तथा चिकना है, सर है और वात, पित्त, दाह, तृषा, क्षत इनको नाशता है। चिरोंजीकी गिरी मीठी है, धातुको पुष्ट करती है, वीर्यको उत्पन्न करती है, पित्त और वातको जीतती है ॥ ३७ ॥

परूषकनामगुणाः ।

परूषको मृदुफलः परूषो रोषणः परः ।
परूषकं कषायाम्लमामपित्तकरं लघु ॥ ३८ ॥

परूषक, मृदुफल, परूष, रोषण, पर ये फालसाके नाम हैं । फालसा-कषैला है, खट्टा है, आम और पित्तको करता है तथा हलका है ॥ ३८ ॥

पक्वं तु मधुरं पाके शीतं विष्टम्भि बृंहणम् ।
हृद्यं तृट्पित्तदाहास्रक्षतक्षयसमीरनुत् ॥ ३९ ॥

पकाहुआ फालसा पाकमें मीठा है, शीतल है, विष्टंभी है, धातुको पुष्ट करता है, दिलको ताकत देता है और तृषा, पित्त, दाह, रक्त, क्षत, क्षय, वात इनको नष्ट करता है ॥ ३९ ॥

तिंदुकनामगुणाः ।

तिन्दुकः स्पन्दनः स्फूर्ज्यः कालसारश्च रावणः ।
काकपीलुः कुपीलुः स्यादपरो विषतिन्दुकः ॥ ४० ॥

तिंदुक, स्पंदन, स्फूर्ज्य, कालसार, रावण, काकपीलु, कुपीलु ये तेन्दुके नाम हैं। दूसरा-विषतिंदुकनामवाला होता है, इसीको तेन्दु भी कहते हैं ॥ ४० ॥

तिन्दुको व्रणवातघ्नस्तत्सारः पित्तरोगजित् ।
आममस्य फलं ग्राहि वातलं शीतलं लघु ॥ ४१ ॥

तेन्दु घाव और वातको नाश करता है। इसका सार पित्तरोगको जीतता है। तेन्दुका कच्चा फल ग्राही है, वातको करता है, शीतल और हलका है ॥ ४१ ॥

पक्वं पित्तप्रमेहास्रश्लेष्मघ्नं विशदं गुरु ।
विषतिन्दुकमप्येवं विशेषाद् ग्राहि शीतलम् ॥ ४२ ॥

पकाहुआ फल पित्त, प्रमेह, रक्त, कफ इनको नाशता है और भारी है। विषतेन्दुमें येही गुण हैं, विशेषकर मलको बांधता है और शीतल है। विषतिन्दुक कुचलेको कहते हैं, इसको शोधन कर अल्पमात्रामें प्रयोग करते हैं ये तीक्ष्ण विष मारक होता है ॥ ४२ ॥

किंकिणीनामगुणाः ।

किंकिणीलो व्याघ्रपादो देवदारुश्चरः क्वचित् ।
किंकिणी तुवरा तिक्ता पित्तश्लेष्महरा हिमा ।
तत्फलं वातलं त्वामं पक्वं स्वादु त्रिदोषजित् ॥ ४३ ॥

किंकिणील, व्याघ्रपाद, देवदारु चर ये नाम कांकईके हैं। कांकई कषैली है, कडुवी है, पित्त और कफको हरती है तथा शीतल है। कांकईका कच्चा फल वातको करता है, पका फल स्वादु है और त्रिदोषको जीतता है ॥ ४३ ॥

आरुकनामगुणाः ।

आरुकं वीरसेनं तज्जातिभेदाच्चतुर्विधम् ।
आरुकं जारकं वातमेहार्शःकफनाशनम् ॥ ४४ ॥

आरुक, वीरसेन ये आडूके नाम हैं, वह आडू जातिके भेदसे चारप्रकारका है। आडू-वात, प्रमेह, बवासीर, कफ इनको नाशकरता है ॥ ४४ ॥

मधूकनामगुणाः ।

मधूको मधुकस्तीक्ष्णः सारश्च गुडपुष्पकः ।
गोलाफलो मधुकोष्ठो मधुकोष्ठी मधुद्रुमः ॥ ४५ ॥

मधूक, मधुक, तीक्ष्ण, सार, गुडपुष्पक, गोलाफल, मधुकोष्ठ, मधुकोष्ठी, मधुद्रुम ये महुआके नाम हैं ॥ ४५ ॥

मधुकोन्यो ह्रस्वफलो मधुरो दीर्घपुष्पकः ।
मधुकः कफवातघ्नः कषायो व्रणरोपणः ॥ ४६ ॥

दूसरा महुआ ह्रस्वफल, मधुर, दीर्घपुष्पक इन तीन नामोंवाला है । महुआ कफ वातको नाश करता है, कषैला है और घावको रोपण करता है ।

तत्पुष्पं मधुरं बल्यं शीतलं गुरु बृंहणम् ।
फलं शीतं गुरु स्वादु शुक्रलं वातपित्तजित् ।
अहृद्यं हंति तृष्णास्रदाहश्वासक्षतक्षयान् ॥ ४७ ॥

महुवेका फूल मीठा है, बलवर्द्धक है, शीतल है, भारी है और धातुको पुष्ट करता है। महुवेका फल-शीतल है, भारी है, स्वादु है, वीर्यको करता है, वातपित्तको जीतता है, हृदयको अप्रिय है और तृषा, रक्तविकार, दाह, श्वास, क्षत, क्षय इनको हरता है ॥ ४७ ॥

पनसनामगुणाः ।

पनसः कण्टकिफलः श्वासहा गर्भकण्टकः ।
पनसं शीतलं पक्वं स्निग्धं पित्तानिलापहम् ॥ ४८ ॥

पनस, कंटकिफल, श्वासहा, गर्भकंटक ये कटहलके नाम हैं । कटहल (कटहर) शीतल है, चिकना है, पित्तवातको हरण करता है ॥ ४८ ॥

बल्यं शुक्रप्रदं हन्ति रक्तपित्तक्षतक्षयान् ।
आमं तदेव विष्टम्भि वातलं तुवरं लघु ॥ ४९ ॥

कटहल-बल देता है, वीर्यको देता है और रक्तपित्त, क्षत, क्षय इनको नाश करता है, कच्चा कटहर विष्टंभ करता है, वातको उपजाता है, कषैला और हलका है ॥ ४९ ॥

लकुचनामगुणाः ।

लकुचः क्षुद्रपनसो निकुचो ग्रंथिमत्फलः ।
लकुचं गुरु विष्टंभि स्वाद्वम्लं रक्तपित्तकृत् ।
श्लेष्मकारि समीरघ्नमुष्णं शुक्राग्निनाशनम् ॥ ५० ॥

लकुच, क्षुद्रपनस, निकुच, ग्रन्थिमत्फल ये बडहलके नाम हैं । बडहल-भारी है, विष्टंभ करता है, स्वादु है, खट्टा है, रक्तपित्त और कफको करता है, वातको हरता है, गर्म है, वीर्य और अग्निको नाशकरता है ॥ ५० ॥

तालनामगुणाः।

तालो ध्वजो दुरारोहस्तृणराजो महाद्रुमः।
तालः शीतो मरुत्पित्तव्रणजिन्मदशुक्रकृत् ॥ ९१ ॥

ताल, ध्वज, दुरारोह, तृणराज, महाद्रुम ये ताडके नाम हैं। ताड–शीतल है और वात, पित्त, घाव इनको जीतता है तथा मद और वीर्यको बढाता है ॥९१॥

तत्फलं शीतलं बल्यं स्निग्धं स्वादुरसं गुरु।
विष्टम्भि वातपित्तास्रक्षतदाहक्षतापहम्।
बीजं मूत्रकरं वृष्यं वातपित्तहरं हिमम् ॥ ९२ ॥

ताडका फल शीतल है, बलको करता है, चिकना है, स्वादु रसवाला है, भारी है और विष्टंभी है तथा वात, पित्त, रक्तक्षत, दाह, क्षत, इनको नाश करता है। ताडका बीज मूत्रको पैदा करता है, धातुको पुष्ट करता है, वातपित्तको हरता है और शीतल है ॥ ९२ ॥

खर्बूजनामगुणाः।

खर्बूजं फलराजः स्यादमृताह्वं दशाङ्गुलम् ॥ ९३ ॥

खर्बूज, (खर्बूजा) फलराज, अमृताह्व, दशांगुल यह खर्बूजेके नाम हैं ॥ ९३ ॥

खर्बूजं मूत्रलं बल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु।
स्निग्धं स्वादुकरं शीतं वृष्यं पित्तानिलापहम् ॥ ९४ ॥

खर्बूजा मूत्र उत्पन्न करता है, बलदायक है, कोठेको शुद्ध करता है, भारी है, चिकना है, स्वादु है, शीतल है, वीर्य पुष्ट करता है और पित्तवातको हरता है॥९४॥

तेषु यच्चाम्लमधुरं सक्षारं च रसाद्भवेत्।
रक्तपित्तकरं तत्तु मूत्रकृच्छ्रकरं परम् ॥ ९५ ॥

सब तरहके खर्बूजोंमें जो खट्टा मीठा है और जो रससे खारा होता है वह खर्बूजा रक्तपित्तको और मूत्रकृच्छ्रको पैदा करनेवाला होता है ॥ ९६ ॥

सेवनामगुणाः।

मुष्टिप्रमाणं बदरं सेवं सीवफलं तथा।
फलं च सितिकापूर्वं वातपित्तहरं गुरु ॥ ९६ ॥

मुष्टिप्रमाण, बदर, सेव, सीवफल, सितिकाफल ये सेवके नाम हैं सेव वातपित्तको हरता है, भारी है ॥ ५६ ॥

हिमं स्यन्दनकं स्निग्धं मूत्रलं स्वादु शीतलम् ।
त्वग्दाहयन्तर्दाहं च हृत्कम्पान् पित्तसम्भवान् ॥ ५७ ॥
हरेत्तत्सञ्चितमलं ज्वरघ्नं तु विषापहम् ।
बृंहणं कफकृद् वृष्यं स्वादुपाकरसं हिमम् ॥ ५८ ॥

सेवं शीतल है, स्यंदन है, चिकना है, मूत्रको करता है, स्वादु है और त्वचामें दाह, भीतर दाह, पित्तसे उपजे हृत्कंप, संचित मल, ज्वर, विष इनको नाश करता है, धातुको पुष्ट करता है, कफकारक है, वीर्यवर्द्धक है, स्वादु है तथा पाकमें और रसमें शीतल है ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

अमृतफलनासपातीनामगुणाः ।

अन्यदम्भःफलं भिन्नं महत्सिञ्चितिकाफलम् ।
अमृतं गुरु वातघ्नं स्वाद्वम्लं रुचिशुक्रकृत् ।
अपरं सेवगुणकृद्विशेषात्तुवरं हिमम् ॥ ५९ ॥

दूसरा अंभःफल, महसिंचितिकाफल यह नाम (काश्मीरकी नासापाती) के हैं। यह सेवके समान गुण करती है, विशेषकर कषैली और और शीतल है ॥ ५९ ॥

अमृताह्वं रुचिफलं लघुबिल्वं फलाकृति ।
अमृतं गुरु वातघ्नं स्वाद्वम्लं रुचिशुक्रकृत् ॥ ६० ॥

अमृताह्व, रुचिफल, लघुबिल्व, फलाकृति ये अमृतफल (नासपाती) के नाम हैं। अमृतफल गर्म है, वातको नाशता है, स्वादु है, खट्टा है, रुचि और वीर्यको करता है ॥ ६० ॥

पेरुक (अमरूद) नामगुणाः ।

पेरुकं तुवरं प्रोक्तं स्वाद्वम्लं कफकारकम् ।
शुक्रलं वातपित्तघ्नं शीतलं च रसं मतम् ॥ ६१ ॥

अमरूद (पेरुक) कषैला, मीठा, खट्टा, कफकारक, वीर्यवर्द्धक, वात पित्त नाशक और शीतल है ॥ ६१ ॥

बादामनामगुणाः ।

बादामं सुफलं वातवैरि नेत्रोपमं मतम् ।
बादाममुष्णं सुस्निग्धं वातघ्नं बलशुक्रकृत् ॥ ६२ ॥

बादाम, वाताद, सुफल, वातवैरि, नेत्रोपम ये बादामके नाम हैं । बादाम गर्म है, बहुत चिकना है, वातको नाशता है, बल और वीर्यको बढाता है ॥ ६२ ॥

पिस्तनामगुणाः ।

निकोचकं चारुफलमङ्कोटं गलकोजकम् । (चिलगोजा)
पिस्तं मुकुलकं ज्ञेयं दन्तीफलसमाकृति ॥ ६३ ॥

निकोचन, चारुफल, अंकोट, गलकोजक, पिस्त (पिस्ता), मुकुलक, दन्तीफलसमाकृति ये पिस्ताके नाम हैं ॥ ६३ ॥

निकोचकं गुरु स्निग्धं वृष्योष्णं स्वादु बृंहणम् ।
रक्तप्रसादनं बल्यं वातघ्नं कफपित्तकृत् ।
तद्वन्मुकुलकं ज्ञेयं विशेषाद्गुरु दुर्जरम् ॥ ६४ ॥

पिस्ता—भारी है, चिकना है, स्त्रीसंगमें गुण देता है, गर्म है, स्वादु है, धातुको पुष्ट करता है, रक्तको बदलता है, बलको करता है, वातको नाशता है तथा कफ और पित्तको करता है। चिलगोजामेंभी यही गुण हैं । विशेषकर देरमें जरता है और भारी है ॥ ६४ ॥

एलाफलगुणाः ।

एलानामामवातघ्नमम्लोष्णं गुरु रेचनम् ।
पक्कं स्वादु हिमं बल्यं वातपित्तविनाशनम् ॥ ६५ ॥

एलाफला अर्थात् (लीची) अलीची आमवातको नाशती है, खट्टी है, गर्म है, भारी है, दस्तावर है पकी हुई अलीची स्वादु है, शीतल है, बलको करती है और वातपित्तको नाशती है ॥ ६५ ॥

आलूबुखारानामगुणाः ।

आल्लूकमल्लूर्भल्लूकं भल्लू रक्तफलं तथा ।
आलूकं रसतः शीतं स्वाद्वम्लं वातपित्तकृत् । ६६ ॥

आल्लूक, अल्लू, भल्लूक, भल्लू, रक्तफल (अलूचा ये आलूबुखारेके नाम हैं । आलूबुखारा रसमें शीतल है, स्वादु है, खट्टा है, वात और पित्तको करनेवाला है ॥ ६६ ॥

अञ्जीरनामगुणाः ।

अञ्जीरं मञ्जलं ज्ञेयं काकोदुम्बरिकाफलम् ।

अञ्जीरं शीतलं स्वादु गुरु पित्तास्रवातजित् ।
तस्मादन्यगुणं ज्ञेयमञ्जीरं लघु वा गुणैः ॥ ६७ ॥

अञ्जीर, मज्जल, काकोदुम्बरिकाफल ये अञ्जीरके नाम हैं। अञ्जीर शीतल है, स्वादु है, भारी है, पित्तरक्त और वातको जीतता है। छोटा अञ्जीर (कँवरी) इससे भिन्न गुणवाला है, अर्थात् दस्तावर है, पित्तकारक है ॥ ६७ ॥

आक्षोटनामगुणाः ।

आक्षोटो वैधृतफलं कन्दलाभः पृथुच्छदः ।
आक्षोटं मधुरं बल्यं गुरूष्णं वातहृत्सरम् ॥ ६८ ॥

आक्षोट (क); वैधृतफल, कंदलाभ, पृथुच्छद ये अखरोटके नाम हैं। अखरोट मीठा है, बलको करता है भारी है, गर्म है, वातको हरता है और सर है ॥ ६८ ॥

पालेवत (पालो) नामगुणाः ।

पालेवतं सितं पुष्पैस्तिन्दुकं च फलं स्मृतम् ।
अन्यन्मानवकं ज्ञेयं महापालेवतं तथा ॥ ६९ ॥

पालेवत, सितपुष्प, तिन्दुकफल ये पालेवतके नाम हैं। दूसरा मानवक यह नाम महापालेवतका है ॥ ६९ ॥

पालेवतं हिमं स्वादु गुरूष्णं वह्निवातजित् ।
तद्वन्मानवकं हृद्यं तृष्णाघ्नं मिष्टमम्लकम् ॥ ७० ॥

पालेवत शीतल है, स्वादु है, भारी है, गर्म है, अग्नि और वातको जीतता है। वैसेही महापालेवत दिलको ताकत देता है, तृषाको नाशता है, रुचिकारक और खट्टा है। यह छोटे सेवके समान होता है, शिमलेके पहाडमें इसको पालो कहते हैं ॥ ७० ॥

तूतनामगुणाः ।

तूतं तूदं ब्रह्मकोषं ब्राह्मण्यं ब्रह्मदारु च ।
तूतं गुरु हिमं पक्वं स्वादु पित्तानिलापहम् ॥ ७१ ॥

तूत, तूद, ब्रह्मकोष, ब्राह्मण्य, ब्रह्मदारु ये सहतूतके नाम हैं। सहतूत शीतल है, पकाहुआ स्वादु है, भारी है, गर्म है और पित्तवातको नाश करता है ॥ ७१ ॥

गंगेरुकनामगुणाः ।

गङ्गेरुकं कर्कटकं कारकं मृगलिण्डकम् ।
तोदनं क्रन्दनं चान्यन्मृगविट्सदृशं तथा ॥ ७२ ॥

गंगेरुक, कर्कटक, कारक, मृगलिंडक ये गंगेरुवाके नाम हैं । दूसरेके तोदन क्रंदन, मृगविट्सदृश ये नाम हैं, ॥ ७२ ॥

गङ्गेरु रेचनं पक्वं गुरु वातास्रजिन्मतम् ।
तोदनं ग्राहि मधुरं वातपित्तहरं लघु ॥ ७३ ॥

गंगेरुवा—दस्तावर है, पका हुआ भारी है, वातरक्तको जीतता है । तोदकारक है, मलको बांधता है, मीठा है, वातपित्तको हरता है और हलका है ॥ ७३ ॥

तुवर-तुम्बरवृक्ष-नामगुणाः ।

तुवरं टित्रिकं साम्लमुष्णमामं तु पित्तलम् ।
कालायनफलैः पत्रैः केशराभैः समुद्रजैः ॥
वृक्षस्तुम्बरको ज्ञेयो भल्लातकसमो गुणैः ।
तुम्बरं कफजित्पाके कटूष्णं व्रणमेहकृत् ॥ ७४ ॥

तुवर, टित्रिक ये तुवरके नाम हैं. गर्म और खट्टा है, कच्चा तुवर पित्तको करता है, समुद्रमें उपजे और केशरके समान कांतिवाले ऐसे कालायनके फल और पत्तोंके समान तुवर वृक्ष जानना । इसमें भिलावेके समान गुण, हैं, तुंबर कफको जीतता है, पाकमें चर्परा है, गर्म है तथा घाव और प्रमेहको उत्पन्न करता है, ॥ ७४ ॥

बीजपूरनामगुणाः ।

बीजपूरो मातुलिङ्गः कुशरी फलपूरकः ।
बीजपूरफलं रुच्यं रसाम्लं दीपनं लघु ॥ ७५ ॥

बीजपूर, मातुलिंग, कुशरी, फलपूरक ये बिजौरेके नाम हैं । बिजौरेका फल रुचिको करता है, रसमें खट्टा है, अग्निको जगाता है और हलका है ॥ ७५ ॥

रक्तपित्तकरं कण्ठ्यं जिह्वाहृच्छोधनं परम् ।
तन्मांसं बृंहणं शीतं गुरु पित्तसमीरजित् ॥ ७६ ॥

नींबू-रक्त पित्तको करता है, कंठको हित है, जीभ और हृदयको शोधन करता है। बिजौरेका गूदा धातुको पुष्ट करता है, शीतल है, भारी है, पित्त और वातको जीतता है ॥ ७६ ॥

केशरं लघु संग्राहि शूलगुल्मोदरापहम् ।
बीजमुष्णं कृमिश्लेष्मवातजिद्गर्भदं गुरु ॥ ७७ ॥

बिजौरेकी केशर हलकी है, मलको बांधती है, और शूल, गुल्म, उदररोग इनको नाशती है। बिजौरेका बीज गर्म है, और कृमि, कफ, वात इनको जीतता है, गर्भको देता है, तथा भारी है ॥ ७७ ॥

तत्पुष्पं वातलं ग्राहि रक्तपित्तहरं लघु ।
शूलाजीर्णविबन्धेषु मन्दाग्नौ कफमारुते ।
अरुचौ श्वासकासेषु रसस्तस्योपदृश्यते ॥ ७८ ॥

बिजौरेका फूल-वातको करता, है, मलको बांधता है, रक्तपित्तको हरता है, और हलका है. शूल, अजीर्ण, विबन्ध, मन्दाग्नि, कफ, वात, अरुचि, श्वास, खांसी इनमें बिजौरेका रस देना उत्तम है ॥ ७८ ॥

मधुकर्कटीनामगुणाः ।

मधुकर्कटिका स्वादुलुङ्गी घण्टालिका घटा ।
मधुकर्कटिका शीता रक्ता पित्तहरा गुरुः ।
तन्मूलं तु विषूचीघ्नं कर्णशोथविनाशनम् ॥ ७९ ॥

मधुकर्कटिका, स्वादु, लुङ्गी, घंटालिका, घटा ये मधुककडी (चकोतरे) के नाम हैं. मधुककडी (चकोतरा) शीतल है, लाल रंगकी है, पित्तको हरती है, भारी है। मधुककडीकी जड हैजा और कानके शोजेको नाशती है ॥ ७९ ॥

नारङ्गीनामगुणाः ।

नारङ्गी नागरङ्गः स्याद्गोरक्षो योगसागरः ।
नारङ्गमम्लमत्युष्णं पित्तवातहरं सरम् ।
स्वाद्वम्लपरं हृद्यं दुर्जरं वातनाशनम् ॥ ८० ॥

नारंगी, नागरंग, गोरक्ष,योगसागर ये नारंगीके नाम हैं। नारंगीखट्टी है, अत्यंत गर्म है, पित्तवातको हरती है, सर है, और स्वादु है । संतरा (रंगतरा) दिलको ताकत देता है, देरमें जरता है, और वातको नाशता है ॥ ८० ॥

जम्बीरनामगुणाः ।

जम्बीरको दन्तशठो जम्भीरो जङ्गलो मतः ।
जम्बीरमम्लं शूलघ्नं गुरूष्णं कफवातजित् ।
आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमान्द्यक्रिमीञ्जयेत् ॥ ८१ ॥

जंबीरक, दंतशठ, जंभीर, जंगल ये जंभीरीके नाम हैं, जंभीरनींबू खट्टा है, शूलको नाशता है, भारी है, गर्म है, कफवातको जीतता है और मुखकी विसरता हृत्पीडा, मन्दाग्नि, कृमि इनको जीतता है ॥ ८१ ॥

अम्लवेतसनामगुणाः ।

अम्लोऽम्लवेतसश्चुक्रो वेतसः शरभेदकः ।
अम्लवेतसमत्युष्णं भेदनं लघु दीपनम् ।
हृद्रोगशूलगुल्मघ्नं पित्ततृट्कफदूषणम् ॥ ८२ ॥

अम्ल, अम्लवेतस, चुक्र, वेतस, शरभेदक ये अम्लवेतसके नाम हैं । अम्लवेतस-अत्यन्त गर्म है, भेदन है, हलकी है, अग्निको जगाती है, और हृद्रोग, शूल, गुल्म इनको नाश करती है, भारी है और पित्त, तृषा, कफ इनको दूषित करनेवाली है ॥ ८२ ॥

साराम्लनामगुणाः ।

साराम्लकः सारगुलो रसालः सारपादपः ।
साराम्लमम्लवातघ्नं गुरु पित्तकफप्रदम् ॥ ८३ ॥

साराम्लक, सारगुल, रसाल, सारपादप ये साराम्लके नाम हैं । साराम्ल-अम्लवातको नाशता है, भारी है, पित्त और कफको उत्पन्न करता है ॥ ८३ ॥

निम्बुनामगुणाः ।

निम्बूकं निम्बुकं राजनिम्बूकमपरं स्मृतम् ।
निम्बूकमम्लं वातघ्नं पाचनं दीपनं लघु ।
राजनिम्बूफलं स्वादु गुरु पित्तसमीरजित् ॥ ८४ ॥

निंबूक, निंबुक ये नींबूके नाम हैं । दूसरा राजनिंबूक नामक होता है । नींबू खट्टा है, वातको नाशता है, पाचन है, अग्निको जगाता है और हलका है । राजनिंबू मीठा है, भारी है, पित्त और वातको जीतता है ॥ ८४ ॥

कर्मरङ्गनामगुणाः ।

कर्मरङ्गं नागफलं भव्यं पिच्छिलबीजकम् ।
कर्मरङ्गं हिमं ग्राहि स्वाद्वम्लं कफपित्तजित् ॥ ८५ ॥

कर्मरङ्ग, नागफल, भव्य, पिच्छिलबीजक ये कमरखके नाम हैं। कमरख-शीतल है, मलको बांधती है, स्वादु है, खट्टी है और कफपित्तको जीतती है ॥ ८५ ॥

अम्लीनामगुणाः ।

अम्लिका चुक्रिका चिञ्चा तिन्तिडी शुक्तिचन्द्रिका ।
अम्लिकाऽऽमा गुरुर्वातहरा पित्तकफास्रजित् ॥ ८६ ॥

अम्लिका, चुक्रिका, चिञ्चा, तिंतिडी, शुक्तिचन्द्रिका ये इमलीके नाम हैं। कच्ची इमली भारी है, वातको हरती है और पित्त, कफ रक्त इनको जीतती है ॥ ८६ ॥

पक्का तद्वत्सरा रुच्या वह्निबस्ति विशुद्धिकृत् ।
शुष्का हृद्या श्रमभ्रान्तितृष्णाक्लमहरा लघुः ॥ ८७ ॥

पकी इमली भारी है, रुचिको उपजाती है, और अग्नि तथा बस्तिकी शुद्धि करती है। सूखी इमली दिलको ताकत देती है और परिश्रम, भ्रम, तृषा, ग्लानि इनको हरती है और हलकी है ॥ ८७ ॥

तिन्तिडीनामगुणाः ।

तिन्तिडीकं तु वृक्षाम्लमम्लशाकोऽम्लपादपः ।
तिन्तिडीकं समीरघ्नमामम्युष्णं परं गुरु ।
तत्पक्कं लघु संग्राहि ग्रहणीकफवातजित् ॥ ८८ ॥

तिंतिडीक, वृक्षाम्ल, अम्लशाक, अम्लपादप ये तिंतडीकके नाम हैं। कच्चा तिंतडीक वातको नाश करता है, गर्म और भारी है। पकाहुआ तिंतडीक हलका है, मलको बांधता है और ग्रहणी, कफ, वात इनको जीतता है ॥ ८८ ॥

करमर्दी (करौंदा) नामगुणाः ।

करमर्दी सुषेणा स्यादन्या कृष्णफला मता ।
करमर्दी गुरूष्णाम्लं रक्तपित्तकफप्रदम् ।
तत्पक्कं मधुरं रुच्यं लघु पित्तसमीरजित् ॥ ८९ ॥

करमर्दी, सुषेणा, कृष्णफला ये करोंदाके नाम हैं। करोंदा भारी है, गर्म है, खट्टा है, और रक्तपित्त, कफ इनको उत्पन्न करता है। पका हुआ करोंदा मीठा है, रुचिको उत्पन्न करता है, हलका है तथा पित्त और वातको जीतता है ॥ ८९ ॥

विकंकत (कंडयाई) नामगुणाः ।

[विकंकतो मधुश्चाम्लः कषायः शीतलो जयेत् ।
बलासपित्तशोफास्रविकारान्कामलां स्तथा ॥ १ ॥
पाककालेऽतिमधुरो दाहं शोषं च नाशयेत् ।
दीपनः पाचनश्चैव व्रणलूताविनाशनः ॥ २ ॥]

विकंकत (कटाई-किंकिणी) मधुर है, खट्टी है, कषैली है, शीतल है तथा कफ, पित्त, शोजा रुधिरविकार, कामला इनको जीतती है, पाकमें मधुर और पाचन है तथा दाह, शोष, लूता, व्रण, अर्श इनको नाश करती है ॥ १ ॥ २ ॥]

कपित्थनामगुणाः ।

कपित्थको दधिफलः कपित्थः सुरभिच्छदः ।
कपित्थमामं संग्राहि लघु दोषत्रयापहम् ॥ ९० ॥

कपित्थक, दधिफल, कपित्थ, सुरभिच्छद ये कैथके नाम हैं। कच्चा कैथ संग्राही है, हलका है और त्रिदोषको नाश करता है ॥ ९० ॥

पक्कं गुरु तृषाहिक्काशमनं वातपित्तजित् ।
स्वाद्वम्लं तुवरं कण्ठशोधनं ग्राहि दुर्जरम् ॥ ९१ ॥

पकाहुआ कैथ भारी है, तृषा और हिचकीको शमन करता है, वातपित्तको जीतता है, स्वादु है, खट्टा है, कषैला है, कंठको शोधता है, मलको बांधता है और देरमें जीर्ण होता है ॥ ९१ ॥

कपित्थपत्रीनामगुणाः ।

कपित्थपत्री फणिजा कुलजा जीवपत्रिका ।
कपित्थपत्री तिक्ष्णोष्णा कफमेहविषापहा ॥ ९२ ॥

कपित्थपत्री, फणिजा, कुलजा, जीवपत्रिका ये कैथपत्रीके नाम हैं। कैथपत्री तेज है, गर्म है और कफ, प्रमेह, विष इनको नाशती है ॥ ९२ ॥

आम्रातकनामगुणाः ।

आम्रातकश्चाम्रवटः फली मोदः फलः कपिः ।

आम्रातमामवातघ्नं गुरूष्णं रुचिकृत्सरम् ।
पक्वं स्वादु हिमं वृष्यं मरुत्पित्तक्षयास्रजित् ॥ ९३ ॥

आम्रातक, आम्रवट, फली, मोद, फल, कपि ये अंबाडेके नाम हैं। कच्चा अंबाडा-वातको नाश करता है, भारी है, गर्म है, रुचि करता है और सर है। पकाहुआ अंबाडा स्वादु है, शीतल है, धातुको पुष्ट करता है और वात, पित्त, क्षय, रक्त इनको जीतता है ॥ ९३ ॥

राजाम्रनामगुणाः ।

राजाम्राह्वं काम्रनामा कामाह्वो राजपुत्रकः ।
राजाम्रं मधुरं शीतं ग्राहि पित्तकफापहम् ॥ ९४ ॥

राजाम्राह्व, काम्रनाम कामाह्व, राजपुत्रक ये राजाआमके नाम हैं। राजाआम (कलमी आम) मीठा है, शीतल है, मलको बांधता है, पित्त और कफको नाशता है ॥ ९४ ॥

पञ्चाम्लनामगुणाः ।

वृक्षाम्लदाडिमीचिञ्चाकपित्थैश्चतुराम्लकम् ।
अम्लवेतसवृक्षाम्लं दाडिमो बदरः क्वचित् ।
बीजपूरयुतैरेतैः पञ्चाम्लमुदितं बुधैः ॥ ९५ ॥

तिंतडीक, अनार, इमली, कैथ इन चारोंको मिलानसे चतुराम्ल होता है। अम्लवेत, तिंतडी, अनार, बेर, बिजौरा इन पांचोंको बुद्धिमानोंने पंचाम्ल कहा है ॥ ९५ ॥

कोशाम्रनामगुणाः ।

कोशाम्रको घनस्कन्धो जन्तुवृक्षश्च कोशकः ।
कोशाम्रः कुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ॥ ९६ ॥

कोशाम्रक, घनस्कंध, जंतुवृक्ष, कोशक ये कोशाम्रके नाम हैं। कोशाम्र-कुष्ठ, शोजा, रक्तपित्त, घाव और कफको नाश करता है ॥ ९६ ॥

तत्फलं ग्राहि वातघ्नमम्लोष्णं गुरु पित्तलम् ।
पक्वं तद्दीपनं रुच्यं लघूष्णं कफवातजित् ।
मज्जा पित्तसमीरघ्नी स्वादुर्बल्याऽग्निदीपनी ॥ ९७ ॥

कोशाम्रका फल मलको बांधता है, वातको नाशता है, खट्टा है, गर्म है, भारी है और पित्तको करता है। पकाहुआ कोशाम्र अग्निको जगाताहै रुचिको उपजाता है।

हलका है, गर्म है और कफ वातको जीतता है, इसकी गिरी पित्तवातको नाशती है, स्वादु है, बलको करती है, अग्निको जगाती है । छोटे २ फलवाले पहाडपर जंगलोंमें उत्पन्न हुए आमोंको कोशाम्र कहते हैं ॥ ९७ ॥

पूगीफलनामगुणाः ।

क्रमूकं क्रमुकं पूगं पूगीफलमुदाहृतम् ।
पूगं गुरु हिमं रूक्षं कषायं कफपित्तजित् ॥ ९८ ॥

क्रमूक, क्रमुक, पूग, पूगीफल ये सुपारीके नाम हैं । सुपारी—भारी है, शीतल है, रूखी है, कषैली है और कफपित्तको जीतती है ॥ ९८ ॥

मोहनं दीपनं रुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ।
आर्द्रं तद्गुर्वभिष्यन्दि वह्निदृष्टिहरं परम् ॥ ९९ ॥

सुपारी—मोहको करती है, अग्निको जगाती है, रुचिको उपजाती है और मुखकी विरसताको नाशती है । गीली सुपारी भारी है, कफ करती है, अग्नि और दृष्टिको हरती है ॥ ९९ ॥

स्निग्धं त्रिदोषहृत्सर्वं पक्वं शुष्कं तु वातलम् ।
पूगं स्याद्दृढमध्येष्टं तद्धि नानाविधं हिमम् ॥ १०० ॥

पकीहुई चिकनी सुपारी—त्रिदोषको हरती है, सूखी सुपारी वातको करती है, करडे मध्यभागवाली सुपारी बहुत अच्छी है, अनेक प्रकारकी सुपारी होती हैं सो ठंढी होती हैं ॥ १०० ॥

पाकदेशविभेदेन चिक्कणं सर्वदोषनुत् ।
कृमिकृत्पूगपुष्पं तु कषायं मधुरं गुरु ।
स्निग्धं त्रिदोषहृद्बल्यं तद्भेदांस्तद्वदादिशेत् ॥ १ ॥

पाकमें और देशभेदसे योग्य होनेपर चिकनी सुपारी सब दोषोंको हरती है । सुपारीका फूल कृमियोंको पैदा करता है, कषैला है, मीठा और भारी है । चिकनी सुपारी—त्रिदोषको हरती है, बलको करती है, चिकनी सुपारीके भदाम भी यही गुण है ॥ १ ॥

ताम्बूलनामगुणाः ।

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागिनी नागवल्लरी ।
ताम्बूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरं सरम् ॥ २ ॥

तांबूलवल्ली, तांबूली, नागिनी, नागवल्लरी, तांबूल ये नाम नागरपानके हैं। नागरपान (पान) दिलको ताकत देता है, रुचिको उपजाता है और चर्परा, गर्म, कषैला तथा दस्तावर है ॥ २ ॥

तिक्तक्षारोषणं बल्यं रक्तपित्तकरं लघु ।
कासश्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् ॥ ३ ॥

तांबूल—कडुवा, खारा, चर्परा और गर्म है, बलदायक और रक्तपित्तको उत्पन्न करता है, तथा खांसी, कफ, मुखकी दुर्गंध, मल, वात, परिश्रम इनको नाश करता है ॥ ३ ॥

ताम्बूलं स्वर्णवर्णं क्रमुकफलयुतं साग्रमप्यग्रहीनं
कर्पूरैणाण्डजाभ्यां कृतखदिरवटीसौरभेखातिचूर्णम् ।
चूर्णं ग्रीवानुजातं शिशिरकिरणवत्प्रोज्ज्वलं तेन साकं
दत्त्वा विप्राय पूर्वं तदनु नरपतिर्भक्षयेदाप्तदत्तम् ॥ ४ ॥

सुवर्णके समान वर्णवाला, सुपारीके टुकडोंसे संयुत किया, अग्रभाग रहित कपूर और कस्तूरीसे सुगंधित किया, कत्थेसे संयुत किया और चूना लगाकर चंद्रमाके समान प्रकाशित कियाहुआ नागरपान प्रथम ब्राह्मणको देकर पीछे योग्य पुरुषके हाथसे दिये नागरपानको राजा खावे ॥ ४ ॥

चूर्णं कफानिलहरं खदिरं कफपित्तजित् ।
संयोगतो दोषहरं सौमनस्यं करोति च ।
वैरस्यं हन्ति सौगन्ध्यकान्तिशोभाकरं परम् ॥ ५ ॥

चूना-कफ और वातको हरता है, कत्था कफ और पित्तको जीतता है और दोनों पानमें लगाकर खानेसे दोषको हरते हैं तथा सुंदरता करते हैं, मुखके विरसपनेको हरते हैं, सुगंधि, कांति, शोभा इनको करते हैं ॥ ५ ॥

लवली-तत्फलंनामगुणाः ।

घनस्निग्धा महाप्रांशुः प्रपुन्नाटः समच्छदा ।
सुगन्धमूला लवली पाण्डुः कोमलवल्कली ॥ ६ ॥

घनस्निग्धा, महाप्रांशु, प्रपुन्नाट, समच्छदा, सुगंधमूला, लवली, पांडु, कोमलवल्कली ये लवलीके नाम हैं ॥ ६ ॥

लावल्याः फलमुद्दिष्टं श्यामं ज्योत्स्नाफलं तथा ॥ ७ ॥

श्याम, ज्योत्स्नाफल ये लवलीके फलके नाम हैं ॥ ७ ॥

लवलीफलमश्माशोंवातपित्तहरं लघु ।
विशदं रोचनं रूक्षं हृद्यं पित्तकफापहम् ।
फलं तुल्यगुणं सर्वं मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥ ८ ॥

लवलीफल-पथरी, बवासीर, वात, पित्त इनको हरता है और हलका है, विशद है, रुचिको उपजाता है, रूखा है, हृदयको हितकारी है। वृक्षकेही समान सब फलोंमें गुण होते हैं। गिरीमें भी उनके समानही गुण होते हैं ॥ ८ ॥

फलं हिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ॥ ९ ॥
अकालजातं नाश्नीयात्पाकातीसारभूमिजम् ।
आमं दोषकरं प्रायः फलं बिल्वं विनाऽखिलम् ॥ ११० ॥

पाला, अग्नि, दुष्ट पवन, सर्प, कीडा आदिसे फल दूषित होते हैं, अकालमें उपजा, पाकको उल्लंघित करनेवाला और बुरी पृथिवामें उपजा हुआ भी दूषित होता है इस कारण दूषित फल नहीं खाना चाहिये। बेल फलके बिना और कच्चा फल विशेषकर दोषको करता है ॥ ९ ॥ ११० ॥

यस्य यस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् ।
तस्य तस्यैव वीर्येण मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥ १११ ॥

जिस जिस फलका जैसा वीर्य हो उसके वीर्यके समान उसका गूदा भी जानना ॥ १११ ॥

व्याधितं कृमिदुष्टं च पाकातीतमकालजम् ।
वर्जनीयं प्रयत्नेन सपद्यागतमेव च ॥ ११२ ॥
इति मदनपालनिघण्टौ फलादिवर्गःषष्ठः ॥ ६ ॥

गला, सडा, खराब हुआ, कीडोंसे युक्त हुआ, पाकसे अतीत हुआ, विना समयमें उपजा, तत्काल पका हुआ ऐसे फल वर्जित हैं अर्थात् खाना नहीं चाहिये ॥ ११२ ॥

इति श्रीमदनपालनिघंटौ आयुर्वेदोद्धारकवैद्यपञ्चाननपं० रामप्रसादवैद्योपाध्याय-विरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनीभाषाटीकायां फलादिवर्गः षष्ठः ॥ ६ ॥

राधापदाब्जे निपतन्विनोदी मानापनुत्त्यै जगदेकवन्द्यः ।
केनापि कामेन स गोपरूपी पायादपायात्पुरुषः पुराणः ॥१॥

मानको दूर करनेके लिये राधाजीके चरण कमलमें निरन्तर गिरता हुआ, आनन्दयुक्त, संसारमें एकही वंदनाके योग्य, किसी भी कामनासे गोपरूपवाला पुराणपुरुष हमारी सदैव कष्टोंसे रक्षा करें ॥ १ ॥

सर्वशाकेषु जीवन्ती श्रेष्ठा निन्द्यस्तु सर्षपः ।
शाकं चतुर्द्धा तत्पुष्पच्छदकन्दफलैःस्मृतम् ॥ २ ॥

सब शाकोंमें जीवन्ती श्रेष्ठ है और सरसोंका शाक बुरा है । फूल, पत्ता, कन्द, फल इन भेदोंसे शाक चार प्रकारका होता है ॥ २ ॥

त्रिविधकूष्मांडनामगुणाः ।

कूष्माण्डकी पुष्पफली पचनालिश्चतुर्विधः ।
कर्क्कारुरफला कन्दी स्यादारू राजकर्कटी ॥ ३ ॥

कूष्मांडकी, पुष्पफली, पचनालि, चतुर्विध, कर्कारु, अफला, कन्दी, आरु, राजकर्कटी ये पेठेके नाम हैं ॥ ३ ॥

कूष्माण्डं बृंहणं शीतं गुरु पित्तास्रवातजित् ।
बल्यं पित्तपहं शीतं मध्यमं कफकारकम् ॥ ४ ॥

पेठा धातुको पुष्ट करता है, शीतल है, भारी है, पित्तरक्त और वातको जीतता है, बलको करता है, पित्तको हरता है । मध्यम पका हुआ पेठा शीतल है, कफकारक है ॥ ४ ॥

पक्कं नातिहिमं स्वादु सक्षारं दीपनं लघु ।
बस्तिशुद्धिकरं रेतोरोगदोषत्रयापहम् ॥ ५ ॥

पका हुआ पेठा अत्यन्त शीतल नहीं है, खारसहित है, अग्निको जगाता है, हलका है, बस्तिको शोधन करता है और वीर्यरोग तथा त्रिदोषको नाश करता है ॥ ५ ॥

कूष्माण्डं नातिमधुरं वाताश्मरिकफापहम् ।
तन्मज्जा पित्तनुद् वृष्यो मधुरो बस्तिशोधनः ॥ ६ ॥

कुम्हडा (कद्दू) काशीफल अत्यन्त मीठा है और वात, पथरी, कफको नाश करता है । कद्दूके बीजोंकी मज्जा पित्तको दूर करती है, वीर्यको बढाती है, मीठी है और बस्तिको शोधन करती है ॥ ६ ॥

कर्कटं शीतलं ग्राहि रक्तपित्तहरं गुरु।
पक्वं पित्ताग्निजननं सक्षारं श्लेष्मवातजित् ॥ ७ ॥

लघु पेठा शीतल है, मलको बांधता है, रक्तपित्तको हरता है और भारी है। यही पकाहुआ पित्त और अग्निको उपजाता है, खारसहित है और कफ-वातको जीतता है ॥ ७ ॥

कर्कटीनामगुणाः।

कर्कटी लोमशी व्यालपत्रैर्वारुर्बृहत्फला।
कर्कटी शीतला रूक्षा ग्राहिणी मधुरा गुरुः ॥ ८ ॥

कर्कटी, लोमशी, व्यालपत्रा, एर्वारु, बृहत्फला ये ककडीके नाम हैं। ककडी शीतल है, रूखी है, मलको बांधती है, मीठी है, और भारी है ॥ ८ ॥

कालिङ्ग (तर्बूजा)नामगुणाः।

कालिङ्गं कृष्णबीजं स्यात्कलिङ्गं फलवर्तुलम्।
कालिङ्गं ग्राहि दृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलं गुरु।
पक्वं तु सोष्णं सक्षारं पित्तलं कफवातजित् ॥ ९ ॥

कालिंग, कृष्णबीज, कालिंग, फलवर्तुल ये तरबूजके नाम हैं। तरबूज-मलको बांधता है, नेत्ररोग और पित्तको हरता है, शीतल और भारी है। पकाहुआ तरबूज गर्म है, खारसहित है, पित्तको करता है, कफ और वातको जीतता है ॥ ९ ॥

मिष्टतुम्बीनामगुणाः।

तुम्बी मिष्टा महातुम्बी राजाऽलाबुरलाबुनी।
मिष्टं तुम्बीफलं वृष्यं कफपित्तहरं गुरु ॥ १० ॥

तुम्बी, मिष्टा, महातुंबी, राजा, अलाबु, अलाबुनी, ये नाम मीठी तूँबीके हैं। मीठा तुंबीफल-धातुको पुष्ट करता है, कफ और पित्तको हरता है तथा भारी है, इसको घीया या आल कहते हैं ॥ १० ॥

कटुतुम्बीनामगुणाः।

कटुतुम्बी मिष्टफली राजपुत्री च दुग्धिनी।
कटुतुम्बी हिमा हृद्या पित्तकासविषापहा ॥ ११ ॥

कुटुतुंबी, मिष्टफली, राजपुत्री, दुग्धिनी ये कडुवी तूंबीके नाम हैं. कडुवी तूंबी-शीतल है, दिलको ताकत देती है और पित्त, खांसी विष इनको नाश करती है ॥ ११ ॥

त्रपुषनामगुणाः ।

त्रपुषं कण्टकिलता सुधावासोऽपरं कटुः ।
छर्दिपर्णी मूत्रफला पित्तकं हस्तिपर्णिनी ॥ १२ ॥

त्रपुष, कण्टकिलता, सुधावास, कटु, छर्दिपर्णी, मूत्रफला, पित्तक, हस्तिपर्णिनी, ये खीराके नाम हैं ॥ १२ ॥

त्रपुषं मूत्रलं शीतं रूक्षं पित्ताश्मकृच्छ्रनुत् ।
तत्पक्वमुष्णमम्लं स्यात्पित्तलं कफवातजित् ॥ १३ ॥

खीरा-मूत्रको उपजाता है, शीतल है, रूखा है और पित्त, पथरी, मूत्रकृच्छ्रको नष्ट करता है । पकाहुआ खीरा गर्म है, खट्टा है, पित्तको उत्पन्न करता है तथा कफ और वातको जीतता है ॥ १३ ॥

चिर्भटनामगुणाः ।

चिर्भटं धेनुदुग्धं स्याज्ज्ञेयं गोरक्षकर्कटी ।
चिर्भटं मधुरं रूक्षं गुरु पित्तकफापहम् ॥ १४ ॥

चिर्भट, धेनुदुग्ध, गोरक्षकर्कटी ये चींभडके नाम हैं । चीभड अर्थात् गोरख काकडी मीठी है, भारी है, पित्त और कफको नाशती है ॥ १४ ॥

शीतं विष्टम्भि संग्राहि पक्वमुष्णं तु पित्तलम् ॥ १५ ॥

यह शीतल है, विष्टंभ करती है, मलको बांधती है, पकीहुई चीभड गर्म है और पित्तको करती है ॥ १५ ॥

वालुकनामगुणाः ।

वालुकं काण्डकं वालु तच्छीतं मधुरं गुरु ।
रक्तपित्तहरं भेदि लघूष्णं पक्वमग्निकृत् ॥ १६ ॥

वालुक, कांडक, वालु, ये नाम वालुकके हैं । वालुक (वालुमें होनेवाली ककडी विशेष) शीतल है, मीठा है, भारी है, रक्तपित्तको हरता है, भेदी है, हलका तथा गर्म है, पकाहुआ वालुक अग्निको करता है ॥ १६ ॥

(फुट्ट) शीर्णवृन्तनामगुणाः ।

शीर्णवृन्तं चित्रफलं विचित्रं पीतवर्णकम् ।
शीर्णवृन्तं लघु स्वादु भेद्युष्णं वह्निपित्तकृत् ॥ १७ ॥

शीर्णवृन्त, चित्रफल, विचित्र, पीतवर्णक ये शीर्णवृन्तके नाम हैं ।

शीर्णवृंत हलका है, भेदी है, स्वादु है, गर्म है, अग्नि और पित्तको करता है। कोई लोग इसको तर्बूजकाही भेद कहते हैं ॥ १७ ॥

कोशातकीनामगुणाः ।

कोशातकी शतच्छिद्रा जालिनी कृतवेधसा ।
मृदङ्गफलका ज्वेरा घोटाकी कर्कशच्छदा ॥ १८ ॥

कोशातकी, शतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधसा, मृदंगफलका, ज्वेरा घोटाकी, कर्कशच्छदा ये तोरीके नाम हैं ॥ १८ ॥

कोशातकी लघुस्तिक्ता रूक्षाऽऽमाशयशोधनी ।
शोफपाण्डूदरप्लीहकुष्ठार्शःकफपित्तजित् ।
तत्फलं भेदनं शीतं लघु मेहत्रिदोषजित् ॥ १९ ॥

तोरी (तुरई) हलकी है, कडुवी है, रूखी है, आमाशयको शोधती है और शोजा पांडु, उदरोग, तिल्ली, कुष्ठ, बवासीर, कफ तथा पित्तको जीतती है। तोरीका फल-भेदन है, शीतल है, हलका है, प्रमेह और त्रिदोषको जीतता है ॥ १९ ॥

राजकोशातकीनामगुणाः ।

राजकोशातकी मिष्टा महाजालिः सपीतका ।
राजकोशातकी शीता ज्वरघ्नी कफवातला ॥ २० ॥

राजकोशातकी, मिष्टा, महाजालि, सपीतका ये घीयातोरीके नाम हैं। घीया-तोरी-शीतल है, ज्वरको नाशती है, कफ और वातको करती है ॥ २० ॥

महाकोशातकीनामगुणाः ।

महाकोशातकी त्वन्या हस्तिघोषा महाफला ।
महाकोशातकी स्निग्धा मिष्टा पित्तानिलापहा ॥ २१ ॥

महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला ये बडी तोरईके नाम हैं। बडी तोरई-चिकनी है, मीठी है, पित्त और वातको नाशती है ॥ २१ ॥

वृन्ताकीनामगुणाः ।

वृन्ताकी वार्तिकी वृत्ता भण्टाकी भण्टिका मता ।
वृन्ताकं स्वादु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकं च पित्तलम् ॥ २२ ॥

वृंताकी, वार्तिकी, वृत्ता, भंटाकी, भंटिका ये बैंगनके नाम हैं। बैंगन-स्वादु है, तेज है, गर्म है, पाकमें कडुवा है और पित्तको उपजाता है ॥ २२ ॥

कफवातहरं हृद्यं दीपनं शुक्रलं लघु ।
ज्वरारोचककासघ्नं पक्वं तत्पित्तलं गुरु ॥ २३ ॥

यह कफ और वातको हरता है और दिलको ताकत देता है, अग्निको जगाता है, वीर्यको पैदा करता है, हलका है और ज्वर अरुचि तथा खांसीको नाशता है। पकाहुआ बैंगन पित्तको करता है और भारी है ॥ २३ ॥

श्वेतवार्त्ताकुनामगुणाः ।

अपरः श्वेतवार्त्ताकुः कुक्कुटाण्डफलोपमः ।
तस्माद्धीनगुणः किञ्चिदर्शसां च हितः स्मृतः ॥ २४ ॥

श्वेतवार्ताकु, कुक्कुटांडफलोपम ये सफेद बैंगनके नाम हैं। इसमें बैंगनसे कम गुण हैं और बवासीरवालोंको हित कहा है ॥ २४ ॥

बिम्बीनामगुणाः ।

बिम्बी रक्तफला गोला तुण्डी दन्तच्छदोपमा ।
बिम्बी वान्तिप्रदा हन्ति रक्तपित्तास्रकामलाः ॥ २५ ॥

बिंबी, रक्तफला, गोला, तुंडी, दन्तच्छदोपमा ये कंदूरीके नाम हैं। कंदूरी छर्दिको करती है और रक्तपित्त, रक्तविकार, कामला इनको नाशती है ॥ २५ ॥

तत्फलं शीतलं स्वादु गुरु पित्तास्रदाहजित् ।
स्तम्भनं लेखनं वातविबन्धाध्मानकारकम् ॥ २६ ॥

कंदूरीका फल शीतल है, स्वादु है, भारी है, पित्तरक्त और दाहको जीतता है, स्तंभन है, लेखन है तथा वात, विबंध, आध्मान इनको करता है ॥ २६ ॥

कारवेल्लनामगुणाः ।

कारवेल्लं कटिल्लं स्यादुग्रकाण्डं सुकाण्डकम् ।
कारवल्ली वारिवल्ली बृहद्वल्ल्यपरा स्मृता ॥ २७ ॥

कारवेल्ल, कटिल्ल, उग्रकांड, सुकांडक, कारवल्ली, वारिवल्ली, बृहद्वल्ली ये करेलाके नाम हैं ॥ २७ ॥

कारवेल्लं हिमं भेदि लघु तिक्तमवातलम् ।
पित्तास्रकामलापाण्डुकफमेहक्रिमीञ्जयेत् ॥ २८ ॥

करेला शीतल है, भेदी है, हलका है, कडुवा है वातको नहीं करता है और पित्तरक्त, कामला, पांडु, कफ, प्रमेह, कृमि इनको जीतता है ॥ २८ ॥

कर्कोटकीनामगुणाः ।

कर्कोटकी पीतपुष्पा महाजालिनिरुच्यते ।
तद्वत्कर्कोटकीपुष्पं किलासारुचिनाशनम् ॥ २९ ॥

कर्कोटकी, पीतपुष्पा, महाजालिनि ये ककोडाके नाम हैं। ककोडा-किलास और अरुचिको नाशता है, यही गुण इसके पुष्पमें हैं ॥ २९ ॥

वन्ध्याककर्कोटकीनामगुणाः ।

वन्ध्याकर्कोटकी देवी नागारिर्विषकण्टका ।
वन्ध्याककर्कोटकी तिक्ता विषवीसर्पकासजित् ॥ ३० ॥

वन्ध्याककर्कोटकी, देवी, नागारि, विषकंटका ये बांझककोडीके नाम हैं । बांझ-ककोडी कडुवी है, और विष, वीसर्प, खांसीको नाशती है ॥ ३० ॥

डोडिकानामगुणाः ।

डोडिका विषमुष्टिः स्याद्विषयष्टिः समुष्टिका ।
डोडिका कफपित्तार्शः कृमिगुल्मविषापहा ॥ ३१ ॥

डोडिका, विषमुष्टि, विषयष्टि, समुष्टिका ये डोडीके नाम हैं। डोडी कफ, पित्त, बवासीर कृमि, गुल्म और विषको नाशती है । डोडीकी बेल होती है, इसमेंसे दूध निकलता है, फल डोडियोंके अंदर होते हैं ॥ ३१ ॥

डिण्डिसनामगुणाः ।

डिण्डिसो रोमशफलस्तिन्दिसो मुनिनिर्मितः ।
डिण्डिसो वातलो रूक्षो मूत्रलोऽश्मरिभेदकः ॥ ३२ ॥

डिंडिस रोमशफल, तिन्दिस, मुनिनिर्मित ये डिंडिस (ढेडस; टिंडस टिंडे) के नाम हैं। डिंडिस वातको उपजाता है, रूखा है, मूत्रको उत्पन्न करता है, और पथरीको भेदन करता है ॥ ३२ ॥

कोलशिम्बीनामगुणाः ।

कोलशिम्बी कृष्णफला षड्वसी करपादिका ।
कोलशिम्बी समीरघ्नीगुर्वामकफपित्तकृत् ॥ ३३ ॥

कोलशिंबी, कृष्णफला, षड्वसी, करपादिका ये सेम (सुआरासेम) के नाम हैं । कोलशिंबी वातको नाशती है, भारी है, और आम, कफ, पित्त इनको करती है, ॥ ३३ ॥

११

शिम्बीनामगुणाः ।

शिम्बी कुशिम्बी कुत्साऽस्रशिम्बी पुत्रक शिम्बिका ।
शिम्बी शीता गुरुर्बल्याश्लेष्मला वातपित्तजित् ॥ ३४ ॥

शिंबी, कुशिंबी, कुत्सा, अस्रशिंबी, पुत्रकशिंबिका ये दूसरे सेमके नाम हैं। शिंबी; शीतल है, भारी है, बलको करती है, कफको देती है, और वातको जीतती है। दोनों प्रकारकी सेम (सेमफली) प्रसिद्ध है ॥ ३४ ॥

वास्तुकनामगुणाः ।

वास्तुकः शाकपत्रः स्यात्कम्बीरस्तु प्रसादकः ।
वास्तुकः पाचनो रुच्यो लघुः शुक्रबलप्रदः ।
सरः प्लीहास्रपित्तार्शः कृमिदोषत्रयापहः ॥ ३५ ॥

वास्तुक, शाकपत्र, कंबीर, प्रसादक ये बथुआके नाम हैं। बथुवा पाचन है, रुचिको करता है, हलका है, वीर्य और बलको देता है, सर है, तिल्लीरोग, रक्त पित्त, बवासीर, कृमि, क्षय इनको नाशताहै ॥ ३५ ॥

जीवन्तकनामगुणाः ।

जीवन्तकः शाकवीरो रक्तनालः प्रणालकः ।
जीवन्तो वातकृत्क्षारः स्वादुपाकस्त्रिदोषनुत् ॥ ३६ ॥

जीवंतक, शाकवीर, रक्तनाल, प्रणालक ये जीवंतीके नाम हैं। जीवंती, वातको करती है, खारी है, पाकमें स्वादु है, और त्रिदोषको दूर करती है, जीवंती और डोडी एक जातिकी ही होती है ॥ ३६ ॥

चिल्लीनामगुणाः ।

चिल्ली बृहद्दला रक्ता चिल्लिका गौडवास्तुका ।
चिल्ली सरा लघुः शीता रुच्या मेध्याऽग्निदीपनी ।
बल्या रूक्षा हरेत्प्लीहरक्तदोषत्रयक्रिमीन् ॥ ३७ ॥

चिल्ली, बृहद्दला, रक्ता, चिल्लिका, गौडवास्तुका ये चिल्ली (बाथु) के नाम हैं। चिल्ली सर है, हलकी है, शीतल है, रुचिको उपजाती है, बुद्धिको बढाती है, अग्निको जगाती है, बलको करती है, रूखी है, और तिल्ली दोष, रक्त, त्रिदोष, कृमि इनको नाशती हैं ॥ ३७ ॥

कालशाकनामगुणाः ।

कालशाकं कालिका स्याच्चुञ्चुका चुञ्चुकोऽपरः ।
कालशाकं सरं रुच्यं वातलं कफशोफजित् ॥ ३८ ॥

कालशाक, कालिका, चुंचुका, चुंचुक ये कालशाकके नाम हैं । कालशाक सर है, रुचिको करता है, वातको उपजाता है, कफ और शोजाको जीतता है ॥ ३८ ॥

पित्र्यं पवित्रमायुष्यं नातिपित्तप्रकोपनम् ।
चक्षुः शीता सरा रूक्षा स्वाद्वी दोषत्रयापहा ॥ ३९ ॥

यह पितृकर्ममें उत्तम है, पवित्र है, आयुको बढाता है, पित्तको अत्यन्त कुपित नहीं करता है, शीतल है, सर है, रूखा है, स्वादु है और त्रिदोषको हरता है इसको नाडीका शाग भी कहते हैं । यह पानीवाली जमीनमें बेलसी होती है ॥ ३९

तडुण्लीयनामगुणाः ।

तण्डुलीयो मेघनादः काण्डीरस्तण्डुलीयकः ।
विषघ्नः कवरोऽन्यः स्यान्मारीषो मार्षिकस्तथा ॥ ४० ॥

तण्डुलीय, मेघनाद, कांडीर, तण्डुलीयक, विषघ्न, कवर, मारीष, मार्षिक ये चौलाईके नाम हैं ॥ ४० ॥

तण्डुलीयो लघुः शीतो रूक्षः पित्तकफास्रजित् ।
सृष्टमूत्रमलो रुच्यो दीपनो रक्तपित्तहा ॥ ४१ ॥

चौलाई हलकी है, शीतल है, रूखी है और पित्त, कफ, रक्तको जीतती है, मूत्र और मलको उपजाती है, रुचिमें हित है, अग्निको जगाती है और रक्तपित्तको नाशती है ॥ ४१ ॥

फोगनामगुणाः ।

फोगो मरुद्भवः शृङ्गी सूक्ष्मपुष्पः शशादनः ।
फोगः संग्राहकः शीतो रक्तपित्तकफापहः ॥ ४२ ॥

फोग, मरुद्भव, शृंगी, सूक्ष्मपुष्प, शशादन ये फोगके नाम हैं । फोगमलको बांधता है, शीतल है, रक्तपित्त और कफको नाशता है, फोग मारवाडदेशमें विशेष होता है ॥ ४२ ॥

मारिषगुणाः ।

मारिषो रेचनः शीतो गुरुर्मंदस्त्रिदोषजित् ॥ ४३ ॥

मारिष दस्तावर है, शीतल है, भारी है, मंद और त्रिदोषको नाशता है, यह सफेद और लाल दो प्रकारका होता है ॥ ४३ ॥

पटोलनामगुणाः ।

पटोलः पाण्डुको जातीकलकः कर्कशच्छदः ।
राजीफलः पाण्डुफलो राजीमानमृताफलम् ॥ ४४ ॥

पटोल, पांडुक, जातीफलक, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल, राजीमान अमृताफल ये परवलके नाम हैं, इसीको पंडोल भी कहते हैं ॥ ४४ ॥

तिक्तोत्तमा बीजगर्भाऽपरा राजपटोलिका ।
ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ॥ ४५ ॥

तिक्तोत्तमा, बीजगर्भा, राजपटोलिका ज्योत्स्नी, पटोलिका, जाली, नादेयी, भूमिजंबुका ये दूसरे परवलके नाम हैं ॥ ४५ ॥

पटोलं पाचनं हृद्यं वृष्यं लघ्वग्निदीपनम् ।
स्निग्धोष्णं हन्ति वातास्रज्वरदोषत्रयक्रिमीन् ॥ ४६ ॥

परवल पाचन है, दिलको ताकद देता है, धातुको पुष्ट करता है, हलका है, अग्निको जगाता है, चिकना है और वातरक्त ज्वर त्रिदोष, कृमि इनको नाशता है ॥ ४६ ॥

पत्रं पित्तहरं शीतं तस्य वल्ली कफापहा ।
मूलं विरेचनं प्रोक्तं फलं दोषत्रयापहम् ॥ ४७ ॥

परवलका पत्ता-पित्तको हरता है और शीतल है, परवलकी बेल कफको नाशती है, इसकी जड दस्तावर है और इसका फल त्रिदोष नाशक है ॥ ४७ ॥

चंचुडनामगुणाः ।

चञ्चुडो वेश्मकूलोऽन्यः श्वेतराजी बृहत्फला ।
किञ्चिन्न्यूनगुणस्तस्माद्विशेषाच्छोषणो हितः ॥ ४८ ॥

चंचुड, वेश्मकूल, श्वेतराजी, बृहत्फला ये चचरिंडा (चिंचेडा) के नाम हैं। इसमें गुण परवलसे कम हैं, विशेष कर शोषक और हित है ॥ ४८ ॥

पालक्यानामगुणाः ।

पालक्या वास्तुकाकारा छुरिका चीरितच्छदा ।
पालक्या वातला शीता भेदिनी श्लेष्मला गुरुः ।
विष्टम्भिनी मदश्वासरक्तपित्तकफापहा ॥ ४९ ॥

पालक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका, चीरितच्छदा ये पालकके नाम हैं, पालक-वातल है, शीतल है, भेदन है, कफकारक है, भारी है, विष्टंभी है और मद, श्वास, रक्तपित्त, कफ इनको नाशता है ॥ ४९ ॥

पोतकीनामगुणाः ।

पोतकी पोतका प्रोक्ता मत्स्या काली सुरङ्गिका ।
पोतकी शीतला स्निग्धा श्लेष्मला वातपित्तजित् ॥ ५० ॥

पोतकी, पोतका, मत्स्या, काली, सुरंगिका ये पोईके नाम हैं। पोई शीतल है, चिकनी है, कफको करती है और वातपित्तको जीतती है ॥ ५० ॥

अकण्ठ्या पिच्छिला निद्राशुक्रदा रक्तपित्तनुत्।
पोतक्या पोदिका दिव्या शुक्रदा रक्तपित्तजित् ॥ ५१ ॥

पोई-कंठको हित नहीं है, पिच्छिल है, नींद लाती है, वीर्यको उत्पन्न करती है तथा रक्तपित्तको जीतती है। पोतक्या, पोदिका ये नाम दूसरी पोईके हैं। यह वीर्यको देती है और रक्तपित्तको जीतती है ॥ ५१ ॥

लोणिकुटीरयोः (सलोनक) नामगुणाः।

लोणिकोक्ता बृहच्छोटी कुटीरस्तु कुटिञ्जरः।
दुन्दुरः स्याद्गुर्डीरीकः पिण्डी पिण्डीतकस्तथा ॥ ५२ ॥

लोणिका, बृहच्छोटी, कुटीर, कुटिंजर, दुंदुर, गुर्डीरीक, पिण्डी, पिण्डीतक ये लोनियां और कुटीरके नाम हैं ॥ ५२ ॥

लोणी रूक्षा गुरुः शीता सरा विष्टम्भिनी पटुः।
दोषला मधुरा पाके तद्वत्कुट्टीरहृद्गुरुः।
लोणिका वातला श्वासकासश्लेष्मविषापहा ॥ ५३ ॥

सलोनक (लोनियां) रूखा है, भारी है, शीतल है, सर है, विष्टंभ करता है, सलोना है, दोषको उपजाता है और पाकमें मीठा है। कुंटीरमेंभी येही गुण हैं। यह हृद्रोगको हरता है और भारी है। लोनियां वातको करता है और श्वास, खांसी, कफ, विष इनको हरता है ॥ ५३ ॥

सुषेणनामगुणाः।

सुषेणस्तु स्वस्तिकः स्याद्बलदस्तिलपर्णिका।
सुनिषण्णो हिमो ग्राही मेहदोषत्रयापहः ॥ ५४ ॥

सुषेण, स्वस्तिक, बलद, तिलपर्णिका, सुनिषण्ण ये सुनिषण्णक शाकके नाम हैं। स्वस्तिक शाक शीतल है, मलको बांधती है और प्रमेह तथा त्रिदोषको हरती है ॥ ५४ ॥

तिलपर्णीनामगुणाः।

तिलपर्णी हिमा रुच्या ग्राहिणी कफपित्तजित् ॥ ५५ ॥

तिलपर्णी शीतल है रुचिको उपजाती है, मलको बांधती है और कफपित्तको जीतती है ॥ ५५ ॥

सूक्ष्मपत्रनामगुणाः ।

सूक्ष्मपत्रस्तीक्ष्णशाको धनुःपुष्पः सुबोधकः ।
चौरकः कफवातघ्नः सुतीक्ष्णो नातिपित्तलः ॥ ५६ ॥

सूक्ष्मपत्र, तीक्ष्णशाक, धनुःपुष्प, सुबोधक, चौरक ये सूक्ष्मपत्रके नाम हैं। सूक्ष्मपत्र-कफवातको नाशता है, बहुत तेज है और अत्यंत पित्तल नहीं है ॥ ५६ ॥

टुंटुकनामगुणाः ।

टुंटुको विटपो रूक्षः स्वरपत्रस्त्वरण्डजः ।
टुण्टुको वातलो रूक्षो विष्टम्भी कफनाशनः ॥ ५७ ॥

टुंटुक, विटप, रूक्ष, स्वरपत्र, अरंडज ये नाम टुंटुकके हैं। टुंटुक वातको करता है, रूखा है, विष्टंभ करता है और कफको नाशता है ॥ ५७ ॥

वल्लीनामगुणाः ।

घनागमभवा वल्ली प्रसिद्धो नाम बस्तिजः ।
घनागमस्त्रिदोषघ्नस्तत्पुष्पं मधुरं सरम् ।
फलं तस्य सरं वृष्यमामं मिष्टं तु वातलम् ॥ ५८ ॥

घनागमभवा, वल्ली, प्रसिद्ध, बस्तिज ये घनवल्लभाके नाम हैं। यह त्रिदोषको नाशती है। इसका फूल मीठा है और सर है। तथा फल सर है और धातुको पुष्ट करता है। इसका कच्चा फल मधुर है और वातको उपजाता है। यह वर्षातमें होती है, इसको वसिवा भी कहते हैं ॥ ५८ ॥

शीतवारनामगुणाः ।

शीतवारः कुरण्डी स्यान्नाडी तु नलिका मता ।
शीतवारः सरो वृष्यः शोफघ्नो वातपित्तलः ॥ ५९ ॥

शीतवार, कुरंडी ये कुरंडके नाम हैं। नाडी, नलिका ये नलिकाके नाम हैं। कुरंड सर है, हलका है, धातुको पुष्ट करता है, शोजाको नाशता है तथा वात और पित्तको करता है ॥ ५९ ॥

नाडी सरा लघुः शीता पित्तनुत् कफवातला ॥ ६० ॥

नालीका शाक सर है, हलका है, शीतल है, पित्तको दूर करता है, कफ और वातको करता है, यह सजल स्थानमें होता है ॥ ६० ॥

सर्षपकौसुम्भयोर्नामगुणाः ।

सार्षपं सर्षपोद्भूतं कौसुम्भं कुंकुमोद्भवम् ।

सार्षपं बद्धविण्मूत्रं गुरूष्णं वा त्रिदोषनुत् ।
कौसुम्भं स्वादु रूक्षोष्णं कफजित्पित्तलं लघु ॥ ६१ ॥

सार्षप और सर्षपोद्भूत ये सरसोंके शाकके नाम हैं । कौसुंभ, कुंकुमोद्भव ये कुसुंभके शाकके नाम हैं । सरसोंका शाक विष्ठा मूत्रको बांधता है, भारी है, गर्म है और त्रिदोषको हरता है । कुसुंभका शाक स्वादु है, रूखा है, गर्म है, कफको जीतता है, पित्तको करता है और हलका है ॥ ६१ ॥

चणकशाक-कलायशाक-नामगुणाः ।

चणकं शाकमुद्दिष्टं दुर्जरं कफवातनुत् ।
कलायशाकं भेदि स्याल्लघु पित्तकफापहम् ॥ ६२ ॥

चणक-शाक ये चनाशाकके नाम हैं । चनेका शाक देरमें जीर्ण होता है तथा कफ और वातको करता है । कलाय (मटर) का शाक भेदन है, हलका है तथा पित्त और कफको जीतता है ॥ ६२ ॥

चाङ्गेरीनामगुणाः ।

चाङ्गेरी त्वाम्लिका क्षुद्राम्लिका चुक्रा चतुश्छदा ।
चाङ्गेरी दीपनी रुच्या लघूष्णा कफवातजित् ।
सपित्तला ग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी ॥ ६३ ॥

चांगेरी, आम्लिका, क्षुद्राम्लिका, चुक्रा, चतुश्छदा, ये नाम चूका शाकके हैं । चूका अग्निको जगाता है, रुचिको उपजाता है, हलका है, गर्म है, कफवातको जीतता है, पित्तको करता है और ग्रहणीरोग, बवासीर, कुष्ठ अतिसारको नाशता है ॥ ६३ ॥

कासमर्दनामगुणाः ।

कासमर्दः कर्कशः स्याज्जरणोऽजगरस्तथा ।
कासमर्दो लघुः कण्ठ्यः कासदोषविषास्रजित् ॥ ६४ ॥

कासमर्द, कर्कश, जरण, अजगर ये कसौंदीके नाम हैं । कसौंदी-हलकी है, कंठमें हित है और खांसी, त्रिदोष, विष, रक्तविकारको नाशती है ॥ ६४ ॥

गृञ्जननामगुणाः ।

गृञ्जनः कटुकस्तीक्ष्णस्तिक्तोष्णो दीपनो लघुः ।
संग्राही रक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ॥ ६५ ॥

गाजर चर्परी है, तेज है, कडुवी है, गर्म है, अग्निको जगाती है, हलकी है,

मलको बांधती है और रक्तपित्त, बवासीर ग्रहणीरोग, कफ, वात इनको जीतती है ॥ ६५ ॥

मूलकनामगुणाः ।

मूलकं हस्तिदन्तं च बालमूलं कफान्तकम् ।
मूलकं वातलं रुच्यं स्वर्यं गं पाचनं लघु ॥ ६६ ॥

मूलक, हस्तिदंत, बालमूल, कफांतक ये मूलीके नाम हैं । मूली वात करती है, रुचिको उपजाती है, स्वरमें हित है, गर्म है, पाचन है और हलकी है ॥ ६६ ॥

हन्ति त्रिदोषजं श्वासगदाक्षिगलपीनसम् ।
स्निग्धसिद्धं तदेव स्याद्दोषत्रयविनाशनम् ॥ ६७ ॥

मूली त्रिदोषसे उपजे हुए उपद्रव, श्वास, आंखरोग, गलरोग, पीनस इनको नाशती है । घृतमें सिद्ध की हुई मूली तीनों दोषोंको नाश करती है ॥ ६७ ॥

शुष्कं तद्विविशोथघ्नं लघु दोषत्रयापहम् ।
तत्पुष्पं श्लेष्मपित्तघ्नं फलं वातकफापहम् ॥ ६८ ॥

सूखी मूली शोजेको हरती है, हलकी है और त्रिदोषको दूर करती है । मूलीका फूल, कफपित्तको हरता है और इसका फल वातकफको नाशता है ॥ ६८ ॥

करीरनामगुणाः ।

करीरको गूढपत्रः क्रकचो ग्रन्थिलो मतः ।
करीरः कटुको भेदी तीक्ष्णोष्णः कफवातजित् ॥ ६९ ॥

करीरक, गूढपत्र, क्रकच ग्रन्थिल ये करीरके नाम हैं । करीर चर्परा है, भेदी है, तेज है, गर्म है और कफवातको जीतता है ॥ ६९ ॥

व्रणशोथविषार्शोघ्नस्तत्पुष्पं कफपित्तजित् ।
फलं ग्राहि कषायोष्णं मधुरं श्लेष्मपित्तकृत् ॥ ७० ॥

करीर घाव, शोजा, विष, बवासीरको नाशता है । करका फूल कफपित्तको जीतता है, करका फल मलको बांधता है, कसैला है, गर्म है, मीठा है, कफ और पित्तको करता है ॥ ७० ॥

सौभाञ्जननामगुणाः ।

शिग्रुः सौभाञ्जनः कृष्णगन्धः स्याद्बहुलच्छदः ।
रक्तोऽन्यो मधुशिग्रुस्तु श्वेतोऽन्यो हरितच्छदः ॥ ७१ ॥

शिग्रु, सौभांजन, कृष्णगन्ध, बहुलच्छद ये नाम सहँजना (सहांजना) के हैं ।

दूसरा लाल सहँजना होता है । तीसरा मधुशिग्रु हरितच्छद इन नामोंवाला होता है ॥ ७१ ॥

सौभांजनभवं बीजं तीक्ष्णोष्णं चक्षुषे हितम् ।
शिग्रुस्तीक्ष्णो लघुर्ग्राही वह्निदः कफवातजित् ।
तीक्ष्णोष्णो विद्रधिप्लीहव्रणघ्नो रक्तपित्तकृत् ॥ ७२ ॥

सहँजनेका बीज तेज है, गर्म है और नेत्रोंको हितकारक है, सहँजना तेज है, हलका है, मलको बांधता है, अग्निको देता है, कफ वातको जीतता है, गर्म है और विद्रधि, तिल्लीरोग, घावको नाशता है तथा रक्तपित्तको करता है ॥ ७२ ॥

मधुशिग्रुर्गुणैस्तद्वद्विशेषाद्दीपनः सरः ।
तत्पुष्पं लघु संग्राहि वातलं कफशोथजित् ।
फलं ग्राहि कषायोष्णं मधुरं श्लेष्मपित्तहृत् ॥ ७३ ॥

मीठे सहँजनेमेंभी ये ही गुण हैं । विशेषतासे दीपन है और दस्तावर है । मीठे सहँजनेका फूल हलका है, मलको बांधता है, वातको करता है, कफ और शोजाको जीतता है, मीठे सहँजनेका फल मलको बांधता है, कषैला है, गर्म है, मीठा है और कफपित्तको जीतता है ॥ ७३ ॥

लशुननामगुणाः ।

लशुनः स्यादुग्रगन्धी यवनेष्टो रसोनकः ।
गृञ्जनोऽन्यो महाकन्दो जर्जरो दीर्घपत्रकः ॥ ७४ ॥

लशुन, उग्रगंधी, यवनेष्ट, रसोनक, गृंजन, महाकंद, जर्जर, दीर्घपत्रक ये नाम लहसनके हैं ॥ ७४ ॥

लशुनो बृंहणो वृष्यः स्निग्धोष्णः पाचनः सरः ।
भग्नसन्धानकृत्केश्यो गुरुः पित्तास्रबुद्धिदः ॥ ७५ ॥

लहसन धातुको पुष्ट करता है, वीर्यको बढाता है, चिकना है, गर्म है, पाचन है, सर है, टूटे हुएको जोडता है, बालोंको बढाता है, भारी है, पित्तरक्तकारक और बुद्धिप्रद है ॥ ७५ ॥

रसायनं कफश्वासकासगुल्मज्वरारुचीः ।
हन्ति शोथप्रमेहार्शःकुष्ठशूलानिलक्रिमीन् ।
तत्पत्रं मधुरं क्षारं नालो मधुरपित्तलः ॥ ७६ ॥

तथा बुढापेको दूर करता है और कफ, श्वास, खांसी, गुल्म, ज्वर, अरुचि,

शोजा, प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, शूल, वात, कृमि इनको नाशता है । लहसनका पत्ता मीठा है, खारा है, लहसनकी नाल मीठी है और पित्तको उपजाती है ॥ ७६ ॥

पलाण्डुनामगुणाः ।

पलाण्डुर्धवलाख्यश्च दुर्गन्धो मुखदूषकः ।
पलाण्डुस्तद्गुणैस्तुल्यः कफकृन्नातिपित्तलः ।
अनुष्णः केवलं वातं स्वादुः पाके रसाञ्जयेत् ॥ ७७ ॥

पलांडु, धवलाख्य, दुर्गंध, मुखदूषक ये नाम प्याजके हैं । इसमें लहसनके गुण हैं परन्तु कफको करता है, अत्यन्तपित्तको नहीं करता है, गर्म नहीं है, केवल वातको और रसोंको जीतता है तथा पाकमें स्वादु ह ॥ ७७ ॥

गृञ्जननामगुणाः ।

गृञ्जनः पित्तलो ग्राही तीक्ष्णोऽर्शोरोगनाशनः ॥ ७८ ॥

गृंजन अर्थात् लालवर्णका लहसुन पित्तको करती है, मलको बांधती है, तेज है, बवासीरको नाशती है ॥ ७८ ॥

सूरणद्वयनामगुणाः ।

सूरणः कन्दलः कन्दो गुदामयहरोऽपरः ।
वल्लकन्दः सुरेन्द्रः स्याद्वन्योऽन्यश्चित्रकन्दकः ॥ ७९ ॥

सूरण, कंदल, कन्द, गुदामयहर ये जिमीकंदके नाम हैं । दूसरा वल्लकन्द, सुरेन्द्र, तीसरा वनमें होनेवाला,चित्रकन्दक नामवाला होता है ॥ ७९ ॥

सूरणो दीपनो रूक्षः कषायः कटुकण्डुकृत् ।
विष्टम्भी विशदो रुच्यः कफार्शःकृन्तनो लघुः ॥ ८० ॥
नालं सूरणक रुच्यं कफवातहरं लघु।
अर्शसां तु विशेषेण हितं कामाग्निदीपनम् ॥ ८१ ॥
सूरणो दीपनो रूक्षःकफार्शः कृन्तनो लघुः ।
तद्वदन्यो वज्रकन्दः कफघ्नः पित्तरक्तकृत् ॥ ८२ ॥

जिमीकन्द-अग्निको जगाता है, रूखा है, कषैला है, चर्परा है, खाज करता है, विष्टंभ करता है, फैलनेवाला है, रुचिको उपजाता है और कफ, बवासीरको काटता है तथा हलका है । जिमीकन्दकी नाली रुचिकारक, कफवातनाशक, हलकी विशेषतासे अर्शनाशक, कामाग्निदीपक है वनमें होनेवाले जिमीकन्दमें भी यही गुण हैं, वह वज्रकन्द कहाता है, यह कफको नाशता है और पित्तरक्तको करता है ॥ ८०-८२ ॥

अस्थिशृङ्खलिकानामगुणाः ।

अस्थिशृङ्खलिका वज्री ग्रन्थिमानस्थिसंहतिः ।
अस्थिशृङ्खलिका वृष्या श्लेष्मला मधुरा हिमा ।
अस्थिसन्धानकृद्बल्या पित्तरक्तानिलापहा ॥ ८३ ॥

अस्थिशृंखलिका, वज्री, ग्रंथिमान्, अस्थिसंहति ये हडसंहारीके नाम हैं । हडसंहारी वीर्यको बढाती है, कफको करती है, मीठी है, शीतल है, हड्डीको जोडती है, बलको करती है, पित्त, रक्त और बातको नाशती है ॥ ८३ ॥

वाराहीनामगुणाः ।

वाराही मागधी गृष्टिस्तत्कन्दः सौकरःकिटिः ।
सौकरः पित्तलो वर्ण्यः स्वादुस्तिक्तो रसायनः ।
आयुः शुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहः ॥ ८४ ॥

वाराही, मागधी, गृष्टि, वाराहीकन्द, सौकर, किटि ये वाराहीकन्दके नाम हैं । वाराहीकन्द पित्तको करता है, वर्णको निखारता है, स्वादु है, कडुवा है, बुढापेको दूर करता है और आयु, वीर्य, जठराग्नि इनको बढाता है तथा प्रमेह, कफ, कुष्ठ, बात इनको नाशता है ॥ ८४ ॥

मुसलीनामगुणाः ।

मुसली तालपत्री स्यात्खलिनी तालमूलिका ।
मुसली बृंहणी बल्या वीर्योष्णाऽर्शोनिलापहा ॥ ८५ ॥

मुसली, तालपत्री, खलिनी, तालमूलिका ये मुसलीके नाम हैं । मुसली–धातुको पुष्ट करती है, बल करती है, वीर्यमें गर्म है, बवासीर और वातको नाशती है ॥ ८५ ॥

कंचुकनामगुणाः ।

कंचुका पीलुनी पीलुः फेलुका दलशालिनी ।
कंचुकं वातलं ग्राहि दीपनं कफपित्तनुत् ॥ ८६ ॥

कंचुका, पीलुनी, पीला, फेलुका, दशशालिनी ये कंचुकके नाम हैं । कंचुक वातको करता है, मलको बांधता है, अग्निको जगाता है और कफ–पित्तको दूर करता है ॥ ८६ ॥

(खुंब) भूच्छत्रनामगुणाः ।

भूच्छत्रं पृथिवीकन्दः शिलीन्ध्रं बलकं मतम् ।
भूच्छत्रं शीतलं बल्य गुरु भेदि त्रिदोषजित् ॥ ८७ ॥

भूच्छत्र, पृथिवीकन्द, शिलीन्ध्र, बलक ये भूच्छत्रके नाम हैं। भूच्छत्र शीतल है, बल करता है, भारी है, भेदन है और त्रिदोषको जीतता है, भूच्छत्र वर्षातमें पृथ्वीपर छत्राकारका होता है ॥ ८७ ॥

स्थूलकन्द-मानकन्दनामगुणाः ।

स्थूलकन्दो ग्रामकन्दो मानकन्दो महाच्छदः ।
स्थूलकन्दो गुरुः श्लेष्मवातलः पित्तशोथजित् ।
मानकः शीतलः स्वादुः पित्तरक्तहरो गुरुः ॥ ८८ ॥

स्थूलकन्द, ग्रामकन्द, और मानकन्द, महाच्छद ये नाम स्थूलकन्द और मानकन्दके हैं। स्थूलकन्द, भारी है, कफ-वातको करता है, पित्त और शोजेको हरता है । मानकन्द शीतल है, स्वादु है, पित्त रक्तको हरता है और भारी है ॥ ८८ ॥

कसरुशृङ्गाटकयोर्नामगुणाः ।

कसेरुकं स्वल्पकन्दं बृहद्राजं कसेरुजम् ।
शृङ्गाटो जलकन्दः स्यात्त्रिकोणस्त्रिकटुः स्मृतः ॥ ८९ ॥

कसेरुक, स्वल्पकन्द, बृहद्राज, कसेरुज ये कसेरुके नाम हैं, और शृङ्गाट, जलकन्द, त्रिकोण, त्रिकुटु ये सिंगाडेके नाम हैं ॥ ८९ ॥

कसेरुकं हिमं स्वादु गुरु पित्तास्रदाहजित् ।
ग्राहि पित्तानिलश्लेष्मप्रदं शृङ्गाटकं तथा ॥ ९० ॥

कसेरु शीतल है, स्वादु है, भारी है, और पित्तरक्त और दाहको जीतता है। सिंगाडा (सिंघाडा) मलको बांधता है, और पित्त, वात, कफ इनको उत्पन्न करता है ॥ ९० ॥

पिण्डालुनामगुणाः ।

पिण्डालुको वृष्यगन्धो मध्वालुः स्यात्तु रोमशम् ।
शङ्खालुश्चित्रसंङ्काशः काष्ठालुः स्वल्पकाष्ठकम् ॥ ९१ ॥
हस्तालुकं महाकाष्ठं रक्तकन्दं महाफलम् ।
आलुकं शीतलं सद्यो विष्टम्भि मधुरं सरम् ॥ ९२ ॥

पिंडालुक, वृष्यगन्ध, मध्वालु, रोमश, शंखालु, चित्रसंकाश, काष्ठालु, स्वल्पकाष्ठक ॥ हस्तालुक, महाकाष्ठ, रक्तकन्द, महाफल ये आलुवोंके नाम हैं। आलु शीतल है, तत्काल विष्टंभ करते हैं, मीठे हैं, और सारक हैं ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

सूक्ष्मं च मूत्रलं रूक्षं दुर्जरं रक्तपित्तनुत् ।
कफानिलकरं बल्यं वृष्यं स्तन्यविवर्धनम् ॥ ९३ ॥

तथा सूक्ष्म है, मूत्रको उपजाता है, रूखा है, देरमें जीर्ण होता है, रक्तपित्तको दूर करता है, कफ वातको हरता है, बल करता है, वीर्यको उपजाता है, और दूधको बढाता है ॥ ९३ ॥

पिण्डालुकमभिष्यन्दि तिक्तोष्णं दोषलं गुरु ।
मध्वालुकं पित्तकरं कटु पाके कफापहम् ॥ ९४ ॥

और पिण्डालु कफ करता है, गर्म है, दोषोंको उपजाता है और भारी है । मध्वालु पित्तको करता है, पाकमें चर्परा है, और कफको नाश करता है ॥९४॥

केयूरनामगुणाः ।

केयूरं स्वल्पविटपं कन्दलः स्वादुकन्दलः ।
केयूरं शीतलं ग्राहि पित्तलं कफवातजित् ॥ ९५ ॥

केयूर, स्वल्पविटप, कन्दल, स्वादुकन्दल ये केयूरके नाम हैं । केयूर शीतल है, मलको बांधता है, पित्तको करता है, कफवातको जीतताहै ॥ ९५ ॥

अतिजीर्णमकालोत्थं रूक्षं स्निग्धमभूमिजम् ।
जरठं कोमलं वातशीतपित्तानिलाहतम् ॥ ९६ ॥

बहुत पुराना, विना समय उपजा, रूखा, चिकना, बुरीपृथिवीपर उपजा, कठोर, कोमल, शीत और गर्मीसे दूषित हुआ शाक नहीं खाना चाहिये ॥ ९६ ॥

शुष्कं शाकं च सकलं नाश्नीयान्मूलकैर्विना ॥ ९७ ॥

और मूलीके विना संपूर्ण सूखे शाकोंको भी नहीं खावे ॥ ९७ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णः कूष्माण्डप्रभृतिरयं च शाकवर्गः ९८

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ शाकवर्गः सप्तमः ॥ ७ ॥

राजाओंमें जो मुख्य प्रधान कटारमल्ल हुआ उस मदनपाल राजाके रचेहुए इस मदनविनोद नामक ग्रंथमें पेठा आदिशाकवर्ग समाप्त हुआ ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ वैद्यरत्नपं०-रामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनीभाषाटीकायां शाकवर्गः सप्तमः ॥ ७ ॥

---

१ सृष्टमूत्रमलम् । इति पाठान्तरम् ।

करेण संगृह्य कुचौ कपोले मात्राऽङ्गुलीभिर्मृदु ताड्यमानम् ।
मुक्तं त्वराजानुबलेन पानं नमामि कृष्णं नवनीतचोरम् ॥ १ ॥

हाथसे स्तनोंको ग्रहणकर दूध पीते हुए और माताकी अंगुलियोंसे गालोंपर मृदुमृदु ताडित होते हुए गोडेके बलसे शीघ्र छुटेहुए मक्खनके चोर श्रीकृष्णको प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

पानीयनामगुणाः ।

पानीयं जीवनं नीरं कीलालममृतं जलम् ।
आपोऽम्भस्तोयमुदकं पाथोऽम्बु सलिलं पयः ॥ २ ॥

पानीय, जीवन, नीर, कीलाल, अमृत, जल, आप, अंभ, तोय, उदक, पाथ, अंबु, सलिल, पय ये पानीके नाम हैं ॥ २ ॥

पानीयं शीतलं हृद्यं हन्ति पित्तविषश्रमम् ।
दाहाजीर्णश्रमच्छर्दिमदमूर्च्छामदात्ययान् ॥ ३ ॥

पानी शीतल है, दिलको ताकत देता है, पित्त, विष, श्रम, दाह अजीर्ण, परिश्रम, छर्दि, मद, मूर्च्छा, मदात्यय इनको नाशता है ॥ ३ ॥

शीतलजलनिषेधः ।

शीतलं स्तिमिते कोष्ठे गलरोगे नवज्वरे ।
ग्रहणीपीनसाध्मानहिक्कागुल्मेषु विद्रधौ ॥ ४ ॥
कासमेहारुचिश्वासपाण्डुवातामयेषु च ।
पार्श्वशूले स्नेहपीते सद्यः शुद्धौ न शस्यते ॥ ५ ॥

स्तिमितरोग, कोष्ठरोग, गलरोग, नवज्वर, ग्रहणी, पानस, आध्मान, हिचकी, गुल्म, विद्रधि, खांसी, प्रमेह, अरुचि, श्वास, पांडु, वातरोग, पसलीशूल, स्नेहपान, तत्काल वमन, जुलाब आदि इनमें शीतल पानी अच्छा नहीं है ॥ ४ ॥ ५ ॥

चतुर्विधजलम् ।

दिव्यं तुषारज धारं करिहैममिति स्मृतम् ।
चतुर्विधं वरं दीव्यं लघुत्वात्तत्पुनर्द्विधा ॥ ६ ॥

दिव्य, तुषारज, धार, करिहैम इन भेदोंसे पानी चार प्रकारका होता है । इनमें हलकेपनसे दिव्य उत्तम है और वह दिव्य भी दो प्रकारका है ॥ ६ ॥

१- जातमिति पाठः

द्विविधाकाशजलम्।

गाङ्गं समुद्रजं चेति गाङ्गं श्रेष्ठतमं स्मृतम्।
आश्विने मासि सामुद्रं गुणैर्गाङ्गवदादिशेत्॥ ७॥
स्थापिते हेमजे पात्रे राजते मृन्मयेऽपिवा।
शाल्यन्नं येन संसिक्तं भवेदक्लेदि वर्णवत्।
तज्जलं शीतलं ज्ञेयं दोषत्रयविषापहम्॥ ८॥

गांग (गंगाजल) और समुद्रज भेदसे आकाशका जल दो प्रकारका होता है, इनमें गांग पानी उत्तम है। आश्विन महीनेमें वर्षे हुए पानीको सोना चांदी वा मिट्टीके पात्रमें भरकर धर रक्खे, शालिचावल जिस जलमें रखनेसे यदि क्लेद रहित और शुद्ध वर्णयुक्त रह हो उस पानीको शीतल गांगजल जानना, वह त्रिदोष और विषको नाशता है॥ ८॥

तद्गाङ्गं सर्वदोषघ्नं ज्ञेयं सामुद्रमन्यथा।
सक्षारं लवणं मिश्रं शुक्रदृष्टिबलापहम्॥ ९॥

वही गांग पानी पीने योग्य है, सब दोषोंको नाशता है। इससे विपरीत सामुद्र पानी होता है। सो खारसहित और नमक मिला हुआ होता है। यह वीर्य, दृष्टि, बलको नाशता है॥ ९॥

रसायनं तृषामूर्च्छातन्द्रादाहक्लमापहम्।
सौम्यं रसायनं दिव्यं महानिद्रात्रिदोषजित्॥ १०॥

आकाशसे वर्षा हुआ गांग पानी बुढापेको दूर करता है और तृषा, मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, तथा ग्लानिको नाशता है। आकाशसे वर्षा हुआ पानी सुन्दर है, बुढापेको दूर करता है, बहुत नींद और त्रिदोषको जीतता है॥ १०॥

आश्वासजननं ह्लादि श्रमघ्नंमतिबुद्धिकृत्।
तदेव भूमिपतितं भौममित्यभिधीयते॥ ११॥

यह सुन्दर श्वासको उपजाता है, आनन्द देता है, परिश्रमको नाशता है और अत्यन्त बुद्धिको देता है। आकाशका पानी पृथिवी में पडके भौम नामक कहा जाता है॥ ११॥

अन्यविविधजलानां गुणाः।

दिव्याभावे तु तत्तोयं प्रविचार्य गुणागुणान्।
कौपं श्लेष्महरं क्षारं पित्तलं दीपनंलघु॥ १२॥

आकाशका पानी नहीं मिले तो गुण दोष विचारकर भौम पानी यानी भूमिपरका लेना । कूँएका पानी कफको हरता है, खारा है, पित्तको उपजाता है, अग्निको जगाता है और हलका है ॥ १२ ॥

ताडागं वातलं स्वादु तुवरं कटुपाकि च ।
वाप्यं पित्तकरं क्षारं कटु वातकफापहम् ॥ १३ ॥

तलावका पानी वातको उपजाता है, स्वादु है, कषैला है और पाकमें चर्परा है । बावडीका पानी पित्तको करता है, खारा है, चर्परा है, वात और कफको हरता है ॥ १३ ॥

नैर्झरं लेखनं हृद्यं कफघ्नं दीपनं लघु ।
ह्रादं च लघु पित्तघ्नमविदाह्यतिदीपनम् ॥ १४ ॥

झरनेका पानी लेखन है, दिलको ताकत देता है, कफको नाशता है, दीपन है और हलका है । कुण्डका पानी हलका है, पित्तका नाशक है, दाहको नहीं करता है और अग्निको अत्यन्त जगाता है ॥ १४ ॥

चौड्यमग्निप्रदं[1] रूक्षं स्वादु श्लेष्मकरं न च ।
नादेयं दीपनं रूक्षं वातलं लघु लेखनम् ॥ १५ ॥

चोवाका पानी अग्निको उत्पन्न करता है, रूखा है, स्वादु है और कफको नहीं करता है । नदीका पानी अग्निको जगाता है, रूखा है, वातको करता है, हलका और लेखन है ॥ १५ ॥

सारसं मधुरं बल्यं तृष्णाघ्नं तुवरं लघु ।
कैदारं स्वाद्वभिष्यन्दि विपाके गुरु दोषलम् ॥ १६ ॥

सरोवरका पानी मीठा है, बलको करता है और तृषाको नष्टकरता है, कषैला है और हलका है । जंगलके जोहडका पानी स्वादु है, कफको करता है, पाकमें भारी है और दोषोंको उत्पन्न करता है ॥ १६ ॥

पाल्वलं तद्वदुद्दिष्टं विशेषात्सर्वदोषकृत् ।
तौषारं वातलं शीतं रूक्षं पित्तकफापहम् । ॥ १७ ॥

पालके पानीमें भी येही गुण हैं, विशेषकर सब दोषोंको उत्पन्न करता है । ओसका पानी वातको करता है, शीतल है, रूखा है, पित्त और कफको नशता है ॥ १७ ॥

---

१ तत् पेयमिति पाठोऽन्यत्र पुस्तके ।

आकाशजलगुणाः ।

धारं भूमावपतितं दिव्यं तत्सर्वदोषनुत् ।
नैर्झरं गुरु वै प्रोक्तं विशदं कफवातनुत् ॥ १८ ॥

आकाशसे वर्षे पानीकी धार पृथिवीपर न गिरने पावे और पात्र आदिमें ग्रहण की जावे, वह दिव्य पानी सब दोषोंको दूर करता है । पहाडसे झिरा पानी भारी कहा है, हृद्य है, कफ और वातको दूर करता है ॥ १८ ॥

हैमजलगुणाः ।

हैमं गुरुतरं शीतं पित्तनुद्वातवर्द्धनम् ।
चन्द्रकान्तजलं रूक्षं लघु पित्तविषास्त्रनुत् ॥ १९ ॥

बर्फका पानी अत्यन्त भारी है, शीतल है, पित्तको दूर करता है और वातको बढाता है, चन्द्रकान्त पानी रूखा है, हलका है, और पित्त, विष, रक्तको दूर करता है ॥ १९ ॥

हंसोदकगुणाः ।

दिवाकरकरैर्जुष्टं निशि शीतकरांशुभिः ।
ज्ञेयं हंसोदकं नाम स्निग्धं दोषत्रयापहम् ॥ २० ॥

दिनमें सूर्यकी किरणोंसे युक्त और रात्रिमें चन्द्रमाकी किरणोंसे युक्त जो पानी होता है उसको हंसोदक जानना । यह चिकना है और त्रिदोषको नाश करता है ॥ २० ॥

अनभिष्यन्दि निर्दोषमन्तरिक्षजलोपमम् ।
बल्यं रसायनं मेध्यं शीतं लघु सुधोपमम् ॥ २१ ॥

तथा अभिष्यंदी नहीं है और दोषोंसे रहित है । आकाशसे वर्षेहुए पानीके समान है, बुढापेका दूर करता है, बुद्धिको बढाता है, शीतल है, हलका और अमृतके समान है ॥ २१ ॥

ऋतुभेदेन जलभेदाः ।

वर्षासु दिव्यं पानीयमौद्भिदं वा प्रशस्यते ।
शरत्स्वमलमुदकमगस्त्योदयनिर्विषम् ॥ २२ ॥

वर्षाऋतुमें आकाशका पानी अथवा पृथिवीका पानी श्रेष्ठ है । शरद ऋतुमें अगस्त्य ताराके उदयसे विषरहित हुआ और स्वच्छ पानी उत्तम है ॥ २२ ॥

---

१ गुरु रूक्षं हि विशदं कफवातकृत् । इति पाठोऽन्यत्र ।

हेमन्ते सारसं तोयं ताडागं वा गुणावहम् ।
वसन्तग्रीष्मयोः कौप्यं वाप्यं नैर्झरमेव च ॥ २३ ॥

हेमन्त अर्थात् मङ्गसिर पौषमें सरोवरका पानी अथवा माघ फाल्गुनमें तालाबका पानी गुणदायक होता है । वसंत अर्थात् चैत्र वैशाख, ग्रीष्म–ज्येष्ठ आषाढ इन महीनोंमें कुएँका पानी, बावडीका पानी और झरनोंका पानी हित है, वर्षाऋतुमें चोएका पानी उत्तम है और विष्टंभ नहीं करता है ॥ २३ ॥

नदीजलगुणाः ।

नद्यः शीघ्रवहा लघ्व्यः सर्वा याश्चामलोदकाः ॥ २४ ॥

शीघ्र बहनेवाली, और निर्मल पानीवाली सब नदियाँ हलकी हैं ॥ २४ ॥

मन्दगाः कलुषा गुर्व्यो याश्च शैवालसेविताः ।
हिमवत्प्रभवाः पथ्या नद्योऽश्माहतपाथसः ॥ २५ ॥

मंद बहनेवाली, मैली और शिवालसे युतहुई नदियां भारी हैं । पत्थरोंसे आहत हुए पानीवाली और हिमालयसे उत्पन्न हुई नदियां पथ्य हैं ॥ २५ ॥

गङ्गाशतद्रूसरयूयमुनाद्या गुणोत्तमाः ।
ईषत्पित्तकराः स्वच्छाः पुण्या वातकफापहाः ॥ २६ ॥

गङ्गा, शतद्रू, सरयू, जमुना आदि नदियां उत्तम गुणोंवाली हैं किंचित् पित्तको करती हैं, स्वच्छ हैं, पवित्र हैं और वात तथा कफको नाश करती हैं ॥ २६ ॥

मलयाचलजा नद्यो लघ्व्यः शीघ्रवहा हिताः ।
कृतमालाताम्रपर्णीप्रमुखा विमलोदकाः ॥ २७ ॥

मलयाचलसे उपजी नदियां हलकी हैं, शीघ्र बहती हैं और हित हैं । कृतमाला और ताम्रपर्णी आदि नदियां निर्मलपानीवाली हैं ॥ २७ ॥

स्थिरापास्तत्प्रभूता या कुर्वन्ति श्लीपदापचीः ।
शोथपादशिरःकण्ठगलरोगार्बुदक्रिमीन् ॥ २८ ॥

स्थिर पानीवाली और मलयाचलसे उपजी नदियां श्लीपद, अपची, शोजा, पादरोग, शिरोरोग, कंठरोग, गलरोग, अर्बुद और कृमिरोगको उत्पन्न करती हैं ॥२८॥

सह्यशैलभवा नद्यो वेणीगोदावरीमुखाः ।
कुर्वन्ति प्रायशः कुष्ठमीषद्वातकफापहाः ॥ २९ ॥

सह्यपर्वतसे निकली वेणी, गोदावरी, आदि नदियाँ प्रायः खाज, दाद आदि कुष्ठ रोगको उत्पन्न करती हैं और कुछेक, वात, कफ, इनको नाशती है ॥ २९ ॥

विन्ध्याचले भवाः शिप्रारेवाद्याः पाण्डुकुष्ठदाः ।
पारियात्रोद्भवाः प्रोक्ता द्विधा चर्मण्वतीमुखाः ॥ ३० ॥

विंध्याचलसे निकली शिप्रा रेवा आदि नदियाँ पांडु और दाद आदि कुष्ठको पैदा करती हैं। पारियात्रपर्वतसे निकली चम्मल आदि नदियाँ ॥ ३० ॥

पथ्यास्तडागजास्तत्र त्रिदोषघ्न्यो बलापहाः ।
दरीजाः कुष्ठकण्ड्वग्निश्लेष्मश्लीपदरोगदाः ॥ ३१ ॥

और जो तालावसे निकली हुई नदियां हैं, वे पथ्य हैं त्रिदोषको नाशती हैं और बलको हरती हैं। जो दरीसे निकली हैं वे कुष्ठ, खाज, मन्दाग्नि, कफ, श्लीपद इन रोगोंको करती हैं ॥ ३१ ॥

प्राच्यावन्त्यपराः पश्चाद्गुदजानि प्रकुर्वते ।
मरुजा मधुरा बल्या लघवोऽग्निप्रदाः परम् ॥ ३२ ॥

पूर्व और अवंत्यदेशकी नदियां गुदाके रोगोंको करती हैं, बागड देशसे निकली हुई नदियां मीठी हैं, बलको करती हैं, हलकी हैं और अग्निको चैतन्य करती हैं॥३२॥

पश्चिमाम्भोधिपतिता गोमतीनर्मदादयः ।
पथ्यावातास्रपित्तघ्न्यो बल्याः कण्डूकफापहाः ॥ ३३ ॥

पश्चिमके समुद्रमें पडनेवाली गोमती, नर्मदा आदि नदियां पथ्य हैं, वातरक्त, पित्त इनको नाशती हैं, बलको देती हैं तथा खाज और कफ हरनेवाली हैं ॥ ३३ ॥

दक्षिणाब्धिगता बल्याः पित्तघ्न्यः कफवातदाः ।
पूर्वाम्भोधिगहा नद्यो मन्दगा गुरवो घनाः ॥ ३४ ॥

दाक्षिणके समुद्रमें पडनेवाली नादियां बलको करती हैं, पित्तको नाशती हैं और कफवातको देती हैं। पूर्वके समुद्रमें पडनेवाली नदियां मंद चलती हैं, भारी हैं और घन हैं ॥ ३४ ॥

जलग्रहणकालः ।

भौमानामम्भसां प्रातः सर्वेषां ग्रहणं वरम् ।
नैर्मल्यं तत्र शैत्यं तत्तेषां स च परो गुणः ॥ ३५ ॥
भुक्त्यादौ सलिलं पीतं कार्श्यमन्दाग्निदोषकृत् ।
मध्येऽग्निदीपनं श्रेष्ठमन्ते स्थौल्यकफप्रदम् ॥ ३६ ॥

पृथिवीमेंसे निकले हुए सब पानी प्रभातमें ग्रहण करने योग्य हैं। इनमें भी जो

निर्मल और शीतल हो वह पानी बहुत उत्तम है । भोजनके आदिमें पियाहुआ पानी शरीरका माडापन मन्दाग्निदोषको करता है । भोजनके मध्यमें पियागया पानी अग्निको जगाता है, अत्यन्त उत्तम है । भोजनके अन्तमें पिया हुआ पानी मोटाई और कफको देता है ॥ ३५-३६ ॥

विविधप्रकारेण जलपानविधिः ।

जीवनं जीविनां जीवो जगत्सर्वं तु तन्मयम् ।
ततोऽत्यन्ततया सुज्ञैर्न क्वचिद्वारि वार्यते ॥ ३७ ॥

पानीसे जीवन रहता है और संपूर्ण जगत् पानीरूप है, इसलिये बुद्धिमान् जलका अत्यन्त निषेध कहीं भी न करे ॥ ३७ ॥

पानीयं प्राणिनां प्राणा विश्वमेव हि तन्मयम् ।
अतोऽत्यन्तनिषेधेऽपि न क्वचिद्वारि वार्यते ॥ ३८ ॥

प्राणियोंका प्राण पानी है, संसार पानीसे उपजता है, इस कारणसे अत्यन्त निषेधमें भी कहीं पानी वर्जित नहीं कियाजाता ॥ ३८ ॥

क्वचिदुष्णं क्वचिच्छीतं क्वचित्क्वथितशीतलम् ।
क्वचिदन्यसमायुक्तं न क्वचिद्वारि वर्जयेत् ॥
पानीयं न तु पानीयं पानीयं च प्रदेशयेत् ।
अजीर्णे क्वथितं चामे पक्केऽजीर्णे च निर्मलम् ॥ ३९ ॥

कहीं गर्म, कहीं शीतल, कहीं औटाया हुआ, कहीं अन्य द्रव्यसे सिद्ध कियाहुआ पानी देना चाहिये । अजीर्णमें और आममें औटाया हुआ पानी और पके हुए अजीर्णमें निताराहुआ पानी देना चाहिये ॥ ३९ ॥

तृषितस्तु विदग्धेऽन्ने यः पिबेच्छीतलं जलम् ।
विदाहः प्रशमं याति शेषमन्नं च जीर्यति ॥ ४० ॥

विदग्ध अजीर्णमें तृषावाला मनुष्य शीतल पानीको पीवे तो उसका दाह शांत हो और शेष रहा अन्न जीर्ण हो जावे ॥ ४० ॥

आनूपादि जलम् ।

आनूपं दोषकृद्वारि प्रायोऽभिष्यन्दि निन्दितम् ।
जाङ्गलं हन्ति सकलं दोषमग्निप्रदीपनम् ।
साधारणं हिमं स्वादु तृष्णाघ्नं हर्षदं लघु ॥ ४१ ॥

अनूप देशका पानी दोषोंको करता है, कफको उपजाता है और निंदित है।

जांगलदेशका पानी संपूर्ण दोषोंको नाशता है और अग्निको जगाता है। साधारण देसका पानी शीतल है, स्वादु है, तृषाको नाशता है, आनन्द देता है तथा हलका है ॥ ४१ ॥

अपेयजलम् ।

वर्षासु योऽवगाहेत पिबेदथ नवं पयः।
पर्णादिदुष्टं लभते स बाह्याभ्यन्तरामयान् ॥ ४२ ॥

वर्षाऋतुके पानीमें जो स्नान करता है और नया पानी पीता है, पत्तों आदिसे युक्त हुए पानीको पीता है उस मनुष्यके शरीरमें भीतर और बाहरके रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ४२ ॥

कलुषं छन्नमम्भोजपर्णनीलतृणादिभिः।
दुष्टगन्धाद्यसंस्पृष्टं सूर्याचन्द्रमसांशुभिः ॥ ४३ ॥

मैला और कमलके पत्ते शैवाल तृण आदिसे आच्छादित, बुरे हैं गन्धादि गुण जिसमें और सूर्य चन्द्रमाकी किरणोंसे असंस्पृष्ट ॥ ४३ ॥

व्यापन्नमिति जानीयात्सर्वदोषप्रकोपकृत्।
तोयं तद्वर्जयेत्सर्वं यच्चान्यत्तुसमुद्भवम् ॥ ४४ ॥

पानी व्यापन्न जानना। यह सब दोषोंके कोपको करता है। जो विना समय वर्षा हुआ पानी हो वह पानी नहीं पीना चाहिये ॥ ४४ ॥

व्यापन्नजलशोधनविधिः ।

व्यापन्नमपि पानीयं क्वथितं सूर्यतापितम् ।
तप्तायःसूर्यसिकताग्रावादिष्वथ धारितम् ॥ ४५ ॥
कर्पूरपूरपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ।
स्वच्छं कनकमुक्ताद्यैः शीतं दोषाय न क्वचित् ॥ ४६ ॥

जो पानी तपायेहुए लोह और सूर्यसे गर्म किया हुआ और बालूरेत आदिसे बुझायाहुआ हो और कपूर, केशर, पाटल आदिसे सुगंधित किया हुआ हो और निर्मल हो, सोना और मोती आदिसे युक्त हो ऐसा शीतल पानी कहीं भी दोषको नहीं करता है ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

क्वथितजलगुणाः ।

तत्क्वाथ्यमानं निष्फेनं निर्वेगं निर्मलं जलम् ।
तत्सर्वदोषशमनं दीपनं पाचनं लघु ॥ ४७ ॥

औटाया हुआ, झागोंसे रहित, वेगसे वर्जित और निर्मल पानी सब दोषोंको शांत करता है, अग्निको जगाता है, पाचन है, और हलका है ॥ ४७ ॥

उष्णं तदग्निजननं लघ्वेतद्बह्निशोधनम् ।
पार्श्वरुक्पीनसाध्मानहिक्कानिलकफापहम् ॥ ४८ ॥

गर्म पानी अग्निको उपजाता है, हलका है, अग्निको शोधता है, और पसलीशूल, पीनस, आध्मान, हिचकी, वात-कफ इनको नाश करता है ॥ ४८ ॥

तत्पादहीनं वातघ्नमर्द्धहीनं च पित्तजित् ।
त्रिपादहीनं श्लेष्मघ्नं संग्राह्यग्निप्रदं लघु ॥ ४९ ॥

जलानेसे चौथाई भाग हीन किया पानी वातको नाशता है, आधाभाग हीन किया पानी पित्तको हरता है, तीन-भाग हीन किया पानी कफको नाशता है, मलको बांधता है, अग्निको देता है, और हलका है ॥ ४९ ॥

निहन्ति श्लेष्मसङ्घातं मारुतं चापि कर्षति ।
अजीर्णं जरयत्याशु पीतमुष्णोदकं निशि ॥ ५० ॥

रात्रिमें पियाहुआ गर्म पानी कफके समूहको नाशता है, और वातको दूर करता है, और अजीर्णको शीघ्र दूर करता है ॥ ५० ॥

पादावशेषं सलिलं ग्रीष्मे शरदि शस्यते ।
हेमन्ते शिशिरे वर्षास्वर्द्धहीनं मधावपि ॥ ५१ ॥

चौथाई भाग शेष रहा पानी ज्येष्ठ, आषाढ, आश्विन और कार्तिक इन महीनोंमें श्रेष्ठ है । मंगशिर, पौष, माघ, फाल्गुन, श्रावण और भाद्रपद इन महीनोंमें तथा चैत, वैशाखमें भी आधा भाग शेष रहा पानी श्रेष्ठ है ॥ ५१ ॥

शृतशीतादिजलगुणाः ।

शृतशीतं सदा पथ्यं लघु नीरं त्रिदोषनुत् ।
तच्च पर्युषितं निघ्नमम्लीभूतं त्रिदोषकृत् ॥ ५२ ॥

गर्म करके शीतल किया पानी सब कालमें पथ्य है, हलका है, त्रिदोषको दूर करता है । वही पानी रात्रिभर धरा बासी हुआ भारी है, खट्टा है और त्रिदोषको करता है ॥ ५२ ॥

दिवा शृतं पयो रात्रौ गुरुतामधिगच्छति ।
रात्रौ शृतं दीवा पीतं तथा दोषकरं परम ॥ ५३ ॥

---

१ निन्द्यं मलीभूतमिति पाठोऽपि ।

दिनमें गर्म किया पानी रात्रिमें भारी होजाता है, रात्रिमें गर्म किया पानी दिनमें पिया जावे तो दोषोंको करता है ॥ ५३ ॥

जलजीर्णकालः ।

आमं जलं जीर्यति याममात्रं तदर्धमात्रं शृतशीतवारि ।
मुहूर्तमात्रं जलमुष्णमुक्तं त्रिधेति चोक्तो जलजीर्णकालः ॥ ५४ ॥

विना पका पानी एक पहरमें परिपाकको प्राप्त होता है, और पकाकर ठंढा किया पानी डेढ़ घंटेमें पचता है और गरम जल एक मुहूर्तमें पचता है, ऐसे जलके जीर्णके तीन काल कहे हैं ॥ ५४ ॥

अरोचके प्रतिश्याये प्रसेके श्वयथौ क्षये ।
मन्दाग्नौ बद्धकोष्ठे च ज्वरे नेत्रामये तथा ॥
व्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत् ॥ ५५ ॥

अरुचि, प्रतिश्याय, ग्लानि, सूजन, क्षय,मन्दाग्नि, मलावरोध, ज्वर, नेत्ररोग, व्रण और मधुमेहमें थोडा पानी पीना चाहिये ॥ ५५ ॥

रोगविशेषे जलविशेषः ।

तृषितो मोहमाप्नोति मोहात्प्राणैर्विमुच्यते ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन क्वचिद्वारि न वर्जयेत् ॥ ५६ ॥

तृषाकुलको मूर्च्छा होती है, मूर्च्छासे प्राणवियोग होजाता है, इसलिये सब प्रयत्नसे कभी जलका निषेध न करे ॥ ५६ ॥

मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषु विषे रक्ते च दापयेत ॥ ५७ ॥

मूर्च्छा, पित्त, गर्मीसे उपजी दाह, विष तथा रक्तज रोगोंमें पानी देना चाहिये ५७

श्रमक्लमपरिक्षेपे तमकेऽथ क्षुतौ तथा ।
ऊर्ध्वगे रक्तपित्ते च उष्णाम्बु परिवर्जयेत ॥ ५८ ॥

थकावट, क्लांति, शरीरका गिरासा जाना, तमक श्वास और ऊर्ध्वगामी रक्तपित्तमें गरम जल नहीं देना चाहिये ॥ ५८ ॥

शीतजलनिषेधः ।

पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे ।
आध्माने तिमिरे कोष्ठे सद्यःशूले नवज्वरे ॥
हिक्कायां स्नेहपीते च शीताम्बु परिवर्जयेत् ॥ ५९ ॥

पार्श्वशूल, प्रतिश्याय, वातरोग, गलग्रह, आध्मान, तिमिर, मलावरोध, तात्कालिक शूल, नवीन ज्वर, हिचकी तथा स्नेह पिये हुएको ठंढे जलका पीना उचित नहीं ॥ ५९ ॥

अत्यम्बुपानदोषाः ।

अत्यम्बुपानाद्व्रजते च वह्निर्विनाऽम्बुपानेन भवन्ति रोगाः ।
तस्मान्नरो वह्निविवर्धनार्थं मुहुर्मुहुर्वारि पिपेदभूरि ॥ ६० ॥

अधिक जलपानसे जाठराग्नि निर्बल होती है और जलके न पीनेसे रोग उत्पन्न होते हैं, इस लिये मनुष्य अग्निकी वृद्धिके लिये बार २ थोडा जल पीवे ॥ ६० ॥

दुग्धनामगुणाः ।

दुग्धं प्रस्रवणं क्षीरं सौम्यं सञ्जीवनं पयः ।
दुग्धं बलकरं शीतं मधुरं वातपित्तजित् ॥ ६१ ॥

दुग्ध, प्रस्रवण, क्षीर, सौम्य, संजीवन पय ये दूधके नाम हैं । दूध बलको करता है, शीतल है, मीठा है और वातपित्तको जीतता है ॥ ६१ ॥

स्निग्धं रसायनं मेध्यं जीवनं धातुवर्द्धनम् ।
चेतोरक्तगदश्वासक्षयार्शोभ्रमनुद्गुरु ॥ ६२ ॥

चिकना है, बुढापेको दूर करता है, बुद्धिको बढाता है, जीवन है, धातुको बढाता है और चित्तका बिगडना, रक्तरोग, श्वास, क्षय, बवासीर, भ्रम इनको दूर करता है तथा भारी है ॥ ६२ ॥

बालवृद्धकृशादीनां स्त्रीरक्तानां प्रशस्यते ।
प्रायः प्राणभृतां साम्यं विशेषादोजसे हितम् ॥ ६३ ॥

बालक, बूढा, कृश आदिको और स्त्रियोंमें आसक्त मनुष्योंको श्रेष्ठ है, विशेष करके प्राणियोंके दोषोंको साम्यावस्थामें करता है और बलदायक है ॥ ६३ ॥

गोदुग्धगुणः ।

गोक्षीरं मधुरं शीतं गुरुस्निग्धं रसायनम् ।
बृंहणं स्तन्यकृद्वर्ण्यं जीवनं वातपित्तनुत् ॥ ६४ ॥

गोक्षीर अर्थात् गायका दूध मीठा है, शीतल है, भारी है, चिकना है बुढापेको दूर करता है, धातुको पुष्ट करता है, स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करता है, वर्णमें हित है और जीवन है तथा वातपित्तको दूर करता है ॥ ६४ ॥

वरं कृष्णगवां क्षीरं श्वेतानां श्लेष्मलं गुरु ।
बालवत्साविवत्सानां गवां क्षीरं त्रिदोषकृत् ।

पिण्याकाद्यशनाज्जतं क्षीरं गुरु कफापहम् ॥ ६५ ॥

काली गौका दूध उत्तम है, सफेद गौओंका दूध कफको करता है, भारी है, बालक बछडेवाली और जिसका बच्चा मरजावे ऐसी गौओंका दूध त्रिदोषको करता है, खल आदिको खानेसे उपजा दूध भारी है और कफको नाश करता है ॥ ६५ ॥

अजादुग्धगुणाः ।

आजं गव्यगुणं ग्राहि विशेषाद्दीपनं लघु ।
हन्ति क्षयार्शोऽतीसारप्रदरास्रभ्रमज्वरान् ॥ ६६ ॥

बकरीके दूधमें गायके सब गुण हैं परन्तु मलको बांधता है, विशेषकर अग्निको जगाता है, हलका है और क्षय, बवासीर, अतिसार, प्रदर, रक्तविकार, भ्रम, ज्वर इनको नाशता है ॥ ६६ ॥

अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तादिभक्षणात्
स्तोकाम्बुपानाद् व्यायामात्पयः सर्वगदापहम् ॥ ६७ ॥

छोटा शरीर होनेसे चर्परा और कडुवा आदि खानेसे, थोडा पानी पीनेसे, बहुत फिरना आदिसे बकरीका दूध सब रोगोंको हरता है ॥ ६७ ॥

अविदुग्धगुणाः ।

आविकं मधुरं केश्यं स्निग्धं वातकफापहम् ।
गुरु कासेऽनिलोद्भूते केवले चानिले वरम् ॥ ६८ ॥

भेडका दूध मीठा है, बालोंको बढाता है, चिकना है, वात, कफको नाशता है, भारी है, वातकी खांसीमें और केवल वातमें उत्तम है ॥ ६८ ॥

महिषीदुग्धगुणाः ।

माहिषं मधुरं गव्यं स्निग्धं गुरु बलप्रदम् ।
निद्राशुक्रकरं शीतं मलाभिष्यन्दि वह्निनुत् ॥ ६९ ॥

भैंसका दूध मीठा है, कुछ कुछ गायके दूधके समान है, चिकना है, भारी है, बलको देता है, नींद और वीर्यको करता है, शीतल है, मलके रोकनेवाला है और अग्निको नाशता है ॥ ६९ ॥

नारीदुग्धगुणाः ।

नार्या लघु पयः शीतं दीपनं वातपित्तजित् ।
चक्षुःशूलाभिघातघ्नं नस्याश्च्योतनयोर्वरम् ॥ ७० ॥

स्त्रीका दूध हलका है, शीतल है, अग्निको जगाता है, वातपित्तको जीतता है,

आंखके शूल और चोटको नाशता है, नस्य और आश्च्योतन अर्थात् आंखमें डालनेके लिये हित है ॥ ७० ॥

हस्तिनीदुग्धगुणाः ।

हस्तिन्याः स्वादु बलकृच्चक्षुष्यं शीतलं गुरु ॥ ७१ ॥

हथिनीका दूध स्वादु है, बलको करता है, आंखोंमें हित है, शीतल है और भारी है ॥ ७१ ॥

औष्ट्रदुग्धगुणाः ।

औष्ट्रं स्वादुरसं रूक्षं लवणं लघु दीपनम् ।
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरं सरम् ॥ ७२ ॥

ऊँटनीका दूध स्वादु रसवाला है, रूखा है, सलोना है, हलका है, अग्निको जगाता है और कृमि, कुष्ठ, कफ, अफारा, शोजा उदररोग इनको हरता है तथा दस्तावर है ॥ ७२ ॥

आश्वदुग्धगुणाः ।

आश्वमुष्णं पयो रूक्षं बल्यं वातकफापहम् ।
लावणाम्लं लघु स्वादु सर्वं मैकशफं तथा ॥ ७३ ॥

घोडीका दूध गर्म है, रूखा है, बलको करता है, वातकफको नाशता है, सलोना है, खट्टा है तथा हलका है और स्वादु है । एक खुरवाले सब पशुओंके दूधमें ये गुण हैं ॥ ७३ ॥

धारोष्णादिदुग्धगुणाः ।

धारोष्णं दीपनं बल्यं लघु शीतं त्रिदोषनुत् ।
मुहूर्त्तत्रितयादूर्ध्वं पयो भजति विक्रियाम् ।
तदेव द्विगुणे काले विषवद्धन्ति मानवम् ॥ ७४ ॥

जो दूध निकालते निकालते गर्म हो और जमीनपर न रखाहो उस तात्कालिक निकले दूधको धारोष्ण कहते हैं । वह धारोष्ण दूध-अग्निको जगाता है, बलवर्द्धक है, हलका है, शीतल है और त्रिदोषको दूर करता है । छःघडीसे उपरांत धरा दूध वर्तनेके योग्य नहीं रहता और बारहघडीसे उपरांत धरा दूध विषके समान मनुष्यको मार देता है ॥ ७४ ॥

तस्माच्छीतगुणं तत्स्यात् पयस्तात्कालिकं पिबेत् ।
सुधासमं तदेव स्याद्धाराशीतं त्रिदोषकृत् ॥ ७५ ॥

शीतल गुणवाला दूध होता है, तत्काल निकाले हुए दूधको पीवे यह दूध अमृतके समान होजाता है। धारका निकाला दूध शीतल करके पिया जावे तो त्रिदोषको करता है ॥ ७५ ॥

धारोष्णं शस्यते गव्यं धाराशीतं तु माहिषम्।
शृतोष्णमाविकं पथ्यं शृतशीतमजापयः ॥ ७६ ॥

गायका दूध धारोष्ण उत्तम होता है, धारसे निकला शीतल किया भैंसका दूध उत्तम है, गर्मकर गर्म ही पिया हुआ दूध भेडका उत्तम है, गर्मकर शीतल किया हुआ बकरीका दूध उत्तम है ॥ ७६ ॥

शृतशीतं जयेत्पित्तं शृतोष्णं कफमारुतौ।
अतिपक्कं गुरु स्निग्धं वृष्यं बलविवर्द्धनम् ॥ ७७ ॥

गर्म करके शीतल किया दूध पित्तको जीतता है, गर्म करके गर्मरूपही पान कियागया दूध कफवातको हरता है, अत्यंत पक्क किया हुआ दूध भारी है, चिकना और वीर्यमें हित है तथा बलको बढाता है ॥ ७७ ॥

आममामप्रदं क्षीरमभिष्यन्दकरं गुरु।
आममेव स्त्रियाःक्षीरं पथ्यं पक्कं तु दोषकृत ॥ ७८ ॥

कच्चा दूध आम और कफको करता है तथा भारी है। स्त्रीका कच्चा दूध पथ्य है, पकाया दूध दोषको करता है ॥ ७८ ॥

रात्रौ चन्द्रगुणाधिक्याद्व्यायामपरिवर्जनात्।
प्रभातिकं पयः प्रायो विष्टम्भि गुरु बृंहणम् ॥ ७९ ॥

रात्रिमें चंद्रमाके गुणकी अधिकता और चलने फिरने आदिको वर्जनेसे प्रातःकालका दूध विशेष करके विष्टंभ करता है, भारी है, धातुको पुष्ट करता है ॥ ७९ ॥

दिवाकरकराघाताव्द्यायामानिलसेवनात्।
प्रदोषे श्रमनुद्बल्यं चक्षुष्यं वातपित्तहृत् ॥ ८० ॥

सूर्यकी किरणोंके लगनेसे चलने फिरनेसे वायुका सेवन करनेसे सायंकालका दूध बलको करता है, नेत्रोंको हित करता है, वात पित्तको हरता है ॥ ८० ॥

त्याज्यं दुग्धम्।

विवर्णमम्लं दुर्गन्धि लवणं ग्रन्थितं पयः।
वर्जयेदम्ललवणयोगात्कुष्ठादिदोषकृत् ॥ ८१ ॥

वर्णसे बिगडा, खट्टा, दुर्गंधयुक्त, नमकके स्वादसे युक्त हुआ और गांठोंवाला दूध नहीं पीना। खटाइ और नमकके संयोगसे दूध कुष्ठ आदि दोषको करता है ॥ ८१ ॥

संतानिका (मलाई)।

सान्तानिकं परं रूक्षं शृतदुग्धो परि स्मृता।
सन्तानिका गुरुः शीता वृष्या पित्तास्रवातनुत् ॥ ८२ ॥

खुरचन बहुत रूखी कही है,। पकेहुए दूधपर आई हुई मलाई भारी है, शीतल है, स्त्रीसंगमें हित है, पित्त रक्त और वातको दूर करती है ॥ ८२ ॥

मोरटपीयूषादिदुग्धम्।

सप्तरात्रात्परं क्षीरमप्रसन्नं तु मोरटम्।
नष्टदुग्धं[1] भवेन्नारं मोरटं जैययटोऽब्रवीत् ॥ ८३ ॥

सात रात्रिसे अनन्तर दूध अप्रसन्न मोरट होजाता है और जो दूध फटकर पानी समान होजाय उसको जैयटने मोरट कहा है ॥ ८३ ॥

क्षीरं तत्कालसूतायाः पीयूष घनमुच्यते।
पक्वं दध्ना समं क्षीरं विज्ञेया दधिकूर्चिका ॥ ८४ ॥

तत्काल व्याई गायका दूध पीयूषघन अर्थात् खीस कहाता है। दहीके बराबर दूध डालकर पकावे उसे दधिकूर्चिका कहते हैं ॥ ८४ ॥

तक्रकूर्चिका, किलाटादि।

तक्रेण तक्रकूर्चीका तयोः पिण्डः किलाटकः।
पाकं विना स एव स्यात्क्षीरशाकसितान्वितः ॥ ८५ ॥

तक्र मिलाकर पकायेहुए दूधको तक्रकूर्चिका कहते हैं। और दही अथवा छाँछ मिलनेसे जो दूध फटगया हो उसको शुद्ध झीने वस्त्रमें डालकर पानी निचोड डाले उस पानीरहित पिंडको तक्रपिंड या पिंड कहते हैं। जो दूध काढकर मावा (खोया) बनाया जाता है उसको किलाट (खोया) कहते हैं। जो विना औटाये ही फट जाय उसको क्षीरशाक कहते हैं ॥ ८५ ॥

मोरटादीनां गुणाः।

मोरटस्तु सपीयूषः कूर्चिका दधितक्रयोः।
किलाटक्षीर शाकाश्च ह्येते निद्रामपुष्टिदाः ॥ ८६ ॥

---

१ नष्टदुग्धभवं मस्तु मोरटं याजयेद्बुमीन्। इत्यपि क्वाचित्कः पाठः।

मिसरी मिलेहुए मोरट, पीयूष, दधिकूर्चिका, किलाट, क्षीरशाक ये सब निद्राजनक, आमबर्द्धक, पुष्टिकारक होते हैं ॥ ८६ ॥

गुरवः श्लेष्मला वृष्या हृद्या वाताग्निनाशिकाः ।
वातला दुर्जरा रूक्षा ग्रहिणी तक्रकूर्चिका ॥ ८७ ॥

ये सब भारी हैं, कफको करते हैं, वीर्यवर्द्धक हैं और दिलको ताकत देते हैं और वात तथा अग्निको नाशती हैं, तक्रकूर्चिका वातका करती है, देरमें जीर्ण होती है, रूखी है और मलको बांधती है ॥ ८७ ॥

दधिनामगुणाः ।

दधि स्त्यानं पयः सम्यक् स्त्यानमीषत्तु मन्दकम् ।
तन्मिष्टमम्लमत्यम्लं मधुराम्लमिति स्मृतम् ॥ ८८ ॥

दधि, स्त्यान, सम्यक्स्त्यान, ईषत्स्त्यान मंदक ये नाम दहीके हैं । मीठा, खट्टा, अत्यंतखट्टा, मीठा-खट्टा ये दहीके भेद कहे गये हैं ॥ ८८ ॥

दध्युष्णं दीपनं स्निग्धं कषायानुरसं गुरु ।
पाकेऽम्लं ग्राहि पित्तास्रशोफमेदः कफप्रदम् ॥ ८९ ॥

दही गर्म है, अग्निको जगाता है, चिकना है, कषैले अनुरसवाला है, भारी है, पाकमें खट्टा है, मलको बांधता है और पित्तरक्त, शोजा, मेद, कफ इनको उत्पन्न करता है ॥ ८९ ॥

मूत्रकृच्छ्रे प्रतिश्याये शीतके विषमे ज्वरे ।
अतिसारेऽरुचौ कार्श्ये शस्यते बलवर्द्धनम् ॥ ९० ॥

मूत्रकृच्छ्र, प्रतिशाय, शीत, विषमज्वर, अतीसार, अरुचि, कार्श्य-रोग इनमें दही देना श्रेष्ठ है और बलको बढाता है ॥ ९० ॥

मन्दं त्रिदोषजननं मधुरं वातपित्तजित् ।
अम्लं पित्तास्रकफकृदत्यम्लं रक्तपित्तदम् ।
मधुराम्लं गुणैर्मिश्रैर्दधि पूर्वादादिशेत् ॥ ९१ ॥

विना जमा दही त्रिदोषको करता है, मीठा दही वातपित्तको जीतता है, खट्टा दही पित्तरक्त और कफको करता है, अत्यंत खट्टा दही रक्तपित्तको देता है । खट्टा मीठा दही मिले हुए गुणोंवाला होता है ॥ ९१ ॥

गव्यादिदधिगुणाः ।

गव्यं दध्युत्तमं बल्यं पाके स्वादु रुचिप्रदम् ।

पवित्रं दीपनं स्निग्धं पुष्टिकृत्पवनापहम् ॥ ९२ ॥

गायका दही उत्तम है, बलको करता है, पाकमें स्वादु है, रुचिको देता है, पवित्र है, अग्निको जगाता है, चिकना है, पुष्टिको करता है और वातको नाशता है ॥ ९२ ॥

आजं दध्युत्तमं ग्राहि लघु दोषत्रयापहम् ।
शस्यते श्वासकासार्शःक्षयकार्श्येषु दीपनम् ॥ ९३ ॥

बकरीका दही उत्तम है, मलको बांधता है, हलका है, त्रिदोषको नाशता है और श्वास, खांसी, बवासीर, क्षय, कार्श्यरोग इनमें श्रेष्ठ है और अग्निको जगाता है ॥ ९३ ॥

आविकं दधि दुर्नामकफवातास्रकोपनम् ।
अभिष्यन्दिरसं पाके स्वादु प्रायेण दोषलम् ॥ ९४ ॥

भेडका दही पुरुषार्थपना कारक है और कफ, वातरक्त इनको प्रकुपित करता है, अभिष्यंदि रसवाला है, पाकमें स्वादु है और विशेष करके दोषको करता है ॥९४॥

माहिषं दधि सुस्निग्धं श्लेष्मलं वातपित्तनुत् ।
वृष्यं विपाके मधुरं गुरु रक्तप्रदूषणम् ॥ ९५ ॥

भैंसका दही बहुत चिकना है, कफको करता है, वातपित्तको दूर करता है, वीर्यको पुष्ट करता है, पाकमें मीठा है भारी है, रक्तको दूषित करता है ॥ ९५ ॥

नार्या दधि त्रिदोषघ्नं चक्षुष्यं तर्पणं गुरु ।
बल्यं विपाके मधुरं स्निग्धं वह्निकरं परम् ॥ ९६ ॥

नारीका दही त्रिदोषको नाशता है, नेत्रोंमें हित करता है, तर्पण है, भारी है, बलको करता है, पाकमें मीठा है, चिकना है और अग्निको बढाता है ॥ ९६ ॥

हस्तिन्या दधि वीर्योष्ण कटु पाकेऽग्निनाशनम् ।
कषायानुरसं वर्चोवर्द्धनं कफवातजित् ॥ ९७ ॥

हथिनीका दही वीर्यमें गर्म है, पाकमें चर्परा है, अग्निको नाशता है, पीछे कषैला रसवाला है, मलको बढाता है और कफवातको जीतता है ॥ ९७ ॥

औष्ट्रं विपाके कटुकं भेदि क्षाराम्लकं दधि ।
निहन्त्युदरकुष्ठार्शःशूलबन्धानिलक्रिमीन् ॥ ९८ ॥

ऊंटनीका दही पाकमें चर्परा है, भेदी है, खारा और खट्टा है तथा उदररोग, कुष्ठ, बवासीर, शूल, विबन्ध, वात, कृमि इनको नाशता है ॥ ९८ ॥

अश्वाद्येकशफं रूक्षं दध्यभिष्यन्दि दोषलम् ।
दीपनं स्वादु चक्षुष्यं वातकृत्कफमूत्रनुत् ॥ ९९ ॥

घोडी आदि एकखुरवाले पशुका दही रूखा है, अभिष्यंदि है, दोषको करता है, अग्निको जगाता है, स्वादु है, आंखोंमें हित है, वातको करता है तथा कफ और मूत्ररोगको दूर करता है ॥ ९९ ॥

सर्वेषु दधिषु श्रेष्ठं गव्यमेव गुणावहम् ।
गालितं दधि सुस्निग्धं वातघ्नं श्लेष्मलं गुरु ॥ १०० ॥

सब दहियोंमें गायका दही श्रेष्ठ है और गुणदायक है । कपडेमें छाना हुआ दही सुंदर चिकना है, वातको नाशता है, कफको करता है और भारी है ॥१०० ॥

बलपुष्टिकरं रुच्यं मधुरं नातिपित्तकृत ।
शृतक्षीरभवं रुच्यं दधि स्निग्धं गुणोत्तमम् ॥ १०१ ॥

गायका दही बल और पुष्टिको करता है, रुचिको करता है, मीठा है, बहुत पित्तको नहीं करता है । पकायेहुए दूधका दही रुचिको करता है, चिकना है और उत्तम गुणवाला है ॥ १०१ ॥

पित्तानिलापहं सर्वं धात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥ १०२ ॥

सब प्रकारका दही पित्तवातको नाशता है और धातु अग्नि, बलको बढाता है ॥ १०२ ॥

छच्छित्र (गुणाः ।

असारं दधि संग्राहि कषायं वातलं लघु ।
विष्टम्भि दीपनं रुच्यं ग्रहणीरोगनाशनम् ॥ १०३ ॥

मलाईसे रहित दही मलको बांधता है, कषैला है, वातको करता है, हलका है, विष्टम्भ करता है, अग्निको जगाता है, रुचिमें हित है और ग्रहणीरोगको नाशता है ॥ १०३ ॥

सशर्करं दधि श्रेष्ठं तृष्णापित्तास्रदाहनुत ।
सगुडं वातनुद् वृष्यं बृंहणं तर्पणं गुरु ॥ १०४ ॥

खांडसहित दही बहुत उत्तम है तथा तृषा, पित्तरक्त, दाह, इनको नाश करता है, गुडसहित दही वातको दूर करता है, वीर्यको पुष्ट करता है, धातुओंको पुष्ट करता है, तर्पण और भारी है ॥ १०४ ॥

ऋतुभेदेन दधिगुणाः ।

वसन्ते शरदि ग्रीष्मे दधि प्रायेण निन्दितम् ।
हेमन्ते शिशिरे शस्तं वर्षासु चागुणावहम् ॥ १०५ ॥

वसन्त, शरद, ग्रीष्म इन ऋतुओंमें दही विशेषकरके निंदित है । हेमंत और शिशिर ऋतुमें दही उत्तम है । वर्षा ऋतुमें दहीको खाना अच्छा नहीं है ॥ १०५ ॥

रोगविशेषे दधिगुणाः ।

मूत्रकृच्छ्रेऽरुचौ कार्श्ये शीतगे विषमज्वरे ।
अतिसारे प्रतिश्याये दिवा च दधि शस्यते ॥ १०६ ॥

मूत्रकृच्छ्र, अरुचि, कृशता, शीतयुक्त विषमज्वर, अतिसार और प्रतिश्यायमें और दिनके समय दधि श्रेष्ठ है ॥ १०६ ॥

शस्यते दधि नो रात्रौ शस्तं चाम्बुघृतान्वितम् ॥ १०७ ॥

रात्रिमें दही उत्तम नहीं है, पानी और घृतसे युत हुआ दही उत्तम है ॥

दध्युत्तरादिगुणाः ।

दध्युत्तरो दधिस्नेहो दध्यग्रः कटुकः सरः ।
दध्नः सरो गुरुर्वृष्यो वातवह्नि प्रणाशनः ।
वस्तेर्विशोधनश्चाम्लः पित्तश्लेष्मविवर्द्धनः ॥ १०८ ॥

दध्युत्तर, दधिस्नेह, दध्यग्र, कटुक, सर ये नाम दहीके सरके हैं । दही सर है, भारी है, वीर्यवर्धक है, वात और अग्निको नाशकरता है, वस्तिको शोधता है, खट्टा है तथा पित्त और कफको बढाता है ॥ १०८ ॥

मस्तु क्लमहरं बल्यं लघु भक्ताभिलाषकृत् ।
स्रोतोविशोधनं ह्लादि कफतृष्णानिलापहम् ।
अवृष्यं प्रीणनं शीघ्रं भिनत्ति मलसंग्रहम् ॥ १०९ ॥

दहीका पानी ग्लानिको हरता है, बलको करता है, हलका है, भोजनकी रुचि उत्पन्न करता है, स्रोतोंको शोधता है, आनन्ददायक है और कफ, तृषा, वात इनको नाशता है । वृष्य नहीं है, प्रीणन है, और मलके संचयको शीघ्र काटता है ॥ १०९ ॥

घोल, मथित, उदश्वित्, तक्रनामगुणाः ।

दण्डाहतं कालशेयं गोरसश्च विलोडितम् ॥ १०९ ॥

दण्डाहत, कालशेय, गोरस, विलोडित ये नाम तक्रके हैं ॥ ११० ॥

सरसं निर्जलं घोलं मथितं रसवर्जितम् ।

समोदकमथ श्वेतमुदश्वित्त्वर्धवारिकम् ॥ १११ ॥

रससहित और पानीसे रहित दही घोल होता है, रससे वर्जित दही मथित होता है, बराबर पानीवाला दही श्वेत होता है और आधा पानीवाला दही उदश्वित होता है ॥ १११ ॥

पादोदकं भवेत्तक्रमर्द्धाम्भोऽन्ये बभाषिरे ।
तक्रं ग्राहि कषायाम्लं मधुरं दीपनं लघु ॥ ११२ ॥

चौथाई पानीवाला दही तक्र होता है। कोई वैद्य आधे पानीवालेको तक्र कहते हैं। तक्र मलको बांधता है, कसैला और खट्टा मीठा है, अग्निको जगाता है और हलका है ॥ ११२ ॥

वीर्योष्णं बलदं रूक्षं प्रीणनं वातनाशनम् ।
हन्ति शोथगरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान् ॥ ११३ ॥

वीर्यमें गर्म है, बलको देता है, तृप्ति करता है, वातको नाशता है और शोजा कृत्रिम विष, छर्दि, प्रसेक, विषमज्वर ॥ ११३ ॥

पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ।
मेहं गुल्ममतीसारं शूलप्लीहकफक्रिमीन् ।
श्वित्रकुष्ठकफव्याधिकुष्ठतृष्णोदरारुचीः ११४ ॥

पाण्डु, मेद, ग्रहणी, बवासीर, मूत्रका बंध, भगंदर, प्रमेह, गुल्म, अतीसार, शूल, तिल्लीरोग कफ, कृमि, श्वित्र कुष्ठ, कफरोग, कुष्ठ, तृषा, उदररोग और अरुचीको नाशता है ॥ ११४ ॥

तक्रं निदाघे शरदि दौर्बल्ये भ्रममूर्च्छयोः ।
पित्तास्रमदशोफेषु कदाचिन्न प्रशस्यते ॥ ११५ ॥

गरमीके समयमें, आश्विन और कार्तिकमें, दुर्बलपनमें भ्रम और मूर्च्छामें, पित्तरक्त, मद, शोजा इनमें तक्र कभी भी अच्छा नहीं है ॥ ११५ ॥

शीतकाले ग्रहण्यर्शः कफवातामयेषु च ।
स्रोतोनिरोधे मन्दाग्नौ तक्रमेवामृतोपमम् ॥ ११६ ॥

शीतकालमें, ग्रहणी, बवासीर, कफरोग, वातरोग, स्रोतोंका रुकना और मन्दाग्नि इनमें तक्र अमृतके समान है ॥ ११६ ॥

तक्रं तु मधुरं सर्वं श्लेष्मलं वातपित्तनुत् ॥ ११७ ॥

सब प्रकारका तक्र मीठा है, कफको करता है, और वात पित्तको दूर करता है ॥ ११७ ॥

अम्लं वातहरं तक्रं रक्तपित्तप्रकोपनम् ।
वातेऽम्ले सैन्धवोपेतं स्वादु पित्ते सशर्करम् ॥ ११८ ॥

खट्टा तक्र वातको हरता है, रक्तपित्तको कुपित करता है, सेंधानमकसे युक्त तक्र वातमें हित है और पित्तमें खांडसे मिला हुआ तक्र हित है ॥ ११८ ॥

पिबेत्तक्रं कफे रूक्षं व्योषक्षारसमन्वितम् ।
समुद्धृतघृतं तक्रं पथ्यं लघु विशेषतः ॥ ११९ ॥

कफमें रूखा तथा सोंठ मिरच, पीपलके खारसे युक्त किये हुए तक्रको पीवे । घृतसे रहित किया तक्र पथ्य, है, विशेषकरके हलका है ॥ ११९ ॥

स्तोकोद्धृतघृतं तस्माद् वृष्यं गुरु कफापहम् ।
अनुद्धृतघृतं शीतं गुरु पुष्टिकफप्रदम् ॥ १२० ॥

किंचित् निकाले घृतवाला तक्र वीर्यको पुष्ट करता है, भारी है, और कफको नाशता है । घृत नहीं निकाला हुआ तक्र शीतल है, भारी है, पुष्टि और कफको करता है ॥ १२० ॥

यान्युक्तानि दधीन्यष्टौ तद्गुणं तक्रमादिशेत् ।
सरसं निर्जलं घोलं मथितं रसवर्जितम् ॥ १२१ ॥

गौ भैंस आदि भेदसे जो आठ प्रकारके दही कहे हैं, उन्हींके समान गुणवाले आठों तक्र होते हैं, । सरस, निर्जल, घोल, मथित, रसवर्जित ये तक्रके नाम हैं ॥ १२१ ॥

दधिवद्घोलमथिते किञ्चित्तु लघु नीरतः ।
मण्डतक्रा लघुतक्रा कूर्चिकादधिसम्भवा ॥ १२२ ॥

घोल और मथित दहीके समान होते हैं, परंतु, कुछ पानीसे युक्त घोल और मथित होता है । मण्डतक्रा, लघुतक्रा, कूर्चिका, दधिसंभवा ये नाम घोल और मथितके हैं । इनमेंभी तक्रके समान गुण हैं ॥ १२२ ॥

नवनीतवर्गनामगुणाः ।

हैयङ्गवीनं सरजं नवनीतं तु मन्थजम् ।
नवनीतं लघु ग्राहि सद्यस्कं स्वादु शीतलम् ॥ १२३ ॥

हैयङ्गवीन, सरज, नवनीत, मन्थज ये मक्खनके नाम हैं । मक्खन नौनी घृत हलका है, मलको बांधता है, तत्कालका मक्खन स्वादु और शीतल है ॥ १२३ ॥

मध्यमीषत्कषायाम्लं वृष्यं पित्तानिलापहम् ।
अविदाह्यग्निकृन्नेत्र्यं क्षयार्शोव्रणकासजित् ॥ १२४ ॥

थोडे दिनोंका मक्खन कषैला है, खट्टा है, वीर्यको पुष्ट करता है, पित्तवातको नाशता है, दाह नहीं करता है, अग्निको करता है, आँखोंमें हित है, क्षय, बवासीर, घाव, खांसी इनको जीतता है ॥ १२४ ॥

नवनीतं चिरोद्धूतं गुरु मेदःकफप्रदम् ।
शोथघ्नं बलकृद् वृष्यं विशेषादमृतं शिशोः ॥ १२५ ॥

बहुत दिनोंका मक्खन भारी है, मेद और कफको देता है, शोजेको नाशता है, बलको करता है, वीर्यको पुष्ट करता है विशेष करके बालकको अमृतके समान ॥ १२५ ॥

क्षीरोत्थं तदतिस्निग्धं चक्षुष्यं रक्तपित्तजित् ।
वृष्यं बलकरं ग्राहि मधुरं शीतलं परम् ॥ १२६ ॥

दूधसे निकाला मक्खन अत्यन्त चिकना है, आंखोंमें हित है, रक्तपित्तको जीतता है, वीर्यको पुष्ट करता है, बलको करता है, मलको बांधता है तथा मीठा और उत्तम शीतल है ॥ १२६ ॥

घृतनामगुणाः ।

घृतमाज्यं हविः सर्पिराघारममृताह्वयम् ।
घृतं रसायनं स्वादु चक्षुष्यं गुरु दीपनम् ॥ १२७ ॥

घृत, आज्य, हवि, सर्पि, आघार, अमृताह्वय ये नाम घृतके हैं । घृत बुढापेको दूर करता है, स्वादु है, नेत्रोंको हित है, भारी है, अग्निको जगाता है ॥ १२७ ॥

शीतवीर्यं विषालक्ष्मीवातपित्तानिलापहम् ।
अत्यभिष्यंदि कान्त्योजस्तेजोलावण्यबुद्धिकृत् ॥ १२८ ॥

घृत-शीतवीर्यवाला है, विष, दुष्टकान्ति, वात इनको नाशता है, अत्यन्त अभिष्यन्दि है, कान्ति, बल, तेज, लावण्य, बुद्धि, इनको करता है ॥ १२८ ॥

उदावर्त्तज्वरोन्मादशूलानाहव्रणाञ्जयेत् ।
स्निग्धं कफप्रदं रूक्षं क्षयवीसर्परक्तजित् ॥ १२९ ॥

उदावर्त, ज्वर, उन्माद, शूल, अफारा, घाव इनको जीतता है, चिकना है, कफकारक है; रूखा है क्षय, विसर्प, रक्त इनको जीतता है ॥ १२९ ॥

स्वर्यं क्षतहरं प्रायः शस्यते बालवृद्धयोः ।
घृतं क्षीरभवं ग्राहि शीतलं नेत्ररोगजित् ॥ १३० ॥

स्वरमें हित है, विशेषकर बालक और वृद्धोंको श्रेष्ठ है। दूधसे निकला घृत मलको बांधता है, शीतल है, नेत्ररोगको जीतता है ॥ १३० ॥

निहन्ति पित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ।
पुराणं कटुकं पाके सर्पिर्दोषत्रयापहम् ॥ १३१ ॥

पित्त, दाह, रक्त विकार, मद, मूर्च्छा, भ्रम, वात इनको नाशता है। पुराना घृत पाकमें चर्परा है, त्रिदोषको नाशता है ॥ १३१ ॥

श्रोत्रनेत्रशिरःशूलकुष्ठापस्मारशोथजित् ।
योनिरोगज्वरश्वासकुष्ठार्शोगुल्मपीनसान् ॥ १३२ ॥

कर्णरोग, नेत्ररोग, शिरका शूल, कुष्ठ, मृगीरोग, शोजा इनको जीतता है। योनिरोग, ज्वर, श्वास, कुष्ठ, बवासीर, गुल्म, पीनस इनको नाशता है ॥ १३२ ॥

निहन्ति दीपनं बस्तिनस्यपूर्त्तिषु शस्यते ।
घृतमण्डोऽपि घृतवद्गुणैस्तीक्ष्णो लघुः सरः ॥ १३३ ॥

अग्निको जगाता है, बस्तिमें और नस्यमें श्रेष्ठ है, घृतकी छांछमें भी घृतके समान गुण हैं, परंतु तेज है, हलका है और दस्तावर है ॥ १३३ ॥

दशवर्षात्परं सर्पिः कौम्भमित्यभिधीयते ।
रक्षोघ्नं लघु तस्मात्तु गुणैः श्रेष्ठं महाघृतम् ॥ १३४ ॥

दशवर्षसे उपरांत घृत कौंभ इस नामसे कहाजाता है। यह राक्षस दोषको नाशता है, हलका है, महाघृत गुणोंकरके इससे श्रेष्ठ है ॥ १३४ ॥

घृतस्य गुणदोषौ तु क्षीरतुल्यौ समादिशेत् ।
सर्वेषु गुणकृद्गव्यमाविकं निन्दितं पुनः ॥ १३५ ॥

घृतके गुण और दोष दूधके समान कहे हैं। सब घृतोंमें गायका घृत गुणकारी है और भेडका घृत निंदित है ॥ १३५ ॥

तैलगुणाः ।

तैलमुष्णं गुरु स्थैर्यं बलवर्णकरं सरम् ।

वृष्यं विकाशि विशदं मधुरं रसपाकयोः ॥ १३६ ॥

तेल गर्म है, भारी है, स्थिरपनमें हित है, बल और वर्णको करता है, दस्तावर है, वीर्यको पुष्ट करता है, प्रकाशता है, फैलनेवाला है तथा रस और पाकमें मीठा है ॥ १३६ ॥

सोष्णं कषायनुरसं तिक्तं श्लेष्मानिलापहम् ।
विपाके मधुरं तीक्ष्णं बृंहणं रक्तपित्तजित् ॥ १३७ ॥

गर्म किया तेल कषैले अनुरसवाला है, कडुवा है, कफवातको नाशता है, पाकमें मीठा है, तेज है, धातुको पुष्ट करता है और रक्तपित्तको जीतता है ॥ १३७ ॥

श्लेष्मलं कटु विण्मूत्रत्वग्गर्भाशयशोधनम् ।
दीपनं मतिदं केश्यं व्यायामव्रणमेहनुत् ॥ १३८ ॥

कफको करता है, चर्परा है, और मल, मूत्र, त्वचा, गर्भाशय इनको शोधता है । यह अग्निको जगाता है, बुद्धिको देता है,बालोंमें हित है और परिश्रम, घाव, प्रमेह इनको दूर करता है ॥ १३८ ॥

श्रोत्रयोनिशिरःशूलनेत्ररोगविनाशनम् ।
मथितच्युतविच्छिन्नभग्नव्यालविषादिषु ।
क्षतेऽग्निदग्धे तत्पथ्यं पानाभ्यङ्गादिभिः सदा ॥ १३९ ॥

कानके रोग, योनिरोग, शिरका शूल, नेत्ररोग इनको नाशता है । मथित हुआ गिरा हुआ, कटा, टूटा हुआ, सर्पविष आदि, चोट, अग्निमें जला हुआ इनमें पीने और मालिश करने आदिसे सब कालमें पथ्य है ॥ १३९ ॥

घृतमब्दात्परं पक्वं हीनवीर्यं प्रजायते ।
तैलं पक्वमपक्वं वा चिरस्थायि गुणाधिकम् ॥ १४० ॥

घृत वर्षसे उपरांत पका हुआ हीनवीर्यवाला हो जाता है और तेल पका वा विना पका और बहुत दिनका धरा हुआ उत्तम गुणोंवाला हो जाता है ॥ १४० ॥

एरण्डतैलगुणाः ।

एरण्डतैलं मधुरमुष्णं दीपनशोधनम् ।
वृष्यं त्वच्यं वयःस्थापि मेधाकान्तिबलप्रदम् ।
कषायानुरसं सूक्ष्मं योनिशुक्रविशोधनम् ॥ १४१ ॥

---

१ सूक्ष्ममित्यपि पाठः । २ कान्तिदमिति पाठः ।

हन्ति वातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ।
वातशोणितशूलादिव्रणशोथामविद्रधीन् ॥ १४२ ॥

एरण्डका तेल मीठा है, गर्म है, अग्निको दीपन करता है, शोधन करता है, वीर्यको पुष्ट करता है, त्वचामें हित है, अवस्थाको ठहराता है और बुद्धि, कांति, बल इनको देता है। यह कषैला अनु रसवाला है, सूक्ष्म है, योनि तथा वीर्यको शोधता है और वात, उदररोग, अफारा, गुल्म, अष्ठीला, कटिग्रह, वातरक्त, शूल, घाव, शोजा, आम, विद्रधि इनको नाश करता है ॥ १४१ ॥ १४२ ॥

कटुतैलगुणाः ।

पृथ्वीकामूलजीमूतादन्तीकवचशिग्रुजम् ।
निम्बातसीकरञ्जार्कहस्तिकर्णेङ्गुदीभवम् ॥ १४३ ॥
शङ्खिनीनीपकाम्पिल्लबिल्वज्योतिष्मतीकृतम् ।
कुसुम्भसर्षपोद्भूतं तैलं सौवर्चलं तथा ॥ १४४ ॥
विपाके कटुकं तीक्ष्णमुष्णं तिक्तं सरं लघु ।
हन्तिकुष्ठामयं श्लेष्ममेहमूर्च्छा मयक्रिमीन् ॥ १४५ ॥

इलायची, पीपलामूल, देवदाली, दन्ती, कौंच और सहँजना इनका तेल और नींब, अलसी, करंजुवा, आक लाल, एरण्ड अथवा हस्तिकंद, गोंदनी इनका तेल, शंखिनीका तेल, कदम्बका तेल, रोचनी तथा बेलका तेल, मालकांगनीका तेल, कुसुंभका तेल, सरसोंका तेल, सुवर्चलाका तेल ये सब पाकमें चर्परे हैं, तेज हैं, गर्म हैं, कडुवे हैं, फैलनेवाले हैं, हलके हैं और कुष्ठरोग, कफ, प्रमेह मूर्च्छा, कृमि इनको नाश करते हैं ॥ १४३-१४५ ॥

निम्बतैलगुणाः ।

निम्बतैलं जयेत्कुष्ठं व्रणश्लेष्मज्वरक्रिमीन् ॥ १४६ ॥

नींबका तेल कुष्ठ, घाव, कफ, ज्वर, कृमि इनको नाशता है ॥ १४६ ॥

अतसीतैलगुणाः ।

अतसीतैलमाग्नेयं स्निग्धोष्णं कफपित्तनुत् ।
कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरंगुरु ॥ १४७ ॥

अलसीका तेल आग्नेय है, चिकना है, गरम है, कफ पित्तको दूर करता है, पाकमें चर्परा है, नेत्रोंको हित नहीं है, बलको करता है, वातको हरता है और भारी है ॥ १४७ ॥

साषपतैलगुणाः ।

सार्षपं कृमिनुत्तैलं कुष्ठकण्डूहरं लघु ।
पित्तास्रदूषणं हन्ति मेहकर्णशिरोगदान् ॥ १४८ ॥

सरसोंका तेल कृमियोंको दूर करता है, कुष्ठ तथा खाजको हरता है, हलका है, पित्तरक्तको दूषित करता है, प्रमेह, कानके रोग, शिरके रोग इनको दूर करता है ॥ १४८ ॥

कुसुम्भतैलगुणाः ।

कौसुम्भं कटुकं तैलमचक्षुष्यं बलप्रदम् ।
केवलानिलनुत्तीक्ष्णं विदाह्युष्णं द्विदोषकृत् ॥ १४९ ॥

कुसुम्भेके बीजोंका तेल चर्परा है, नेत्रोंको हित नहीं है बलको देता है, अकेला वातको दूर करता है, तेज है, दाहको करता है, गरम है और दो दोषोंको उत्पन्न करता है ॥ १४९ ॥

ज्योतिष्मतीतैलगुणाः ।

ज्योतिष्मतीभवं तैलं पित्तलं स्मृतिबुद्धिदम् ॥ १५० ॥

मालकांगनीका तेल पित्तको करता है, तथा स्मरण शक्ति और बुद्धिको बढाता है ॥ १५० ॥

नारिकेलादितैलगुणाः ।

अक्षोटिकाहिमुक्ताक्षनारिकेलभवं हरेत् ।
तैलं पित्तानिलं केश्यं गुरु श्लेष्मकरं हिमम् ॥ १५१ ॥

अखरोट, सांपकी काँचली, बहेडा, नारियल इनका तेल पित्तवातको नष्टकरता है, केशोंको हित है, भारी है, कफको करता है, और शीतल है ॥ १५१ ॥

शिंशपादितैलगुणाः ।

शिंशपागुरुगण्डीरसरलामरदारुजम् ।
तैलं कषायं कटुकं तिक्तंदुष्टव्रणापहम् ।
वातरक्तविषश्लेष्मकण्डूकुष्ठानिलाञ्जयेत् ॥ १५२ ॥

सीसम, अगर, थोहर, ईख देवदारु इनका तेल कषैला और चर्परा है, कडुवा है, दुष्ट घावको नाशता है, और वातरक्त, विष, कफ, खाज, कुष्ठ, वात इनको दूर करता है ॥ १५२ ॥

---

१ अक्षोटवातादभवमिति पाठोऽन्यत्र । २ सरलेति पाठः ।

मल्लातकतैलगुणाः ।

भल्लातकं तौवरकं वीर्योष्णं स्वादु तिक्तकम् ।
कुष्ठोर्ध्वाधस्त्रिदोषास्रमेदोमेहकृमीन्हरेत् ॥ १५३ ॥

भिलावेका तेल कषैला है, वीर्यमें गर्म है, स्वादु है, कड़ुवा है और कुष्ट, ऊर्ध्व-दोष, अधोरोग, त्रिदोष, रक्त, मेद, प्रमेह, कृमि इनको हरता है । बिना युक्तिसे इनका सेवन करनेसे सूजन खाज आदि उपद्रव होते हैं ॥ १५३ ॥

पालाशमाधूकपाटलतैलगुणाः ।

तैलं पालाशमाधूकपाटलाफलसम्भवम् ।
कषायं मधुरं दाहपित्तश्लेष्मगदान् हरेत् ॥ १५४ ॥

केसू, महुवा, पाटलाफल इनका तेल कषैला और मीठा है, तथा दाह, पित्त, कफरोग इनको जीतता है ॥ १५४ ॥

त्रपुषादितैलगुणाः ।

कूष्माण्डत्रपुषैर्वारुतुम्बीकालिङ्गतिक्तकैः ।
कृतं प्रियालजीवन्तीश्लेष्मान्तकभवं तथा ॥ १५५ ॥
तैलं गुरु स्वादुपाकं शीतं मूत्रप्रवर्त्तकम् ।
अदीपनमभिष्यन्दि कफदंवातपित्तजित् ॥ १५६ ॥

पेठा ककड़ी, खरबूजा, तुम्बी, तरबूज, परवल, चिरौंजी, जीवंती, लिसोडा इनका तेल भारी है, पाकमें स्वादु है, शीतल है, मूत्रको प्रवृत्त करता है, दीपन नहीं है, अभिष्यंदी है, कफको देता है, और वातपित्तको जीतता है ॥ १५५ ॥ १५६ ॥

एकैषिजतैलगुणाः ।

एकैपिजं हिमं तैलं पित्तघ्नं श्लेष्मवातकृत् ॥ १५७ ॥

पाठाका तेल शीतल है, पित्तको नाशता है, और कफवातको करता है ॥ १५७ ॥

यवतिक्तोद्भवतैलगुणाः ।

यवतिक्तोद्भवं तैलमीषत्तिक्तं रसायनम् ।
दीपनं लेखनं मेध्यं पथ्यं दोषत्रयापहम् ॥ १५८ ॥

यवतिक्ता (येवेची) का तेल कुछ कड़ुवा है, बुढापेको दूर करता है, अग्निको जगाता है, लेखन है, बुद्धिको बढाता है, पथ्य है और त्रिदोषको नाश करता है ॥ १५८ ॥

आम्रतैलगुणाः ।

आम्रतैलं मनाक्तिक्तं मधुरं नातिपित्तकृत् ।
कफवातहरं रूक्षं सुगन्धि विशदं परम् ॥ १५९ ॥

आमका तैल किंचित् कडुवा है, मीठा है, पित्तको अत्यंत नहीं करता है कफ-वातको हरता है, रूखा है, सुगन्धवाला और फैलनेवाला है ॥ १५९ ॥

स्नेहवर्गगुणाः ।

स्थावरा वातशमनाः स्नेहाः प्रोक्तास्तु तैलवत् ।
गौणमेतेषु तैलत्वं बलवर्णकरं पुनः ॥ १६० ॥

सब वृक्षादिकोंके तेल तेलकी तरह वातको नाशनेवाले कहे हैं । इनमें तेलपणा गौण है, परन्तु ये बल, वर्णको करते हैं ॥ १६० ॥

मेदआदिगुणाः ।

मेदोमज्जावसा ज्ञेया ग्राम्यानूपौदकोद्भवाः ।
गुरवो मधुराश्चोष्णाः समीरणविनाशनाः ॥ १६१ ॥

ग्राम्य, आनूप, औदक इन देशोंमें रहनेवाले जीवोंकी मेद, मज्जा और वसा भारी है, मीठी है, गर्म है और वातको नाशती है ॥ १६१ ॥

जाङ्गलैकशफादीनां क्रव्यादानां कषायकाः ।
लघवः शीतला ज्ञेया रक्तपित्तनिबर्हणाः ॥ १६२ ॥

जांगल देशमें रहनेवाले एक खुरवाले और मांस खानेवाले जीवोंकी मेद, मज्जा, वसा कषैली, हलकी है, शीतल है और रक्तपित्तको दूर करती है ॥ १६२ ॥

प्रतुदा विष्किरादीनां ज्ञातव्याः कफकृन्तनाः ।
घृततैलवसामेदोमज्जानो वातनाशनाः ।
यथोत्तरं परिज्ञेया विपाके स्वादवः परम् ॥ १६३ ॥

चोंचसे चुगनेवाला बडा तोता, परेवा, खंजन, कोयल आदि और बतक, लवा, मुर्गा, चकोर आदि जीवोंकी मेद, मज्जा, वसा, कफको नाशती है । घृत, तेल, वसा, मेद मज्जा वातको नाशकरते हैं । ये उत्तरोत्तर घृतसे तेल और तेलसे वसा ऐसे पाकमें बहुत अच्छे हैं ॥ १६३ ॥

मद्यभेदनामगुणाः ।

मद्यं हाला सुरा शुण्डा मदिरा वरुणात्मजा ।
सुरा गन्धोत्तमा कल्या देवसृष्टा च वारुणी ॥ १६४ ॥

मद्य, हाला, सुरा, शुंडा, मदिरा, वरुणात्मजा, गन्धोत्तमा, कल्या, देवस्पृष्टा, वारुणी ये मदिराके नाम हैं ॥ १६४ ॥

मद्यं पित्तकरं प्रायः सरं रोचनदीपनम् ।
विदाहि सृष्टविण्मूत्रं तीक्ष्णं वातकफापहम् ॥ १६५ ॥

मदिरा प्रायः पित्तको करती है, दस्तावर है, रुचिको उपजाती है, अग्निको जगाती है, दाहकरती है, मलमूत्रको उपजाती है, तेज है और वातकफको नाशती है ॥ १६५ ॥

विधिनाऽन्नयुतं पीतं तस्मादमृतसन्निभम् ।
अन्यथा कुरुते रोगानतिपीतं विषोपमम् ॥ १६६ ॥

विधिसे अन्न भोजनके साथमें युक्त मात्रासे पान कीहुई मद्य अमृतके समान है और अयुक्तिसे अनुचितरीतिपर पीहुई मदिरा रोगोंको करती है, बहुत पान की हुई मदिरा विषके समान है ॥ १६६ ॥

द्राक्षोत्थमविदाहित्वाद्रक्तपित्तेषु शस्यते ।
बलपुष्टिकरं मद्यं रक्तार्शोहारि दीपनम् ॥ १६७ ॥

दाखकी मदिरा दाह नहीं करनेसे रक्तपित्तमें उत्तम है, बल और पुष्टिको करती है, रक्तकी बवासीरको हरती है और अग्निको जगाती है ॥ १६७ ॥

माध्वीकाऽल्पगुणा किञ्चित्खर्जूरमनिलप्रदम् ।
तदेव विशदं रुच्यं श्लेष्मघ्नं कर्षणं लघु ॥ १६८ ॥

महुवेकी मदिरा-अल्प गुणोंवाली है, खजूरकी मदिरा वातको करती है, वही स्पष्ट है, रुचिमें हित है, कफको नाशती है, कर्षण है और हलकी है ॥ १६८ ॥

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतं मद्यं सुरा मतम् ।
सुरा गुर्वी बलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा ।
ग्राहिणी शोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥ १६९ ॥

शालीचावल, सांठीचावल और पीठी आदिकी कीहुई मदिरा सुरा मानीगयी है । सुरा भारी है और बल, दूध, पुष्टि, मेद, कफ इनको बढाती है, मलको बांधती है तथा शोजा, गुल्म, बवासीर, ग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र इनको दूर करती है ॥ १६९ ॥

पुनर्नवा शालिपिष्टैर्विहिता वारुणी मता ॥ १७० ॥

साठी और शाली चावलोंकी पीठीसे बनाईहुई मदिरा वारुणी मानीगई है ॥ १७० ॥

सुरावद्वारुणी लघ्वी पीनसाध्मानशूलनुत् ।

प्रसन्ना स्यात्सुरामण्डस्तस्मात्कादम्बरी घना ॥ १७१ ॥

वारुणीमेंभी सुराके सब गुण हैं, परन्तु हलकी है और पीनस, आध्मान, शूल इनको दूर करती है, सुराका मण्ड प्रसन्ना होती है । सुरामण्डसे घनरूप कादंबरी होती है ॥ १७१ ॥

जङ्गलस्तादधः प्रोक्तो जङ्गलान्मेदको घनः ।
पक्कशो जङ्गलः सारः सुराबीजं तु किण्वकम् ॥ १७२ ॥

उससे नीचे जंगल कहा है, जंगलसे घनरूप मेदक होता है, जंगलका साररूप पक्कश होता है, सुराका बीज किण्वक होता है ॥ १७२ ॥

प्रसन्नानाऽऽहगुल्मार्शश्छर्द्यरोचकवातजित् ।
दीपन्याध्मानहृत्कुक्षितोदशूलप्रणाशिनी ॥ १७३ ॥

प्रसन्ना, अफारा, गुल्म, बवासीर, छर्दि, अरोचक, वात इनको जीतती है अग्निको जगाती है, आध्मानको हरती है, कूखके चमके और शूलको नाशती है ॥ १७३ ॥

कादम्बरी गुरुर्वृष्या दीपनी वातकृत्सरा ।
जङ्गलः कफनुद् ग्राही शोफार्शोग्रहणीहरः ॥ १७४ ॥

कादम्बरी भारी है, स्त्रीसंगमें हित है, अग्निको जगाती है, वातको करती है, और फैलनेवाली है । जंगल-कफको दूर करती और मलको बांधती है, तथा शोजा, बवासीर, ग्रहणी इनको हरती है ॥ १७४ ॥

मेदको मधुरो बल्यः स्तम्भनः शीतलो गुरुः ।
पक्कशो हृतसारत्वाद्विष्टम्भी वातवर्द्धनः ॥ १७५ ॥

मेदक मीठा है, बलको करता है, वीर्यको थांमता है, तथा शीतल और भारी है । सारयुक्त होनेसे पक्कश विष्टंभ करता है और वातको बढाता है ॥ १७५ ॥

किण्वकं वातशमनमहृद्यं दुर्जरं गुरु ।
आक्षिकी सा सुरा या स्यादक्षत्वक्शालितण्डुलैः ॥ १७६ ॥

किण्वक वातको शांत करता है, हृद्य नहीं है, देरमें जरता और भारी है । बहेडाकी छाल और शालीचावलोंसे बनी मदिरा आक्षिकी होती है ॥ १७६ ॥

आक्षिकी पाण्डुशोफार्शःपित्तास्रकफकुष्ठनुत ।
किञ्चिद्वातकरा रूक्षा दीपनी रेचनी लघुः ॥ १७७ ॥

आक्षिकी पाण्डु, शोजा, बवासीर, पित्तरक्त, कफ, कुष्ठ, इनको दूर करती है,

किञ्चित् वातको करती है, रूखी है, अग्निको जगाती है, दस्तावर है, और हलकी है ॥ १७७ ॥

यवपिष्टकृतं मद्यं प्रोक्तं यवसुरा च सा ।
काकोलिकोहली ज्ञेया मैरेयो धान्यजासवः ॥ १७८ ॥

जवोंकी पीठीसे बनाई मदिरा यवसुरा होती है, काकोलिकोहली, मैरेय, धान्यजासव ये इसके नाम हैं ॥ १७८ ॥

आसवश्च सुरायाश्च द्वयोरप्येकभाजनम् ।
सांधनं तद्विजानीयान्मैरेयमुभयात्मकम् ॥ १७९ ॥

आसव और सुरा इन दोनोंका एकही पात्र होता है, और उसीप्रकार साधन जानना दोनोंका मैरेय होता है ॥ १७९ ॥

क्वचित्तू धातकीपुष्पं गुडधान्याम्बुसाधितम् ।
गुर्वी यवसुरा रूक्षा स्याद्विष्टम्भत्रिदोषकृत् ॥ १८० ॥

कहा तो धायका फूल, गुड और अन्नके पानीसे साधित किया मैरेय होता है। यवसुरा भारी है, रूखी है, विष्टंभ और त्रिदोषको करती है ॥ १८० ॥

काकोली बृंहणी वृष्या दृष्टिमान्द्यप्रदा गुरुः ।
मैरेयं बृंहणं वृष्यं गुरु सन्तर्पणं सरम् ॥ १८१ ॥

काकोली धातुको पुष्ट करती है, स्त्रीसंगमें हित है, दृष्टिको मन्द करती है, भारी है। मैरेय धातुको पुष्ट करती है, स्त्रीसंगमें हित है, भारी है, तृप्त करनेवाली है और दस्तावर है ॥ १८१ ॥

मद्यं सर्वरसं जातं मधूलकमुदीर्यते ।
मधूलकं गुरु स्वादु स्निग्धं शुक्रकफप्रदम् ॥ १८२ ॥

सब रसोंवाली उपजी मदिरा मधूलक कही है। मधूलक भारी है, स्वादु है, चिकनी है, वीर्य और कफको उत्पन्न करती है ॥ १८२ ॥

शार्करो दीपनः स्वादुः पाचनो रोचनो लघुः ।
स्त्रीविलासकरो वातशोषबस्तिविकारनुत् ॥ १८३ ॥

शार्करमद्य अग्निको जगाता है, स्वादु है, पाचन है, रुचिको करता है, हलका है, स्त्रीसंभोगमें सुख देता है, वात, शोष, बस्तिविकार इनको दूर करता है ॥ १८३॥

---

१ सन्धानमिति पाठोऽपि ।

मध्वासवो लघू रूक्षः कुष्ठमेहविषापहः ।
गौडोऽग्निवर्द्धनो वर्णबलकृत्तर्पणः कटुः ।
तिक्तको बृंहणः स्वादुः सृष्टविण्मूत्रमारुतः ॥ १८४ ॥

मध्वासव हलका है, रूखा है कुष्ठ, प्रमेह, विष इनको नाशता है, गौडमदिरा अग्निको बढाती है, वर्ण और बलको करती है, तृप्ति करती है, चर्परी है, कडुवी है, धातुको पुष्ट करती है, स्वादु है, मल, मूत्र, वात इनको उत्पन्न करती है ॥ १८४ ॥

इक्षोः पक्वरसः पक्वः सीधुः पक्वरसः स्मृतः ।
आसवः सैव विहितो बुधैःशीतरसो मतः ॥ १८५ ॥

ईखका पका हुआ रस सीधु होता है, वही वैद्योंने पक्वरस कहा है, उसीका आसव बननेसे शीतरस कहा जाता है ॥ १८५ ॥

सीधुः पक्वरसःश्रेष्ठः स्वराग्निबलवर्णकृत् ।
वातपित्तकरो हृद्यःस्नेहनो रोचनो जयेत् ।
विबन्धमेहशोफार्शःशोफोदरकफामयान् ॥ १८६ ॥

सीधु और पक्वरस श्रेष्ठ है, स्वर आग्नि, बल, वर्ण इनको करता है, वातपित्तको करता है, दिलको ताकत देता है, शरीरको चिकना बनाता है, रुचिको उत्पन्न करता है, विबन्ध, प्रमेह, शोजा, बवासीर उदररोग, कफरोग इनको जीतता है ॥ १८६ ॥

तस्मादल्पगुणःशीत रसः संलेखनः स्मृतः ॥ १८७ ॥

उससे अल्पगुणोंवाला शीतरस, फैलनेवाला है, अच्छीतरह लेखन कहा है॥ १८७॥

जाम्बवः क्षौद्रसम्भूतो जम्बूरसगुडोद्भवः ।
जाम्बवो बद्धनिष्यन्दः कषायोऽनिलकोपनः ॥ १८८ ॥

शहदसे बनी मदिरा जांबव होती है, जामुनका रस और गुडसे बनी मदिरा जांबव होती है । जांबव आंखको मिचाती है कषैली ह वातको कुपित करती है ॥ १८८ ॥

अरिष्टासवादि ।

अरिष्टासवसीधूनां गुणान् कर्माणि चादिशेत् ।
बुद्धया यथा स्वसंस्कारमवेक्ष्य कुशलो भिषक् ॥ १८९ ॥

अरिष्ट, आसव, सीधु इनके गुण कर्मोंको बुद्धिसे विचार कर मद्य जिस संस्कारसे बनी उसका वैसा गुण कुशल वैद्य देखकर कहै ॥ १८९ ॥

त्याज्यमद्यम्।

सान्द्रं विदाहि दुर्गन्धि विरसं कृमिसंकुलम्।
अहृद्यं तरुणं रूक्षमुष्णं दुर्भाजने स्थितम्॥ १९० ॥
अल्पौषधं पर्युषितमत्यर्थं पिच्छिलं च यत्।
कफप्रकोपि तन्मद्यं दुर्जरं च विशेषतः॥ १९१ ॥

सान्द्र, दाह करनेवाली, दुर्गंधवाली, रससे रहित, कीडोंसे युक्तहुई, हृदयको अप्रिय, ताजी बनीहुई, रूखी, बुरे पात्रमें स्थित, अल्प औषधोंवाली, बहुत दिनोंकी धरी, झागोंवाली ऐसी मदिरा कफको कुपित करती है और विशेषकरके देरमें जीर्ण होती है॥ १९० ॥ १९१ ॥

पित्तप्रकोपि बहुलं तीक्ष्णमुष्णं विदाहि च।
अहृद्यं पेशलं पूति कृमिलं विरसं गुरु॥ १९२ ॥

बहुत तेज गर्म और विशेषकर दाह करनेवाली ऐसी मदिरा पित्तको कुपित करती है, हृदयको अप्रिय, कोमल, दुर्गंधवाली, कीडोंसे युक्त, रससे वर्जित और भारी होती है॥ १९२ ॥

तथा पर्युषितं वापि विद्यादनिलकोपनम्।
सर्वदोषैरुपेतं तु सर्वदोषप्रकोपनम्॥ १९३ ॥

तथा पर्युषित (बासी) मदिरा वातको कुपित करती है और सब दोषोंसे युक्तहुई मदिरा सब दोषोंको कुपित करती है॥ १९३ ॥

सेवनयोग्यमद्यम्।

चिरस्थितं जातरसं दीपनं कफवातजित्।
रुच्यं प्रसन्नं सुरभि मेध्यं सेव्यं महाद्रवम्॥ १९४ ॥

बहुत कालकी धरी और उत्पन्न हुए रसवाली मदिरा अग्निको जगाती है, कफको और वातको जीतती है, रुचिको पैदा करनेवाली, निर्मल, सुगंधित, बुद्धिको बढानेवाली ऐसी मदिरा सेवन करनेके योग्य है॥ १९४ ॥

अज्ञातगुणमद्यस्य निषेधः।

तस्मान्नैकप्रकारस्य मद्यस्य रसकीर्तनात्।
स सौक्ष्म्यादौष्ण्यवातत्वाद्विकाशित्वात्त्ववह्नितुत्॥ १९५

इसलिये एक प्रकारकी मदिराके रस वीर्यको जाने विना सेवन न

करे वह मदिरा सूक्ष्मपनेसे और गर्म वातवाली और विकाशी होनेसे अग्निको मन्द नहीं करती है ॥ १९५ ॥

समेत्य हृदयं प्राप्य धमनीरूर्ध्वमागतः।
विक्षुभ्येन्द्रियचेतांसि मदयत्याशु वीर्यतः ॥ १९६ ॥

हृदयको अच्छीतरह प्राप्त होकर धमनियोंके ऊपर प्राप्त हो इंद्रिय और चित्तको बिगाड वीर्यसे शीघ्र मद करती है ॥ १९६ ॥

दोषभेदेन मदः।

चिरेण श्लेष्मके पुंसि पातनो जायते मदः।
अचिराद्वातिके दृष्टः पैत्तिके शीघ्रमेव च ॥ १९७ ॥

कफकी प्रकृतिवाले पुरुषमें बहुत देरमें गिरानेवाला मद उपजता है, वातकी प्रकृतिवाले पुरुषको थोडी देरमें मद होता है और पित्तकी प्रकृतिवालेको शीघ्र मद उपजता है ॥ १९७ ॥

नवीनमद्यादिगुणाः।

नवं मद्यमभिष्यन्दि त्रिदोषजनकं सरम्।
अरिष्टं बृंहणं दाहि दुर्गन्धि विशदं गुरु ॥ १९८ ॥

नई मदिरा अभिष्यंदी है, त्रिदोषको उपजाती है, दस्तावर है, अरिष्ट करता है, दाह करता है, दुर्गंधवाला तथा स्पष्ट और भारी है ॥ १९८ ॥

जीर्णमद्यादिगुणाः।

जीर्णं तदेव रोचिष्णु कृमिश्लेष्मानिलापहम्।
हृद्यं सुगन्धि सुगुणं लघु स्रोतोविशोधनम् ॥ १९९ ॥

वही पुराना मद्य रुचिको करता है और कृमि, कफ, वातको नाशता है, दिलको ताकत देता है, सुगंधित और सुन्दर गुणोंवाला है, हलका है और नाडीके स्रोतोंको शोधता है ॥ १९९ ॥

मदभेदाः।

सात्त्विके गीतहास्यादि राजसे साहसादिकम्।
तामसे निन्द्यकर्माणि निद्रादि कुरुते तदा ॥ २०० ॥

सात्त्विक प्रकृतिवालेको मदिरा पीनेसे गीत और हँसना आदि उत्पन्न होते हैं, रजोगुणकी प्रकृतिवालेको साहसादि अर्थात् हठ आदि होता है, तमोगुणकी प्रकृतिवालेको मदिरा निंदित कर्म और नींद आदिमें रत करती है ॥ २०० ॥

चुक्रगुणाः।

चुक्रं कफघ्नं तीक्ष्णोष्णं लघु रोचनपाचनम्।
पाण्डुक्रिमिहरं रूक्षं भेदनं रक्तपित्तकृत ॥ २०१ ॥

चुक्र कफको नाश करता है, तेज है, गर्म है, हलका है, रुचिको उत्पन्न करता है, पाचन है, पांडु और क्रमिको हरता है, रूखा है, भेदन है और रक्तपित्तको उत्पन्न करता है ॥ २०१ ॥

गुडादिजनितमद्यगुणाः।

गौडादिरसयुक्तानि मद्यान्युक्तानि यानि च।
यथापूर्वं गुरुतराण्यभिष्यन्दकराणि च ॥ २०२ ॥

गौडादि रससे युक्त जो मद्य कही हैं, वे पूर्वपूर्व क्रमसे भारी और अभिष्यंदी हैं ॥ २०२ ॥

कांजिकगुणाः।

स्यात्काञ्जिकं तु सौवीरमारनालं तु दोषकृत।
काञ्जिकं शिशिरस्पर्शं पाचनं रोचनं लघु ॥ २०३ ॥

कांजिक सौवीर, आरनाल ये कांजीके नाम हैं। कांजी दोषको करती है, शीतल स्पर्शवाली है, पाचन है, रुचिको उपजाती है और हलकी है ॥ २०३ ॥

तुषोदकादिभेदगुणाः।

तुषोदकं यवैरामैः सतुषैः सकलैः कृतम।
सौवीरकं कृतं त्वामैः पक्वैर्वा निस्तुषैर्यवैः ॥ २०४ ॥

कच्चे जवोंसे बनाया हुआ तुषोदक होता है, तुषोंसहित कच्चे जवोंसे बनाया हुआ अथवा तुषोंरहित पक्के जवोंसे बनाया हुआ सौवीर होता है ॥ २०४ ॥

सर्वैं रसै रसाम्लं स्यात्सौवीरकमिति क्वचित।
तुषाम्बु दीपनं हृद्यं पाण्डुक्रिमिगदापहम् ॥ २०५ ॥

सब रसोंसे रसाम्ल होता है। कोई इसको सौवीरक कहते हैं। तुषोदक अग्निको जगाता है, दिलको ताकत देता है और पांडु, क्रमिरोग इनको नाश करता है ॥ २०५ ॥

१ गोधूमैस्तु सुराम्लं स्यादिति पाठोऽपि।

सौवीरक—कांजिकयोर्गुणाः ।

सौवीरकं ग्रहण्यर्शोनाशनं भेदि दीपनम् ।
धान्याम्लं धान्ययोनित्वात्प्रीणनं लघु दीपनम् ॥ २०६ ॥

सौवीर ग्रहणी और बवासीरको नाशता है, भेदन है, अग्निको जगाता है। धान्याम्ल धान्यसे उपजनेवाला होनेसे तृप्ति करता है, हलका है और अग्निको चैतन्य करता है ॥ २०६ ॥

स्पर्शाद्दाहकरं पानात्पाचनं श्लेष्मनाशनम् ।
गण्डूषान्मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यकफकृन्तनम् ॥ २०७ ॥

स्पर्शसे दाहकारक है, पीनेसे पाचन है, कफको नाशता है, गरारासे मुखके बिरसपन, दुर्गंध और कफको दूर करता है ॥ २०७ ॥

[दाहज्वरापहं स्पर्शात्पनाद्वातक्षयापहम् ।
विबंधघ्नमविग्राहि दीपनं चापि कांजिकम् ॥]

कांजी स्पर्शसे दाह और ज्वरको नष्ट करती है, पीनेसे वात और क्षयको हरती है, विबंधघ्न और दीपन है, ग्राही नहीं है ॥]

गोहस्तिमहिषादिमूत्रगुणाः ।

मूत्रं गोनागमहिषीहयाजाविखरोष्ट्रजम् ।
नराणां च भवेत्सर्वं पाचनं दीपनं लघु ॥ २०८ ॥

गाय, हाथी, भैंस, घोडा, बकरी, भेड, गधा, ऊंट और मनुष्य इन सबके मूत्र पाचन हैं, अग्निको जगाते हैं और हलके हैं ॥ २०८ ॥

लवणानुरसं तिक्तं रूक्षं स्रोतोविशोधनम् ।
पित्तलं कटुकं हृद्यं भेदि वातानुलोमनम् ॥ २०९ ॥

तथा नमकके अनुरसवाले हैं,कडुवे हैं, रूखे है, स्रोतोंको शोधते हैं,पित्तको करते हैं, चर्परे हैं, दिलको ताकत देते हैं,भेदन हैं आर वातको अनुलामन करते हैं॥२०९॥

निहन्ति वातगुल्मार्शःशोफोदरकफक्रिमीन् ।
कुष्ठपाण्डुगदानाहविषशूलारुचीस्तथा ॥ २१० ॥

और वात, गुल्म, बवासीर, शोजा, उदररोग, कफ, कृमिरोग, कुष्ठ पांडुरोग, अफारा, विष, शूल, अरुचि इनको नाश करते हैं ॥ २१० ॥

गो-हस्ति-महिष-मूत्राणां गुणाः ।

गोमूत्रं तेषुसर्वेषु मूत्रयोगे प्रशस्यते ।

हस्तिमूत्रं विषार्शोघ्नं कुष्ठगुल्मक्रिमीञ्जयेत् ।
माहिषं शोफगुल्मार्शःपाण्डुमेहेषु योजयेत् ॥ २११ ॥

उन सब मूत्रोंमें गोमूत्र श्रेष्ठ है और हाथीका मूत्र विष, बवासीर, कुष्ठ, गुल्म और कृमियोंको नाशता है, शोजा, गुल्म, बवासीर, पांडु, प्रमेह इन रोगोंमें भैंसके मूत्रका प्रयोग करना ॥ २११ ॥

अश्वमूत्रगुणाः ।

आश्वं भेदि विशेषेण कफदद्रुकृमीन्हरेत् ॥ २१२ ॥

घोडेका मूत्र विशेषतासे भेदन है और कफ, दाह, कृमि इनको हरता है ॥२१२॥

अजामूत्रगुणाः ।

आजं गुल्मविषश्वासकामलापाण्डुदोषजित् ॥ २१३ ॥

बकरीका मूत्र, गुल्म, विष, श्वास, कामला, पांडु और दोषोंको जीतता है ॥२१३॥

आविकमूत्रगुणाः ।

आविकं शोफकुष्ठार्शोमेहवर्चोग्रहापहम् ॥ २१४ ॥

भेडका मूत्र शोजा, कुष्ठ, बवासीर, प्रमेह और मलके बंधको नाश करता है ॥२१४॥

गर्दभमूत्रगुणाः ।

गार्दभं ग्रहणीमेहकुष्ठोन्मादकृमीञ्जयेत् ॥ २१५ ॥

गधेका मूत्र ग्रहणी, प्रमेह, कुष्ठ, उन्माद और कृमिरोगको जीतता है ॥२१५॥

उष्ट्रमूत्रगुणाः ।

औष्ट्रमुन्मादशोफार्शःकृमिशूलोदरापहम् ॥ २१६ ॥

ऊंटका मूत्र उन्माद, शोजा, बवासीर, कृमि, शूल और उदररोगको नाश करता है ॥ २१६ ॥

नरमूत्रगुणाः ।

नरमूत्रं गरं हन्ति सेवितं सुरसायनम् ॥ २१७ ॥

मनुष्यका मूत्र सेवन करनेसे (रोग) विष नाशक है और रसायन है ॥ २१७ ॥

स्त्रीपुंसमूत्रे विशेषः ।

गोऽजाविमहिषीणां च स्त्रीणां मूत्रं प्रशस्यते ।
खरोष्ट्रेभनराश्वानां पुंसां मूत्रं हितं मतम् ॥ २१८ ॥

इति मदनपालनिघण्टौ पानीयादिगुणवर्गोऽष्टमः ॥ ८ ॥

---

१ गदमित्यपि पाठः ।

गाय, बकरी, भेड, भैंस इन स्त्रीजाति पशुओंका मूत्र श्रेष्ठ है. गधा, ऊंठ, हाथी, मनुष्य और घोडा इन पुरुषजातियोंका मूत्र हित माना गया है ॥ २१८ ॥

इति श्रीमदनपालनिघंटौ वैद्यरत्नपं०--रामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनीभाषाटीकायां पानीयादिगुणवर्गोऽष्टमः ॥ ८ ॥

मृद्भक्षिताऽनेन रुषेति वक्रे प्रसारिते वीक्ष्य ततो जगन्ति।
सविस्मयं सादरमीक्ष्यमाणं यशोदया नन्दसुतं नमामि ॥ १ ॥

मट्टी खाकर रोषमें पसारेहुए मुखमें संपूर्ण चराचर लोकोंको देख आश्चर्य और आदरसहित यशोदासे देखेहुए नन्दसुतको प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

इक्षुभेदनामगुणाः।

इक्षुर्महारसो वेणुर्निःसृतो गुडपत्रकः।
तृणराजो मधुतृणो गण्डीरोऽमृतपुष्पकः ॥ २ ॥

इक्षु, महारस, वेणु, निःसृत, गुडपत्रक, तृणराज, मधुतृण, गण्डीर, अमृतपुष्पक ॥ २ ॥

ह्रस्वमूलो लोहितेक्षुः पौण्ड्रकः पौण्ड्रकोऽपरः।
रसालः सुकुमारोऽपि कृष्णेक्षुर्भीरुको मतः ॥ ३ ॥

ह्रस्वमूल, लोहितेक्षु, पौंड्रिक ये ईखके नाम हैं। और पौंड्रक, रसाल, सुकुमार, कृष्णेक्षु, भीरुक ये उसके भेद हैं ॥ ३ ॥

इक्षुः स्वादुर्गुरुः शीतो वृष्यः स्निग्धो बलप्रदः।
जीवनो वातपित्तघ्नः कुर्यान्मूत्रकफक्रिमीन् ॥ ४ ॥

ईख स्वादु है, भारी है, शीतल है, वृष्य है, चिकनी है, बलको देती है, जीवन है, वातपित्तको नाशती है और मूत्र, कफ, कृमि इनको उत्पन्न करती है ॥ ४ ॥

स मूले मधुरोऽत्यर्थं मध्ये मधुर एव च।
अग्रग्रन्थिषु विज्ञेयो लवणो मूत्रलस्तथा ॥ ५ ॥

जडमें ईख बहुत मीठी है, मध्यमें मीठी है, अग्रभागमें और गांठोंमें नमकके स्वादवाली और मूत्रको उपजानेवाली है ॥ ५ ॥

लोहितेक्षुर्गुरुः शीतो दाहपित्तास्रकृच्छ्रनुत।
पौण्ड्रकः शीतलः स्निग्धो बृंहणः कफकृत्सरः ॥ ६ ॥

लाल ईख भारी और शीतल है, दाह, पित्तरक्त और मूत्रकृच्छ्रको दूर करती

है। पौंडा शीतल है, चिकनी है, धातुको पुष्ट करती है, कफको करती है और सर है ॥ ६ ॥

कृष्णेक्षुस्तद्गुणो वंशः क्षारः किंचित्तु तत्समः ।
वंशवच्छतपोरोऽपि किंचिदुष्णः समीरजित् ॥ ७ ॥

काले ईखमें भी यही गुण हैं। वंश नामक ईख किंचित् खारी है और पूर्वोक्त गुणोंवाली है। शतपोर ईख वंश-ईखके समान गुणोंवाली है और किंचित् गर्म है तथा वातको जीतती है ॥ ७ ॥

कान्तारतापसौ तद्वत्काष्ठेक्षुर्वातलो हिमः ।
कासकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ॥ ८ ॥

कांतार और तापस ईखमें भी ये ही गुण हैं। काष्ठेक्षु वातको करता है और शीतल है। कासकार ईख भारी है, शीतल है, रक्तपित्त और क्षयको नाशती है ॥ ८ ॥

सूचीपत्रो नीलपरो नैपालो दीर्घपत्रकः ।
वातलः कफपित्तघ्नः सकषायोऽतिदाहकृत् ॥ ९ ॥

सूचीपत्र, नीलपर, नैपाल, दीर्घपत्रक ये नैपाल ईखके नाम हैं। नैपाल ईख भारी है, दाहको करती है, कफपित्तको नाशती है, कषैली और अत्यन्त दाहकारक है ॥ ९ ॥

इक्षुरसगुणाः ।

दन्तनिष्पीडितस्तेषां रसः पित्तास्रनाशनः ।
शर्करासमवीर्यः स्यादविदाही कफप्रदः ।
गुरुर्विदाही विष्टम्भी यान्त्रिकस्तु प्रकीर्त्तितः ॥ १० ॥

दन्तोंसे पीडित किया ईखका रस पित्तरक्तको नाशता है, खांडके समान वीर्यवाला है, दाहको नहीं करता है, कफको देता है और भारी है। यन्त्रसे निकाला ईखका रस भारी है और दाह तथा विष्टंभको करता है ॥ १० ॥

मत्स्यण्डी (खण्ड आदि) नामगुणाः ।

सिता मत्स्यण्डिका पल्ली ममाण्डी वलकस्तथा ।
अन्या विषपलद्गन्धा शिग्रुका कृत्तिकाऽमला ॥ ११ ॥
खण्डमन्यत्खण्डसिता माधवी मधुशर्करा ।
यवासशर्कराऽन्या सा यवासक्काथसम्भवा ॥ १२ ॥

१ मीनांसा इत्यपि पाठः ।

सिता, मत्स्यंडिका, पल्ली, ममाण्डी, वलक ये सफेद खांडके नाम हैं । दूसरी–विषपलट्टंधा, शिग्रुका, कृत्तिका, अमला, खण्ड, खंडसिता ये खांडके नाम हैं । माधवी, मधुशर्करा ये मधुशर्कराके नाम हैं । यवासशर्करा, यवासकायसंभवा ये (तरंजवीनके) नाम हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

अन्या पुष्पसिता प्रोक्ता पुष्पसंस्कृतशर्करा ।
फाणितं क्षुद्रगुडको गुडस्त्विक्षुरसोद्भवः ।
मत्स्यण्डी ग्राहिणी बल्या गुरुः पित्तानिलापहा ॥ १३ ॥

पुष्पसिता, पुष्पसंस्कृतशर्करा, ये शुद्धबूरेके नाम हैं, फाणित, क्षुद्रगुडक गुड, इक्षुरसोद्भव ये नाम राब, खांड, गुड आदिके हैं । खांडमलको बांधती है, बलको करती है, भारी है, पित्त और वातको नाशती है ॥ १३ ॥

सितोपलानामगुणाः ।

सितोपला सहा गुर्वी वातपित्तहरा हिमा ॥ १४ ॥

सितोपला, सहा ये मिश्रीके नाम हैं । मिसरी भारी है, वातपित्तको हरती है और शीतल है ॥ १४ ॥

खण्डगुणाः ।

खण्डमप्येवमुद्दिष्टं रुच्यं पुष्टिबलप्रदम् ॥ १५ ॥

खांडमेंभी येही गुण हैं, रुचिको बढाती है तथा पुष्टि और बलको देती है॥१५॥

मधुशर्करागुणाः ।

माधवी शर्करा रूक्षा कफपित्तहरा गुरुः ॥ १६ ॥

माधवी, शर्करा अर्थात् शहदकी खांड रूखी है, शीतल है, वातको करती है, और कफपित्तको जीतती है ॥ १६ ॥

यवासशर्करागुणाः ।

यवासशर्करा[1] शीता वातला कफपित्तजित् ॥ १७ ॥

यवासशर्करा अर्थात् जवासेकी खांड, शीतल है, वातको करती है और कफपित्तको जीतती है, यवासशर्करा तुरंजवीनको कहते हैं ॥ १७ ॥

---

१ तुरंजवीनशीरखीरतागुणाः ।

यवासशर्करा पित्तकफवातज्वरापहा । सर्वदोषहरी ज्ञेया विरेकी यवनालजा ॥

तुरंजवीन, पित, कफ, वायु, ज्वर इनको नाश करती है और शीरखीरत सब दोषोंको हरती है और दस्तावर है ॥

पुष्पसिताशर्करानामगुणाः ।

सिता पुष्पसिता हृद्या रक्तपित्तहरा गुरुः ॥ १८ ॥

सिता, पुष्पसिता ये चीनी खांडके नाम हैं । पुष्पासिता (बूरा) दिलको ताकत देती है, रक्तपित्तको हरती है, और भारी है ॥ १८ ॥

फांणितनामगुणाः ।

फाणितं गुर्वभिष्यन्दि दोषलं मूत्रशोधनम् ॥ १९ ॥

फाणित अर्थात् राबभेद भारी है, अभिष्यंदी है, दोषको करती है, मूत्रको शोधती है ॥ १९ ॥

मधूकनामगुणाः ।

मधूकं फाणितं बस्तिदूषणं वातपित्तलम् ॥ २० ॥

मधूक, फाणित ये मधूकके नाम हैं । मधूक बस्तिको दूषित करता है और वातपित्तको उपजाता है, लाला और सीरेको मधूक कहते हैं ॥ २० ॥

गुडगुणाः ।

गुडः क्षारो गुरुः स्वादुर्वातपित्ताग्निकृत्सरः ।
बल्यः कृमिश्लेष्मकरो मूत्ररक्तविशोधनः ।
जीर्णो हृद्यो लघुः पथ्यो नाभिष्यन्द्यग्निपुष्टिकृत् ॥ २१ ॥

गुड खारा है, भारी और स्वादु है, वातपित्त और अग्नि इनको करता है, दस्तावर और बलकारक है, कृमि और कफको उत्पन्न करता है, तथा मूत्र और रक्तको शोधता है । पुराना गुड दिलको ताकत देता है, हलका है, पथ्य है, अभिष्यंदी नहीं है, तथा अग्नि और पुष्टिको करता है ॥ २१ ॥

इक्षोर्विकारान्विमलान् यथा कुर्युर्गुणांश्च ते ।
तृड्दाहमूर्च्छापित्तासृग्विषमेहहरा हिमाः ।
गुरवो मधुरा बल्याः स्निग्धा वातहराः सराः ॥ २२ ॥

ईखके विकार जितने निर्मल बनावे उतनेही गुण करते हैं । तृषा, दाह, मूर्च्छा, पित्तरक्त, विष, प्रमेह इनको हरते हैं, शीतल हैं, भारी हैं, मीठे हैं, बलको करते हैं, चिकने हैं, वातको हरते हैं और सारक हैं ॥ २२ ॥

इति इक्षुवर्गः ।

मधुनामगुणाः ।

मधु पुष्पासवः पुष्परसो माक्षिकमीरितम् ।
माक्षिकं पौत्तिकं क्षौद्रं भ्रामरं मधु विस्तरात् ॥ २३ ॥

मधु, पुष्पासव, पुष्परस, माक्षिक ये शहदके नाम हैं । शहद माक्षिक पौत्तिक, क्षौद्र, भ्रामर इन भेदोंवाला होता है ॥ २३ ॥

माक्षिकं तैलसङ्काशं पौत्तिकं घृतसन्निभम् ।
क्षौद्रं कपिलवर्णं स्याद्भ्रामरं स्फटिकोपमम् ॥ २४ ॥

तेलके समान कांतिवाला माक्षिक होता है, घृतके समान कांतिवाला पौत्तिक होता है, कपिल रङ्गवाला क्षौद्र होता है और स्फटिकके समान कांतिवाला (सफेद) भ्रामर होता है ॥ २४ ॥

मधु शीतं लघु स्वादु रूक्षं ग्राहि विलेखनम् ।
चक्षुष्यं दीपनं स्वर्यं व्रणशोधनरोपणम् ॥ २५ ॥

शहद शीतल और हलका है, स्वादु और रूखा है, मलको बांधता है, लेखन है, आँखोंमें हित है और अग्निको जगाता है, स्वरमें हित है, तथा घावको शोधता और रोपता है ॥ २५ ॥

वर्ण्यं मेधाकरं वृष्यं विशदं रोचनं जयेत् ।
कुष्ठार्शःकासपित्तासृक्कफमेहक्लमक्रिमीन् ॥ २६ ॥
मदतृष्णावमिश्वासहिक्कातीसारहृद्ग्रहान् ।
दाहक्षतक्षयास्रं तु योगवाह्यल्पवातलम् ॥ २७ ॥

मधु वर्णको उपजाता है, बुद्धिको बढाता है, धातुको पुष्ट करता है, सुन्दर है और रुचिको उपजाता है, तथा कुष्ठ, बवासीर, खांसी, पित्त, रक्त, कफ, प्रमेह, ग्लानि, कृमि, मद, तृषा, छर्दि, श्वास, हिचकी, अतिसार, हृदयरोग, दाह, क्षत, क्षय, और रक्तको जीतता है । यह योगवाही है और किंचित् वातको करता है ॥ २६–२७ ॥

माक्षिकं मधुषु श्रेष्ठं नेत्रामयहरं लघु ।
पौत्तिकं मधु रूक्षोष्णं पित्तदाहास्रवातकृत् ॥ २८ ॥

मधुओंमें माक्षिक शहद श्रेष्ठ है, यह नेत्ररोगको हरता है और हलका है । पौत्तिक शहद रूखा और गर्म है तथा पित्त, दाह और रक्तवातको करता है॥२८॥

क्षौद्रं माक्षिकमप्येवं विशेषान्मेहनाशनम् ।
भ्रामरं रक्तपित्तघ्नं मूत्रजाड्यकरं गुरु ॥ २९ ॥

माक्षिकमें जो गुण हैं, वे सब क्षौद्रमें भी हैं, परन्तु विशेषतासे क्षौद्र प्रमेहको नाशता है । भ्रामर शहद रक्तपित्तको नाशता है, मूत्र और जडपनेको करता है तथा भारी है ॥ २९ ॥

नवीनं मध्वभिष्यन्दि स्निग्धं श्लेष्महरं सरम् ।
पुराणं ग्राहि तद्रूक्षं मेदोघ्नमतिलेखनम् ॥ ३० ॥

नया शहद अभिष्यंदी और चिकना है, कफको हरता है तथा सर है, पुराना शहद मलको बांधता है, रूखाहै, मेदरोगको नाशता है और अत्यन्त लेखन है॥ ३०॥

विषादिपुष्टपुष्पेभ्यः सविषा माक्षिकादयः ।
मधु चिन्वन्ति तस्मात्तत्स्वभावात्सविषं स्मृतम् ॥ ३१ ॥

विष आदिसे पुष्ट पुष्पोंसे विषवाली मक्खी आदि शहदको करती हैं, इसलिये वह स्वभावसे विषसहित शहद कहा है ॥ ३१ ॥

तस्मादग्न्यातपात्तप्तं तद्भुक्तं हन्ति मानवम् ।
उष्णे काले च देशे च द्रव्यैरुष्णैश्च योजितम् ॥ ३२ ॥

इसलिये अग्नि और घामसे तपाया हुआ शहद खाया जावे तो मनुष्यको मारनेवाला होता है, (क्योंकि तपायमान शहदमें विषका दोष पूर्णरूपसे व्यापक होजाता है और विना तपायेका दोष मोम और मक्खियोंके छत्तेमें रह जाता है) गर्मसमयमें और गर्मदेशमें गर्म द्रव्योंमे योजित किया सहत गर्मप्रकृतिके मनुष्योंको विषके समान है ॥ ३२ ॥

निरूहे छर्दने तज्ज्ञैस्तदुक्तं न निवार्यते ।
तस्मात्पाकमलब्ध्वैव तयोस्तद्धि निवर्त्तते ।
आमामये जलेनापि तद्द्रवे न निरुध्यते ॥ ३३ ॥

निरूहणबस्तिमें और छर्दिमें वह शहद दिया जासकता है क्योंकि वह गर्म किये जानेसे विकारयुक्त शहद परिपाक न होकर वमन या निरूहणमें उलटा निकल जाता है इसलिये निरूहण और छर्दनमें वैद्यलोग इसको निवारण नहीं करते और आमरोगमें भी पानीके सङ्ग वह आमके द्रवमें नहीं रोका जाता है अर्थात् आमके चलनेमें भी यह दिया जासकता है ॥ ३३ ॥

मधूच्छिष्टा (मोम) नामगुणाः ।

मदनं मधुजं सिक्थं मधूच्छिष्टं मधूलितम् ।
मदनं मृदुसुस्निग्धं भूतघ्नं व्रणरोपणम् ।
भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥ ३४ ॥

मदन, मधुज, सिक्थ, मधूच्छिष्ट मधूलित ये मोमके नाम हैं । मोम कोमल, सुन्दर और चिकना है. भूत-दोषको नाशता है, घावपर अंकुर लाता है, टूटे हुएको जोडता है और वात, कुष्ठ, विसर्प, रक्त इनको जीतता है ॥ ३४ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णो
वर्गोऽयं मधुररसादिरिक्षुकादिः ॥ ३५ ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टाविक्षुकादिरसवर्णनंनाम नवमो वर्गः ॥९ ॥

राजाओंमें मुख्यतासे प्रधान जो कटारमल्ल हुआ उसी श्रीमदन राजाके रचे हुए मदनविनोद नाम इस ग्रन्थमें मधुररस इक्षुकादि वर्ग समाप्त हुआ ॥ ३५ ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ आयुर्वेदोद्धारक वैद्यरत्न रं०-रामप्रसादवैद्योपाध्यायकृत-
विरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनीभाषाटीकायामिक्ष्वादिवर्गः नवमः ॥ ९ ॥

अजन्ममृत्युं बहुजन्ममृत्युं तमालभासं विशदप्रकाशम् ।
मुक्तिप्रदं बद्धमुलूखलेन त्रैलोक्यतातं शिशुमाश्रयामि ॥ १ ॥

जन्म मरणसे रहित, बहुत जन्म मरणवाले, तमालके समान कांतिवाले, सुन्दर प्रकाशवाले, मुक्तिको देनेवाले, ऊखलसे बँधे हुए और त्रिलोकीके रक्षाकरनेवाले बालकको मैं आश्रय लेता हूं ॥ १ ॥

शाल्यादिनामगुणाः ।

शालयो रक्तशाल्याद्या व्रीहयः षष्टिकादयः ।
मुद्गादि वैदलं शैलं कंग्वादि तृणधान्यकम् ॥ २ ॥
क्षुद्रधान्यं कुधान्यं तु शूकधान्यं यवादिकम् ।
रक्तशालिर्लोहितः स्याद्गरुडः शकुनीहृतः ॥ ३ ॥
सुगन्धिको महाशालिः कलमस्तु कलामकः ।

रक्तशालिर्दीर्घशूकः पुण्ड्रो महिषमस्तकः ॥ ४ ॥
पूर्णचन्द्रो महाशालिः पुण्डरीकः प्रमादकः ।
पुष्पाण्डकः शीतभीरुः काञ्चनः शकुनीहृतः[1] ॥ ५ ॥
पाण्डुगौरः शारिवाख्यो रोध्रपुष्पः सुगन्धकः ।
हायनो दीर्घलातश्च महादूषकदूषकौ ॥ ६ ॥

लाल शालि चांवल आदि शालि, कहेजाते हैं । साठी चांवल आदि व्रीहि कहे जाते हैं। मूंग आदि वैदल तथा शैल कहाते हैं तथा कांगनी आदि तृणधान्य कहेजाते हैं । क्षुद्र धान्य और कुधान्य छोटी जातके अन्नके नाम हैं, जव आदि शूकधान्य होते है, लाल रङ्गवालाँ रक्तशालि होता है । गरुड, शकुनीहृत, सुगंधिक महाशालि, कलम, कलामक, रक्तशालि, दीर्घशूक, पुण्ड्र, महिषमस्तक, पूर्णचन्द्र, महाशालि, पुण्डरीक, प्रमादक, पुष्पाण्डक, शीतभीरु, कांचन, शकुनीहृत, पाण्डुगौर, शारिवाख्य, रोध्रपुष्प, सुगन्धक, हायन, दीर्घलात, महादूषक, दूषक ये चांवलोंके भेद हैं ॥ २-६ ॥

शालिधान्यगुणाः ।

शालयो मधुराः स्निग्धा बल्याश्च बद्धवर्चसः ।
पित्तघ्नाऽल्पानिलकफा मूत्रला लघवो हिमाः ॥ ७ ॥

सब शालिचांवल मीठे और चिकने हैं, बलको करते हैं, मलको बांधते हैं, पित्तको नाशते हैं, अल्प वात कफवाले हैं, मूत्रको उपजाते हैं तथा हलके और शीतल हैं ॥ ७ ॥

रक्तशालिर्वरस्तेषां बल्यो वर्ण्यस्त्रिदोषजित् ।
चक्षुष्यो मूत्रलः स्वर्यः शुक्रलस्तृड्ज्वरापहः ॥ ८ ॥

उनमें लालशालि उत्तम है, बल और वर्णकारक है, त्रिदोषको जीतता है, नेत्रोंको हित है, मत्रको उपजाता है, स्वरको करता है, वीर्यको उत्पन्न करता है तथा तृषा और ज्वरको नाशता है ॥ ८ ॥

विषव्रणहरः किञ्चित्तस्मादल्पगुणाः परे ।
वृष्यो बल्यो महाशाली रक्तशालिगुणैः समः ॥ ९ ॥

---

[1] शकुनांकिः इत्यपि पाठः ।

तथा विष और घावको नाशता है । अन्य शालि इससे कुछेक कम गुणों-वाले हैं । महाशालि वीर्यवर्द्धक है, बलको करता है, और लाल शालिके समान गुणवाला है ॥ ९ ॥

कार्मुकः पीत आमोदो लघुर्वृष्यो मुकुन्दकः ।
महाषष्टिककेदारपुष्पाङ्कुरबकादयः ॥ १० ॥

कार्मुक, पीत, आमोद, मुकुंदक ये हलके हैं, वीर्यको पुष्ट करते हैं और महाषष्टिक, केदारपुष्पांकुर, बक आदि ॥ १० ॥

षाष्टिकधान्यगुणाः ।

षष्टिका मधुराः शीता लघवो बद्धवर्चसः ।
वातपित्तप्रशमनाः शालीनां सदृशा गुणैः ॥ ११ ॥

और साठी चांवल मीठे हैं, शीतल हैं, हलके हैं, मलको बांधते हैं, वातपित्तको करते हैं, शालिचावलोंके समान गुणवाले हैं ॥ ११ ॥

षष्टिकः प्रवरस्तेषां लघुः स्निग्धास्त्रिदोषजित् ।
पाके स्वादुर्मृदुर्ग्राही स्थैर्यकारी बलप्रदः ॥ १२ ॥

उनमें साठी चांवल उत्तम हैं, हलके हैं, चिकने हैं, त्रिदोषको जीतते हैं, पाकमें स्वादु हैं, मलको बांधते हैं, स्थिरता करते हैं, और बलको देते हैं ॥ १२ ॥

कृष्णव्रीह्यादिधान्यगुणाः ।

रक्तशालिगुणैस्तुल्यास्तस्मादल्पगुणाः परे ।
कृष्णव्रीहिस्तुरितकः कुक्कुटाण्डकपाटलौ ॥ १३ ॥

अन्य अल्प गुणोंवाले कृष्णव्रीहि, तुरितक, कुक्कुटांडक, पाटल ये सब लाल शालीके गुणके समान हैं ॥ १३ ॥

राजीवाक्षःशलायुश्च नन्दी जन्तुमुखादयः ।
व्रीहयो मधुराः शीताः षष्टिकानां गुणैः समाः ॥ १४ ॥

राजीवाक्ष, शलायु, नंदी, जंतुमुखादि ये सब व्रीहिके भेद हैं । सब व्रीहि मीठे है, शीतल हैं, और साठी चांवलोंके समानगुणवाले हैं, ॥ १४ ॥

कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाः परे ।
शालयो दग्धभुञ्जाना लघुरूक्षाः कफापहाः ॥ १५ ॥

उनमें कृष्णव्रीहि उत्तम हैं, उससे अल्प गुणोंवाले अन्य व्रीहि हैं, भूनेहुएं शाली हलके हैं, रूखे हैं, कफको नाशते हैं, ॥ १५ ॥

स्थूलजाः स्वादवः पित्तकफघ्ना वातवह्निदाः ।
कैदारा वातपित्तघ्ना गुरवः कफशुक्रलाः ॥ १६ ॥

स्थूलज शालि स्वादु हैं, पित्तकफको नाशते हैं, वात और अग्निको उत्पन्न करते हैं, कैदार वातपित्तको नाशते हैं, भारी हैं, कफ और वीर्यको देते हैं ॥ १६ ॥

रौप्यातिरौप्या लघवो मूत्रलास्ते गुणोत्तराः ।
छिन्नरूढा हिमा रूक्षाः पित्तघ्ना लघुपाकिनः ॥ १७ ॥

रौप्य और अतिरौप्य हलके हैं, मूत्रको देते हैं, उत्तम गुणवाले हैं । छिन्नरूढ शीतल हैं, रूखे हैं, पित्तको नाशते हैं, शीघ्र पकते हैं, ॥ १७ ॥

पुराणं नेत्रमन्धानां जलक्लिन्नं प्रयत्नतः ।
पुनर्विशोषितं सम्यग्घर्मे रूक्षं लघु स्मृतम् ॥ १८ ॥

पुराने चांवल अंधोंके नेत्र, हैं, भिगोयके फिर घाममें अच्छीतरह शोषितकिये रूखे हैं, और हलके कहे हैं ॥ १८ ॥

दीपनं पाचनं मेध्यं वातश्लेष्महरं परम् ।
व्रीहित्वं षष्टिकस्यापि भिन्नत्वं शीघ्रपाकतः ॥ १९ ॥

अग्निको जगाते हैं, पाचन हैं, बुद्धिको बढाते हैं, वात कफको हरते हैं । सांठी चांवलकी भी व्रीहिधान्योंमें गणना है, जलदी पाक होजानेसे ये उनसे भिन्नहैं॥१९॥

गोधूमनामगुणाः ।

गोधूमः सुमनः क्षुद्रो मधूली रूपशीतला ।
नन्दीमुखाऽल्पगोधूमो लोकेशी पासिकोच्यते ॥ २० ॥

गोधूम, सुमन, क्षुद्र, मधूली, रूपशीतला, नंदीमुख, अलपगोधूम, लोकेशी, पासिका ये गेहूंके नाम हैं ॥ २० ॥

गोधूमो मधुरः शीतो वातपित्तहरो गुरुः ।
कफशुक्रप्रदो बल्यः स्निग्धः सन्धानकृत्सरः ॥ २१ ॥

गेहूं मीठा है, शीतल है, वात पित्तको हरता है, भारी है, कफ और वीर्यको उत्पन्न करता है, बलको देता है, चिकना है; जोडनेवाला है, सर है ॥ २१ ॥

जीवनो बृंहणो वर्ण्यः स्यन्दी रुच्यः स्थिरत्वकृत् ।
मधूली शीतला स्निग्धा पित्तघ्नी मधुरा लघुः ॥ २२ ॥

जीवन है, धातुको पुष्ट करता है, वर्णको निखारता है, अभिष्यंदी है, रुचिको

करता है, स्थिरता करता है, मधूली शीतल है, चिकनी है, पित्तको नाशती है, मीठी है, हलकी है ॥ २२ ॥

शुक्ला बृंहणी पथ्या तद्वन्नन्दीमुखी मता ।
एतस्मात्स्थूलगोधूमात्क्षुद्रो हीनतरो गुणैः ॥ २३ ॥

नन्दीमुख वीर्यको करता है, धातुको पुष्ट करता है, पथ्य है, इस स्थूल गेहूंसे क्षुद्र गेहूंमें बहुत कम गुण हैं ॥ २३ ॥

यवनामगुणाः ।

यवः शुचिस्तीक्ष्णशूको निशूकोऽतियवोऽपरः ।
यवः कषायो मधुरः शीतः पित्तकफास्रजित् ॥ २४ ॥

यव, शुचि, तीक्ष्णशूक, निशूक, अतियव ये जवके नाम हैं । जव कषैला है, मीठा है, शीतल है, पित्त, कफ, रक्त इनको जीतता है ॥ २४ ॥

व्रणेषु तिलवत्पथ्यो रूक्षो मेधाग्निवर्द्धनः ।
लेखनो बद्धनिस्यन्दः स्वर्यो मेहतृषापहः ॥ २५ ॥

घावोंमें तिलोंकी तरह पथ्य है, रूखा है, बुद्धि और अग्निको बढाता है, लेखन है, विबंधको करता है, स्वरमें हित है, प्रमेह और तृषाको हरता है ॥ २५ ॥

बहुवातमलः स्थैर्यवर्णकारी स पिच्छिलः ।
अस्मादतियवः किञ्चिद्गुणैर्न्यूनतरः स्मृतः ॥ २६ ॥

बहुत वात और मलको करता है, स्थिरता और वर्णको करता है, पिच्छिल है, इससे अतियव गुणोंकरके अल्पगुणोंवाला कहा है ॥ २६ ॥

शिंबीधान्यनामगुणाः ।

शिम्बी मुद्गश्चणो माषः सतीनः सकुलायकः ।
मसूरश्चक्रमङ्गल्यौ मकुष्ठत्रिपुटादयः ॥ २७ ॥

शिंबी, मूँग, चना, उडद, मटर, मोठ, मसूर, चौला, मोठ, गुवार, इत्यादिक वैदल अन्न कहे जाते हैं ॥ २७ ॥

वैदला मधुरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
वातलाः कफपित्तघ्ना बद्धमूत्रमला हिमाः ॥ २८ ॥

वैदल, मीठे हैं, रूखे हैं, कषैले हैं, पाकमें चर्परे हैं, वातको करते हैं, कफ-पित्तको नाशते हैं, मूत्र और मलको बांधते हैं, शीतल है ॥ २८ ॥

ऋते मुद्गमसूराभ्यामन्ये त्वाध्मानकारकाः ।
शिम्बा विष्टम्भिनो मेहदृष्टिघ्ना वातपित्तलाः ॥ २९ ॥

मूँग और मसूरके सिवाय और सब आध्मान करते हैं, शिंबी विष्टंभ करते हैं, प्रमेह और दृष्टिको नाशते हैं तथा वातपित्तको करते हैं ॥ २९ ॥

विशदा गुरवो हृद्या रूक्षाः कटुविपाकिनः ।
सितासितादिभेदेन बहुधा ते प्रकीर्तिताः ॥ ३० ॥

स्वच्छ हैं, भारी हैं, वीर्यको पुष्ट करते हैं, दिलको ताकत देते हैं, पाकमें कडुवे हैं, सुफेद, काले, लाल इन भेदोंसे वे बहुत प्रकारके कहेगये हैं ॥ ३० ॥

मुद्गनामगुणाः ।

मुद्गो बलाढ्यो मङ्गल्यो हरितः शारदोऽपरः ।
बलको माधवः पीतः प्रचेतः परिकीर्तितः ॥ ३१ ॥

मुद्ग, बलाढ्य, मंगल्य, हरित, शारद, बलाक, माधव, पीत, प्रचेत, ये मूँगके नाम हैं ॥ ३१ ॥

वनमुद्गस्तुवरको राजमुद्गस्तु खण्डकः ।
मुद्गोरूक्षो लघुर्ग्राही कफपित्तहरो हिमः ॥ ३२ ॥

वनमुद्ग, तुवरक, राजमुद्ग, खंडक ये वनमूंगके नाम हैं । मूँग रूखा है, हलका है, मलको बांधता है, कफ और पित्तको हरता है तथा शीतल है ॥ ३२ ॥

स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो वर्ण्योऽप्येतद्गुणः स्मृतः ।
हरितः प्रवरस्तेषां तच्छाकं तिक्तमुत्तमम् ॥ ३३ ॥

मूँग स्वादु है, अल्प वातको करता है, नेत्रोंमें हित है, वर्णको प्रकाश करता है, हरा मूँग बहुत उत्तम है, उसका शाक कडुवा है ॥ ३३ ॥

माषनामगुणाः ।

माषो जीर्णकरो[१] धारी धवलो राजमाषकः ।
माषो गुरुः स्वादुपाकः स्निग्धो वृष्योऽनिलापहः ॥ ३४ ॥

माष, जीर्णकर, धारी, धवल, राजमाषक ये उडदके नाम हैं । उडद भारी है, पाकमें स्वादु है, चिकना है, वीर्यको पुष्ट करता है और वातको नाशता है ॥ ३४ ॥

उष्णः स तर्पणो बल्यः शुक्रलो बृंहणः परम् ।

---

१ वीर्यकरः इत्यपि पाठः ।

भिन्नमूत्रकफस्तन्यो मेदः पित्तकफप्रदः ।
गुदकीलार्दितश्वासपक्तिशूलानि नाशयेत् ॥ ३५ ॥

उड़द गर्म है, तृप्ति करता है, बल करता है, वीर्य करता है, धातुको पुष्ट करता है और मूत्र, कफ, दूध इनको पैदा करता है, तथा मेद, कफ, पित्तको देता है, गुदकील, लकुवा, श्वास, पक्तिशूल इनको नाश करता है ॥ ३५ ॥

राजमाषगुणाः ।

राजमाषः स्वादुरूक्षःकषायस्तर्पणो लघुः ।
ग्राही वातकफस्तन्यबहुवर्चोरुचिप्रदः ॥ ३६ ॥

राजमाष अर्थात् लोबिया स्वादु है, रूखा है, कषैला है, हलका है, मलको बांधता है और वात, कफ, दूध, बहुत मल और रुचि इनको उत्पन्न करता है ॥ ३६ ॥

मकुष्ठनामगुणाः ।

मकुष्ठको मकुष्ठः स्यान्निष्पावो वल्लकः स्मृतः ।
मकुष्ठो वातलो ग्राही कफपित्तहरो गुरुः ।
वान्तिजिन्मधुरःपाके कृमिकृज्ज्वरनाशनः ॥ ३७ ॥

मकुष्ठक, मकुष्ठ, निष्पाव, वल्लक, ये मोठोंके नाम हैं । मोठ वातको करता है, मलको बांधता है, कफ-पित्तको हरता है, भारी है, छर्दिको जीतता है, पाकमें मीठा है, कृमिको करता है और ज्वरको नाशता है ॥ ३७ ॥

निष्पावगुणाः ।

निष्पावोऽनिलपित्तास्रमूत्रस्तन्यकरः सरः ।
विदाह्युष्णो गुरुःश्लेष्मशोफकृच्छुक्रनाशनः ॥ ३८ ॥

निष्पाव अर्थात् राजशिंबी-पित्तरक्त, मूत्र, दूध इनको उत्पन्न करता है, सर है, दाहकारक, गर्म और भारी है, कफ और शोजेको करता है, तथा वीर्यको नाशता है ॥ ३८ ॥

सतीनानामगुणाः ।

वर्तुलस्तु सतीनः स्याद्धरेणुः स्वल्पवर्तुलः ।
वर्तुलः शीतलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ।
विपाके मधुरो रूक्षो हरेणुस्तद्गुणः स्मृतः ॥ ३९ ॥

वर्तुल, सतीन, हरेणु, स्वल्पवर्तुल ये मटरके नाम हैं, मटर-शीतल है, मलको बांधता है, कफ और पित्तको हरता है, हलका है, पाकमें मीठा और रूखा है । हरेणुमें भी येही गुण हैं ॥ ३९ ॥

कलायनामगुणाः ।

कलायः खण्डिकः प्रोक्तस्त्रिपुटः क्षुद्रखण्डिकः ।
कलायः कफपित्तघ्नो ग्राही शीतोऽतिवातलः ।
त्रिपुटोऽपि गुणैरेवं तच्छाकं कफपित्तजित् ॥ ४० ॥

कलाय, खंडिक, त्रिपुट, क्षुद्रखंडिक ये नाम बडे मटरके हैं। मटर–कफपित्तको नाशता है, मलको बांधता है, वातको बढाता है। काले मटरमें भी येही गुण हैं। मटरका शाक कफ–पित्तको जीतता है, इसकी भी मटरकी समान ही जाति है, मध्यप्रदेशमें इसको कसूर, कस्सा कहते हैं ॥ ४० ॥

चणकनामगुणाः ।

चणको हरिमन्थः स्याद्वाजिमन्थश्च जीवनः ।
चणकः शीतलो रूक्षो रक्तपित्तकफापहः ।
लघुः कषायो विष्टम्भी वातलः कुष्ठनाशनः ॥ ४१ ॥

चणक, हरिमंथ, वाजिमंथ, जीवन ये चनाके नाम हैं। चना–शीतल है, रूखा है, रक्तपित्त और कफको नाशता है, हलका है, कषैला है, विष्टंभ करता है, वातको उपजाता है और कुष्ठको नाशता है ॥ ४१ ॥

मसूरनामगुणाः ।

मसूरिकारिर्मसूरिर्मङ्गल्या पाण्डुरापलः ।
मसूरिर्मधुरः पाके संग्राही शीतलो लघुः ।
कफपित्तास्रजिद्बल्यस्तच्छाकं लघु तिक्तकम् ॥ ४२ ॥

मसूरिकारि, मसूरि, मंगल्या, पाण्डुरापल ये मसूरके नाम हैं। मसूर पाकमें मीठा है, मलको बांधता है, शीतल है, हलका है, कफ और पित्तरक्तको जीतता है और बलको करता है, इसका शाक हलका और कडुवा है ॥ ४२ ॥

कुलत्थनामगुणाः ।

कुलत्थश्चक्रकश्चक्रः कुलालो वनजः परः ।
अपरा दृक्प्रसादा च चक्षुष्या च कुलत्थिका ॥ ४३ ॥
कुलाली लोचनहिता कुम्भकारी मलापहा ।
कुलत्थः कटुकः पाके कषायो रक्तपित्तजित् ॥ ४४ ॥

कुलत्थ, चक्रक, चक्र, कुलाल, वजन, अपरा, दृक्प्रसादा, चक्षुष्या, कुलत्थिका, कुलाली, लोचनहिता, कुंभकारी, मलापहा ये नाम कुलथीके हैं। कुलथी पाकमें चर्परी है, कषैली है और रक्त-पित्तको जीतती है ॥

लघुर्विदाही वीर्योष्णः श्वासकासकफानिलान् ।
हन्ति हिक्काश्मरीशुक्रदृग्गानाहान्सपीनसान् ॥ ४५ ॥

यह हलकी है, दाहको करती है, वीर्यमें गर्म है और श्वास, खांसी, कफ, वात, हिचकी, पथरी, वीर्य, नेत्ररोग, अफारा, पीनस इनको नाशती है ॥ ४५ ॥

स्वेदसंग्राहको गुल्ममेदःकृमिहरः सरः ।
वन्यो विशेषतः शीतो नेत्रामयविषापहः ॥ ४६ ॥

तथा पसीनेको रोकती है, कुलथी गुल्म, मेद, कृमि, इनको हरती है, सर है। बनकुलथी विशेषकर शीतल है, नेत्ररोग और विषको नाशती है ॥ ४६ ॥

तिलनामगुणाः ।

तिलपुष्पस्तैफलस्तिलपिञ्जोऽपरः सितः ।
जातिलो वनजातः स्यादाढकी तुवरी मता ॥ ४७ ॥

तिलपुष्प, तैलफल, तिलपिंज, सित, जातिल, वनजात ये तिलके नाम हैं। आढकी, तुवरी ये अरहरके नाम हैं ॥ ४७ ॥

तिलः कषायो मधुरस्तिक्तकः कटुको रसे ।
तिलो ग्राही गुरुः स्वादुः स्निग्धोऽस्रकफपित्तलः ॥ ४८ ॥

तिल कषैला है, मीठा है, कडुवा है, रसमें चर्परा है, मलको रोकता है, भारी है स्वादु है, चिकना है और रक्त, कफ, पित्त इनको उत्पन्न करता है ॥ ४८ ॥

बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यो व्रणहितः परम् ।
वन्योऽल्पमूत्रकृद्धातुनाशनोऽग्निमतिप्रदः ॥ ४९ ॥

और बलको करता है, बालोंको बढाता है, शीतल स्पर्शवाला है, त्वचाको हित है, घावमें हित है। वनका तिल, अल्पमूत्र करता है, धातुको नाशता है तथा अग्नि और बुद्धिको देता है ॥ ४९ ॥

कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लो मध्यमः सितः ।
अन्ये हीनतराः प्रोक्तास्तज्ज्ञै रक्तादयस्तिलाः ॥ ५० ॥

काला तिल सब तिलोंमें उत्तम है, वीर्यको करता है, सफेद तिल मध्यम है और लाल तिल आदि पण्डितोंने बहुत हीन कहे हैं ॥ ५० ॥

तुवरीगुणाः ।

तुवरी ग्राहिणी शीता लघुः कफविषास्रजित ॥ ५१ ॥

अरहर मलको रोकता है, शीतल है, हलका है और कफ, विष, रक्तविकार इनको जीतता है ॥ ९१ ॥

अतसीनामगुणाः।

अतसी मसृणा नीलपुष्पा चेलूत्तमा क्षुमा।
अतसी शुक्रदृष्टिघ्नी स्निग्धा वातास्रजिद्गुरुः ॥ ९२ ॥

आतसी, मसृणा, नीलपुष्पा, चेलूत्तमा, क्षुमा ये अलसीके नाम हैं। अलसी वीर्य और दृष्टिको नाशती है, चिकनी है, वातरक्तको जीतती है और भारी है ॥९२॥

कुसुम्भनामगुणाः।

कुसुम्भं वार्द्धकी पीतमलक्तं वस्त्ररञ्जनी।
तद्बीजं किरटी लघ्वी तथा शुद्धपयोत्तरा ॥ ९३ ॥

कुसुंभ, वार्द्धकी, पीत, अलक्त, वस्त्ररंजनी ये कुसुभाके नाम हैं। किरटी, लघ्वी, शुद्धपयोत्तरा ये कुसुंभेके बीजके नाम हैं ॥ ९३ ॥

कुसुम्भं वातलं कृच्छ्ररक्तपित्तकफापहम्।
किरट्यतसीवदुद्दिष्टा विशेषाद्विषनाशिनी ॥ ९४ ॥

कुसुम्भा वातको करता है और मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, कफ इनको नाशता है। कुसुम्भाके बीजमें अलसीके समान गुण हैं, विशेषकर विषको नाशता है ॥ ९४ ॥

सर्षपनामगुणाः।

सर्षपः कटुकः स्नेहो भूतघ्नो रक्षिताफलः।
तुर्तुभोऽन्यः स उद्दिष्टः सिद्धार्थः श्वेतसर्षपः ॥ ९५ ॥

सर्षप, कटुक, स्नेह भूतघ्न, रक्षिताफल, तुर्तुभ, सिद्धार्थ, श्वेतसर्षप ये नाम सरसोंके हैं ॥ ९५ ॥

राजिका वासुरी राजी सुतीक्ष्णः कृष्णसर्षपः।
सर्षपः कफवातघ्नस्तीक्ष्णोष्णो रक्तपित्तकृत् ॥ ९६ ॥

राजिका, वासुरी, राजी, सुतीक्ष्ण, कृष्णसर्षप ये राईके नाम हैं। सरसों कफवातको नाशती है, तेज है, गर्म है, और रक्तपित्तको करती है, ॥ ९६ ॥

किञ्चिद्रूक्षोऽग्निदः कण्डूकुष्ठकोष्ठक्रिमीन्हरेत्।
राजिकास्तद्गुणा ज्ञेयास्तीक्ष्णास्तीव्रा विशेषतः ॥ ९७ ॥

तथा किंचित् रूखी है, अग्निको देती है और खाज, कुष्ठ, कोठेके कृमि इनको हरती है। राईमें भी येही गुण हैं, और तीव्र तेज विशेषसे हैं ॥ ९७ ॥

शणनामगुणाः ।

शणः प्रोक्तो मातुलानी जन्तुतन्तुर्महाशणः ।
शणो हिमो गुरुर्ग्राही तत्पुष्पं प्रदरास्रजित् ॥ ५८ ॥

शण, मातुलानी, जंतुतन्तु, महाशण ये नाम शणके हैं । शण शीतल और भारी है, मलको रोकता है । इसका फूल प्रदर और रक्तको जीतता है ॥ ५८ ॥

कङ्ग्वादिश्यामाकादिधान्यगुणाः ।

कंगूश्यामाकनीवारवरकोद्दालनर्त्तकाः ।
वरट्टिका तोदपर्णी कोद्रवश्च मधूलिका ॥ ५९ ॥
नन्दीमुखी वेणुयवा प्रियङ्गुः कोरदूषकः ।
गवेधुका नलो नाली मुकुन्दं वारिकादिकम् ॥ ६० ॥

कंगू, श्यामाक, नीवार, उद्दाल, नर्तक, वरट्टिका, तोदपर्णी, कोद्रव, मधूलिका, नंदीमुखी, वेणुयवा, प्रियंगु, कोरदूषक, गवेधुका, नल, नाली, मुकुन्द, वारिका आदिक तृणधान्य हैं ॥ ५९ ॥ ६० ॥

तृणधान्यं लघु स्वादु कटुपाकि विलेखनम् ।
रूक्षोष्णं बद्धनिस्यंदं वातपित्तप्रकोपनम् ॥ ६१ ॥

तृणधान्य-हलके हैं, स्वादु हैं, पाकमें चर्परे हैं, लेखन हैं, रूखे हैं, गर्म हैं, विबंध करते हैं और वातपित्तको कुपित करते हैं ॥ ६१ ॥

पीततण्डुलिका कङ्गुः प्रियङ्गुः कर्कटी मता ।
सितकङ्गुस्तु मुसटी रक्तकङ्गुस्तु शोधिका ।
चीनाकः काककङ्गुः स्याच्छ्यामाकः शणकङ्गुकः ॥ ६२ ॥

पीततण्डुलिका, कंगु, प्रियंगु, कर्कटी, सितकंगु, मुसटी, रक्तकंगु, शोधिका, चीनाक, काककंगु, श्यामाक, शणकंगुक ॥ ६२ ॥

शाल्यादयः कङ्गुभेदाः कोद्रवः कुरसः स्मृतः ।
कोद्रवः कोरदूषः स्यादुद्दालो वनकोद्रवः ।
प्रियङ्गुः पित्तजिद् वृष्यो भग्नसन्धानकृद्गुरुः ॥ ६३ ॥

शालि आदि ये सब कांगनीके भेद हैं । कोद्रव, कुरस, कोरदूष, उद्दाल, वनकोद्रव ये नाम कोदूके हैं । कांगनी पित्तको जीतती है, वीर्यको पुष्ट करती है, टूटे हुएको जोड देती है और भारी है ॥ ६३ ॥

श्यामाकः शोषणः शीतो रूक्षः पित्तकफापहः ।
कोद्रवः शीतलो ग्राही विषपित्तकफाञ्जयेत् ॥ ६४ ॥

श्यामाक शोषता है, शीतल है. रूखा है, पित्त कफको नाशता है, कोद्रव शीतल है, मलको रोकता है और विष, पित्त, कफ इनको जीतता है ॥ ६४ ॥

नीवारनामगुणाः ।

नीवार उटिका नाडी मुनिव्रीहिर्मुनिप्रियः ।
नीवारः शीतलो ग्राही पित्तघ्नः कफवातकृत् ॥ ६५ ॥

नीवार, उटिका, नाडी, मुनिव्रीहि, मुनिप्रिय ये नीवारके नाम हैं । नीवार शीतल है, मलको बांधता है, पित्तको नाशता है और कफवातको करता है ॥ ६५ ॥

यावनाल (ज्वार) नामगुणाः ।

यावनालो देवधान्यं जुह्वोलिर्जुह्वलोऽनलः ।
यावनालः स्वादुशीतो वातलः कफपित्तजित् ॥ ६६ ॥

यावनाल, देवधान्य, जुह्वोलि, जुह्वल, अनल ये यवनाल (ज्वार) के नाम हैं । यवनाल स्वादु है, शीतल है, वातको करता है और कफपित्तको जीतता है ॥ ६६ ॥

गवेधुकानामगुणाः ।

गवेधुका कर्षणी स्याद्गोजिह्वाऽऽकर्षिणी मता ।
गवेधुका कटुः स्वाद्वी कार्श्यकृत्कफनाशिनी ॥ ६७ ॥

गवेधुका, कर्षणी, गोजिह्वा, आकर्षिणी ये गवेधुकाके नाम हैं । गवेधुका चर्परी है, स्वादु है, माडेपनको करती है और कफको नाशती है ॥ ६७ ॥

अयोग्यधान्यम् ।

अपर्याप्तं व्याधिहतमनार्त्तवमभूमिजम् ।
नवं जन्त्वादिभिर्जुष्टं न धान्यं गुणवन्मतम् ॥ ६८ ॥

सामर्थ्यरहित, रोगसे नष्ट, विना समय और निंदित पृथिवीमे उपजा नया और कीडे आदिसे युत ऐसा अन्न गुणकरनेवाला नहीं मानागया है ॥ ६८ ॥

नवीनधान्यगुणाः ।

धान्यं नवमभिष्यन्दि गुरु स्वादु कफप्रदम् ।
वर्षोषितं सर्वधान्यं गौरवं परिमुञ्चति ॥ ६९ ॥

नवीन अन्न अभिष्यंदी है, भारी है, स्वादु है, कफको देता है, वर्ष दिनके उपरान्त सब अन्न भारीपनको छोडदेते हैं ॥ ६९ ॥

जीर्णधान्यगुणाः ।

न मुञ्चति तदा वीर्यं क्रमान्मुञ्चत्यतः परम ।
विदाहि गुरु विष्टम्भि विरूढं दृष्टिदूषणम् ॥ ७० ॥

सामान्यतासे एक वर्षपर्यंत धान्य अपने वीर्य और गुरुता आदिको नहीं छोडते इसके उपरान्त क्रमसे विदाहीपना, गुरुता, विष्टम्भता, विरूढता (जोर करना-जिससे पाचन न होकर ज्वरादि होता है) और दृष्टिदूषण इनको त्याग देता है और हलका तथा पाचन हो जाता है ॥ ७० ॥

एतेषु यवगोधूमतिलमाषा नवा हिताः ।
रूढाः पुराणा विरसा न तथा गुणकारिणः ॥ ७१ ॥

इन अन्नोंमें जव, गेहूं, तिल, उडद ये नये उत्तम हैं, पुराने और रससे रहितहुए गुणको नहीं करते हैं ॥ ७१ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि शुद्धे
पूर्णोऽयं ललितपदैस्तु धान्यवर्गः ॥ ७२ ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ धान्यगुणवर्णनं नाम दशमो वर्गः ॥ १० ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ वैद्यरत्नपं०-रामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनीभाषाटीकायां धान्यगुणवर्णनं नाम दशमो वर्गः ॥ १० ॥

राधा हरिं चरणयोः पतितं कराभ्यां
कोपाज्जघान तमुदीक्ष्य पुनर्हसन्तम् ।
तत्पादयोः समपतच्चकिता भिया ता-
मुत्थापयञ्जयति कैतवगोपवेषः ॥ १ ॥

पैरोंमें पतितहुए श्रीकृष्णको राधा कोप करके हाथोंसे मारनेलगी फिर हँसतेहुए श्रीकृष्णको देख उनके पैरोंमें चकित होकर पडीहुई राधाको उठातेहुए कपटसे गोपवेषधारी भगवान्की जय हो ॥ १ ॥

आहारनामगुणाः।

आहारो भोजनं जग्धिर्नित्यशोजीवनं तथा।
आहारो बलकृत्सद्यः प्रीणनो देहधारकः।
ओजस्तेजःस्वरोत्साहधृतिस्मृतिमतिप्रदः॥ २॥

आहार, भोजन, जग्धि, नित्यका जीवन ये भोजनके नाम हैं। भोजन तत्काल बल करता है, तृप्ति करता है, देहको धारता है और पराक्रम, तेज, स्वर, उत्साह, धैर्य, स्मरण तथा बुद्धिको देता है॥ २॥

भक्तनामगुणाः।

भक्तमन्धस्तु भिस्साऽहङ्करं दीदिविरोदनः।
भक्तं वह्निकरं पथ्यं तर्पणं मूत्रलं लघु॥ ३॥

भक्त, अन्धस्, भिस्सा, अहंकर, दीदिवि, ओदन ये नाम भातके हैं। भात अग्निको करता है, पथ्य है, तृप्ति करता है, मूत्र उपजाता है, और हलका है॥ ३॥

सुधौतं प्रस्रुतं चोष्णं विशदं गुणवन्मतम्।
अधौतमस्रुतं शीतं गुरु वृष्यं कफप्रदम्॥ ४॥

सुन्दर धोयाहुआ और अच्छीतरह निचोडाहुआ भात गर्म है, सुन्दर है, गुणवाला माना है। नहीं धोयाहुआ और न निचोडाहुआ भात शीतल है, भारी है, वीर्यको पुष्ट करता है और कफ करता है॥ ४॥

भृष्टतण्डुलकं रुच्यं सुगन्धि कफजिल्लघु।
भक्तं मांसफलक्षीरवैदलाम्लादिसाधितम्।
स्नेहशाकैर्गुरुतरं वृष्यं बल्यं कफप्रदम्॥ ५॥

भुनाहुआ चांवल रुचि करता है, सुगंधित है, कफको जीतता है, हलका है और मांस, फल, दूध, वैदल अर्थात् मूग, उडद आदि अन्न, खट्टा रस आदि स्नेह शाक इनसे साधित किये चांवल बहुत भारी हैं, वीर्यको करते हैं, बल करते हैं और कफको करते हैं॥ ५॥

रसौदनो गुरुर्वृष्यो बल्यो वातज्वरापहः।
घोलं भक्तं ग्रहण्यर्शःश्रमघ्नं पाचनं हिमम्॥ ६॥

मांसके रसमें पकाया चांवल भारी है, वीर्यको पुष्ट करता है, बलको करता है

---

१ जग्धिरशनं जेमनं तथेति-पाठः।

और वातज्वरको नाशता है। घोलसंज्ञक भात ग्रहणी, बवासीर, परिश्रम इनको नाशता है, तथा पाचन है और शीतल है ॥ ६ ॥

ओदनगुणाः ।

अत्युष्णान्नं बलहरं शीतमुष्णं च दुर्जरम् ।
अतिक्लिन्नं ग्लानिकरं दुर्जरं तण्डुलान्वितम् ॥ ७ ॥

अत्यन्त गर्म अन्नादि बलको हरता है, शीतल गर्म किया देरमें जीर्ण होने वाला है, बहुत गलाहुआ ग्लानिको करता है तथा किनकोंसे युत हुआ दुर्जर है ॥ ७ ॥

सौमनस्यं बलं पुष्टिमुत्साहं हर्षणं सुखम् ।
स्वादु सञ्जनयेदन्नमामं स्वदुविपर्ययम् ॥ ८ ॥

पकाहुआ चांवल मनकी सुन्दरता, बल, पुष्टि, उत्साह, आनन्द, सुख, आम इनको उपजाता है और स्वादु है। कच्चा चांवल विपरीत स्वादुवाला है ॥ ८ ॥

यवागूपेयादिलक्षणम् ।

यवागूः षड्गुणे तोये संसिद्धा विदलद्रवा ।
चतुर्गुणे तु संसिद्धा विलेपी घनसिक्थिका ॥ ९ ॥

छः गुने पानीमें सिद्ध की जावे और पतली रहै (जिससे अन्नके दाने अलग रहैं पानी अलग हो) वह यवागू होती है और चौगुने पानीमें पकाई गाढी (जिसमें जल और अन्न मिलजाय) वह विलेपी होती है ॥ ९ ॥

पेया सिक्थान्विता तोये चतुर्दशगुणे कृता ।
मण्डश्चतुर्दशगुणे सिद्धस्तोये त्वसिक्थकः ॥ १० ॥

चौदह गुने पानीमें पकाई किनकोंसहित हो वह पेया होती है। चौदह गुने पानीमें पकाया जावे और किनकोंसे रहित होजाय वह मण्ड होता है ॥ १० ॥

यवागूगुणाः ।

यवागूर्ग्राहिणी तृष्णाज्वरघ्नी बस्तिशोधनी ॥ ११ ॥

यवागू मलको रोकती है, तृषा और ज्वरको नाशती है, बस्तिको शोधती है ॥ ११ ॥

विलेपीगुणाः ।

विलेपी दीपनी बल्या हृद्या संग्राहिणी लघुः ।
व्रणाक्षिरोगिणां पथ्या तर्पणी तृड्ज्वरापहा ॥ १२ ॥

विलेपी अग्निको जगाती है, बलको करती है, दिलको ताकत देती है, मलको रोकती है, हलकी है, घाव और आंखके रोगवालोंको पथ्य है। यह तृप्त करती है तथा तृषा और ज्वरको हरती है ॥ १२ ॥

पेयागुणाः ।

पेया कुक्षिगदक्लान्तिज्वरस्तम्भातिसारजित् ।
रुच्यग्निकृल्लघुर्दोषमलस्वेदानुलोमना ॥ १३ ॥

पेया कुक्षिरोग, जी मचलाना, ज्वर, स्तंभ, अतिसार इनको जीतती है, रुचि और अग्निको उत्पन्न करती है तथा पित्तज्वर, कफ, परिश्रम इनको नाशता है॥१३॥

मण्डगुणाः ।

मण्डो ग्राही लघुः शीतो दीपनो धातुसाम्यकृत् ।
स्रोतोमार्दवकृत्पित्तज्वरश्लेष्मश्रमापहः ॥ १४ ॥

मांड मलको रोकता है, हलका है, शीतल है अग्निको जगाता है, धातुओंको साम्यावस्थामें करता है, स्रोतोंको कोमल करता है तथा पित्तज्वर, कफ, परिश्रम इनको नाशता है ॥ १४ ॥

याव्यमण्ड-लाजमण्डगुणाः ।

याव्यमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डस्तु शालिभिः ।
याव्यमण्डो लघुर्ग्राही शूलानाहत्रिदोषजित् ॥ १५ ॥

भुनेहुए जवोंसे जो बनाया जाय वह याव्यमंड होता है और भुनेहुए शालि चावलोंसे अथवा धानकी खीलोंसे जो बनाया जाय वह लाजमण्ड होता है। याव्यमंड हलका है, मलको रोकता है और शूल, अफारा, त्रिदोष इनको जीतता है ॥ १५ ॥

नवज्वरेऽपि पथ्योऽयं पटोलमागधान्वितः ।
लाजमण्डो लघुर्ग्राही सद्यः पाचनदीपनः ॥ १६ ॥

नवज्वरमें भी परवल और पीपलसे संयुक्त किया याव्यमण्ड पथ्य है और लाजमण्ड हलका है, मलको रोकता है तत्काल पाचन और दीपन है ॥ १६ ॥

अष्टगुणमण्डगुणाः ।

तण्डुलैरर्द्धमुद्गांशैः किञ्चिद्भृष्टैस्तु पाचितैः ।
हिङ्गुसिन्धूत्थधनिकापत्रत्रिकटुसंस्कृतः ॥ १७ ॥
ज्ञेयः सोऽष्टगुणो मण्डो ज्वरदोषत्रयापहः ।

रक्तः क्षुद्बोधकः प्राणदीपनः शीतलो लघुः ॥ १८ ॥

किंचित् भुनीहुई मूँगकी दाल आधाभाग मिलाकर चांवलोंको पकावे, हींग, सेंधानमक, धनियां, तेजपात, सोंठ, मिरच, पीपल ये उसमें मिलावे तो इसको अष्टगुणमण्ड कहते हैं। यह ज्वर और त्रिदोषको नाशता है, राग अर्थात् प्रीतिको करता है, भूख लगाता है, जीवन है, अग्निको जगाता है तथा शीतल और हलका है ॥ १७ ॥ १८ ॥

मुद्गयूषगुणाः ।

यूषः स्मृतो वैदलानामष्टादशगुणेऽम्भसि ।
मुद्गानामुत्तमो यूषो दीपनःशीतलो लघुः ।
व्रणोर्ध्वजत्रुरुग्दाहकफपित्तज्वरास्रजित् ॥ १९ ॥

मूंग आदि अन्न अठारह गुने पानीमें पकायाहुआ यूष कहा जाता है। मूंगोंका यूष उत्तम है, अग्निको जगाता है, शीतल और हलका है, घाव, ऊर्ध्वजत्रुरोग, दाह, कफ, पित्तज्वर, रक्त इनको जीतता है ॥ १९ ॥

दाडिमामलकयूषगुणाः ।

दाडिमामलकैर्यूषः पित्तवातहरो लघुः ॥ २० ॥

अनार और आंवलाका यूष पित्तवातको हरता है तथा हलका है ॥ २० ॥

मुद्गामलकयूषगुणाः ।

मुद्गामलकयूषस्तु भेदनः कफपित्तजित् ।
तृड्दाहशमनः शीतो मूर्च्छा श्रममदापहः ॥ २१ ॥

मूंग और आंवलेका यूष भेदन है, कफपित्तको जीतता है, तृषा और दाहको शांत करता है, शीतल है तथा मूर्च्छा परिश्रम और मद इनको नाश करता है ॥ २१ ॥

कुलत्थयूषगुणाः ।

कुलत्थयूषो गुल्मार्शःकफवाताश्मशर्कराः ।
तूनीप्रतूनीमेदांसि निहन्ति त्वग्निकृत्सरः ॥ २२ ॥

कुलत्थयूष अर्थात् कुलथीका यूष गुल्म, बवासीर, कफ, वात, पथरी, शर्करा, तूनी, प्रतूनी और मेदको नाशता है, अग्निको करता है और दस्तावर है ॥ २२ ॥

मूल्यमूलकयूषगुणाः ।

मूल्यमूलकजो यूषो गलग्रहकफज्वरान् ।
हन्तिश्वासप्रतिश्यायकासमेदोऽरुचिक्रिमीन् ॥ २३ ॥

सूप्य मूंगकी दाल और मूलीका यूष गलग्रह, कफ, ज्वर, श्वास, प्रतिश्याय, खांसी, मेद, अरुचि और कृमिको नाशता है ॥ २३ ॥

चणकयूषगुणाः ।

चणकैर्विहितो यूषोऽनुष्णस्तुवरको लघुः ।
रक्तपित्तप्रतिश्यायकासपित्तकफापहः ॥ २४ ॥

चनेका यूष गर्म नहीं है, कषैला और हलका है, रक्तपित्त, प्रतिश्याय खांसी, पित्त कफ इनको नाशता है ॥ २४ ॥

मकुष्ठयूषगुणाः ।

मकुष्ठयूषः संग्राही पित्तश्लेष्मज्वरापहः ।
लघुः सन्तर्पणः पथ्यो हृद्यः पीनसकासजित् ॥ २५ ॥

मकुष्ठयूष अर्थात् मोठका यूष मलको रोकता है, पित्त और कफज्वरको नाशता है, हलका है, तृप्ति करता है और पथ्य है, दिलको ताकत देता है, पीनस और खांसीको जीतता है ॥ २५ ॥

कृताकृतयूषगुणाः ।

यूषःकृताख्यो लवणस्नेहाभ्यां वारिसाधितः ।
अकृतस्तैर्विनासिद्धःक्रमाद्गुरुलघू च तौ ॥ २६ ॥

नमक और स्नेहसे युत करि सिद्ध किया कृतयूष भारी है और नमक और स्नेहसे रहित किया अकृतयूष हलका है ॥ २६ ॥

यूषसामान्यगुणाः ।

यूषा गोरसधान्याम्लफलाम्लादिभिरन्विताः ।
यथोत्तरं गुरुतरा वातघ्ना रुचिकारिणः ॥ २७ ॥

गोरस, कांजी, खट्टारस आदिसे संयुक्त किये और यूष उत्तरोत्तर गोरससे कांजी और कांजीसे खट्टारस ऐसे बहुत भारी हैं वातको नाशते हैं और रुचिको करते हैं २७

यैरन्नैरौषधैर्यैश्च कृता मण्डादयो बुधैः ।
विचार्य तद्गुणानेतांस्तद्गुणानेव निर्दिशेत् ॥ २८ ॥

जिन अन्न और औषधोंसे वैद्योंने मण्ड आदि किये हैं उनके गुणोंको विचार कर उनमें वही गुण कहना चाहिये ॥ २८ ॥

सूप्यनामगुणाः ।

सूप्यं तु सूप्यको भृष्टैः शिम्बिजैर्निस्तुषैः कृतः ॥ २९ ॥

सूप्य, सूप्यक ये दालके नाम हैं। बिना छिलकेके मूंग, उडद, आदिसे किया सूप्य होता है ॥ २९ ॥

सूप्यं विष्टम्भि रूक्षं स्यान्निरम्लं तु विशेषतः।
निस्तुषं भृष्टसिद्धं तल्लाघवं सुतरां व्रजेत् ॥ ३० ॥

सूप्य विष्टम्भ करता है और रूखा है। खटाईसे रहित सूप्य बहुत रूखा है, छिलकेसे रहित और भूनके पकाया हुआ बहुत हलका हो जाता है ॥ ३० ॥

कृशरागुणाः।

क्वचित्समाषैःक्वाप्येवं कृशरा तिलतण्डुलैः।
कृशरा बलकृद् ग्राह्या सिद्धा तण्डुलवैदलैः ॥ ३१ ॥
कृशरा शुक्रला बल्या गुरुः पित्तकफप्रदा।
दुर्जरापुष्टिविष्टम्भमलहृद्वातनाशिनी ॥ ३२ ॥

उडद, चांवलोंको मिलाकर करनेसे खिचडी होती है, कहीं तिल और चावलोंकी खिचडी बनाते हैं, वह कृशरा अर्थात् खिचडी बल करती है और मलको रोकती है। चांवल और दालकी कृशरा अर्थात् खिचडी वीर्यको करती है, बलको करती है, भारी है, पित्त और कफको देती है, देरमें जीर्ण होती है तथा पुष्टि, विष्टम्भ, मल इनको करती है और वातको नाशती है ॥ ३१-३२ ॥

क्षिप्रागुणाः।

क्षिप्राऽपि तद्गुणा सैषा सुधान्यगुणकारिणी ॥ ३३ ॥

क्षिप्रा (ताहरी) में भी खिचडीके गुण हैं और सुन्दर अन्नके समान गुण करती है ॥ ३३ ॥

(क्षैर) क्षैरेयीनामगुणाः।

क्षैरेयी परमान्नं स्यात्पायसं क्षीरतण्डुलैः।
क्षैरेयी दुर्जरा बल्या धातुपुष्टिप्रदा गुरुः।
विष्टम्भिनी हरेत्पित्तरक्ततृष्णाग्निमारुतान् ॥ ३४ ॥

क्षैरेयी, परमान्न, पायस, ये खीरके नाम हैं। दूध चांवलोंसे खीर बनती है। खीर देरमें जीर्ण होती है, बलको करती है, धातुको पुष्ट करती है, भारी है, विष्टंभवाली है, और रक्तपित्त, तृषा, अग्नि, वात इनको हरती है ॥ ३४ ॥

राजखांडवादिगुणाः।

गुडादिपक्वं कथितमाममाम्रफलं पुनः।

स्नेहैलानागरैर्युक्तो ज्ञातव्यो राजखाण्डवः ॥ ३५ ॥

गुड आदिको पकाके क्वाथ बनाया हुआ और कच्चे आम, स्नेह (घृत) इलायची, सोठ इनसे संयुक्त किया हुआ राजखांडव जानना चाहिये ॥ ३५ ॥

सितारुचकसिन्धूत्थैः सवृक्षाम्लपरूषकैः ।
निम्बूफलरसयुक्तो रागो राजिकया कृतः ॥ ३६ ॥

मिश्री, काला नमक, सेंधानमक, बिजोरा, फालसा, नींबूका रस, राई इनका राग बनता है ॥ ३६ ॥

खण्डवा मधुराम्लादिरससंयोगसंभवाः ।
दीपना बृंहणा रुच्यास्तीक्ष्णा हृद्याः श्रमापहाः ॥ ३७ ॥

मीठे खट्टे आदि रसके संयोगसे बने खांडव अग्निको जगाते हैं, धातुको पुष्ट करते हैं, रुचिको उपजाते हैं, तेज हैं, दिलको ताकत देते हैं और परिश्रमको नाशते हैं ॥ ३७ ॥

खण्डाम्रखण्डामलकगुणाः ।

आम्रामलकलेहाद्या हृद्याबुद्धिबलप्रदाः ।
तर्पणा रोचनाः स्निग्धा मधुरा गुरवस्तथा ॥ ३८ ॥

आम और आंवलेके लेह आदि दिलको ताकत देते हैं, बुद्धि और बलको तृप्त करते हैं, रुचिको उत्पन्न करते हैं तथा चिकने, मीठे और भारी हैं ॥ ३८ ॥

रसालानामगुणाः ।

ससितं दधिमध्वाज्यमरीचैलादिसंस्कृतम् ।
मथितं कान्तमानिन्या कर्पूरपरिवासितम् ॥ ३९ ॥

मिश्री, दही, शहद, घृत, मिरच, इलायची आदिसे संयुक्त और चतुर स्त्रीके कोमलहाथोंसे मथित कीहुई और कपूरसे सुगंधित की हुई रसाला होती है ॥ ३९ ॥

रसाला शिखरा प्रोक्ता मार्जिका माज्जिका बुधैः ।
रसाला शुक्रलाबल्या रोचनी वातपित्तजित् ॥ ४० ॥

रसाला, शिखरा, मार्जिका, माज्जिका ये रसालाके नाम हैं । रसाला वीर्यको देती है, बलको करती है, रुचिको उपजाती है और वात पित्तको जीतती है ॥ ४० ॥

स्निग्धा गुरुः प्रतिश्यायं विशेषेण विनाशयेत् ॥ ४१ ॥

यह चिकनी और भारी है विशेषकर प्रतिश्यायको नाश करती है ॥ ४१ ॥

पानकगुणाः ।

द्राक्षाऽम्लिकापरूषादिजलं खण्डादिमिश्रितम् ।
मरीचार्द्रककर्पूरचातुर्जातादिसंस्कृतम् ॥ ४२ ॥

दाख, इमली, फालसा आदिके रसमें खांड आदिसे संयुक्त और मिरच, अदरक, कपूर, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर आदिसे संस्कार कियाहुआ पानक होता है ॥ ४२ ॥

पंचसारपानकम् ।

पानकं द्विविधं तस्मादम्लानम्लविभेदतः ।
द्राक्षाखर्जूरकाश्मर्यसमधूकपरूषकैः ॥ ४३ ॥
पञ्चसाराभिधं पानं चन्द्रसूर्याधिवासितम् ।
पानकं मूत्रलं हृद्यं प्रीणनं तु श्रमापहम् ॥ ४४ ॥

अम्ल और अनम्ल भेदसे पानक दो प्रकारका है। दाख, छुहारा, कंभारी, महुआ, फालसा इनसे संयुक्त और कपूरसे अधिवासित पंचसार नामक पानक होता है। पानक मूत्रको करता है दिलको ताकत देता है, पुष्टि करता है और परिश्रमको नाशता है ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

यथाद्रव्यगुणं तत्तु गुरुलघ्वादि निर्दिशेत् ।
पञ्चसाराभिधं पाण्डुतृष्णादाहश्रमापहम् ॥ ४५ ॥
मृद्वीकं श्रमदाहास्रपित्तक्लमतृषापहम् ।
रूक्षाणां कोमलं हृद्यं पाचनं च बलप्रदम् ॥ ४६ ॥

वह पानक जिन द्रव्योंसे बना हो उन द्रव्योंके गुरु, लघु आदि जैसे गुण हों वैसे गुणयुक्त जानना और वह पानक पांडु, तृषा, दाह तथा श्रमको हरता है, मुनक्काका पानक परिश्रम, दाह, रक्तपित्त, ग्लानि और तृषाको नाशता है, खुश्क प्रकृतिवालोंको कोमल है, दिलको ताकत देता है, पाचन है और बलको देता है ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

अम्लिकारसगुणाः ।

अम्लिकाया रसस्तृष्णाक्लमिदाहश्रमापहः ॥ ४७ ॥

इमलीका रस तृषा, क्लमि, दाह, परिश्रम इनको हरता है ॥ ४७ ॥

सदकगुणाः

निःस्नेहं दधि निर्मथ्य पचेच्छर्करयाऽन्वितम् ।
सव्योषदाडिमाजाजिः सदकोऽयमुदाहृतः ॥ ४८ ॥

घृतसे रहित दहीको मथ खांड मिलाकर पकावे फिर उसमें सोंठ, मिरच, पीपल, अनारदाना, जीरा इनको मिलानेसे इसको सदक कहते हैं ॥ ४८ ॥

सदको रोचनः स्वर्यः पित्तानिलहरो गुरुः ।
दीपनस्तर्पणो बल्यः श्रमक्लमतृषापहः ॥ ४९ ॥

सदक रुचिको करता है, स्वरकारक है, पित्तवातको हरता है, भारी है, अग्निको जगाता है, तृप्ति करता है, बलमें हित है, तथा परिश्रम, ग्लानि और तृषाको नाश करता है ॥ ४९ ॥

पोलिआदिगुणाः ।

विकोलकर्कटद्राक्षाकण्टकारिविपाचिताः ।
मण्डकाद्या यथापूर्वं गुरुवो बृंहणा मताः ॥ ५० ॥

सिंघाडे, कौंचकी गिरी, द्राक्षा, मोचरस इनके संयोगसे पकायेहुए मांडे आदि पूर्व पूर्व क्रमसे भारी हैं, और धातुको पुष्ट करते हैं ॥ ५० ॥

मण्डकः सूचितः सूक्ष्मः कर्पूरादिषु पाचितः ।
स एव किञ्चित्स्थूलस्तु बुधैः पूपालिका मता ॥ ५१ ॥

सुंदर और महीन तथा कपूर आदिमें पकायाहुआ मांडा उत्तम होता है, वही किञ्चित् मोटा हो उसे पंडितोंने पूपालिका कहा है ॥ ५१ ॥

अङ्गारकर्कटी सैव विज्ञेयाऽङ्गारपाचिता ।
अत्युष्णो मण्डकः पथ्यः शीतः स गुरुरुच्यते ॥ ५२ ॥

अंगारोंपर पकाया हुआ वही अंगारकर्कटी जानना चाहिये, बहुत गर्म मण्डा पथ्य है और शीतल मंडा भारी है ॥ ५२ ॥

अङ्गारमण्डको ग्राही लघुर्दोषत्रयापहः ।
पोलिका कफकृद्बल्या पित्तला वातनुद्गुरुः ॥ ५३ ॥

अंगारमंडक अर्थात् अंगारोंपर पकाया मण्डा मलको रोकता है, हलका है, और त्रिदोषको नाशता है । पोली कफको करती है, बलमें हित है, पित्तको करती है, वातको नाशती है, और भारी है ॥ ५३ ॥

अङ्गारकर्कटीबल्या बृंहणी शुक्रला लघुः ।
दीपनी कफहृद्रोगपीनसश्वासवातजित् ॥ ५४ ॥

अंगारकर्कटी (बाटी) बलको करती है, धातुको पुष्ट करती है, वीर्यको देती है, अग्निको जगाती है, और कफ, हृद्रोग, पीनस, श्वास और वात इनको जीतती है ॥ ५४ ॥

शालिभक्ष्यगुणाः ।

शालिपिष्टकृता भक्ष्या नातिबल्या विदाहिनः ।
अवृष्या गुरवः श्लेष्मकफपित्तप्रकोपनाः ॥ ५५ ॥

शालि चांवलोंकी पीठीके बने ये भोजनके पदार्थ बहुत बल नहीं करते हैं, विशेषतासे दाह नहीं करते हैं, वृष्य नहीं हैं, भारी हैं, तथा कफ और पित्तको कुपित करते हैं ॥ ५५ ॥

गोधूमादिभक्ष्यगुणाः ।

गोधूमविहिता भक्ष्या बल्याः पित्तानिलापहाः ।
वैदला वातला भक्ष्या गुरवास्तुवरा हिमाः ॥ ५६ ॥

गेहूंसे बनाये भक्ष्य बलको करते हैं, और पित्तवातको नाशते हैं । वैदलसंज्ञक (उडद सेम मूंग आदि) अन्नके भक्ष्य भारी हैं, कषैले और शीतल हैं ॥ ५६ ॥

माषभक्ष्यगुणाः ।

माषपिष्टकृता भक्ष्या बल्याः पित्तकफप्रदाः ॥ ५७ ॥

उडदकी पीठीसे बनाये भक्ष्य पदार्थ बल करते हैं, और पित्तकफको बढाते हैं॥५७

गुडयुक्तभक्ष्यगुणाः ।

विचार्यान्नगुणान्भक्ष्यानन्यानपि विनिर्दिशेत् ।
गौडिका गुरवो भक्ष्या वातघ्नाः कफशुक्रलाः ॥ ५८ ॥

अन्नके गुणोंको विचारकर जिस अन्नसे जो पदार्थ बनावे वैसा गुण कथन करना । गुडके भक्ष्य भारी हैं, वातको नाशते हैं, तथा कफ और वीर्यको उत्पन्न करते हैं ॥ ५८ ॥

घृतपक्वभक्ष्यगुणाः ।

घृतपाचितभक्ष्यास्तु बल्याः पित्तकफापहाः ॥ ५९ ॥

घृतमें पकाये भक्ष्य (खानेके पदार्थ) बल करते हैं, तथा पित्त और कफको नाशते हैं ॥ ५९ ॥

तैलपक्वभक्ष्यगुणाः ।

तैलजा दृक्समीरघ्ना उष्णाः पित्तास्रदूषणाः ॥ ६० ॥

तेलमें पकाये भक्ष्य दृष्टि और वातको नाशते हैं, गर्म हैं, और रक्तपित्तको दूषित करते हैं ॥ ६० ॥

दुग्धभक्ष्यगुणाः ।

दुग्धालोडितगोधूमशालिपिष्टादिनिर्मिताः ।
वातपित्तहरा भक्ष्या हृद्याः शुक्रबलप्रदाः ॥ ६१ ॥

दूधमें आलोडित किये गेहूं और शालि चावल आदिकी पीठीसे बने हुए भक्ष्य वातपित्तको हरते हैं, दिलको ताकत देते हैं तथा वीर्य और बलको बढाते हैं ॥ ६१ ॥

घृतपूरगुणाः ।

विचार्यान्नगुणान्भक्ष्यानन्यानपि विनिर्दिशेत् ।
क्षीरेण मर्दितं चूर्णं गोधूमानां सुगालितम् ॥ ६२ ॥
विस्तार्य सर्पिषा युक्तं ततः श्वेताविमिश्रितम् ।
घृतपूरोऽयमुद्दिष्टः कर्पूरमरिचान्वितः ॥ ६३ ॥

अन्नके गुणोंको विचार अन्य भी भक्ष्य बना लेने । गेहूंके मैदेको अच्छीतरह छान दूधसे मर्दितकर घी मिलाकर घीमें पकाकर पीछे सफेद खांड और कपूर मिरचसे संयुक्त करे यह घृतपूर अर्थात घेवर कहा गया है ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

समितो मर्दितः क्षीरनारिकेलसितादिभिः ।
अवगाह्य घृते पक्वे घृतपूरोऽपरः स्मृतः ॥ ६४ ॥

मैदाको घी, दूध, नारियल, मिसिरी इत्यादि करके मर्दित करके बेलकर घृतमें पकावे तो यह दूसरा घेवर कहा गया है ॥ ६४ ॥

घृतपूरो गुरुर्वृष्यो हृद्यः पित्तानिलापहः ।
सद्यः प्राणप्रदो बल्यः क्षतजिद् बृंहणः परः ॥ ६५ ॥

घेवर भारी है, वीर्यको पुष्ट करता है, दिलको ताकत देता है, पित्तवातको नाशता है, तत्काल प्राण देता है, बलको करता है और क्षतको जीतता है तथा धातुओंको पुष्ट करता है ॥ ६५ ॥

समिता-संयावगुणाः ।

समितां सर्पिषा भृष्टां श्वेतां मरिचमिश्रिताम् ।
एलालवङ्गकर्पूरचूर्णादिपरिसंस्कृताम् ॥ ६६ ॥

क्षिप्त्वाऽन्यसमितालम्बपुटेषु सुघृते पचेत् ।
ततः खण्डे न्यसेत्पक्कं संयावोऽयमुदाहृतः ॥ ६७ ॥

मैदेको घीमें भूनकर उसको लेसन ले और टिकिया बनाकर उनमें मिर्च, इलायची, लौंग, कपूर इनका चूर्ण और खांड मिलावे तब सुन्दर घृतमें तले, पीछे पकी हुई खांडकी चाशनीमें डालदे इसको संयाव कहते हैं ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

समितां मधुदुग्धेन मर्दयित्वा सुशोभनम् ।
पचेद् घृतोत्तरे खण्डे न्यसेत्पक्कं नवे घटे ॥ ६८ ॥
ततो मरिचचूर्णैलाशुभ्राचूर्णविचूर्णितम् ।
कुर्यात्कर्पूरसंयुक्तं संयावममृतोपमम् ॥ ६९ ॥

सुन्दर मैदेको राब और दूधमें मर्दितकर घीमें भूनले और दुगुनी खांड मिलाकर पक्के नये घडेमें डालकर फिर इसमें मिर्च, इलायची, वंशलोचन और कपूर इनके चूर्णसे संयुक्त करे । यह संयाव अमृतके समान स्वादवाला है ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

मधुशीर्षिका गुणाः ।

मर्दयित्वा तु समितामपूपास्तनवः कृताः ।
पक्त्वा घृतेऽसिते पाके मण्डिता मधुशीर्षिका ॥ ७० ॥

मैदेको घृत और पानीसे मर्दित कर छोटी २ पूरी बना घृतमें पका खांडसे गलेफ यह मधुशीर्षिका बनती है ॥ ७० ॥

घृतेन मर्दितां तोयैः समितां मृदु मर्दयेत् ।
मातुलुङ्गत्वचा खण्डिपक्केनार्द्रकपूरितम् ॥ ७१ ॥
विधाय पूपकं वृत्तं गन्धाढ्यं केशरान्वितम् ।
पक्त्वा सर्पिषि खण्डे च मलितो मधुशीर्षकः ॥ ७२ ॥

मैदेको घी और पानीसे युक्तिपूर्वक मर्दित कर महीन पूरी बना उसमें थोडी बिजोराकी छाल, पीपल और सोंठ भर गोल पूआ बना सुगन्ध और केशरसे संयुक्त कर घृतमें पका खांडकी चासनीसे गलेफ यह मधुशीर्षक पूआ कहा है ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

पूप (पुडा) गुणाः ।

समितां गुडतोयेन मेलयित्वा सुगालिताम् ।
घृते विस्तार्य विपचेत्सुवृत्तान्मृदुपूपकान् ॥ ७३ ॥

मैदामें गुड और पानी मिला अच्छीतरह सानकर कोमल और गोल मालपुओंको घृतमें विस्तृतकर पकावे ॥ ७३ ॥

दधिपूपकगुणाः ।

शालिपिष्टं युतं दध्ना मर्दयित्वा घृते पचेत् ।
वेष्टयेत्पक्कखण्डेन सुवृत्तान्दधिपूपकान् ॥ ७४ ॥

शालि चांवलोंकी पोठीको दहीसे मथकर घृतमें पकावे । पीछे खांडकी चासनी गलफेले ऐसे दहीके मालपुए बनते हैं ॥ ७४ ॥

संयावा मधुशीर्षाढ्याः पूपका दधिसम्भवाः ।
गुरुवो बृंहणा हृद्या वृष्याः पित्तानिलापहाः ॥ ७५ ॥

मधुशीर्षिका, संयाव, पूआ और दहीसे बने मालपुए आदि भारी हैं, धातुको पुष्ट करते हैं, दिलको ताकद देते हैं । वीर्यको पुष्ट करते हैं तथा पित्त और बातको नाशते हैं ॥ ७५ ॥

एते संस्कारभेदेन विविधास्तेऽपि तद्गुणाः ॥ ७६ ॥

संस्कार भेदकरके ये बहुत प्रकारके होते हैं और पूर्वोक्त गुणोंको देते हैं ॥ ७६ ॥

विस्यन्दगुणाः ।

दधिक्षीरे समे पक्त्वा त्वर्द्धभागावशेषिते ।
आपचेद्रक्तशालीनां तण्डुलांस्तिलसंयुतान् ।
प्रियालपनसादीनां बीजमुष्टिं समापचेत् ॥ ७७ ॥

दही और दूध बराबर भाग ले पकावे जब आधा भाग शेष रहे तब लाल शालि-चांवल, तिलँ, पिस्ते और पनस आदिके बीजोंके मुष्टि मिला पकावे ॥ ७७ ॥

क्षीरतुल्यं घृतं चैव शर्करा चैवतत्समा ।
सिद्धस्त्रिकटुकोपेतः कर्पूरेणाधिवासितः ॥ ७८ ॥

दूधके समान घृत और उतनीही खांड मिला सोंठ, मिरच, पीपलका चूर्ण मिलावे और कपूरसे अधिवासित करे ॥ ७८ ॥

एष विस्यन्दनो नाम देवलोकेऽपि दुर्लभः ।
यस्मात्पक्केऽपि हि घृतं स्यन्दते सर्वतोमुखम् ॥ ७९ ॥

ये विस्यंदन देवलोकमें भी दुर्लभ है । जिस कारणसे पकेहुएमें भी सब तर्फसे घृत झिरता है ॥ ७९ ॥

तस्मात्सूपविधानज्ञैर्विस्यन्दो विधिवत्स्मृतः ।
विस्यन्दो बृंहणो हृद्यः पित्तानिलहरो गुरुः ॥ ८० ॥

इसलिये सूपशास्त्र जाननेवालोंने विधिके समान विस्यंद कहा है । विस्यंद धातुको पुष्ट करता है, दिलको ताकत देता है, पित्त और वातको हरता है और भारी है ॥ ८० ॥

लप्सीगुणाः ।

समितां भर्जयेत्तप्ते घृते श्वेतां ततो न्यसेत् ।
वारिमज्जादिसंयुक्तां पयसा योजयेत्तदा ॥ ८१ ॥

मैदाको गर्म घृतमें मिला भूने पीछे बूरा मिलाके पानी, बदाम, पिस्ता और दूध आदिसे संयुक्त करे ॥ ८१ ॥

एषैलादियुता तज्ज्ञैर्लप्सिका ललिता मता ।
लप्सिका बृंहणी वृष्या वातपित्तहरा गुरुः ॥ ८२ ॥

पीछे इलायची आदि डाले । वैद्योंने ये सुन्दर लपसी मानी है । लपसी धातु और वीर्यको पुष्ट करती है, वातपित्तको हरती है और भारी है ॥ ८२ ॥

फेनीगुणाः ।

फेनिका पुटिनी शुभ्रा वातपित्तहरा लघुः ।
लक्षणं फेनिकादीनां सूपशास्त्राद्विचारयेत् ॥ ८३ ॥

फेनिका, पुटिनी, शुभ्रा ये फेनीके नाम हैं । फेनी वातपित्तको हरती है और हलकी है । फेनी आदिके लक्षण सूपशास्त्रसे विचारने चाहिये ॥ ८३ ॥

मोदकनामगुणाः ।

मोदा लड्डुककाः प्रोक्तास्ते चानेकविधा मताः ।
तेषां पक्कत्वप्राप्तानां न्यसेद्गोधूमगालिताम् ॥ ८४ ॥

मोदक, लड्डुके ये लड्डुके नाम हैं । वे अनेक प्रकारके होते हैं, गेहूँके मैदेकी मुठडियें घीमें पकाकर कूट छानकर खांड मिलाकर लड्डू बना ये साधारण लड्डू हैं ॥ ८४ ॥

दधि क्षीरं सुप्रिजुष्टं समिता माषपिष्टकः ।
सूरणार्द्रककूष्माण्डशालूकामिषमत्स्यकाः ॥ ८५ ॥

दही, दूध, मुठिया, मैदा, उडदकी पीठी, जमीकन्द, अदरक, कोहला, शालूक, मांस, मछली ॥ ८५ ॥

इत्यादिभिर्बहुविधाः कल्पास्ते सूपशास्त्रतः ।
द्रव्यं विचार्य मतिमांस्तद्गुणानपि निर्दिशेत् ।
मोदका दुर्जरा वृष्या बल्याः पित्तानिलापहः ॥ ८६ ॥

इत्यादिको मिलानेसे सूप (भोजन बनानेके) शास्त्रके अनुसार बहुत प्रकारके बनते हैं, बुद्धिमान् वैद्य द्रव्यका विचार कर जैसे द्रव्यसे बने हों वैसे द्रव्यके गुण-वाले लड्डुओंको भी कथन करे। लड्डू देरमें जरते हैं, वीर्यको पुष्ट करते हैं, बलको देते हैं और पित्तवातको नाशते हैं ॥ ८६ ॥

माषवटकगुणाः ।

माषमुद्गादिपिष्टोत्थाःकटुका वटिकादयः ।
तत्कारणगुणाञ्ज्ञात्वा तद्गुणानपि निर्दिशेत् ॥ ८७ ॥

उडद और मूंग आदिकी पीठीसे बनाये गये बडे आदि चर्परे हैं । मूंग उडदके गुणोंको जानके बडोंके गुणोंको भी कहे ॥ ८७ ॥

माषाणां वटको हृद्यो बल्यो वातहरोगुरुः ।
विष्टम्भी घोलवटको विदाही पवनापहः ॥ ८८ ॥

उडदोंका बडा दिलको ताकत देता है, बल करता है, वातको नाशता है और भारी है । घोल बडा विष्टंभवाला है, दाहको करता है और वातको नाशता है ॥ ८८ ॥

शाण्डकवटकगुणाः ।

शाण्डको वटको दृष्टिनाशनो दोषलो गुरुः ॥ ८९ ॥

शांडकवटक अर्थात् कांजीका बडा दृष्टिको नाशता है, दोषको करता है और भारी है ॥ ८९ ॥

तुषाम्बुवटकगुणाः ।

तुषाम्बुवटको रुच्यः पित्तलः कफवातजित् ।
इण्डली शुक्रला रूक्षा विष्टम्भी कफवातकृत् ॥ ९० ॥

तुषांबुवटक अर्थात् जवोंकी कांजीका बडा रुचिको करता है, पित्तको उपजाता है और कफवातको जीतता है । पकौडी वीर्यको उपजाती है, रूखी है, विष्टंभ और कफवातको करती है ॥ ९० ॥

सोमालिकागुणाः ।

सोमालिका गुरुर्वृष्या रोचनी पित्तनाशिनी ॥ ९१ ॥

सुहाली भारी है, पुष्टि करती है, रुचिको उत्पन्न करती है और पित्तको नाशती है ॥ ९१ ॥

कुण्डलिकागुणाः ।

द्विप्रस्थां शुद्धसमितां प्रस्थं गोधूमगालितम् ।
विमर्द्य पयसा स्थाप्यं व्रजेद्यावत्तदम्लताम् ॥ ९२ ॥

एकसौ अट्ठाईस तोलेभर शुद्ध मैदा लेके चौंसठ तोलेभर गेहूंका चून मिला दूधसे मथ जबतक खट्टापन प्राप्त हो तबतक धरे रहने दे ॥ ९२ ॥

सच्छिद्रे नारिकेलस्य पात्रे निक्षिप्य निर्मले ।
परिभ्राम्य घृते तप्ते मन्दाग्नौ तु विपाचयेत् ॥ ९३ ॥

फिर नारियलके छिद्रसहित साफ पात्रमें डाल तपाये हुए घृतमें भ्रमाकर (चक्कर देकर) मन्द अग्निसे पकावे ॥ ९३ ॥

कर्पूरवासिते पक्के विज्ञेया नृपवल्लभा ।
सुरक्तां कंकणाकारां सितालेहे विनिक्षिपेत् ॥ ९४ ॥

फिर इन सुन्दर पकीहुई और कंकणके आकारवालीको कपूरसे वासित कीहुई सुंदर खांडकी चासनीमें डाले यह राजाओंको प्रिय कुंडलिका (जलेबी) कही जाती है ॥ ९४ ॥

सा तु कुण्डलिका नाम्ना पुष्टिकान्तिबलप्रदा ।
धातुवृद्धिकरा वृष्या हृद्या चेन्द्रियतर्पणी ॥ ९५ ॥

इसका नाम कुण्डलिका है, वह पुष्टि, कांति और बलको देती है, धातुको बढाती है, वीर्यको पुष्ट करती है, दिलको ताकत देती है और इंद्रियोंको तृप्त करती है ॥ ९५ ॥

तस्यामम्लत्वमाप्तायां न्यसेद्गोधूमगालितम् ॥ ९६ ॥

यदि वह कुण्डलनी बनानेका खमीर अधिक खट्टा होजाय तो उसमें थोडा मैदा मिला लेना चाहिये ॥ ९६ ॥

कुल्माषगुणाः ।

गोधूमाद्यास्तु कुल्माषा अर्द्धस्विन्ना मताः क्वचित् ।
कुल्माषा गुरवो रूक्षा वातला भिन्नवर्चसः ॥ ९७ ॥

गेहूं आदिके बने कुल्माष कोई थोडे सिजाते हैं, कोई पूर्णरूपसे सिजाते हैं, कुल्माष भारी हैं, रूखे हैं, वातको करते हैं और मलको भेदते हैं ॥ ९७ ॥

सक्तुगुणाः ।

नवीननिस्तुषोद्भृष्टयवचूर्णं च सक्तवः ॥ ९८ ॥

नवीन, साफ जव भूनकर पीसेजावें सो सत्तू होते हैं ॥ ८९ ॥

मन्थादिगुणः ।

सक्तवस्तु घृताभ्यक्ताः शीतवारिविलोडिताः ।
नातिद्रवो नातिसान्द्रो मन्थः सद्भिः प्रकीर्तितः ॥ ९९ ॥

घृतसे भिगोये शीतल पानीसे विलोडित किये सत्तू होते हैं । न बहुत पतला हो और न बहुत करडा हो उसे सत्पुरुषोंने मन्थ कहा है ॥ ९९ ॥

मन्थो बलकर सद्यः परिणामे बलावहः ।
मोहतृष्णाक्षयच्छर्दिकुष्ठदाहश्रमाञ्जयेत् ॥ १०० ॥

मन्थ बलको शीघ्र करता है, परिणाममें बलको देता है और मोह, तृषा, क्षय, छर्दि, कुष्ठ, दाह, परिश्रम इनको जीतता है ॥ १०० ॥

द्राक्षा सितेक्षुस्वरसैर्मिश्रा पित्तास्रदाहजित् ।
द्राक्षा मधुयुता बल्या कफश्रममदापहा ।
वर्गत्रयसमायुक्ता दोषवर्चोऽनुलोमनी ॥ १ ॥

मिसिरी और ईखके स्वरससे मिली दाख पित्तरक्त और दाहको जीतती है, शहदसे युक्तहुई दाख बलको करती है और कफ, परिश्रम, मद इनको नाशती है, मिसिरी, ईखका रस, शहद इनसे युक्त हुई दाख दोष और मलको अनुलोमन करती है ॥ १ ॥

सक्तुगुणाः ।

सक्तवो यवजाः शीता दीपना लघवः सराः ।
कफपित्तहरा रूक्षा लेखनाः पानतस्तु ते ।
सद्यो बलप्रदाः पथ्या घर्मादि (क्ला) क्रान्तदेहिनः ॥ २ ॥

जवोंका सत्तू शीतल है, अग्निको जगाता है, हलका है, सर है, कफपित्तको हरता है, पानीसे रूखा और लेखन है, शीघ्र बलको देता है, घाम आदिसे क्रांत देहवालेको पथ्य है ॥ २ ॥

निस्तुषैर्भर्जितैः पिष्टैश्चणकैः सयवैः कृताः ॥ ३ ॥
सक्तवः शर्करासर्पिर्युक्ता ग्रीष्मेऽतिपूजिताः ।
पिण्डी प्रोक्ता गुरुस्तेषां द्रवत्वाल्लेहिका लघुः ॥ ४ ॥

छिलकोंसे रहित और भुनेहुए पीसे चने और जवोंसे किये सत्तू खांड और घृतसे किये जावें तो गर्मीके समयमें बहुत पूजित हैं। सत्तुवोंकी पिंडी भारी है, द्रवपनेसे लेहिका हलकी है ॥ ३-४ ॥

न भुक्त्वा न रदैः स्पृष्ट्वा न निशायां न वा बहून्।
न जलान्तरितांस्तद्धि सक्तूनद्यान्न केवलान् ॥ ५ ॥

भोजन करके सत्तू नहीं खाने चाहिये, इसी प्रकार दांतोंपर रख करके न खावे, रात्रिमें न खावे, बहुत ज्यादा न खावे, पानीसे अन्तरित न खावे और केवल सूखेही सत्तुओंको न खावे ॥ ५ ॥

यवोद्भवलाजगुणः।

भृष्टशाल्यादिजा लाजा धान्यभृष्टयवोद्भवाः।
लाजा लघुतराः शीता बल्याः पित्तकफच्छिदः।
छर्द्यतीसारदाहास्रमेहमेदस्तृषापहाः ॥ ६ ॥

भुनेहुए शालि चांवल आदिसे और भुनेहुए जवोंसे लाजा होती है, लाजा अर्थात् खील बहुत हलकी है, शीतल है, बलको करती है, पित्त और कफको काटती है और छर्दि, अतिसार, दाह, रक्त,प्रमेह, तृषा इनको नाशती है ॥ ६ ॥

धान्यागुणाः।

धान्य विष्टम्भिनी रूक्षा कफमेदोहरा गुरुः ॥ ७ ॥

धाणियां विष्टंभ करती है, रूखी है, कफ और मेदको हरती है और भारी है ॥ ७ ॥

(चिडवे) पृथुकगुणाः।

पक्वार्द्रा व्रीहयः सम्यक् पीडिताः पृथुका मताः।
पृथुका गुरवो बल्याः श्लेष्मला वातनाशनाः ॥ ८ ॥

पके हुए गीले चांवल भुनाये जावें वे पृथुक कहे जाते हैं, पृथुक भारी होते हैं, बलको करते हैं, कफ करते हैं और वातको नाशते हैं ॥ ८ ॥

होलकगुणाः।

शिंबिधान्यैरर्द्धपक्वैः सुभृष्टैर्होलको मतः।
होलकोऽल्पानिलो मेदः कफदोऽपक्वभावतः ॥ ९ ॥

आधा पकाहुआ शिंबिसंज्ञक अन्न अच्छीतरह भूना जावे वह होलक कहाजाता है। होला अल्प वातवाला है तथा अपक्वपनेसे मेद और कफको उत्पन्न करता है ॥ ९ ॥

लम्बीनामगुणाः ।

अपक्वभृष्टैर्गोधूमैरुलम्बो लम्बलम्बिके ।
लम्बी कफप्रदा बल्या लघु पित्तानिलापहा ॥ ११० ॥

बिना पके गहूओंको भूनले ता उसे उलंब, लंब, लंबिका कहते हैं । लंबी कफको देती है, बलको करती है, हलकी है तथा पित्त और वातको नाशती है ॥ ११० ॥

परिशुष्कगुणाः ।

हिंगुपक्के घृते दत्त्वा मांसमालोड्य भर्जितम् ।
मात्रयोष्णाम्बु निक्षिप्य पचेत्सम्यग्विचक्षणः ॥ ११ ॥

हींगसे पकेहुए घृतमें भूनेहुए मांसको आलोडितकर प्रमाणसे गरम पानी डाल बुद्धिमान् पुरुष अच्छी तरह पकावे ॥ ११ ॥

मरिचार्द्रकसंयुक्तं सुगन्धिद्रव्यवासितम् ।
गतद्रवं सुधातुल्यं परिशुष्कं तदुच्यते ॥ १२ ॥

मिरच और अदरक उसमें मिलाकर सुगंधित द्रव्यसे वासित करे अच्छा भूना हुआ यह अमृतके समान परिशुष्क कहागया है ॥ १२ ॥

प्रदिग्धगुणाः ।

घनद्रव्योपलिप्तं तत्प्रदिग्धमिति कीर्त्यते ।
प्रदिग्धं वातजिद्बल्यं गुरु शुक्रविवर्द्धनम् ॥ १३ ॥

वही घनद्रव्यसे उपलिप्त हुआ प्रदिग्ध मांस होता है । प्रदिग्ध मांस वातको जीतता है, बलको करता है, भारी है, वीर्यको बढाता है ॥ १३ ॥

उल्लिप्तमांसगुणाः ।

रसेन युक्तं सरसं शूल्यं शूलेन संस्कृतम् ।
परिशुष्कं स्थितं स्निग्धं रोचनं तर्पणं गुरु ॥ १४ ॥

रससे युक्त हुआ सरस मांस होता है और शूलकरके पकाया हुआ शूल्यमांस होता है । परिशुष्कमांस धरा हुआ चिकना है, रुचिको करता है, तृप्ति करता है और भारी है ॥ १४ ॥

बलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवृद्धिकरं परम् ।
तदेवोल्लिप्तपिष्टत्वादुल्लिप्तं परिकीर्त्यते ॥ १५ ॥

बल, बुद्धि, अग्नि, मांस, पराक्रम, वीर्य इनको बढाता है । वही उल्लिप्त पिष्टपनसे उल्लिप्त कहा गया है ॥ १५ ॥

१ यतद्रव्यमिति पाठः ।

उल्लिप्तं गुरु पथ्यं तत्परिशुष्कसमं गुणैः ।
प्रदिग्धं वातजिद्बल्यं गुरुशुक्रविवर्धनम् ।
सरसं तद्गुणं ज्ञेयं विशेषाल्लघु दीपनम् ॥ १६ ॥

उल्लिप्त नामवाला मांस भारी है, पथ्य है, गुणों करके परिशुष्क मांसके समान है । प्रदिग्ध मांस वातको जीतता है, बलको करता है, भारी है और वीर्यको बढाता है, सरस मांसमेंभी ये ही गुण हैं । विशेषकर हलका है और अग्निको जगाता है ॥ १६ ॥

शूल्यमांसगुणाः ।

प्रोतं शूलेन पिशितं सौरभाढ्यम्बुना बहु ॥ १७ ॥
लिप्तं विधूमैरङ्गारैः पाचितं शूल्यमुच्यते ।
शूल्यं सर्वोत्तम मांसं लघु पथ्योत्तमं मतम् ॥ १८ ॥

शूलकरके पिरोया हुआ और सुगंधित पानीसे लिप्त हुआ, धूम्रसे रहित हुए अंगारों करके पकाया हुआ शूल्य मांस होता है । शूल्य मांस सब मांसोंमें उत्तम है, हलका है और उत्तम पथ्य माना गया है ॥ १७ ॥ १८ ॥

अङ्गारप्रतप्तमांसगुणाः ।

अङ्गारादिषु यत्पक्वं प्रतप्तं तदुदाहृतम् ॥ १९ ॥

अंगार आदिकोंमें जो पकाया जावे उसे प्रतप्त मांस कहा है ॥ १९ ॥

पिष्टमांसगुणाः ।

मांसं दाडिमसिन्धूत्थसौरभादिसमन्वितम् ।
पिष्ट्वा पूपादिसंकल्पपक्वं पिष्टमिति स्मृतम् ॥ १२० ॥

अनार, सेंधानमक, सुगन्ध आदिसे युक्तकर पीस पुआ आदिकी तरह पकाया जावे उसे पिष्टमांस कहा है ॥ १२० ॥

घृतादिसाधितमांसगुणाः ।

भर्जितं स्याद् घृतादौ तु भृष्ट्वा यत्साधितं पुनः ॥ २१ ॥

घृतादिमें भूनकर जो साधित किया जावे वह भर्जित मांस होता है ॥ २१ ॥

तन्दुपक्वमांसगुणाः ।

मांसं सौरभसंलिप्तं तन्दुपक्वं मधुप्रभम् ॥ २२ ॥

सुगन्धसे लिप्त हुआ और शहदके समान कांतिवाला ऐसा तन्दुपक्व मांस होता है ॥ २२ ॥

प्रदिग्धादितैलपक्वमांसगुणाः ।

प्रदिग्धं सरसं पक्वं भर्जितं मृदुपाचितम् ।
प्रतप्तं परिशुष्कं च शूल्यं यच्चान्यदीदृशम् ॥ २३ ॥
मांसं तैलेन सिद्धं तद्वीर्योष्णं गुरु पित्तलम् ॥ २४ ॥

प्रदिग्ध, सरस, पक्व, भर्जित, मृदुपाचित, प्रतप्त, परिशुष्क, शूल्य, अन्य इसी प्रकारका मांस तैल करके सिद्ध किया जावे तो वीर्यमें गर्म है, भारी है और पित्तको करता है ॥ २३-२४ ॥

घृतपक्वं तदेव स्याल्लघु रुच्यमपित्तलम् ।
अत्युष्णं वीर्यबलदं हृद्यं दृष्टिप्रसादनम् ॥ २५ ॥

घृतसे पकाया वही मांस हलका है, रुचिको करता है, पित्तको नहीं करता है, बहुत गर्म है, वीर्य और बलको देता है, दिलको ताकत देता है और दृष्टिको प्रसादन करता है ॥ २५ ॥

तक्रादिपक्वमांसगुणाः ।

गोरसस्नेहधान्याम्लफलाम्लकटुकादिभिः ।
सिद्धं मांसं भवेद्बल्यं रोचनं दीपनं गुरु ॥ २६ ॥

तक्र, स्नेह, कांजी, खट्टारस, चर्परा आदिसे सिद्ध किया मांस बलको करता है, रुचिको करता है, अग्निको जगाता है और भारी है ॥ २६ ॥

सुस्विन्नमांसगुणाः ।

मांसं चातिरसं रूक्षं सुस्विन्नं वातलं गुरु ॥ २७ ॥

अच्छी तरह सिजाया मांस बहुत रसवाला है, रूखा है, वातको करता है और भारी है ॥ २७ ॥

वेसवारगुणाः ।

गतास्थि मांसं सुस्विन्नं पुनर्दृषदि पेषयेत् ।
व्योषादिसंस्कृतं कृत्वा पचेद्भूयो घृतान्वितम् ।
वेसवारोऽयमुद्दिष्टो बल्यो वातहरो गुरुः ॥ २८ ॥

हड्डियोंसे रहित मांसको अच्छीतरह सिजाय कर पत्थरपर पीसे, सोंठ, मिरच, पीपल इत्यादिसे युक्तकर फिर घृत मिला पकावे, यह वेसवार कहा है, यह बलको करता है, वातको हरता है और भारी है ॥ २८ ॥

सौरभगुणाः ।

स्विन्नमुद्गादिकल्कोऽपि वेसवारोऽपरः स्मृतः ।

हरिद्राव्योषसिन्धूत्थहिङ्गुधान्यकदाडिमैः।
सजाजिभिर्वेसवारः सौरभोऽयमुदाहृतः॥ २९॥

सिजायाहुआ मूंग आदिका कल्कभी दूसरा वेसवार कहागया है। हल्दी, सोंठ, मिरच, पीपल, सेंधानमक, हींग, धनिया, अनार, जीरा इन्होंसे युक्तकिया वेसवार सौरभ कहा जाता है॥ २९॥

सौरवगुणाः।

मुद्गादिवेसवारेषु यथाद्रव्यगुणान्वदेत्।
पिष्टमांससमुद्भूतः स्मृतो मांसरसो रसः।
सौरवः सौरसः स्यात्तु यो रसो लवणान्वितः॥ १३०॥

मूंग आदिके वेसवारको जैसा द्रव्य हो उसके समान गुणवाला कहना। पीसे हुए मांसके रससे उपजा मांसरस रस होता है और लवणयुक्तको सौरव और सौरस कहते हैं॥ १३०॥

स्वानिष्कगुणाः।

संयुक्तो वेसवारेण रसः स्वानिष्कमुच्यते॥ ३१॥

वेसवारसे युक्तहुआ मांसरस स्वानिष्क कहागया है॥ ३१॥

मांसरसगुणाः।

रसो हृद्यः श्रमश्वासवातपित्तक्षयापहः।
प्रीणनो व्रणयुक्तानां क्षीणानामल्परेतसाम्॥ ३२॥

मांसका रस दिलको ताकत देता है और परिश्रम, श्वास, वात, पित्त, क्षय इनको नाशता है, जख्मियोंको, क्षीणोंको और अल्पवीर्यवालोंको तृप्त करता है॥ ३२॥

विश्लिष्टभग्नसन्धीनां शुद्धानां शुद्धिकाङ्क्षिणाम्।
शस्यते स्वरहीनानां दृष्ट्यायुःश्रवणार्थिनाम्॥ ३३॥

पृथक् और टूटी हुई संधिवालोंको शुद्ध हुओंको शुद्धिकी इच्छा वालोंको स्वरसे हीन हुओं आदिको और दृष्टि, आयु, सुनना इनकी इच्छावालोंको मांसरस उत्तमहै॥ ३३॥

दाडिमयुक्तमांसरसगुणाः।

सदाडिमादिर्बलदो दोषघ्नस्तु[1] कृतस्तु सः॥ ३४॥

अनार आदिसे युत हुआ मांसका रस बलको देता है, दोषोंको नाशता है॥ ३४॥

---

१ संस्कृतस्तु सः इति पाठोऽपि।

सौवीरादिगुणाः ।

सौवीरः प्रीणनः शीतो मुखशोषश्रमापहः ।
दीपनः क्लमवातघ्नः सर्वधातुविवर्द्धनः ॥ ३५ ॥

सौवीर पुष्टि करता है, शीतल है, मुखशोष और परिश्रमको नाशता है, अग्निको जगाता है, ग्लानि और वातको नाशता है तथा सब धातुओंको बढाता है ॥ ३५ ॥

स्वानिष्कस्तु गुरुः पथ्यो दीप्ताग्नीनां विशेषतः ।
अल्पमांसादिसंयुक्तो लवणाम्बुविपाचितः ॥ ३६ ॥
दलिया चणिका ज्ञेया रसाद्या लघवो मताः ।
तक्रादिक्राथसम्भूता कथिता कथिता बुधैः ॥ ३७ ॥

स्वानिष्क भारी है, दीप्त अग्निवालोंको विशेषकर पथ्य है । अल्पमांस आदिसे युक्त और नमक पानीसे पकाया हुआ हो उसे दलिया और चणिका जानना, इनके रस आदि हलके माने हैं । तक्र आदि मिलाकर पकाई हुई कथिता कही है ॥ ३६–३७ ॥

कथितागुणाः ।

कथिता पाचनी हृद्या रुच्या वह्निप्रदा लघुः ।
कफानिलविबन्धघ्नी किञ्चित्पित्तप्रकोपिनी ॥ ३८ ॥

कथिता पाचनी है, दिलको ताकत देती है, रुचिको करती है, अग्निको देती है और हलकी है । वह कफ, वात, विन्बध इनको नाशती है और पित्तको किंचित कुपित करती है ॥ ३८ ॥

शाकं तक्रादिभिः सम्यक्साधितं कथितं मतम् ।
कथितं दीपनं रुच्यं वातश्लेष्मश्रमापहम् ।
त्यक्त्वा स्वहेतुशाकस्य गुणानेतद्गुणं भवेत् ॥ ३९ ॥

तक्र आदिसे अच्छीतरह साधित किया शाक कथित माना गया है । कथित अग्निको जगाता है और रुचिको उपजाता है, वात, कफ, परिश्रम इनको नाशता है । शाक मसाला आदि डालकर बनानेसे अपने कारणजन्य गुणोंको छोडकर जैसे योगसे बनाया जाय वैसे गुणवाला होजाता है ॥ ३९ ॥

पर्पटगुणाः ।

पर्पटा लघवो रुच्या लघीयान् क्षारपर्पटः ॥ १४० ॥

पर्पट अर्थात् पापड हलका है, रुचिको उपजाता है, खारसहित पापड बहुत हलका है ॥ १४० ॥

पिण्याकनामगुणाः ।

पिण्याकस्तिलकिट्टः स्यात्पललं तिलपिष्टकम् ।
पिण्याको लघुरूक्षश्च विष्टम्भी दृष्टिदूषणः ॥ ४१ ॥

पिण्याक, तिलकिट्ट, पलल, तिलपिष्टक ये नाम खलके हैं। तिलोंका खल हलका, रूखा और विष्टम्भ करता है तथा दृष्टिको दूषित करता है ॥ ४१ ॥

पललगुणाः ।

पललं बृंहणं स्निग्धं कफपित्तकरंगुरु ॥ ४२ ॥

तिलोंकी पीठी धातुको पुष्ट करती है, चिकनी है कफपित्तको करती है और भारी है ॥ ४२ ॥

द्रव्यकालक्रियायोगदेहादीनि विचार्य तु ।
अन्येषामप्यनुक्तानामेषामपि गुणान् वदेत् ॥ १४३ ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ धान्यकृतान्नादिनामैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

जिनका यहां कथन नहीं किया उनके विषयमें औषध, समय, क्रिया, योग, शरीर इत्यादिका विचारकर गुणोंको कथन करे ॥ १४३ ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ वैद्यरत्नपं०-रामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनीभाषाटीकायां धान्यकृतान्नादिनामैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

मुखेन्दुपद्मप्रतिबाधलुब्धविधुन्तुदालिभ्रममादधानम् ।
लक्ष्मीकपोलप्रतिबिम्बिताङ्गं नीलाब्जनीलं कलयामि तेजः ॥ १ ॥

लक्ष्मीका मुखरूप जो इन्दु अर्थात् चन्द्रमा है उसका बाधक जो विधुन्तुद अर्थात् राहु उसके, अथवा लक्ष्मीके मुखरूप जो पद्म है उसमें लुब्ध भौंरेके भ्रमको देनेवाला और लक्ष्मीके कपोलोंपर प्रतिबिंबित अंगोंवाला ऐसा नीले कमलके समान नीलरूप तेजका स्मरण करता हूं ॥ १ ॥

हस्तिनामगुणाः ।

हस्ती मतङ्गजो दन्ती मतङ्गोऽनेकपः करी ।
सिन्धुरः कुञ्जरः पद्मी वारणो द्विरदो द्विपः ॥ २ ॥

इभो दन्तावलो नागः कुम्भी स्तम्बेरमो गजः ।
हस्तिनी धेनुका प्रोक्ता करेणुः करिणी च सा ।
हस्ती कफानिलौ हन्यादुष्णपित्तास्रकोपनः ॥ ३ ॥

हस्ती, मतंगज, दन्ती, मातङ्ग, अनेकप, करी, सिंधुर, कुंजर, पद्मी, वारण, द्विरद, द्विप, इभ, दन्तावल, नाग, कुंभी, स्तंबेरम, गज ये हाथीके नाम हैं । हस्तिनी, धेनुका, करेणु, करिणी ये हथिनीके नाम हैं । हाथी कफ-वातको नाशता है, गर्म है और रक्तपित्तको कुपित करता है ॥ ३ ॥

घोटकनामगुणाः ।

घोटकः सैन्धवो वाजी तुरङ्गस्तुरगो हयः ।
तुरङ्गमोऽश्वो गन्धर्वो वाहः सप्तिर्यजुर्जवी ॥ ४ ॥

घोटक, सैंधव, वाजी, तुरंग, तुरग, हय, तुरंगम, अश्व, गन्धर्व, वाह, सप्ति, यजु, जवी ये घोडेके नाम हैं ॥ ४ ॥

घोटिका वडवा वामी प्रसूताऽश्वा च वाजिनी ।
घोटकः कटुकः पाके दीपनः कफपित्तकृत् ॥ ५ ॥
वातहृद्बृंहणो बल्यश्चक्षुष्यो मधुरो लघुः ॥ ६ ॥

घोटिका, वडवा, वामी, प्रसूता, अश्वा, वाजिनी ये घोडीके नाम हैं । घोडा पाकमें चर्परा है, अग्निको जगाता है और कफपित्तको करता है, वातको हरता है, धातुको पुष्ट करता है, बलमें हित है, आंखोंमें हित है, मीठा और हलका है ॥५॥६॥

अश्वतरनामगुणाः ।

तज्जो घोटचामश्वतरः शीघ्रवेगोऽङ्गपूजितः ।
बल्यमाश्वतरं मांसं बृंहणं कफपित्तलम् ॥ ७ ॥

घोडीमें अन्यतरहके घोडेसे उपजा अश्वतर, शीघ्रवेग, अंगपूजित इन नामोंवाला (खच्चर) होता है । खच्चरका मांस बलको करता है, धातुको पुष्ट करता है और कफपित्तको करता है ॥ ७ ॥

उष्ट्रनामगुणाः ।

उष्ट्रः क्रमेलको वक्रग्रीवः शाखाशनो मयः ।
शृङ्खलः करभो दीर्घजंघो धूम्रो मरुत्प्रियः ॥ ८ ॥

उष्ट्र, क्रमेलक वक्रग्रीव, शाखाशन, मय, शृंखल, करभ, दीर्घजंघ, धूम्र, मरुप्रिय ये ऊंटके नाम हैं ॥ ८ ॥

उष्ट्रमांसं लघु स्वादु चक्षुष्यमनिलापहम् ।
उष्ट्रमांसं प्रशमनं मेदसः कफपित्तदम् ॥ ९ ॥

ऊँटका मांस,हलका है, स्वादु है, आंखोंमें हित है, वातको नाशता है, मेदको शांत करता है और कफपित्तको देता है ॥ ९ ॥

गर्दभनामगुणाः ।

गर्दभो रासभो भारवाही दूरगमः खरः ।
गार्दभं पित्तलं बल्यं बृंहणं कफपित्तकृत् ।
कटु पाके लघु श्रेष्ठं तस्माद्वन्यखरोद्भवम् ॥ १० ॥

गर्दभ, रासभ, भारवाही, दूरगम, खर ये गधेके नाम हैं । गधेका मांस पित्तको करता है. बलमें हित है, धातुको पुष्ट करता है, कफपित्तको करता है, पाकमें चर्परा और हलका है, इससे वन्य गधेका मांस उत्तम है ॥ १० ॥

माहिषनामगुणाः ।

महिषः सौरभः शृङ्गी वाहवैरी घनाघनः ।
कासरो गवलो दंशी लुलायः कालवाहनः ॥ ११ ॥

महिष, सौरभ, शृंगी, वाहवैरी, घनाघन, कासर, गवल, दंशी, लुलाय, कालवाहन ये भैंसाके नाम हैं ॥ ११ ॥

माहिषं मधुरं मांसं स्निग्धोष्णं वातनाशनम् ।
निद्रारेतोबलस्तन्यतनुदार्ढ्यकरं गुरु ।
तद्वदारण्यजं विद्याद्विशेषाच्छोषिणे हितम् ॥ १२ ॥

भैंसेका मांस मीठा, चिकना और गर्म है, वातको नाशता है, नींद, वीर्य, बल, दूध, दृढता इनको करता है और भारी है । वनके भैंसामें भी येही गुण हैं, विशेषकर शोषवालेके लिये हित है ॥ १२ ॥

भल्लूकगण्डकनामगुणाः ।

ऋक्षाऽच्छभल्लभल्लूकाः खड्गी खड्गश्च गण्डकः ।
ऋक्षः स्निग्धो गुरुर्वृष्यः स्वादूष्णः पवनापहः ॥ १३ ॥

ऋक्ष, अच्छ, भल्ल, भल्लूक, खड्गी, खड्ग, गंडक, ये रीछके नाम हैं ।

रीछ चिकना तथा भारी और वीर्यको पुष्ट करनेवाला है, स्वादु और गर्म है, तथा वातको नाशता है ॥ १३ ॥

गण्डकगुणाः ।

गण्डको बहुविण्मूत्रे पवित्रोनिलनाशनः ॥ १४ ॥

गंडक अर्थात् गैंडा मलमूत्रको बहुत उपजाता है, पवित्र है, और वातको नाशता है ॥ १४ ॥

सिंहशार्दूलनामगुणाः ।

सिंहः पञ्चाननो हतो मृगेन्द्रः केसरी हरिः ।
शार्दूलः स्यात्पञ्चनखो मृगनाथः सकृत्प्रजः ॥ १५ ॥

सिंह, पञ्चानन, हत, मृगेंद्र, केसरी, हरि ये सिंहके नाम हैं । शार्दूल, पंचनख, मृगनाथ, सकृत्प्रज ये शार्दूलके नाम हैं ॥ १५ ॥

सिंहशार्दूलयोर्मांसमुष्णं वाताक्षिरोगजित् ॥ १६ ॥

सिंह और शार्दूलका मांस गर्म है, वात और नेत्ररोगको नाशता है ॥ १६ ॥

व्याघ्रनामानि ।

व्याघ्रोमृगारिर्मृगहा व्यालो भीमपराक्रमः ॥ १७ ॥

व्याघ्र, मृगारि, मृगहा, व्याल, भीमपराक्रम ये बघेरेके नाम हैं ॥ १७ ॥

चित्रकनामानि ।

चित्रको वेगवांश्चित्री द्वीपी स्याद्दीर्घदंष्ट्रकः ॥ १८ ॥

चित्रक, वेगवान्, चित्री, द्वीपी, दीर्घदंष्ट्रक ये चीतेके नाम हैं ॥ १८ ॥

वृकनामानि ।

वृकदेहो वृकः कोकस्तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १९ ॥

वृकदेह, वृक, कोक ये नाम भेडियेके हैं, तरक्षु, मृगादन ये नाम तिरखुके हैं ॥ १९ ॥

कुक्कुरनामानि ।

कुक्कुरः शुनकः श्वा स्यात्कौलेयः शुनकः शुनः ।
सारमेयः कृतज्ञश्च भक्षणो मृगदंशकः ॥ २० ॥

कुक्कुर, शुनक, श्वा, कौलेय, शुनक, शुन, सारमेय, कृतज्ञ, भक्षण, मृगदंशक ये कुत्तेके नाम हैं ॥ २० ॥

---

१ भषणः इत्यपि पाठः ।

व्याघ्रादिगुणाः ।

व्याघ्रचित्रतरक्षुश्ववृकाणां पललं गुरु ।
उष्णं वातहरं स्वर्यं हितमक्षिविकारिणाम् ॥ २१ ॥

बघेरा, चीता, तिरखू, कुत्ता, भेडिया, इनके मांस भारी, गर्म, वातको हरनेवाला, स्वरमें हित और नेत्र रोगवालोंको हित है ॥ २१ ॥

सूकरनामगुणाः ।

सूकरो रोमशः पोत्री कोलो घोणिः किरिः किटिः ।
दंष्ट्री क्रोष्टा चोर्ध्वरोमा भूदारश्च वराहकः ॥ २२ ॥

सूकर, रोमश, पोत्री, कोल, घोणि, किरि, किटि, दंष्ट्री, क्रोष्टु, ऊर्ध्वरोमा, भूदार वराहक ये नाम सूकरके हैं ॥ २२ ॥

सौकरं पिशितं स्वादु बल्यं वातापहं गुरु ।
स्निग्धोष्णं शुक्रलं रुच्यं निद्रास्थूलत्वदार्ढ्यकृत् ॥ २३ ॥

सूकरका मांस स्वादु है, बलमें हित है, वातको नाशता है, भारी है, चिकना और गर्म है, वीर्यको करता है, रुचिको उपजाता है, और नींद, स्थूलता, दृढपना इनको करता है ॥ २३ ॥

छागनामगुणाः ।

छागी गलस्तनी मण्डा सर्वभक्ष्या त्वजा भृजा ।
वर्करश्छागलश्छागो बस्तेयः कालकः पशुः ॥ २४ ॥

छागी, गलस्तनी, मण्डा, सर्वभक्ष्या, अजा, भृजा ये बकरीके नाम हैं । वर्कर, छागल, छाग, बस्तेय, कालक, पशु ये बकराके नाम हैं ॥ २४ ॥

छागमांसं गुरु स्निग्धं लघु पक्वं त्रिदोषजित् ।
अदाहि बृंहणं नातिशीतं पीनसनाशनम् ।
देहधातुसमानत्वादनभिष्यन्दि बृंहणम् ॥ २५ ॥

बकरेका मांस भारी, चिकना और हलका है, पकाहुआ त्रिदोषको नाशता है, दाह नहीं करता है, धातुको पुष्ट करता है, अति शीतल नहीं है, पीनसको नाशता है, देह और धातुके समानपनसे अभिष्यंदी नहीं है और धातुको पुष्ट करता है ॥ २५ ॥

मेषमेदःपुच्छनामगुणाः ।

मेषो मेढी हुडो मेढ्र उरभ्र उरणोऽविकः ।
ऊर्णायुरेडको वृष्णिर्मेदः पुच्छस्तु दुम्बुकः ॥ २६ ॥

मेष, भेडी, हुड, मेढ़, उरभ्र, उरण, अविक, ऊर्णायु, एडक, वृष्णि, मेदःपुच्छ, दुंबुक ये नाम भेड और मेंढाके हैं ॥ २६ ॥

मेषमांसं गुरु स्निग्धं बल्यं पित्तकफप्रदम् ।
मेदः पुच्छामिषं वृष्यं कफपित्तकरं गुरु ॥ २७ ॥

मेंढेका मांस भारी है, चिकना है, बलको करता है तथा पित्त और कफको देता है। मेदसहित पुच्छवाले मेंढेका मांस वीर्यको पुष्ट करता है, कफपित्तको करता है और भारी है ॥ २७ ॥

एणनामगुणाः ।

हरिणस्ताम्रवर्णः स्यात्कुरङ्गश्चारुलोचनः ।
सारङ्गोऽजिनयोनिश्च वातायुश्चपलो मृगः ॥ २८ ॥

हरिण, ताम्रवर्ण ये हिरणके नाम हैं और कुरंग, चारुलोचन, सारंग, अजिनयोनि, वातायु, चपल मृग ये काले हिरणके नाम हैं ॥ २८ ॥

एणः कृष्णोऽपरः कृष्णकुरङ्गः कृष्णसारकः ।
एणमांसं हिमं रुच्यं ग्राहि दोषत्रयापहम् ॥ २९ ॥

काले वर्णवाला एण होता है और कृष्णकुरंग, कृष्णसार ऐसे भी मृग हैं। मृगका मांस शीतल है, रुचिको उपजाता है, मलको बांधता है और त्रिदोषको नाशता है ॥ २९ ॥

षड्रसं बलदं पथ्यं लघु हृद्यं ज्वरास्रजित् ॥ ३० ॥

यह छः रसवाला है, बलको देता है, पथ्य है, हलका है, दिलको ताकत देता है तथा ज्वर और रक्तको जीतता है ॥ ३० ॥

गोकर्णशम्बरनामगुणाः ।

गोकर्णोऽविकटः शृङ्गी विड्बद्धोऽन्यस्तु शम्बरः ।
गोकर्णशम्बरौ शीतौ गुरु स्निग्धौ कफप्रदौ ।
रसे पाके च मधुरौ रक्तपित्तविनाशनौ ॥ ३१ ॥

गोकर्ण, अविकट, शृंगी, विड्बद्ध, शंबर ये नाम गोकर्ण और शंबरके हैं। गोकर्ण और शंबर शीतल हैं, भारी और चिकने हैं, कफको देते हैं, रसमें और पाकमें मीठे हैं तथा रक्तपित्तको नाशते हैं ॥ ३१ ॥

गवयनामगुणाः ।

ऋक्षो मीलाण्डको नीलो गवयश्चारुदर्शनः ।

गवयो मधुरो वृष्यः स्निग्धोष्णः कफपित्तलः ॥ ३२ ॥

रूक्ष, मीलांडक, नील, गवय, चारुदर्शन ये रोझके नाम हैं । रोझ मीठा है, वीर्यको पुष्ट करता है, चिकना है, गर्म है और कफ-पित्तको करता है ॥ ३२ ॥

कस्तूरीमुण्डनीमृगनामगुणाः ।

कस्तूरी हरिणी गन्धी मुण्डनी मृगमातृका ।
कस्तूरी हरिणः स्वादुर्बद्धविड् दीपनो लघुः ॥ ३३ ॥

कस्तूरी, हरिणी, गंधी, मुण्डनी, मृगमातृका ये नाम कस्तूरी और मुंडनी मृगके हैं । कस्तूरीमृग स्वादु है, मलको बांधता है, अग्निको जगाता है और हलका है ॥ ३३ ॥

मुण्डनी ज्वरकासास्रक्षयश्वासापहा हिमा ॥ ३४ ॥

मुण्डनी मृग ज्वर, खांसी, रक्त, क्षय, श्वास इनको नाशता है और शीतल है ॥ ३४ ॥

कृतमालच्छिक्कारनामगुणाः ।

कृतमालो वर्णचरः पृषतो बिन्दुचित्रकः ।
वातप्रमीर्वातमृगश्छिक्कारः कृष्णपुच्छकः ॥ ३५ ॥

कृतमाल, वर्णचर, पृषत, बिन्दुचित्रक ये चीतले मृगोंके नाम हैं । वातप्रमी, वातमृग, छिक्कार, कृष्णपुच्छक ये छिक्कारके नाम हैं ॥ ३५ ॥

कृतमालादिजं मांसं मधुरं ग्राहि दीपनम् ।
हृद्यं शीतं लघु श्वासज्वरदोषत्रयास्रजित् ॥ ३६ ॥

चीतल और छिक्कार मृगका मांस मीठा और मलको रोकनेवाला, अग्निको जगानेवाला, दिलको ताकत देनेवाला, शीतल और हलका है । श्वास, ज्वर, त्रिदोष, रक्त इनको जीतता है ॥ ३६ ॥

रुरुमृगनामगुणाः ।

रुरुः शरन्मुक्तमृगो न्यङ्कुर्बहुविषाणकः ।
रुरोर्मांसं गुरु स्वादु वृष्यं पित्तानिलापहम् ।
न्यङ्कुः स्वादुर्लघुर्बल्यो वृष्यो दोषत्रयापहः ॥ ३७ ॥

रुरु, शरन्मुक्तमृग, न्यंकु, बहुविषाणक ये रुरुमृगके नाम हैं । रुरुका मांस भारी और स्वादु है, वीर्यको पुष्ट करता है, पित्तवातको नाशता है, न्यंकुमृग स्वादु और हलका है, बलको करता है और त्रिदोषको नाशता है ॥ ३७ ॥

शशनामगुणाः ।

शशः शूली रोमकर्णो लम्बकर्णो बिलेशयः ।
शशः शीतो लघुः स्वादुर्ग्राही पथ्योऽग्निदीपनः ।
सन्निपातज्वरश्वासरक्तपित्तकफापहः ॥ ३८ ॥

शश, शूली, रोमकर्ण, लम्बकर्ण, बिलेशय ये शशा (खरगोश) के नाम हैं । शश शीतल, हलका, स्वादु, मलको बांधनेवाला पथ्य और अग्निको जगानेवाला है, सन्निपात, ज्वर, श्वास, रक्तपित्त, कफ इनको नाशता है ॥ ३८ ॥

काश्मीरदेशे शरभोऽष्टपात्स्यादुत्साहयुक्तश्चतुरूर्ध्वपादः ।
उष्ट्रप्रमाणः समहाविषाणः ख्यातो वनस्थः स मृगो महाख्यः ॥ ३९ ॥

काश्मीरदेशमें आठ पैरोंवाला, उत्साहसे युक्त, ऊपरको चार पैरोंवाला, ऊँटके समान, बहुत बडे सींगवाला और वनमें रहनेवाला ऐसा महामृग होता है उसका नाम शरभ है ॥ ३९ ॥

शल्लकनामगुणाः ।

शल्लकः शलली श्वाविन्मेधा स्यात्सूचिनी खरा ।
शल्लकः श्वासकासास्रशोफदोषत्रयापहः ॥ ४० ॥

शल्लक, शलली, श्वावित्, मेधा, सूचिनी, खरा ये शेहके नाम हैं । शेह श्वास, खांसी, रक्त, शोजा, त्रिदोष इनको नाशता है ॥ ४० ॥

गोधानामगुणाः ।

गोधा तथैव विज्ञेया विशेषद्बलवर्द्धिनी ॥ ४१ ॥

गोधामें भी ये गुण हैं, विशेषकर बलको बढाती है ॥ ४१ ॥

बिडालनकुलनामगुणाः ।

बिडालकस्तु मार्जारो (पृ-वृ) विषदंशक आखुभुक् ।
नकुलः पिङ्गलो बभ्रुः सर्पारिः सर्पभक्षकः ॥ ४२ ॥

बिडाल, मार्जार, विषदंशक, आखुभुक् ये बिलावके नाम हैं । नकुल, पिंगल, बभ्रु, सर्पारि, सर्पभक्षक ये नेवलेके नाम हैं ॥ ४२ ॥

मार्जारो मधुरः स्निग्धो वीर्योष्णः कफवातजित् ।
कृशताश्वासकासघ्नो नकुलोऽपि समो गुणैः ॥ ४३ ॥

बिलावका मांस, मीठा, चिकना और वीर्यमें गर्म है, कफवातको जीतता है, दुर्बलता, श्वास, खांसी इनको नाशता है । नौलामें भी ये सब गुण हैं ॥ ४३ ॥

वानरनामगुणाः ।

वानरो मर्कटः कीशो वनौकाश्च वलीमुखः ।
हरिः शाखामृगः प्लावी प्लवङ्गः प्लवगः कपिः ।
वानरः पक्कनश्वासमेदः पाण्डुक्रिमीञ्जयेत् ॥ ४४ ॥

वानर, मर्कट, कीश, वनौकस्, वलीमुख, हरि, शाखामृग, प्लावी, प्लवंग, प्लवग, कपि ये नाम वानरके हैं । वानर वात, श्वास, मेद, पाण्डु, कृमि इनको जीतता है ॥ ४४ ॥

शृगालनामगुणाः ।

शृगालो जम्बुकः फेरुर्गोमायुः फेरवः शिवः ।
शिवेशो वञ्चकः क्रोष्टुर्नेपालः स्वल्पजम्बुकः ।
शृगालो बलदो वृष्यः सर्ववातक्षयापहः ॥ ४५ ॥

शृगाल, जंबुक, फेरु, गोमायु, फेरव, शिव, शिवेश, वञ्चक, क्रोष्टु, नेपाल, स्वल्पजंबुक ये नाम गीदडके हैं । गीदड बलको देता है, वीर्यको पुष्ट करता है, सब प्रकारके वात और क्षयको नाशता है ॥ ४५ ॥

मूषकनामगुणाः ।

मूषकः खनकः स्तेयी वृष उन्दुरुराखुकः ।
मूषको बद्धविण्मूत्रो बल्यो वृष्योऽनिलापहः ॥ ४६ ॥

मूषक, खनक, स्तेयी, वृष, उंदुरु, आखुक ये मूषाके नाम हैं । मूषा मलमूत्रको बांधता है, बलमें हित है, वीर्यको पुष्ट करता है और वातको नाशता है ॥ ४६ ॥

पक्षिनामानि ।

पक्षी विहङ्गमः पत्री शकुन्तिर्विहगः खगः ।
अण्डजो विः पत्ररथः पतत्री शकुनिर्द्विजः ॥ ४७ ॥

पक्षी, विहंगम, पत्री, शकुंति, विहग, खग, अण्डज, वि, पत्ररथ, पतत्री, शकुनि, द्विज ये पक्षीके नाम हैं ॥ ४७ ॥

तित्तिरिनामगुणाः ।

तित्तिरिश्चित्रपक्षः स्यात्कृष्णो गौरः कपिञ्जलः ।
तित्तिरिर्वर्णदो ग्राही हिक्कादोषत्रयापहः ।
श्वासकासहरः पथ्यस्तस्माद्गौरोऽधिको गुणैः ॥ ४८ ॥

चित्र पंखोंवाला और काला दो प्रकारका तीतर होता है। सफेद वर्णवाला कपिंजल होता है। तीतर वर्णको देता है, मलको रोकता है, हिचकी और त्रिदोषको नाशता है, श्वास और खांसीको हरता है तथा पथ्य है। कपिंजलमें इससे अधिक गुण हैं ॥ ४८ ॥

वर्तिरनामगुणाः ।

वर्तिरो वर्तिका चित्रस्ततोऽल्पवर्तिका मता ।
वर्तिरोऽग्निकरः शीतो ज्वरदोषत्रयापहः ॥ ४९ ॥

वर्तिर, वर्तिका, चित्र, अल्पवर्तिका ये नाम बटेरके हैं। बटेर अग्निको करती है, शीतल है, ज्वर और त्रिदोषको नाशती है ॥ ४९ ॥

लावनामगुणाः ।

लावश्चित्रश्चित्रतनुः स चतुर्द्धा मतो बुधैः ।
पांशुलो गैरिकोऽन्यतु पौण्ड्रको दर्भरस्तथा ॥ ५० ॥

लाव, चित्र, चित्रतनु ये नाम लवाके हैं। पण्डितोंने पांशुल, गैरिक, पौंड्रक दर्भर इन भेदोंसे लवा चार प्रकारका माना है ॥ ५० ॥

लावा हृद्या हिमाः स्निग्धा ग्राहिणो वह्निप्रदीपनाः ।
पांशुलः श्लेष्मलस्तेषां वीर्योष्णोऽनिलनाशनः ॥ ५१ ॥

लावा दिलको ताकत देता है, शीतल और चिकना है, मलको रोकता है, अग्निको जगाता है। पांशुल कफको करता है, गर्म वीर्यवाला है और वातको नाशता है ॥ ५१ ॥

गैरिकः कफवातघ्नो रूक्षो वह्निप्रदः परम् ।
पौण्ड्रकः पित्तकृत्किञ्चिल्लघुः श्लेष्मानिलापहः ॥ ५२ ॥

गैरिक कफवातको नाशता है, रूखा है, अग्निको बहुत देता है, पौंड्रक पित्तको करता है, किंचित् हलका है, कफवातको नाशता है ॥ ५२ ॥

दर्भरोरक्तपित्तघ्नो हृदामयहरो हिमः ॥ ५३ ॥

दर्भर रक्तपित्तको नाशता है, हृदयके रोगको हरता है, और शीतल है॥ ५३ ॥

चटकनामगुणाः ।

चटकः कलविङ्कः स्यादन्यो ग्राम्यस्तु पुण्ड्रकः ।
चटकः शीतलः स्निग्धः स्वादुः शुक्रकफप्रदः ।
सन्निपातहरो वेश्मचटकः शुक्रलः परम् ॥ ५४ ॥

चटक, कलविंक, ग्राम्य, पुंड्रक नाम चिडेके हैं । चिडा शीतल है, चिकना है, स्वादु है और वीर्य तथा कफको उत्पन्न करता है, सन्निपातको हरता है । घरमें रहनेवाला चिडा बहुतवीर्य देता है ॥ ५४ ॥

वार्तिकगुणाः ।

वार्तिको मधुरः शीतः सरूक्षः कफपित्तनुत् ॥ ५५ ॥

वार्तिक (वत्तक) मीठा, शीतल और रूखा है, कफ और पित्तको दूर करता है ॥ ५५ ॥

पारावतादिनामगुणाः ।

पारावतः कलरवो मञ्जुघोषो मदोत्कटः ।
कपोतो घुघुकृत्पाण्डुरन्यः काणः कपोतकः ॥ ५६ ॥

पारावत, कलरव, मंजुघोष, मदोत्कट ये नाम परेवाके हैं, कपोत, घुघुकृत, पांडु, काण, कपोतक ये नाम कबूतरके हैं ॥ ५६ ॥

पारावतो गुरुः स्निग्धो रक्तप्रित्तानिलापहः ।
संग्राही शुक्रलः शीतः कपोतोऽपि समो गुणैः ।
किञ्चिल्लघुः पर कामः कपोतः सर्वदोषकृत् ॥ ५७ ॥

परेवा भारी और चिकना है, रक्तपित्त और वातको नाशता है, मलको रोकता है, वीर्यको करता है, और शीतल है । कबूतरमें भी येही गुण हैं लघु कबूतर कुछेक हलका है, सब दोषोंको करता है ॥ ५७ ॥

मयूरनामगुणाः ।

मयूरश्चन्द्रकः केकी मेघरावो भुजङ्गभुक् ।
शिखी शिखावलो बर्ही शिखण्डी नीलकण्ठकः ॥ ५८ ॥
शुक्लापाङ्गः कलापी च मेघनादस्तु लासकः ।
मयूरो बृंहणः श्रोत्रशिरोरुग्वातशोषजित् ॥ ५९ ॥

मयूर, चन्द्रक, केकी, मेघराव, भुजंगभुक्, शिखी, शिखावल, बर्ही, शिखंडी, नीलकण्ठक, शुक्लापांग, कलापी, मेघनाद, लासक ये मोरके नाम हैं । मोर धातुको पुष्ट करता है, कान रोग, शिरोरोग, वात, शोष इनको जीतता है ॥५८॥५९

उष्णो बलायुर्मेधाग्निकेशदृग्स्वरवर्णदः ।
सेव्यं मयूरजं मांसं हेमन्ते शिशिरे मधौ ।
न शरद्ग्रीष्मयोः पथ्यं वर्षास्वप्यहिभक्षणात् ॥ ६० ॥

तथा गर्म है, बल, उमर, बुद्धि, अग्नि, बाल, दृष्टि, उत्तम वर्ण इनको देता है। मार्गशिर, पौष, माघ, फाल्गुन और चैत्र इन महीनोंमें मोरका मांस सेवन करना योग्य है। आश्विन, कार्तिक, ज्येष्ठ और आषाढ इनमें पथ्य नहीं है। सर्पको खानेवाला होनेसे श्रावण और भाद्रपदमें भी पथ्य नहीं है ॥ ६० ॥

कुक्कुटनामगुणाः ।

कुक्कुटो विकिरः शौण्डी कालज्ञश्चरणायुधः ।
कृकवाकुस्ताम्रचूडः स्यादन्योऽरण्यकुक्कुटः ॥ ६१ ॥

कुक्कुट, विकिर, शौण्डी, कालज्ञ, चरणायुध, कृकवाकु, ताम्रचूड, अरण्यकुक्कुट ये मुर्गाके नाम हैं ॥ ६१ ॥

कुक्कुटो बृंहणः स्निग्धो वीर्योष्णोऽनिलजिद्गुरुः ।
चक्षुष्यः शुक्रकफकृद्वन्यो रूक्षः कषायकः ।
पानीयकुक्कुटः स्निग्धो बृंहणः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ६२ ॥

मुर्गा धातुको पुष्ट करता है, चिकना है, वीर्यमें गर्म है, वातको जीतता है, भारी है, नेत्रोंको हित है तथा वीर्य और कफको करता है। वनका मुर्गा रूखा और कषैला है, पानीका मुर्गा चिकना है, धातुको बढ़ाता है, कफको करता है तथा भारी है ॥ ६२ ॥

शुकसारिकानामगुणाः ।

शुको रक्तमुखः कीरो वाग्ग्मी सुन्दरदर्शनः ।
सारिका रासिता दूती सुमतिः प्रियवादिनी ॥ ६३ ॥

शुक, रक्तमुख, कीर, वाग्ग्मी, सुन्दरदर्शन ये तोताके नाम हैं। सारिका, रासिता, दूती, सुमति, प्रियवादिनी ये मैनाके नाम हैं ॥ ६३ ॥

शुकः शीतो लघुर्ग्राही क्षतकासक्षयापहः ।
रूक्षस्तद्वन्मता सारी स्निग्धा बुद्धिबलाग्निकृत् ॥ ६४ ॥

तोता शीतल, हलका और मलको रोकनेवाला है, क्षतकी खांसी और क्षयका नाश करनेवाला और रूखा है। मैनामें भी यही गुण हैं, विशेषकर मैना चिकनी है तथा बुद्धि, बल और अग्निको करती है ॥ ६४ ॥

कोकिलनामगुणाः ।

कोकिलः कलकण्ठःस्यात्परपुष्टो वनप्रियः ।

पिकः परभृताहारी ताम्राक्षो मधुदूतकः।
कोकिलो दीपनो ग्राही चक्षुष्यः क्षयकासजित् ॥ ६५ ॥

कोकिल, कलकण्ठ, परपुष्ट, वनप्रिय, पिक, परभृताहारी, ताम्राक्ष, मधुदूतक ये नाम कोयलके हैं। कोयल अग्निको जगाती है, मलको रोकती है, नेत्रोंको हित है, क्षय और खांसीको जीतती है ॥ ६५ ॥

काकनामानि।

काको ध्वांक्षो गूढकामी बलिपुष्टः सकृत्प्रजः।
वायसो बलिभुक्काणः करटश्चतुरो द्विजः ॥ ६६ ॥

काक, ध्वांक्ष, गूढकामी, बलिपुष्ट, सकृत्प्रज, वायस, बलिभुक्, काण, करट, चतुर, द्विज ये नाम काकके हैं ॥ ६६ ॥

भासनामानि।

भासः सिखावाभ्रसतो[1] गृध्राकारो रजःप्रजः ॥ ६७ ॥

भास, सिखावाभ्रसत, गृध्राकार, रजःप्रज ये नाम भास (सफेद चील) के हैं ॥ ६७ ॥

काकभासमांसगुणाः।

काकभासभवं मांसं चक्षुष्यं दीपनं लघु।
आयुष्यं बृंहणं बल्यं क्षतदोषक्षयापहम् ॥ ६८ ॥

काक और सफेद चीलका मांस नेत्रोंको हित है, अग्निको जगाता है, हलका है, आयुमें हित है, धातुको पुष्ट करता है, बलमें हित है, क्षत दोष और क्षयको नाशता है ॥ ६८ ॥

गृध्रनामगुणाः।

गृध्रः सुदृष्टः शकुनिर्वक्रदृष्टिश्च दूरदृक्।
गृध्रस्य काकवन्मांसं विशेषान्नेत्ररोगजित् ॥ ६९ ॥

गृध्र, सुदृष्ट, शकुनि, वक्रदृष्टि, दूरदृक् ये गीधके नाम हैं. गीधके मांसमें काकके मांसके सब गुण हैं, विशेषकर नेत्ररोगको जीतता है ॥ ६९ ॥

हंसनामगुणाः।

हंसश्वेतगरुत्मन्तः सौकारक्तौ पदानदौ।
राजहंसः स्मृतः कृष्णैर्धार्त्तराष्ट्रोऽथ मालिकः ॥ ७० ॥

हंस, श्वेत, गुरुत्मान् सौक, आरक्त, पद, आनद ये हंसके नाम हैं।

---

१ शिखावान् भासन्तो गृध्राकारो रजःप्रभः इति पाठोऽपि।

काले पंखोंवाला राजहंस होता है । उसके धार्तराष्ट्र और मालिक ये नाम है ॥ ७० ॥

मलिनैः कलहंसस्तु पीतैः कादम्ब उच्यते ।
कारण्डवः प्लवो मद्गुर्वरटा हंसयोषितः ॥ ७१ ॥

मलीन पंखोंवाला कलहंस होता है, पीले पंखोंवाला कादम्ब हंस होता है । कारंडव, प्लव, मद्गु, वरटा ये हंसनियोंके नाम हैं ॥ ७१ ॥

हंसः स्निग्धो गुरुर्वृष्यो वीर्योष्णः स्वरवर्णकृत् ।
वातास्रपित्तशमनो बृंहणो बलवह्निदः ॥ ७२ ॥

हंस चिकना है, भारी है, वीर्यको पुष्ट करता है, गर्म वीर्यवाला है, स्वर और वर्णको करता है, वात और रक्तपित्तको नाशता है, धातुको पुष्ट करता है तथा बल और अग्निको देता है ॥ ७२ ॥

सारसचक्रवाकनामानि ।

सारसो लक्ष्मणो रक्तमूर्द्धा स्यात्पुष्कराह्वयः ।
चक्रवाकः पत्त्ररथश्चक्रश्चक्री सुकार्मुकः ॥ ७३ ॥
रथाङ्गनामा कोकोऽथ कङ्कः स्याल्लोहपृष्ठकः ॥ ७४ ॥

सारस, लक्ष्मण, रक्तमूर्द्धा, पुष्कराह्वय ये सारसके नाम हैं । चक्रवाक, पत्त्ररथ, चक्र, चक्री, सुकार्मुक, रथांगनामा, कोक, कंक, लोहपृष्ठक ये नाम चकवाके हैं ॥ ७३–७४ ॥

बकनामानि ।

बको बकोटो धवलो बलाका बिसकण्ठिका ॥ ७५ ॥

बक, बकोट, धवल, बलाका, बिसकण्ठिका ये नाम बगुलाके हैं ॥ ७५ ॥

आडिनामानि ।

आडिः शरारिरातिश्च विचित्रजलचारिणी ॥ ७६ ॥

आडि, शरारि, आति, विचित्रजलचारिणी ये आडिके नाम हैं ॥ ७६ ॥

चक्रादिमांसगुणाः ।

चक्रकङ्कबकोटादिमांसं स्निग्धं हिमं गुरु ।
मधुरं सृष्टविण्मूत्रं वातपित्तास्रनाशनम् ॥ ७७ ॥

सारस, चकवा आदिकोंका मांस चिकना, शीतल, भारी और मीठा है, मल मूत्रको उपजाता है तथा वात और पित्तको नाश करता है ॥ ७७ ॥

कृङ्कणनामगुणाः ।

कारेडुकः ककरेडुः करकः कृङ्कणस्तथा ।
कृङ्कणो बृंहणो बल्यो वातपित्तहरो लघुः ॥ ७८ ॥

कारेडुक, ककरेडु, करक, कृंकण ये कोटूके नाम हैं । कोटू धातुको पुष्ट करता है, बलमें हित है, वातपित्तको हरनेवाला और हलका हैं ॥ ७८ ॥

खञ्जरीटनामानि ।

खञ्जरीटः खञ्जनकश्चाषनामा किकीदिविः ॥ ७९ ॥

खंजरीट, खंजनक, चाषनामा, किकीदिवि ये खंजनके नाम हैं ॥ ७९ ॥

चातकनामानि

चातकस्तु घनरवः सारङ्गस्तोककः भ्रमः ॥ ८० ॥

चातक, घनरव, सारंग, तोकक, भ्रम ये पपैयाके नाम हैं ॥ ८० ॥

भारद्वाजादिनामगुणाः ।

भारद्वाजः कक्राटो व्याघ्राटोऽहिकुटिः परः ।
खञ्जरीटो भरद्वाजश्चाषः श्लेष्मानिलापहः ॥ ८१ ॥

भारद्वाज, कक्राट, व्याघ्राट, अहिकुटि, पर ये भारद्वाजके नाम हैं । खंजन और चाषका मांस कफवातको नाशता है ॥ ८१ ॥

वातलोऽनिलपित्तघ्नो भरद्वाजः कफास्रजित् ॥ ८२ ॥

भरद्वाज वातको करता है, वातपित्तको नाशता है और कफरक्तको जीतता है ॥ ८२ ॥

श्येननामगुणाः ।

श्येनः समादनः पत्री चीरिश्चिल्ली चिरिल्लिका ।
श्येनचीरीभवं मांसं प्रायो दोषकरं गुरु ॥ ८३ ॥

श्येन, समादन, पत्री ये शिकराके नाम है । चीरि, चिल्ली, चिरिल्लिका ये चीलके नाम हैं । शिकरा और चीलका मांस विशेषकर दोष करनेवाला और भारी है ॥ ८३ ॥

उलूकनामगुणाः ।

उलूकः कौशिकः काकवैरी घूको निशाचरः ।
उलूकपललं भ्रान्तिकरं वातप्रकोपदम् ॥ ८४ ॥

उलूक, कौशिक, काकवैरी, घूक, निशाचर ये उल्लूके नाम हैं । उल्लूका मांस भ्रमकारक और वातको कुपित करनेवाला है ॥ ८४ ॥

चकोरनामगुणाः ।

चकोरश्चन्द्रिकापायी जीवंजीवः सुलोचनः ।
चकोरो बृंहणो बल्यः स्निग्धोष्णो वातनाशनः ॥ ८५ ॥

चकार, चंद्रिकापायी, जीवंजीव, सुलोचन, ये चकोरके नाम हैं । चकोर धातुको पुष्ट करता है, बलमें हित है, चिकना और गर्म है तथा वातको नाश करता है ॥ ८५ ॥

क्रौंचादिनामगुणाः ।

क्रौञ्चकः पेचकोऽन्यस्तु पुच्छाधोभागलोहितः ।
वक्रोशः कुररोऽथान्यः कोयष्टिष्टिट्टिभस्तथा ॥ ८६ ॥

क्रौंचक, पेचक, पुच्छाधोभागलोहित, वक्रोश, कुरर, कोयष्टि, टिट्टिभ ये नाम कुंज आदिके हैं ॥ ८६ ॥

क्रौञ्चः पित्तानिलहरः पेचकः कफवातजित् ।
कुररः क्रौञ्चवज्ज्ञेयष्टिट्टिभोऽल्पमरुत्करः ॥ ८७ ॥

कुंज पित्तवातको हरता है, पेचक कफवातको जीतता है, कुररमें कुञ्जके समान गुण है और टिट्टिभ अल्प वातको करता है ॥ ८७ ॥

रोहितादिमत्स्य नामगुणाः ।

मत्स्यो झषस्तिमिर्मीनः कण्ठी वैसारिणो द्रवः ।
पृथुरोमाऽभिसारः स्याद्विसारः शकुली तथा ॥ ८८ ॥
रक्तोदरो रक्तमुखो रोहितो मत्स्यपुङ्गवः ।
सहस्रदंष्ट्रः पाठीनः कृष्णवर्णो महाशिराः ॥ ८९ ॥

मत्स्य, झष, तिमि, मीन, कण्ठी, वैसारिण, द्रव, पृथुरोमा, अभिसार, विसार, शकुली, रक्तोदर, रक्तमुख, रोहित, मत्स्यपुंगव, सहस्रदंष्ट, पाठीन, कृष्णवर्ण महाशिरा ये मछलीके नाम हैं ॥ ८८-८९ ॥

शफरः क्षुद्रमत्स्यः स्यात्प्रोष्ठी तु सफरी स्मृता ।
नलमीनश्चिलिचिमस्तिमिः ख्यातः समुद्रजः ॥ ९० ॥

शफर, क्षुद्रमत्स्य, प्रोष्ठी, ये सफरीके नाम हैं । बलमीन, चिलिचिम, तिमि, समुद्रज ये सब मछलीके भेद हैं ॥ ९० ॥

मत्स्या बलप्रदा वृष्या गुरुवः कफपित्तलाः ।
उष्णाभिष्यन्दिनः स्निग्धा बृंहणाः पवनापहाः ॥ ९१ ॥

मछली बलको देती है, वीर्यको पुष्ट करती है, भारी है, कफपित्तको करती है, गर्म और अभिष्यंदी है, चिकनी और धातुको पुष्ट करनेवाली है तथा वातको नाशती है ॥ ९१ ॥

नादेया बृंहणा मत्स्या गुरवोऽनिलनाशनाः ।
कौप्या वृष्याः कफाष्ठीलामूत्रकुष्ठविबन्धदाः ॥ ९२ ॥

नदीकी मछली धातुको पुष्ट करती हैं, भारी हैं और वातको नाशती हैं । कुंएकी मछली वीर्यको पुष्ट करती हैं और कफ, अष्ठीला, मूत्र, कुष्ठ, विबन्ध इनको उत्पन्न कर देती हैं ॥ ९२ ॥

तडागा गुरवो वृष्याः शीतला मलमूत्रदाः ।
तडागवन्निर्झरजा बलयुर्मतिदृक्कराः ॥ ९३ ॥

तालाबकी मछली भारी हैं, वीर्यको पुष्ट करती हैं, शीतल हैं तथा मल और मूत्रको देती हैं । झिरनाकी मछली तालाबकी मछलीके समान गुणोंवाली हैं और बल आयु दृष्टि इनको बढाती हैं ॥ ९३ ॥

सरोजा मधुराः स्निग्धा बल्या वातनिवर्हणाः ।
सामुद्रा गुरवो नातिपित्तलाः पवनापहाः ॥ ९४ ॥

सरोवरकी मछली मीठी, चिकनी और बलमें हित हैं, वातको दूर करती हैं । समुद्रकी मछली भारी हैं, बहुत पित्तको नहीं करती हैं, वातको नाशती हैं ॥ ९४ ॥

तत्रापि लवणाम्भोजा ग्राहिणो दृष्टिनाशनाः
ह्रदोद्भवा बलकरा न तु स्वच्छजलोद्भवाः ॥ ९५ ॥

इनमें भी खारे पानामें उपजी मछली मलको रोकती और दृष्टिको नाशती हैं । कुण्डकी मछली बलको करती हैं । साफ पानीमें उपजी मछली बलको नहीं करती हैं ॥ ९५ ॥

हेमन्ते कूपजा मत्स्याः शिशिरे सारसा हिताः ।
मधुग्रीष्माम्बुकालेषु नदीचुंगीतडागजः ॥ ९६ ॥

हेमन्त ऋतुमें कुँएकी मछली हित हैं, शिशिर ऋतुमें सरोवरकी मछली हित हैं, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा इन ऋतुओंमें नदी, झरना, तालाब इनकी मछली हित हैं ॥ ९६॥

शरत्सु नैर्झराः सर्वे वर्षोत्थाः सर्वदोषदाः ।
रोहितः प्रवरस्तेषु नातिपित्तकरो लघुः ।
काऽयानुरसो बल्यः पाठीनःश्लेष्मलो गुरुः ॥ ९७ ॥

शरद ऋतुमें निर्झरोंकी मछलियां हित हैं और वर्षाके पानीकी मछली सब दोषोंको करती है। सब मछलियोंमें रोहित मछली उत्तम है. क्योंकि, बहुत पित्तको नहीं करती है, हलकी है, कषैले अनुरसवाली और बलमें हित है, पाठीन मछली कफको करती है और भारी है ॥ ९७ ॥

क्षुद्रमत्स्य-मत्स्याण्डगुणाः ।

क्षुद्रमत्स्याः स्वादुरसा दोषत्रयनिबर्हणाः ।
सूक्ष्माः परं पुंस्त्वकरा रुच्याः कासानिलापहाः ॥ ९८ ॥

क्षुद्रमत्स्य अर्थात् छोटी मछलियां स्वादु रसवाली और त्रिदोषको दूर करती हैं। बहुत छोटी मछलियां पुरुषपनको करती हैं, रुचिको उपजाती हैं, तथा खांसी और वातको नाशती हैं ॥ ९८ ॥

चिमचिममत्स्यगुणाः ।

त्रिदोषकृच्चिमचिमो मत्स्यो बल्यः परं मतः ।
मत्स्यगर्भः परं वृष्यः स्निग्धः स्थैर्यकरो गुरुः ।
कफमेदःप्रदो बल्यो ग्लानिकृन्मेहनाशनः ॥ ९९ ॥

चिमचिम मछली त्रिदोषको करती है, परम बलदायक है. मत्स्यगर्भ वीर्यको बहुत पुष्ट करता है, चिकना है, स्थिरताको करता है, भारी है, कफ और मेदको देता है, बलमें हित है, ग्लानिको करता है और प्रमेहको नाशता है ॥ ९९ ॥

शिशुमारनामगुणाः ।

शिशुमारो दृतेस्तुल्यो मकरस्तिमिदंष्ट्रकः ।
शिशुमारो गुरुर्वृष्यः कफकृद्वातनाशनः ।
बृंहणो बलदः स्निग्धस्तद्वन्मकरमादिशेत् ॥ १०० ॥

शिशुमार, दृष्टितुल्य, मकर, तिमिदंष्ट्रक ये नाम शिशुमार मछलीके हैं। शिशुमार मछली भारी है, वीर्यको पुष्ट करती है, कफको करती है, वातको नाशती है, धातुको पुष्ट करती है तथा बलको देनेवाली और चिकनी है। मकरमेंभी यही गुणहैं॥१००॥

कच्छपनामगुणाः ।

कच्छपो गूढपात्कूर्मः कमठो दृढपृष्ठकः ।

कच्छपो बलदः स्निग्धो वातजित्पुंस्त्वकारकः ॥ १ ॥

कच्छप, गूढपात, कूर्म, कमठ, दृढपृष्ठक ये नाम कछुवेके हैं । कछुवा बलको देता है, चिकना है, वातको जीतता है और पुंस्त्वकारक है ॥ १ ॥

मण्डूकनामगुणाः ।

मण्डूकः प्लवगो भेको वर्षाभूर्दर्दुरो हरिः ।
मण्डूकः श्लेष्मलो नातिपित्तलो बलकारकः ॥ २ ॥

मण्डूक, प्लवग, भेक, वर्षाभू, दर्दुर, हरि ये मींडकके नाम हैं । मींडक कफको करता है, बहुत पित्तको नहीं करता है और बलको करता है ॥ २ ॥

कर्कटनामगुणाः ।

कर्कटः कुरुचिल्लः स्यात्कुलीरः षोडशाम्बिकः ।
कर्कटो बृंहणो वृष्यः शीतलोऽसृग्दरापहः ॥ ३ ॥

कर्कट, कुरुचिल्ल, कुलीर, षोडशाम्बिक ये ककेराके नाम हैं । ककेरा धातु और वीर्यको पुष्ट करता है, शीतल है और प्रदररोगको नाशता है ॥ ३ ॥

सर्पनामानि ।

सर्पो भुजङ्गो भुजगः फणी भोगी भुजङ्गमः ।
कुण्डली कञ्चुकी चक्री पन्नगः पवनाशनः ॥ ४ ॥
गूढपादुरगो नागो जिह्मगश्च सरीसृपः ।
चक्षुःश्रवा दीर्घपृष्ठो व्याल आशीविषस्त्वहिः ॥ ५ ॥
दर्वीकरो विषधरो दन्दशूको बिलेशयः ।
कुम्भीनसः पृदाकुः स्याद्दंष्ट्री काकोदरी विषी ॥ ६ ॥

सर्प, भुजंग, भुजग, फणी, भोगी, भुजङ्गम, कुण्डली, कंचुकी, चक्री, पन्नग, पवनाशन, गूढपात, उरग, नाग, जिह्मग, सरीसृप, चक्षुःश्रवा, दीर्घपृष्ठ, व्याल, आशीविष, अहि, दर्वीकर, विषधर, दन्दशूक, बिलेशय, कुम्भीनस, पृदाकु, दंष्ट्री, काकोदरी, विषी ये सांपके नाम हैं ॥ ४-६ ॥

डिण्डिभनामानि ।

डिण्डिभो राजिलः प्रोक्तोऽजगरो वाहसः शयुः ।
जलसर्पोऽलगर्दः[1] स्यात्तिलित्सो गोनसः स्मृतः ॥ ७ ॥

---

१ गलार्दः इत्यपि पाठः ।

डिण्डिभ, राजिल, अजगर, वाहस, शयु, जलसर्प, अलगर्द, तिलित्स, गोनस ये डिंडिभ आदि सांपके नाम हैं ॥ ७ ॥

सर्पमांसगुणाः ।

सर्पाणां स्नेहनं मांसं चक्षुष्यं बृंहणं गुरु ।
दूषीविषक्रिमिहरं मेधाग्निबलवर्द्धनम् ॥ ८ ॥

सांपोंका मांस चिकना, आंखोंमें हित, धातुपुष्टिकर, भारी और दूषीविषको हरनेवाला है, बुद्धि, अग्नि, बल इनको बढाता है ॥ ८ ॥

गोधानामगुणाः ।

गोधा घोरफटा पञ्चनखरा जनिपस्तथा ।
कृष्णसर्पेण गोधेयो गौधेरः सुमहागुणः ।
गोधाऽग्निजननी बल्या वृष्या पित्तानिलापहा ॥ ९ ॥

गोधा, घोरफटा, पंचनखरा, जनिप ये गोहके नाम हैं । काले सांपके सकाशसे गोहमें उपजा गोहरा होता है, उसके गोधेय, गौधेर ये नाम हैं । गोहका मांस बहुत गुणवाला है, अग्निको जगाता है, बलको करता है, वीर्यको पुष्ट करता है, तथा पित्त और वातको नाशता है ॥ ९ ॥

सद्योहतमांसगुणाः ।

सद्योहतं भन्जेमांसं व्याधिवारिविषे मृतम् ।
वयस्थमकृशं बल्यमन्यथा परिवर्जयेत् ॥ ११० ॥

सद्योहत मांस अर्थात् तत्काल माराहुआ, मोटा और अच्छी अवस्थावाला ऐसे जीवके मांसको सेवै तो बलमें हित है और रोग, पानी, विष इनमें मरे जीवका मांस वर्जित है ॥ ११० ॥

च्युतगर्भागर्भगुणाः ।

वृद्धानां दोषलं मांसं बालानां बलदं गुरु ।
च्युतगर्भा गुरुर्योषिद्गर्भा गर्भवती तथा ॥ ११ ॥

बूढे जीवोंका मांस दोषको करता है, बालकोंका मांस बलको देता है, भारी है, झिरे हुए गर्भवाली और स्त्री गर्भवाली स्त्रीजातिके जीवका मांस भारी है ॥ ११ ॥

स्वयंमृतमांसगुणाः ।

स्वयंमृतमबल्यं स्यादतिसारकरं गुरु ॥ १२ ॥

स्वयंमृत अर्थात् आपसे मरे हुए जीवका मांस बलसे रहित है, अतिसारको करता है और भारी है ॥ १२ ॥

अखाद्यमांसगुणाः ।

विषाम्बुरुङ्मृतं मृत्युदोषत्रयरुजावहम् ॥ १३ ॥

विष, पानी, रोग इनसे मरे जीवका मांस मृत्यु, त्रिदोष, रोग इनको करता है ॥ १३ ॥

अङ्गविशेषगुणाः ।

विहगेषु पुमान् श्रेष्ठः स्त्री चतुष्पादजातिषु ।
पश्चार्द्धं लघु पुंसां स्यात्स्त्रीणां पूर्वार्द्धमादिशेत् ॥ १४ ॥

पक्षियोंमें पुरुष पक्षी और चौपायोंमें स्त्रीजाति पशु श्रेष्ठ है । पुरुषका पिछला आधा भाग हलका होता है, स्त्रियोंका पूर्वार्द्ध हलका होता है ॥ १४ ॥

तुल्यजातौ स्थूलदेहो महादेहेषु पूजितः ।
अल्पदेहेषु शस्यन्ते तथैव स्थूलदेहिनः ॥ १५ ॥

बडे शरीरवालोंमें समान जातिमें स्थूल शरीरवाला अच्छा होता है । छोटे शरीरवालोंमें भी मोटे शरीरवाले उत्तम हैं ॥ १५ ॥

चेष्टावतां परं मांसमलसेभ्यो लघु स्मृतम् ।
देहमध्यं गुरु प्रायः सर्वेषां प्राणिनां मतम् ॥ १६ ॥

अलसवालोंसे चेष्टावालोंका मांस बहुत हलका है । विशेष कर सब जीवोंके शरीरका मध्यभाग भारी है ॥ १६ ॥

पक्ष्मोत्क्षेपाद्विहङ्गानां तदेव समुच्यते ।
गुरूण्यङ्गानि सर्वेषां गलग्रीवं च पक्षिणाम् ॥ १७ ॥

पक्षियोंके पंखके उत्क्षेपसे शरीरका मध्यभाग समान होता है । पक्षियोंके सब अंग और गला भारी हैं ॥ १७ ॥

देशविशेषान्मांसगुणाः ।

ये मृगा विहगास्तोयदूरवासप्रचारकाः ।
ते नाभिष्यन्दिनः सर्वे विपरीता अतोऽन्यथा ॥ १८ ॥

जो मृग और पक्षी पानीसे दूर रहते हैं वे सब अभिष्यंदी नहीं हैं, इनसे विपरीत अभिष्यंदी हैं ॥ १८ ॥

जलानूपभवाः सर्वे जलानूपचराश्च ये ।
गुरुभक्ष्या गुरुतरं तेषां मांसमुदाहृतम् ॥ १९ ॥

पानी और अनूपदेशमें उपजे हुए तथा पानी और अनूपदेशमें विचरनेवाले जीवोंका मांस भारी है ॥ १९ ॥

धन्वोत्पत्तिप्रचाराणां लघु स्याल्लघुभोजिनाम् ।
ऊरुस्कन्धोदरं मूर्द्धा पाणिपादौ कटीतथा ।
पृष्ठत्वग्यकृदन्त्राणि गुरूणि हि यथोत्तरम् ॥ १२० ॥

इति मदनपालनिघण्टौ मांसवर्गो द्वादशः ॥ १२ ॥

जांगलदेशमें उपजे और विचरनेवाले और हलका भोजन करनेवाले जीवोंका मांस हलका है, जांघ, कन्धा, पेठ, मस्तक, हाथ, पैर, कटि, पीठ, खाल, यकृत, आंत ये सब उत्तरोत्तर (अर्थात् जांघसे कन्धा और कन्धासे पेट इस प्रकार) भारी हैं ॥ १२० ॥

इति श्रीमदनपालनिघंटौ वैद्यरत्नपं०--रामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनीभाषाटीकायां मांसवर्गो द्वादशः ॥ १२ ॥

गोपालबालैः सह मल्लविद्याविनोददक्षं धृतकाकपक्षम् ।
उपास्महे वाङ्मनसातिदूरं महः परं नीलमचिन्तनीयम् ॥ १ ॥

गोपालोंके बालकोंके साथ मल्लविद्याके विनोदमें चतुर, कनपट्टोंको धारण करनेवाले, वाणी और मनसे बहुत दूर और चिन्तवनमें न आनेवाले ऐसे परम नील तेजकी उपासना करता हूं ॥ १ ॥

अनुपानवर्णनम् ।

वातेऽनुपानं स्निग्धोष्णं रूक्षोष्णं श्लेष्मणि स्मृतम् ।
पित्ते स्निग्धं हिमं स्नेहपाने तोयमशीतलम् ॥ २ ॥

वायुमें चिकना और गर्म अनुपान हित होता है, तथा कफमें रूखा और गर्म अनुपान हित होता है और ऐसेही पित्तमें चिकना अनुपान हितकारक है । स्नेहपानमें गर्म पानीका अनुपान हित है ॥ २ ॥

भल्लातकस्नेहमूर्च्छाव्याप्तानां शीतलं जलम् ।
शालिमुद्गादिभक्ष्याणां यूषो मांसरसस्तथा ॥ ३ ॥

भिलावेके स्नेहसे प्राप्तहुई मूर्च्छावालोंको शीतल पानी तथा शालिचांवल और मूंग आदि भक्ष्योंका यूष तथा मांसका रस हित होता है ॥ ३ ॥

माषादिभोजिनां मस्तु धान्याम्लं दधि वा स्मृतम् ।
मद्यंशोषिविषार्त्तानामल्पाग्नीनां च शस्यते ॥ ४ ॥

माष आदि भोजन करनेवालोंको दहीका पानी, कांजी अथवा दहीका अनुपान हितकारक है । शोषवाले विषसे पीडित और मंदाग्निवालेको मदिरा हित है ॥ ४ ॥

क्लान्तानामुपवासाध्वभारस्त्रीसुरतादिभिः ।
पयः सुधासमं प्रोक्तं क्षीणानां रक्तपित्तिनाम् ॥ ५ ॥

जिसने व्रत किया हो, मार्ग चलकर थकित हो, बोझ उठाया हो अथवा स्त्रीसंगसे पीडित आदि मनुष्योंको क्षीण पुरुषोंको और रक्तपित्तवाले मनुष्योंको दूध अमृतके समान गुणदायक कहा है ॥ ५ ॥

असात्म्यं दोषलं शीतमतिमात्रमथो गुरु ।
उक्तानुपानतो भुक्तं सुखमन्नं प्रजीर्यते ॥ ६ ॥

जो पदार्थ सात्म्य न हों, दोषको करनेवाले हों अथवा शीतल मात्रासे अधिक और भारी ऐसे अन्न भोजन किये जावें तो मद्य (अथवा गर्म दूध) के अनुपानसे सुखपूर्वक जीर्ण होजाते हैं ॥ ६ ॥

तदादौ कर्षयेत्पीतं स्थापयेन्मध्यसेवितम् ।
पश्चात्पीतं बृंहयति तत्समीक्ष्य प्रयोजयेत् ॥ ७ ॥

जल भोजन करनेसे पहिले पीवे तो मनुष्य कृश होता है, मध्यमें पान करे तो मनुष्यकी आयु-स्थापन होती है और पीछे पान किये मनुष्यको पुष्ट करता है । इस प्रकार विचारकर अनुपानका प्रयोग करना चाहिये ॥ ७ ॥

न पिबेच्छ्वासकासार्शोजन्तुरोगक्षतातुरः ।
पीत्वाऽभिभाष्याध्ययननिद्रां न त्वरया भजेत् ॥ ८ ॥

श्वास, खांसी, बवासीर, कृमिरोग, क्षत इनसे पीडित हुआ मनुष्य शीतल जल कभी न पीवे और पीकर बहुत बोलना, पठन, नींद इनको वेगसे सेवन न करे ॥ ८ ॥

प्रातर्जलपानगुणाः ।

तत्कफानिलपित्तेषु चैकद्वित्रिपलोन्मितम् ।
वारि शस्तमुषः काले दृष्टिकारि रसायनम् ॥ ९ ॥

---

१ नस्यमित्यपि पाठः ।

कफ, वात, पित्त इनमें क्रमसे एक दो तीन पल अर्थात् कफ प्रकृतिवाला चार तोले, वातवाला आठ तोले, पित्तवाला बारह तोले, पानी प्रभातमें पीवे तो वह दृष्टिको दृढ करता है, और बुढापेको दूर करता है ॥ ९ ॥

वलीपलितवैस्वर्यपीनसश्वासशोषजित् ।
पानीयप्रसृतीरष्टौ यः पिबेदरुणोदये ॥ १० ॥

जो मनुष्य ६४ तोले भर पानीको प्रभातमें पीवे तो उस मनुष्यके शरीरमें वली पडना, बालोंका सफेद होना, स्वरका बिगडना, पीनस, श्वास, शोष ये सब दूर होते हैं ॥ १० ॥

अन्यान्नमांसादिगुणज्ञानप्रकारः ।

धान्येषु मांसे सकलेषु चैवं शाकेषु चानुक्तमिह प्रमादात् ।
स्वादादितो भूतगुणैर्गृहीत्वा तदा दिशेद्द्रव्यमनल्पबुद्धिः ॥ ११ ॥

अन्नोंमें मांसोंमें और संपूर्ण शाकोंमें जो यहां प्रमादवश नहीं कहेगये हैं, उनको भी स्वादु और उनके रस आदिसे तथा पृथ्वी आदि पांच महाभूतोंके गुणों विचार कर बुद्धिमान् उनके गुणोंको कथन करे ॥ ११ ॥

श्रेष्ठधान्यानि ।

षष्टिका यवगोधूमा लोहिता याश्च शालयः।
मुद्गाढकीमसूराश्च धान्येषु प्रवराः स्मृताः ॥ १२ ॥

साठी चांवल. जव, गेहूं, लाल शाली चांवल, मूंग, अरहर और मसूर ये अन्नोंमें उत्तम कहेगये हैं ॥ १२ ॥

भुक्त्वाऽऽचारगुणाः ।

स जराव्याधिनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं सुखी ।
भुक्त्वोपविशतस्तुन्दी बलमुत्तानशायिनः ।
आयुर्वामकटिस्थस्य मृत्युर्धावति धावतः ॥ १३ ॥

इन अन्नोंको सेवन करनेवाला मनुष्य बुढापे और रोगोंसे बचकर सुखपूर्वक सौ वर्षपर्यन्त जीता है, भोजन करके बैठनेवालेका पेट बढ जाता है, भोजन करके सीधा शयन करने वालेके शरीरमें बल उत्पन्न होता है, भोजन करके वामी करवट सोनेवालेकी आयु बढती है। भोजन करके भागनेवालेकी मृत्यु होती है ॥ १३ ॥

निद्रागुणाः ।

रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा ॥ १४ ॥

रात्रिमें जागना रूक्षता करता है, और दिनमें सोना स्निग्धताको करता है, इस प्रकारसे कि, जिनको रात्रिमें जागना रूखा है, उनको दिनमें सोना हित है ॥ १४ ॥

निद्रा सात्मीकृता यैस्तु रात्रौ वा यदि वा दिवा ।
न तेषां स्वपतां दोषो जाग्रतां चोपजायते ।
भोजनानन्तरं निद्रा वातघ्नी कफपुष्टिकृत् ॥ १५ ॥

जिनको दिन या रातमें सोनेका अभ्यास है, उनको सोनेमें और जागनेमें दोष नहीं है । भोजनके पीछे नींद वातको नाश करती है, कफ और पुष्टिको करती है ॥ १५ ॥

कफमेदोविषार्त्तानां रात्रौ जागरणं हितम् ।
दिवास्वप्नश्च तृट्शूलहिक्काजीर्णातिसारिणः ॥ १६ ॥

कफ, मेद और विष इनसे पीडित हुए मनुष्योंको रात्रिमें जागना हित है । तृषा, शूल, हिचकी, अजीर्ण और अतिसार इन रोगवालोंको दिनका सोना हित है ॥ १६ ॥

दन्तधावनगुणाः ।

दन्तधावनमुद्दिष्टमास्यवैशद्यकारकम् ।
प्रसेकारुचिदौर्गन्ध्यमलपित्तकफापहम् ॥ १७ ॥

दांतुन करना मुखमें सुन्दरता करता है, और प्रसेक, अरुचि, दुर्गंधि, मल, पित्त, कफ इनको नष्ट करता है ॥ १७ ॥

दन्तधावननिषेधः ।

मदातुरः कृशः श्रान्तो दन्ततात्वोष्ठरोगवान् ।
हिक्काच्छर्दिशिरःपीडामूर्च्छाशोषी न तच्चरेत् ॥ १८ ॥

मदरोगी, दुबला, श्रान्त हुआ, दन्तरोगी, तालुरोगी, ओष्ठरोगी, हिचकीके रोगवाला, छर्दि रोगवाला, शिरमें पीडावाला, मूर्छारोगी और शोषरोगी दंतधावन न करे ॥ १८ ॥

मुखप्रक्षालनादिगुणाः ।

मुखप्रक्षालनं शीतपयसा रक्तपित्तजित् ।

मुखस्य पिडिकाशोषनीलिकाव्यङ्गनाशनम् ।
पादप्रक्षालनं दृष्टिकरं वृष्यं श्रमापहम् ॥ १९ ॥

शीतलपानीसे मुखका धोना रक्तपित्तको जीतता है, मुखकी फुनसियां, खुश्की, नीलिका और व्यंगको नाशता है। पैरोंका धोना दृष्टिको दृढ करता है, धातुको पुष्ट करता है और परिश्रमको दूर करता है ॥ १९ ॥

पादाभ्यङ्गगुणाः ।

पादाभ्यङ्गः सदा वृष्यो बलोत्साहविवर्द्धनः ।
निद्रासुखकरः सुप्तिश्रमनेत्ररुजापहः ॥ २० ॥

पैरोंमें तेलका मालिश करना सब कालमें पुष्टि करता है, बल और उत्साहको बढाता है, नींद और सुखको करता है तथा तन्द्रा, परिश्रम, नेत्ररोग इनको नष्ट करता है ॥ २० ॥

गण्डूषधारणगुणाः ।

स्नेहगण्डूषकरणं मुखशोषद्विजामयान् ।
स्वरघातौष्ठपारुष्यरक्तवातान्विनाशयेत् ॥ २१ ॥

स्नेहसे कुल्ला करना मुखशोष, दंतरोग, स्वरभंग, होठोंका करडापन और रक्तवात इनको नाशता है ॥ २१ ॥

सुखोष्णोदकगण्डूषः कफारुचिमलापहः ॥ २२ ॥

जो सहनमें सुखदायक प्रतीत होवे ऐसे गर्म पानीका कुल्ला करना कफ, अरुचि और मल इनको नाशता है ॥ २२ ॥

विषमूर्च्छामदार्त्तानां शोषिणां रक्तपित्तिनाम् ।
कुपितानामलक्ष्मीणां रूक्षाणां न प्रशस्यते ॥ २३ ॥

विष, मूर्च्छा और मदसे पीडित हुए मनुष्योंको शोषवालोंको रक्तपित्तवालोंको कोपवालोंको दरिद्रोंको और रूखोंको कुल्ला करना अच्छा नहीं है ॥ २३ ॥

अंजनगुणाः ।

अञ्जनं नेत्रनैर्मल्यदृष्टिकारि रुजापहम् ।
रात्रौ जागरितः श्रान्तश्छर्दितो भुक्तवांस्तथा ।
ज्वरातुरः शिरःस्नातः कदाचिन्न तदाचरेत् ॥ २४ ॥

अंजन नेत्रोंको साफ करता है, दृष्टिको दृढ करता है, रोगको नाशता है। रात्रिमें जागा हुआ, परिश्रमवाला, छर्दिवाला, भोजन किये हुए, ज्वरसे पीडित और शिरको धोयेहुए कभीभी नेत्रोंमें अंजन न डाले ॥ २४ ॥

व्यायामगुणाः ।

व्यायामः कर्मसामर्थ्यस्थैर्यदोषक्षयाग्निकृत् ।
स सदा गुणमाधत्ते बलिनां स्निग्धभोजिनाम् ॥ २५ ॥

व्यायाम (कसरत करना) सब कामोंकी सामर्थ्य पैदा करता है, देहको स्थिर करता है, दोषोंको नाश करता है और अग्निको बढाता है, बलवालोंको और चिकने भोजनवालोंको सब कालमें गुण देता है ॥ २५ ॥

व्यायामदृढचित्तानां व्याधिर्नास्ति कदाचन ॥ २६ ॥

कसरतसे दृढहुए चित्तवाले मनुष्योंको कभी भी रोग नहीं होता है ॥ २६ ॥

विरुद्धं वा विदग्धं वा भुक्तं शीघ्रं च पच्यते ।
भवन्ति शीघ्रं नो तस्य वलीशिथिलताजराः ॥ २७ ॥

विरुद्ध अथवा जला हुआ भोजन कियाजावे तो शीघ्र पचता है और शरीरमें वली, शिथिलपन, बुढापा ये भी निश्चय ही शीघ्र नहीं होते हैं ॥ २७ ॥

वसन्ते शीतसमये सुतरां स मतो हितः ।
अन्यदापि स कर्त्तव्यः शक्त्यर्द्धेन बलाबलम् ॥ २८ ॥

वसन्त ऋतु और शीतकालमें कसरत करना बहुत हितकारक है, अन्यकालमें भी अपना बलाबल देखकर आधी ताकतसे कसरत करना चाहिये ॥ २८ ॥

व्यायामनिषेधः ।

तनुं समीक्ष्य वा स्वेदी कण्ठे ग्रीवाललाटयोः ।
भुक्तवान्कृतसंयोगः कासी श्वासी क्षयी कृशः ॥ २९ ॥
रक्तपित्ती क्षयी शोषी न तं कुर्याद्विचक्षणः ।
अतिव्यायामतः कासो ज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥ ३० ॥

शरीरको देखकर अथवा जिसके कण्ठ, ग्रीवा, मस्तक इनमें पसीना आगया हो तथा भोजन करके, स्त्रीसंग करके, खांसीवाला, श्वासवाला, क्षयवाला और कृश शरीरवाला, रक्तपित्तवाला, क्षयवाला और शोषवाला कसरत न करे। बहुत कसरतसे खांसी, ज्वर और छर्दि ये उत्पन्न होते हैं ॥ ३० ॥

मर्दनकेशादिकर्तनयोर्गुणाः ।

मर्दनं श्रमवातघ्नं निद्रापुष्टिबलप्रदम् ।
केशश्मश्रुनखानां च कल्पनं शुचिरूपकृत् ॥ ३१ ॥

मालिश करना या चांपीकरना परिश्रम और वातको नाशता है, नींद, पुष्टि और बलको देता है, बाल डाढी और नखोंका काटना सुन्दर रूपको करता है॥३१॥

तैलाभ्यङ्गगुणाः ।

अभ्यङ्गो वातरोगघ्नो धातुसाम्यं बलं सुखम् ।
निद्रावर्णमृदुत्वानि कुरुते दृष्टिपुष्टिकृत् ॥ ३२ ॥

तेल आदिसे मालिश करना वातरोगको नाशता है, धातुओंकी समता, बल, सुख, नींद, वर्ण कोमलपन, दृष्टि और पुष्टि इनको करता है ॥ ३२ ॥

केशप्रसाधनगुणाः ।

केशप्रसाधनी केश्या रजोजन्तुमलापहा ।
शिरोऽभ्यङ्गः शिरस्तृप्तिकेशदार्ढ्याक्षिपुष्टिकृत् ॥ ३३ ॥

कंघीसे बालोंका बाहना बालोंको बढाता है, धूली, जीव और मलको दूर करता है । शिरमें तेल आदिका मालिश करना शिरकी तृप्ति, बालोंकी दृढता और आंखोंकी पुष्टि इनको करता है ॥ ३३ ॥

कर्णपूरणगुणाः ।

उच्चैःश्रवणबाधिर्यमलमन्याहनुग्रहान् ।
नाशनं कर्णरोगाणां कुरुते कर्णपूरणम् ॥ ३४ ॥

ऊंचा सुनना, बहिरापन, मल, मन्याग्रह, हनुग्रह इनको नाश करता है । अतः कानरोगवालोंके कानमें तेल आदि पूरण करना ॥ ३४ ॥

स्नेहसेचनगुणाः ।

सिक्तस्याद्भिर्यथा मूले शाखिनः पल्लवादयः ।
वर्द्धन्ते हि तथा पुंसः स्नेहसिक्तस्य धातवः ॥ ३५ ॥

जैसे वृक्षोंकी जडमें पानी सींचनेसे पत्ते आदि बढते हैं वैसे स्नेहसे सींचे मनुष्यके धातु बढते हैं ॥ ३५ ॥

स्नेहावगाहनगुणाः ।

स्नेहावगाहनं वातशमनं धातुपुष्टिदम् ।
मात्राभिस्त्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टभिराव्रजेत् ।
रसरक्तमांसमेदोमज्जाधातून्यथाक्रमम् ॥ ३६ ॥

स्नेहमें गोता मारना वातको नाशता और धातुओंको पुष्ट करता है । तीन चार, पांच, छः, सात और आठ इन मात्राओंसे गोता मारना क्रमसे रस, रक्त, मांस, मेद, मज्जा और वीर्य इनको पुष्ट करता है ॥ ३६ ॥

स्नेहाभ्यङ्गादिवर्जनम् ।

वान्तो नवज्वरोऽजीर्णी विरिक्तः केवलामरुक् ।
निरूहतर्पणं यच्च स्नेहाभ्यङ्गादि वर्जयेत् ॥ ३७ ॥

वांति कियाहुआ, नया ज्वरवाला, अजीर्णवाला, जुलाब लिया हुआ और केवल आमरोगवाला, निरूह, तर्पण और स्नेहाभ्यंग (चिकनाइकी मालिश) आदिका सेवन न करे ॥ ३७ ॥

उद्वर्त्तनगुणाः ।

उद्वर्त्तनं वातहरं भ्राजकानलदीपनम् ।
गात्रस्थिरत्वसुखितात्वक्प्रसादमृदुत्वकृत् ॥ ३८ ॥

उवटना (मलना) वातको हरता है, कांतिकारक है और अग्निको दीपन करता है, अंगोंकी स्थिरता, सुख, त्वचाकी स्वच्छता और कोमलताको करता है ॥ ३८ ॥

स्नानादिगुणाः ।

स्नानं वातश्रमालक्ष्मीपामाकण्डूमलापहम् ।
हृद्यं कासहरं वह्निसर्वेन्द्रियविबोधनम् ॥ ३९ ॥

स्नान करना वात, परिश्रम, दारिद्र्य, पामा, खाज और मल इनको नाशता है, दिलको ताकत देता है, खांसीको हरता है, अग्नि और सब इन्द्रियोंको बलवान् करता है ॥ ३९ ॥

न तदुष्णेन शिरसो योज्यं नेत्राहितं यतः ।
कफवातप्रकोपे तु भेषजार्थं तदाचरेत् ॥ ४० ॥

गर्मपानी करके शिरको नहीं भिगोना, क्योंकि आंखोंमें हितकारक नहीं है, कफ और वातके प्रकोपमें औषधके अर्थ देवे ॥ ४० ॥

स्नाननिषेधः ।

तच्चातिसारज्वरितकर्णशूलानिलार्तिषु ।
आध्मानारोचकाजीर्णभुक्तवत्सु च गर्हितम् ॥ ४१ ॥

अतिसार, ज्वर, कर्णशूल, वातरोग, आध्मान, अरोचक, अजीर्ण इन रोग-वालोंको और भोजन किये पीछे स्नानकरना निंदित है ॥ ४१ ॥

चन्दनलेपनादिगुणाः ।

अनुलेपस्तृषामूर्च्छा दौर्गन्ध्यश्रमवातजित् ।
सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णप्रीत्योजोबलवर्द्धनम् ॥ ४२ ॥

अनुलेप अर्थात् चन्दन आदिका लगाना तृषा, मूर्च्छा, दुर्गंधता, परिश्रम और वातको जीतता है और सौभाग्य, तेज त्वचाका वर्ण, प्रीति, पराक्रम, बल इनको बढाता है ॥ ४२ ॥

पुष्परत्नादिधारणगुणाः ।

कुसुमाम्बररत्नानां धारणं कान्तिकारणम् ।
पापरक्षोग्रहहरं कामौजःश्रीविवर्द्धनम् ।
पादत्रधारणं नेत्र्यमायुष्यं पादरोगनुत् ॥ ४३ ॥

फूल, वस्त्र, रत्न इनको धारण करना कान्तिको करता है, पाप, राक्षसदोष, ग्रहदोष इनको दूर करता है और काम, पराक्रम, शोभा इनको बढाता है । पादत्राण अर्थात् जूता पहनना नेत्रोंको हित है, आयुको बढाता है और पादरोगोंको दूर करता है ॥ ४३ ॥

उष्णीषगुणाः ।

उष्णीषं शुचिदं केश्यं रजोवातातपापहम् ॥ ४४ ॥

पगडीका बांधना शुद्धिको देता है, बालोंको हित है और धूलि, वात, घाम इनको दूर करता है ॥ ४४ ॥

छत्रव्यजनगुणाः ।

छत्रधारणमोजस्यं चक्षुष्यं हिमघर्मजित् ।
बालव्यजनमोजस्यं मक्षिकादिनिवारणम् ।
व्यजनस्यानिलः शोषमूर्च्छास्वेदश्रमापहः ॥ ४५ ॥

छत्रीधारण करना बलको करता है, नेत्रोंको हित है तथा वर्षा और घामको

जीतता है, चमर करना बलको करता है, मक्खी आदिको दूर करता है, पंखेकी पवन शोष, मूर्च्छा, पसीना और परिश्रमको नाशती है ॥ ४५ ॥

यष्टिधारणगुणाः ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यावष्टम्भवीर्यकृत् ।
रक्षःसर्पादिभयजिद्विशेषात्स्थविरे (म) हितम् ॥ ४६ ॥

लट्ठी धारण करना उत्साह, स्थिरता, गिरने न देना, पराक्रम इनको करता है, राक्षस और सांप आदिके भयको जीतता है, विशेषकर बुढापेमें हित है ॥ ४६ ॥

चंक्रमणगुणाः ।

अङ्गस्थौल्यरुचिश्लेष्मसौकुमार्यसुखप्रदम् ।
यत्तु चंक्रमणं नातिदेहपीडाकरं भवेत् ।
तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥ ४७ ॥

अंगोंको मोटा नहीं करता है, रुचिको उपजाता है और कफ, सुकुमारपन, सुख इनको देता है । जहाँतक शरीरको पीडा नहीं होवे तहाँतक चलना, फिरना, आयु, बल, बुद्धि, अग्नि इनको देता है और इन्द्रियोंको जगाता है ॥ ४७ ॥

शय्यादिगुणाः ।

त्रिदोषशमनी शय्या तौली वातकफापहा ।
सुखशय्यासमं निद्रापुष्टीन्द्रियबलप्रदा ॥ ४८ ॥

शय्या अर्थात् पलंग त्रिदोषको शान्त करता है, बिछोना वातकफको नाशता है. सुखशय्यामें भी यही गुण हैं । विशेष कर नींद पुष्टि और इन्द्रियबलको देती है ॥ ४८ ॥

आतपादिगुणाः ।

आतपः स्वेदमूर्च्छास्रतृष्णादाहश्रमक्लमान् ।
कुरुते पित्तवैवर्ण्यस्वेदान् छाया व्यपोहति ॥ ४९ ॥

घाम (धूप) पसीना, मूर्च्छा, रक्तका पिघलना, तृषा, दाह, परिश्रम और ग्लानि इनको उत्पन्न करता है, और छाया पित्त, वर्णका बिगडना और पसीना इनको दूर करती है ॥ ४९ ॥

अग्नितापगुणाः ।

अग्निः शीतानिलस्तम्भकफवेपथुनाशनः ।
रक्तपित्तप्रदूषी स्यादामाभिष्यन्दपाचनः ॥ ५० ॥

अग्नि (आग) का सेकना शीत, वात, स्तंभ, कफ और कम्पको नाशती है, रक्तपित्तको दूषित करती है, आमको गलाती और पकाती है ॥ ९० ॥

धूमादिगुणाः ।

धूमः पित्तानिलौ कुर्यादवश्यायः कफानिलौ ।
ज्योत्स्ना शीतानिलस्तम्भप्रदा तृट्पित्तदाहजित् ॥ ९१ ॥

धुंआ पित्त और वातको करता है । ओस (तुषार) कफ और वातको करती है, चन्द्रमाकी चांदनी शीतल है, वात और स्तंभको देती है तथा तृषा, पित्त, दाह इनको जीतती है ॥ ९१ ॥

तमो भयावहं मोहकफपित्तक्लमप्रदम् ।
वृष्टिर्वृष्या हिमा निद्राभिष्यन्दलस्यकारिणी ॥ ९२ ॥

अन्धेरा भय, मोह, कफ, पित्त, ग्लानि इनको देता है, वर्षा पुष्टि करती है, शीतल है और नींद अभिष्यंद और आलस्यको करती है ॥ ९२ ॥

प्रवातादिगुणाः ।

प्रवातं रूक्षवैवर्ण्यस्तम्भकृद्दाहपित्तनुत् ।
स्वेदमूर्च्छापिपासाघ्नमप्रवातमतोऽन्यथा ॥ ९३ ॥

बहुत पवन रूखेपन, विवर्णता और स्तंभको करती है, दाह और पित्तको दूर करती है, पसीना, मूर्च्छा और तृषाको नाशती है । इससे विपरीत पवन विपरीत फल देती है ॥ ९३ ॥

सुखं प्रवातं सेवेत ग्रीष्मे शरदि चान्तरा ।
निवातमायुषे सेव्यमारोग्याय च सर्वदा ॥ ९४ ॥

ग्रीष्मऋतुमें शरदृऋतुमें अपनी इच्छानुसार पवनका सेवन करे और अन्य ऋतुओंमें आयुकी वृद्धिके लिये और रोगरहित रहनेके लिये अधिक वायुसे रहित स्थानोंमें रहे ॥ ९४ ॥

सद्यःप्राणदाः ।

सद्योमांसं नवं चान्नं बाला स्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकस्नानं सद्यःप्राणकराणि षट् ॥ ९५ ॥

तत्कालका मांस, नया अन्न, बाला अर्थात् सोलह वर्षकी स्त्री, दूध भोजन, घृत और गर्मपानीसे न्हाना ये छः वस्तु तत्काल प्राण दायक हैं ॥ ९५ ॥

सद्यःप्राणहराः ।

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥ ५६ ॥

दुर्गन्धवाला मांस, बूढी स्त्री, कन्याकी राशिका अथवा प्रभातका सूर्य, तत्काल जमाईहुई दही, प्रभातमें स्त्रीसंग और नींद ये छहों प्राणको शीघ्र हरनेवाले होते हैं ॥ ५६ ॥

अन्नादिगुणाः ।

अन्नादष्टगुणं पिष्टं पिष्टादष्टगुणं पयः ।
पयसोऽष्टगुणं मांसं मांसादष्टगुणं घृतम् ।
घृतादष्टगुणं तैलमभ्यङ्गे न तु भोजने ॥ ५७ ॥

चावल आदि अन्नसे आठगुना आटा और आटेसे आठगुना दूध और दूधसे आठगुना मांस और मांससे आठगुना घृत बल कारक है, घृतसे आठ गुणा तेल बलकारक है परंतु मालिशमें है, भोजनमें नहीं ॥ ५७ ॥

लंघनगुणाः ।

लंघनं कफमेदोघ्नमामज्वरहरं लघु ॥ ५८ ॥

लंघन अर्थात् उपवासका करना कफ मेदको नाशता है, आम ज्वरको हरता है और हलका है ॥ ५८ ॥

पाचनं दीपनं वातहरं शूलातिसारजित् ।
तन्न युक्तं नवे बाले गर्भिण्यां स्थविरे कृशे ।
शोषकामभयक्रोधमार्गश्रमचिरज्वरे ॥ ५९ ॥

पाचन है, अग्निको जगाता है, वातको हरता है, शूल और अतिसारको जीतता है, नवीन रोगी, बालक, गर्भिणी, बूढा और दुर्बलमनुष्य और शोषरोगी, कामपीडित, भयसे व्याकुल, क्रोधातुर, मार्गचलना आदि परिश्रमसे थकाहुआ पुराने-ज्वरमें कभी लंघन न करे ॥ ५९ ॥

पूर्वादिपवनगुणाः ।

पूर्वानिलो गुरुः स्वादुः स्निग्धः पित्तास्रवर्द्धनः ॥ ६० ॥
रोगकृद्विषजुष्टानां क्षतव्रणविलासिनाम् ।
विदाही वातलः श्रान्तकफशोफवतां हितः ॥ ६१ ॥

पूर्व दिशाका पवन भारी है, स्वादु है, चिकना है, पित्तरक्तको बढाता है,

और रोगको करता है, विषसे युक्त हुओंको क्षत और घाववालोंको बुरा है, दाहको करता है, और वातको उपजाता है, श्रांत हुओंको कफ और शोजावालोंको हित है ॥ ६०-६१ ॥

दक्षिणः पवनः स्वादू रक्तपित्तहरो लघुः ।
अविदाहप्रदो बल्यश्चक्षुष्यो न च वातलः ॥ ६२ ॥

दक्षिणका पवन स्वादु है, रक्तपित्तको हरता है, हलका है, दाहको नहीं करता है, बलको करता है, आंखोंको हित है और वातकारक नहीं है ॥ ६२ ॥

पश्चिमः पवनो रूक्षस्तीक्ष्णः स्नेहबलापहः ।
विशदः शोषणो नृणां कफमेदोहरो लघुः ॥ ६३ ॥

पश्चिमका पवन रूखा है, तेज है, स्नेह और बलको नाशता है, दिलको ताकत देता है, शोषता है, मनुष्योंके कफ और मेदको हरता है और हलका है ॥ ६३ ॥

उत्तरो मारुतः शीतः स्निग्धो दोषप्रकोपकृत् ।
क्लेदनः प्रकृतिस्थानां बलदो मधुरो मृदुः ।
क्षयक्षीणविषार्त्तानां विशेषाद्गुणकारकः ॥ ६४ ॥

उत्तरका पवन शीतल है, स्निग्ध है और दोषोंके प्रकोपको करता है, क्लेदकारक है, आरोग्य मनुष्योंको बल देता है, मीठा और कोमल है, क्षय-क्षीण और विषसे पीडित हुए मनुष्योंको विशेषतासे गुण करता है ॥ ६४ ॥

मधुररसगुणाः ।

रसो मधुरकः शीतो धातुस्तन्यबलप्रदः ॥ ६५ ॥

मीठा रस शीतल है, धातु और स्तनके दूध और बलको बढाता है ॥ ६५ ॥

चक्षुष्यो वातपित्तघ्नः कुर्यात्स्थौल्यकफक्रिमीन् ।
सोऽतियुक्तो ज्वरश्वासगलगण्डार्बुदादिकृत् ॥ ६६ ॥

आंखोंमें हित और वातपित्तको नाशता है । मुटापा, कफ और कृमि इनको करता है, वह बहुत प्रयुक्त किया ज्वर, श्वास, गलगण्ड और अर्बुद आदिकोंको उत्पन्न करता है ॥ ६६ ॥

अम्लरसगुणाः ।

रसोऽम्लः पाचनो रुच्यः पित्तश्लेष्मकरो लघुः ।

लेखनोष्णो बहिः शीतः क्लमदः पवनापहः ।
सोऽतियुक्तः परं देहे रक्तपित्तादिरोगकृत् ॥ ६७ ॥

खट्टा रस पाचन है, रुचि उपजाता है, पित्तकफको करता है, हलका है, लेखन और गर्म है, बाहरसे शीतल है, ग्लानिको देता है, वातको नाशता है, अम्लरस अधिक प्रयोग करनेसे देहमें रक्तपित्तादि रोगोंको उत्पन्न कर देता है ॥ ६७ ॥

कटुरसगुणाः ।

कटुकः पित्तलः श्लेष्मकृमिकण्डूविषापहः ॥ ६८ ॥
आग्नेयो वातलः स्तन्यमेदस्थौल्यहरोऽगुरुः ।
सोऽतियुक्तो भ्रमास्थौल्यतालुशोषातिदाहदः ॥ ६९ ॥

चरपरा रस पित्तकारक है । तथा कफ, कृमि, कण्डू और विषको नष्ट करता है । अग्निगुण प्रधान है । वायुको उत्पन्न नहीं करता, स्तन्य, मेद और स्थूलताके हरनेवाला है उसका अतिप्रयोग करनेसे भ्रम, कृशता, तालुशोष और दाह उत्पन्न हो जाती है ॥ ६८-६९ ॥

तिक्तरसगुणाः ।

तिक्तः शीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत् ।
वातलोऽग्निकरः स्तन्यशोधनः शोषणो लघुः ॥ ७० ॥

कडुवा रस शीतल है, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त और कफ इनको जीतता है, वातको करता है, अग्निको उपजाता और दूधको शोधनकर्ता है, शोषण है और हलका है ॥ ७० ॥

सोऽतियुक्तः शिरःशूलमन्यास्तम्भभ्रमार्तिकृत् ॥ ७१ ॥

बहुत अधिक सेवन करनेसे कडुवा रस शिरमें शूल, मन्यास्तंभ और भ्रमको करता है ॥ ७१ ॥

लवणरसगुणाः ।

लवणः शोधनो रुच्यः पाचनः कफपित्तदः ।
पुंस्त्ववातहरो ज्ञेयः कायशैथिल्यकारकः ।
सोऽतियुक्तोऽक्षिपाकास्रपित्तकोष्ठाक्षितापकृत ॥ ७२ ॥

नमकीन रस शोधन है, रुचिको उपजाता है, पाचन है, कफ और पित्तको पैदा करता है, पुरुषपनेको और वातको हरता है, शरीरमें शिथि-

लता करता है । बहुत युक्त किया सलोना रस आंखका, पक जाना, रक्तपित्त, कोष्ठ और आंखम दाह करता है ॥ ७२ ॥

कषायरसगुणाः ।

कषायो रोपणो ग्राही शोषणो वातकोपनः ।
सोऽतियुक्तो ग्रहाध्मानहृत्पीडाक्षेपणादिकृत् ॥ ७३ ॥

कषैला रस घावमें अंकुर लाता है, मलको रोकता है, शोषण है, और वातको कुपित करता है । बहुत प्रयुक्त किया कषैला रस ग्रहरोग, आध्मान, हृदयमें पीडा, आक्षेप आदिको करता है ॥ ७३ ॥

वमनविरेचनादिगुणाः ।

वमनं श्लेष्मपित्तघ्नं विरेको रक्तपित्तहा ।
वस्तिर्वातहरा ज्ञेया स्वेदो मांद्याद्यकारकः ॥ ७४ ॥

वमन कफ और पित्तको नष्ट करता है, विरेचन रक्त और पित्तको शमन करता है, वस्तिकर्म वायुको शमन करता है, स्वेदकर्म (पसीना देना) मन्दाग्नि और जडता आदिको दूर करता है, ॥ ७४ ॥

प्रसन्नदृष्टिर्दृढदन्तकेशः शशाङ्कवक्त्रः पलितैर्विहीनः ।
पिकाभकण्ठःकमलास्यगन्धस्तस्योपसेवीभवतीह मर्त्यः ॥ ७५ ॥

मनुष्य वमनके करानेसे साफ दृष्टिवाला, दृढ दंत और बालोंवाला, चन्द्रमाके समान मुखवाला, श्वेतबालोंसे वर्जित, कोयलके समान कण्ठवाला और कमलके समान मुखके गन्धवाला होता है ॥ ७५ ॥

कासोपलेपः स्वरभेदनिद्रा तथाऽऽस्यदौर्गन्ध्यविषोपसर्गः ।
कफप्रसेको ग्रहणीप्रदोषा भवन्ति जन्तोर्वमिते न नूनम् ॥ ७६ ॥

खांसी, मुखमें कफका लिपटना, स्वरभेद, नींद, मुखमें दुर्गन्ध और विषके उपद्रव, कफका पडना, ग्रहणीके दोष ये सब मनुष्यके वमन करनेसे नहीं होते हैं ॥ ७६ ॥

बुद्धेः प्रसादं बलमिन्द्रियाणां धातुस्थिरत्वं बलमग्निदीप्तिम् ।
चिराच्च पाकं वयसःकरोति विरेचनं सम्यगुपास्यमानम् ॥ ७७ ॥

अच्छी रीतिसे विरेचन किया हुआ मनुष्यकी बुद्धिकी प्रसन्नता इंद्रियोंकी ताकत, स्थिरता, बल, अग्निकी चैतन्यता इनको करता है, और जलदी बुढापा नहीं आनेदेता ॥ ७७ ॥

बस्तिकर्मगुणाः ।

बस्तिर्वाते च पित्ते च कफे रक्ते च शस्यते ।
संसर्गे सन्निपाते च बस्तिरेव हितः सदा ॥ ७८ ॥

वात, पित्त, कफ, रक्तविकार इनमें वस्तिकर्म उत्तम है । दो दोषोंके कोपमें और सन्निपातमें और सब कालमें वस्ति कर्मही हित है ॥ ७८ ॥

मूले निषिक्तो हि यथा द्रुमः स्यान्नीलच्छदः कोमलपल्लवाग्रः ।
काले बृहत्पुष्पफलप्रदश्च तथा नरः स्यादनुवासनेन ॥ ७९ ॥

जैसे वृक्षकी जडमें पानी सींचनेसे टहनियां, छत्ते और कोमल पत्तोंवाला होके समय पर बहुत पुष्प और फलोंको देता है, वैसेही अनुवासनवस्तिसे मनुष्यभी सब सुंदर अंगोंवाला हो जाता है ॥ ७९ ॥

रक्तमोक्षगुणाः ।

त्वग्दोषा ग्रन्थयः शोफा रोगाः शोणितसम्भवाः ।
रक्तमोक्षणशीलानां न भवन्ति कदाचन ॥ ८० ॥

त्वचा दोष, ग्रंथि, शोजा आदि रक्तसे होनेवाले रोग दूषित रक्त निकाल देनेसे (फस्तसे) नहीं होते हैं ॥ ८० ॥

वर्षासु पथ्यसेवनम् ।

संहर्षात्कुपिता भवन्ति हि मला वर्षासु वातादयः
क्लिन्नत्वाद्वपुषोऽनले कृशतरे वैद्येन देयं ततः ।
अन्नं दीपनपाचनं च मलहृत् क्लेदापहोष्णद्रवं
रूक्षं नातिकषायतिक्तकटुकं स्निग्धं च किंचिद्रसैः ॥ ८१ ॥

वर्षा ऋतुमें वायुआदि दोष बडे वेगसे कुपित होते हैं, पृथ्वीमें हरवक्त गीलापन आदि होनेसे मनुष्योंके अंदर क्लेद (आमाकारदोष) बढजाता है तब जठराग्नि भी कमताकत होजाती है, इसलिये वर्षा ऋतुमें वैद्यको उचितहै कि दीपन, पाचन, दोषोंको और मलको हरनेवाला, क्लेदके दूर करनेवाला, गरम पतला, रूखा जो अधिक चर्परा, कडुवा, कषैला न हो और किंचित् चिकना हो ऐसे रस भोजन देवे अर्थात् वर्षा ऋतुमें यह उपरोक्त अन्न पथ्य है ॥

दिव्यं चौण्ड्यमथाम्बु तप्तशिशिरं सक्षौद्रमल्पं पिबेद्
गच्छन्त्योषधयो विदाहमधिकं तारुण्ययोगात्तदा ।
व्यायामार्कमरीचिमैथुनदुखावश्यायवर्जं ततो
भूबाष्पाम्बुभुजङ्गदंशमशकैर्वर्जे शयीतालये ॥ ८२ ॥

तथा आकाशसे वर्षेहुए और स्रोतके पानीको पीवे और उसको भी उबालकर ठंढा करके शहद मिलाकर पीवे, क्योंकि, वह जल ताजा वर्षा हुआ होनेसे अधिकतासे दाह आदि करता है और वर्षा ऋतुमें व्यायाम, धूप, स्त्रीसंग, दिनमें सोना और ओस इनका सेवन न करे तथा पृथ्वीकी भांप, पानी, सांप, डांस, मच्छर रहित स्थानमें शयन किया करे ॥ ८२ ॥

शीतकाले पथ्यम् ।

शीते यत्र न वातवृष्टिरधिका साङ्गारयाने गृहे
निर्वाते क्षितिपः शयीत मधुरं किञ्चिच्च पीत्वाऽऽसवम् ।
काश्मीरागुरुलेपभूषिततनुर्नागाङ्गनाभिर्व्रजे-
द्यत्नाच्च व्यजनावगाहनरतिं स्वापं दिवा च त्यजेत् ॥ ८३ ॥

शीतकालमें जहां पवन और वर्षा बहुत न आती हो तथा अंगीठी बनी हुई हो और पवन न आती हो ऐसे स्थानमें राजा किंचित् मीठे आसवको पीके शयन करे और केशर, अगर इनके लेपनसे शरीरको भूषितकर सुन्दर स्त्रियोंके संगको प्राप्त हो और व्यजन और जलक्रीडा करना, दिनमें स्त्रीसंग करना तथा दिनमें सोना इनको त्यागदेवे ॥ ८३ ॥

शरदृतुकृत्यम् ।

सेव्याः स्वादुकषायतिक्तविशदाऽवर्षे त्यजेज्जांगलं
द्राक्षाक्षीरसितेक्षुशालिमधुरा गोधूममुद्गाः पयः ।
नैर्मल्यादखिलं जलं लघुतरं वासः स्रजश्चन्दनं
सेवेतेन्दुकरान् प्रदोषसमये गाहेत साब्जं सरः ॥ ८४ ॥

शरदृतुमें स्वादु, कषैला और सुन्दर ऐसे रस सेवन करे और जांगल मांसको त्यागदे । दाख, दूध, मिसरी, ईख, शालिचावल, मीठे पदार्थ, गेहूं, मूंग आदिको सेवन करे । आश्विन कार्तिकमें निर्मलपनसे, सब तरहके पानी हलके होजाते हैं

उनको सेवनकरे तथा वस्त्र, माला, चंदन इनको सेवन करे और प्रदोष समय चंद्रमाकी किरणोंको सेवन करे और कमलवाले तलावोंमें गोता मारके स्नान करे ॥ ८४ ॥

वर्षास्वूपचितं विरेचविधिना पित्तं हरेद्बुद्धिमान्
युक्तं रक्तविमोक्षणेन हविषस्तिक्तस्य पानं तथा ।
रात्रौ जागरणं व्यवायमधिकं घर्मं तुषारं दधि
क्षाराम्लोष्णविदाहितीक्ष्णकटुकं निद्रां दिवा च त्यजेत् ॥ ८५ ॥

और वर्षा ऋतुमें संचित हुए पित्तको बुद्धिमान् विरेचनकी विधिसे शरदृतुमें निकालदेवे तथा रक्तको निकलावे और तिक्तद्रव्योंसे सिद्ध घृतको पीवे । रात्रिमें जागना, बहुत स्त्रीसंग, घाम, तुषार (ओस), दही, खारा, खट्टा, गर्म, बहुत दाहकारक, तेज, कडुवा और दिनमें सोना इनको त्यागदे ॥ ८५ ॥

हेमन्तशिशिरयोः कृत्यम् ।

हेमन्ते लवणाम्लतिक्तकटुकक्षारोत्कटं बृंहणं
सर्पिस्तैलसमेतमुष्णमशनं तीक्ष्णानि पानानि च ।
सेवेतागुरुधूपिताऽम्बुशिशिरं गाहेत तैलप्लुतः
कौशेयास्तरणे शयीत शयने साङ्गारयाने गृहे ॥ ८६ ॥

मंगशिर पौसमें सलोना, खट्टा, कडुवा, चर्परा, खारा, उत्कट, पुष्टिकारक घृत, तेलसहित गर्म भोजन और चर्परे और पीनेके पदार्थ इनका सेवन करे । तेलकी मालिश कर गर्म पानीमें स्नान करे और रेशमी वस्त्रसे संयुक्त हुए पलंगपर अंगीठी युक्त गर्म स्थानमें शयन करे ॥ ८६ ॥

श्यामां पीनपयोधरोरुजघनामाश्लिष्य धन्योऽङ्गनां
बाह्लीकागुरुलेपभूषिततनुं धूपैर्व-रैर्धूपितम् ।
कामं मैथुनमप्यतर्पितवपुः सेवेत बल्यै रसैः
कर्त्तव्यः शिशिरेऽयमेव नितरां शीताधिकत्वाद्विधिः ॥ ८७ ॥

सांवले रंगकी (तरुणी) और पुष्टकुच और पुष्ट जांघोंवाली स्त्रीसे मिलके सोवे । केशर और अगरका लेप करे और सुन्दर धूपोंसे धूप लेके स्त्रीसंग करे और बलकारक रसोंका सेवन करे । माघ फाल्गुनमेंभी बहुत शीत होनेसे यही विधि करनी उचित है ॥ ८७ ॥

वसन्ते पथ्यम् ।

तीक्ष्णक्षारकषायरूक्षकटुकं कोष्णं वसन्तेऽशनं
सन्मन्थं मधुमुद्गजाङ्गलयवप्रायं हितं वाऽऽसवम् ।
व्यायामं विपिनं च कोकिलकलालापाकुलं कामिनी-
स्नानोद्वर्त्तनचन्दनानि नृपतिः सेवेत रम्याः स्रजः ॥ ८८ ॥

चैत्र वैशाखमें तेज, खारा, कषैला, रूखा, चर्परा और गर्म भोजन करना, शहद, मूंग, जांगल देशके जव विशेष करके हो वह मदिरा, कसरत, कोयलोंके शब्दोंसे शोभायमान बगीचे और सुन्दर स्त्री तथा स्नान, उबटना, चन्दन और रमणीय माला इनको राजा सेवन करे ॥ ८८ ॥

हेमन्ते निचितः प्रकुप्यति कफो भानोः करैरावृत-
स्तस्मात्तीक्ष्णशिरोविरेकवमनैर्गण्डूषधूपादिभिः ।
तं प्रज्ञो विजयेत विश्वजलदक्काथैरथोष्णाम्बुभिः
शीतस्निग्धगुरुद्रवाम्लमधुरं निद्रां दिवा च त्यजेत् ॥ ८९ ॥

हेमन्त ऋतुमें संचित हुआ कफ सूर्यके किरणोंसे आवृत होकर कुपित होता है इसलिये तेज शिरोविरेचन अर्थात् नस्य, वमन, कुल्ला, धूप, आदिकोंसे और सोंठ नागरमोथाके क्वाथोंसे तथा गर्मपानीसे उसको जीते । शीतल, चिकना, भारी, पतला, खट्टा और मीठा रस और दिनमें सोना इनको त्याग दे ॥ ८९ ॥

ग्रीष्मकृत्यम् ।

ग्रीष्मे शीतगृहाम्बुसरांसि सरितो वापीर्वनानि स्रजो
हाराञ्छीतलतालवृन्तपवनान्सेवेत निद्रां दिवा ।
वासांस्यच्छलघून्यनुष्णमधुरं चान्नं ससर्पिर्द्रवं
मन्थक्षीरसुपानकानि च सितादिग्धानि शीतान्यपि ॥ ९० ॥

ज्येष्ठ आषाढमें शीतल गृह, स्नान, सरोवर, नदी, बावडी, माला, हार, शीतल ताडके पंखेकी पवन और दिनमें सोना इनको सेवन करे । सुन्दर और हलके वस्त्र-धारण करे और शीतल, मीठा, घृतसहित, पतला अन्न, मन्थ, मिसिरी आदिसे युक्त दूध और सुन्दर पानक इनको सेवन करे ॥ ९० ॥

शुभ्रे हर्म्यतले शयीत शयने प्रत्यग्रपुष्पाञ्चिते
वातैश्चन्दनचन्द्रचर्चिततनुः संस्पृश्यमानः सुखैः ।
व्यायामं परिशोषि मैथुनरतिं घर्मं तथोष्णं रसा-
नाग्नेयान्परितस्त्यजेन्मतिमतो वैद्यस्य वाक्ये रतः ॥ ९१ ॥

सुन्दर स्वच्छ मकानको छत आदिपर खिलनेके लिये किंचित् खुले मुखके फूलोंसे रचित किये पलंगपर सुख (स्पर्श) पवनसे स्पर्शित होके और चन्दनका लेप शरीरपर करके (चान्दनीका) सेवन कर शयनकरे । तथा कसरत, शोषकारक द्रव्य, स्त्रीसंगमें मन, घाम, गर्म पदार्थ, अग्निको उपजानेवाले रस इन सबको सब प्रकारसे त्यागदेवे और बुद्धिमान्वैद्यकी आज्ञामें रहे ॥ ९१ ॥

ग्रन्थकर्तृप्रशस्तिः ।

टीकान्वये महति भूमिभुजां विशुद्धे
काछेति नाम नगरं जयति प्रसिद्धम् ।
यद्वेधसा विहितमादरतः स्वसृष्टे-
रुत्कृष्टतातिशयपुञ्जदिदृक्षयैव ॥ ९२ ॥

जो ब्रह्माने निश्चयही सृष्टिकी उत्कृष्टताके समूह देखनेकी इच्छासे रचा हुआ राजाओंका शुद्ध और उत्तम टीका वंश है उसके रहनेका काछ इस नामसे प्रसिद्ध हुआ नगर सर्वोत्कर्षतासे वर्तता है ॥ ९२ ॥

तत्र श्रीरत्नपालः समजनि जनतानन्दवृन्दैककन्दः
कुन्देन्दुस्वच्छकीर्तिः परमददलनोद्दानदीक्षैकदक्षः ।
यस्याकर्ण्य प्रभूतं प्रथितगुणगणं कर्णसाफल्यभाजो
दैवं निन्दन्ति लोका नयनविफलताखेदमावेदयन्तः ॥ ९३ ॥

उस टीकावंशमें मनुष्योंके आनन्दके समूहका कन्दरूप, कंदके फूल और चन्द्माके समान स्वच्छ कीर्तिवाला, शत्रुके मदको दलनकर बडी भारी दीक्षा देनेमें चतुर और जिसके विख्यात गुणोंको समूहको सुनकर कानोंकी सफलता प्राप्तकर नेत्रोंके न देखनेके खेदमें संसारके मनुष्य दैवको निंदित करते हैं अर्थात्

१ काठेरि इत्यपि पाठः ।

उसके गुणोंको सुनतेही सबको देखनेकी अभिलाषा होती है ऐसा श्रीरत्नपाल राजा उस काछ नगरमें उत्पन्न हुवा ॥ ९३ ॥

जननयनसुधांशुस्तस्य शुद्धस्तनूजो
जगति भरणपालः क्षोणिपालो बभूव ।
सकलसकलवाञ्छासिद्धिहेतोर्विधाता
सुरतरुमपि चक्रे यत्करच्छद्मनैव ॥ ९४ ॥

उस श्रीयुक्त रत्नपालका मनुष्योंके आंखोंमें चन्द्रमारूप शुद्ध पुत्र संसारमें भरणपाल नाम राजा हुआ, विधाताने सम्पूर्ण प्राणीमात्रकी इच्छा पूर्ण करनेके लिये कल्पवृक्ष जिसके हाथके वेषमें प्रगट किया ॥ ९४ ॥

हरिश्चन्द्रस्तस्मात्समजनि जनानन्दजननो
हरिश्चन्द्रो लोके परपुरुपरीतापदलनः ।
परं विश्वामित्रेष्वहितमयमाधत्त मतिमान्
विशिष्टो नैतस्माज्जगति महितोऽन्यः सुकृतिनः ॥ ९५ ॥

उससे मनुष्योंके आनन्द उपजानेवाला और संसारमें शत्रुओंके बढेहुए परितापको दलन करनेवाला हरिश्चन्द्र हुआ यह बुद्धिमान विश्वके शत्रुओंको नाशकरनेवाला हुआ (अर्थात दुष्टोंको दण्ड देनेवाला हुआ) और इस प्रकृतिसे विशिष्ट और जगतमें कोई नहीं हुआ ऐसा हरिश्चन्द्र राजा इस वंशमें हुआ ॥ ९५ ॥

तस्मादभूदद्भुतकृत्यमान्यः साधारणो भूमिपतिर्वदान्यः ।
दारिद्र्यमुन्मूल्य पुनःस्ववैरिष्वस्थापि कामं कृपयैव येन ९६ ॥

उस हरिश्चन्द्रसे अद्भुत कृत्योंमें माननीय साधारण नामका उदार चित्तवाला राजा हुआ जिसने दरिद्रको जडसे उखाड कर फिर दया करके अपने शत्रुओंमें पूर्णरूपसे स्थापन किया ऐसा राजा हुआ ॥ ९६ ॥

कामो धर्ममहेशमान्य उदयो नास्तं प्रयातः क्वचित्
नो दाने विरतः सुहृत्तनुमनःसन्तापहृच्छूरता ।
सच्चक्रातिविचित्रमित्रसुखिताबुद्धिप्रदा चन्द्रता
चातुर्येण महेन्द्रता कविमनाः किञ्चिन्न यस्याद्भुतम् ॥ ९७ ॥

जो कामदेव, धर्मराज, महादेवके समान प्रतापवाला हुआ। जिसका तेज कभी कहीं छिपा नहीं और दान देनेसे कभी विमुख न होनेवाला अपने मित्रोंके हृदय, शरीरके तथा मनके सन्ताप दूर करनेवाली शूरता और विचित्र सुख बुद्धिको प्रकाश देनेवाली स्वच्छता, चतुराईसे महेन्द्रता और कविता आदि सब गुणोंवाला ऐसा कौन कार्य होगा जो उसके लिये अद्भुत हो ॥ ९७ ॥

अजनि सहजपालस्तस्य पूर्वस्तनूजः
सकलगुणनिधानं शास्त्रधर्मैकवेत्ता।
प्रथितपुरुषरत्नं यं समालोक्य लोको
बहुविधिषु विधातुः कान्ततां मन्यते स्म ॥ ९८ ॥

उस राजाके ज्येष्ठ पुत्र सहजपाल नामसे सब गुणोंका खजाना, शास्त्र और धर्मको एक जाननेवाला और विख्यात पुरुषरत्न पैदा हुआ। मनुष्य जिसको अच्छीतरह देखकर बहुत विधियोंमें ब्रह्माकी चतुराईकी प्रशंसा करनेलगे ॥ ९८ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र।
ग्रन्थेऽस्मिन्मदनविनोदनाम्नि पूर्णो
वर्गोऽयं गुणगणमिश्रमिश्रकोऽयम् ॥ ९९ ॥

जो राजाओंमें बहुत प्रधान कटारमल्ल हुआ उसी मदनराजाके रचेहुए इस मदनविनोदनामक ग्रन्थमें गुणोंके समूहसे मिलाहुआ यह मिश्रक वर्ग समाप्त हुआ ॥ ९९ ॥

अब्दे ब्रह्मजगद्युगेन्दुगुणिते श्रीविक्रमार्कप्रभौ
माघे मासि महर्क्षपेन ललिते षष्ठ्यां सुधांशोर्दिने।
दीनानां परितापपापशमनं ग्रन्थं निघण्टुं किल
श्रीदः श्रीमदनो व्यधत्त चतुरः सच्चक्रचूडामणिः॥ १०० ॥

इति मदनपालनिघण्टौ मिश्रकवर्गस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

सं० १४३१ विक्रमाब्दमें माघशुक्ल छठ सोमवारको दीनपुरुषोंके दुःखोंको दूर करनेवाले इस निघण्टु ग्रन्थको राजाऽधिराज श्रीमदनपालजीने रचना किया ॥ १०० ॥

इति श्रीमदनपालनिघण्टौ आयुर्वेदोद्धारक वैद्यरत्न पं०-रामप्रसादवैद्योपाध्याय-विरचितभाषातत्त्वप्रकाशिनीभाषाटीकायां मिश्रकवर्गो नाम त्रयोदशो वर्गः समाप्तः ॥ १३ ॥

रसर्तुनवचंद्रेऽब्दे मार्गशीर्षसिते दले।
वैद्यरामप्रसादेन नृगीर्भिः समलंकृतः ॥

सो यह मदनपालनिघण्टु रामप्रसाद वैद्यरत्नने सं० १९६६ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षमें हिन्दी भाषासे शोभायमान किया ॥

विनीत-वैद्यराज **रामप्रसाद**, पटियाला.

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई.
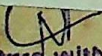
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
खेतवाडी-बम्बई.